

सम्माननीय कन्फेशर सेबस्टियन ऑफ करागंडा (फोमनि)

वषिय-सूची:

सम्माननीय कन्फेशर सेबस्टियन ऑफ करागंडा (फोमनि)	1
वरषिष्ठ, स्कीमा-आर्कमिंड्राइट सेबस्टियन का जीवन	5
वशिष बस्तियाँ	11
कारागंडा में एनकेवीडी शविरि में फादर सेबासियन की नजरबंदी	14
फादर सेबस्टियन की बीमारी	22
फादर के बच्चे	32
फेडोसिया फेदोतोवना प्रोकोपेनको (श्वैगर)	32
नीना 'कोखलुशका'	33
अनास्तासिया पेट्रोवना पार्शाना	35
फादर इओआन तमिकोव, एक सेवानवृत्त पुरोहिती, करागंडा	35
वेरा अफनासयेवना त्काचेन्को, फादर सेबासटियन की गृहस्वामिनी	37
मारिया ओब्राजतसोवा, फादर की सेल सहायक	39
तात्याना आर्टेमोवना इज्यूमोवा	42
अन्ना वासिलीवना जाइकोवा	44
मारिया वासिलीयेवना एंड्रीव्सकाया	45
मैटरोना तकिोनोवना फ्रोलोवा	46
लडिया व्लादमिरोवना झुकोवा	47
सामरटसेव परिवार	47
वासिली इवानोवचि समारटसेव	47
नीना पेट्रोवना सामारटसेवा	48
वालेंटीना सरगेवना पोपोवा	48
ससिटर नीना (कोरशुनोवा)	49
ताइसिया ग्रिगोर्येवना फोमनि	51
एंटीनना इवानोवा	51
वैलेन्टिना पेट्रोवना पानोवा	52
ख्मरिोव परिवार	53
भकिषु सेबस्टियन (अलेक्जेंडर अलेक्सेयेवचि ख्मरिोव)	53
नन एवनकिया (अलेक्जेंडरा फ्लोरोवना ख्मरिोवा)	54
भकिषु सेबस्टियन (ख्मयरिचि)	55
ओल्गा सरगेवना मारटनोवा	56
मारिया फओदोरोवना और ओल्गा फओदोरोवना ऑर्लोवास	60
मारिया फ्योदोरोवना	60
ओल्गा फ्योदोरोवना (बाट्यूशका की देखभाल करने वाली डॉक्टर)	61
मारिया फ्योदोरोवना	66
ओल्गा फ्योदोरोवना	66
राइसा इवानोवना कूज़्मचेवा	67
तात्याना व्लादमिरोवना टॉरटनस्टेन	69
प्रोटोडीकन वासिली डेनेज़कनि	76
आर्चप्रीस्ट यूस्टैथियस प्रोकोपचुक, चर्च ऑफ द नेटीवर्टी ऑफ द मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड, करागंडा	81
एलेना अलेक्जेंड्रोवना अगाफोनोवा	83
आर्चप्रीस्ट वैलेरी ज़खारोव, अलमाटी में सेंट निकोलस कैथेड्रल के रेक्टर	85
वोल्कोलामस्क और यूरीएव के मेट्रोपॉलिटन पटिरिमि की संस्मृतियों से	85
आर्चप्रीस्ट अलेक्जेंडर कसिलेव, करागंडा में सर्वपवतिर परमेश्वर माता के जन्म के चर्च के रेक्टर	86
एलडर सेवस्टियन की स्मृतियाँ, उनकी शिक्षाएँ, उनके आध्यात्मिक बच्चों द्वारा दर्ज की गई	89
प्रार्थना पर	89
नम्रता, अहंकार और विश्वास पर	89

बीमारी पर	91
बीमारों की देखभाल और करुणा पर	93
पवतिर सहभाग और उपवास पर	93
उत्सव के दानों और संतों की आराधना पर	95
आइकन पर	95
चर्च में नयिमों पर	96
गाने पर	96
वस्त्रों पर	97
अनाथों पर	97
बच्चों के पालन-पोषण पर	97
आजूआकारिता पर	98
अंत्येष्टी सेवाओं पर	98
पति की स्वीकारोक्ति पर	99
बकवास पर	99
हँसी और लापरवाह व्यवहार पर	99
ईश्वर की सहायता और आध्यात्मिक पतन पर	99
नदिा पर	100
संयम पर	101
मेरे बारे में	101
संन्यासी जीवन और संसार पर	102
शेमा-आर्कमिंड्राइट सेबस्टियन के प्रवचनों से	103
पश्चातापी पापी पर एक उपदेश	103
पालक देवदूत के मार्गदर्शन पर	103
अपने पड़ोसियों के लिए प्रेम पर एक वचन	104
गेटहाउस में शाम को फादर सेबास्टियन का एक संदेश	104
प्रेम के प्रेरति, जॉन द थियोलोजियन की स्मृति	104
महान तपस्या की शुरुआत	104
आर्कमिंड्राइट सेवासियन का एक संदेश	104
आर्कमिंड्राइट सेबेस्टियन का नाम दविस	105
समरीया की स्त्री के वषिय में	105
प्रभु का स्वर्गारोहण	105
पहले बुलाए गए संत एंड्रयू प्रेरति का पर्व दविस	105
पालक स्वर्गदूतों पर	106
रविवार	106
संत जॉन द बैप्टिस्ट का सरि कलम किया जाना	107
समय पर एक वचन	107
महादूत माइकल का पर्व	107
रविवार	107
ईस्टर रविवार	108
करगान्डा की वृद्ध महिलाएँ	109
सकीमा-नन अग्न्या	109
राइसा नकोलेवना अनीसमिवा, चेलेबनिस्क	110
हेगुमेन नकोलाई (कारपोव), श्चुचस्क	113
सकीमानुहा अनास्तासिया	115
1970. पाम संडे	119
संयोग या चमत्कार	119
ताइशिया ग्रिगोर्येवना फोमनि	120
एंटीननि इवानोवा	121
अन्ना शेवचुक	121
मारिया फ्योदोरोवना ऑरलोवा	122
ओल्गा सरगेवना मारटनोवा	123
नन्या कसान लड़की	123
भक्ति सेबास्टियन (खम्यरिवि)	124
ससिटर एवनकिया (खम्यरिवि)	124
मारिया निकितिचिना ओब्राज़त्सोवा	126

अक्टूबर 1997 में, संतों के संतों के संस्कार के लिए सनोडल आयोग के एक नरिणय के बाद और परम पावन पैट्रिआर्क अलेक्सी द्वितीय के आशीर्वाद से, कारागंदा के पूजनीय वृद्ध सेबेस्टियन, कन्फेशर, का स्थानीय रूप से एक संत के रूप में गौरव किया गया।

22 अक्टूबर 1997 को, परम पूज्य सेबेस्टियन के अवशेष खोजे गए। आधे वर्ष तक, वरिष्ठ के अवशेष सर्वपवतिर परमेश्वर की माता के जन्म के चर्च में रखे गए, जिसकी उन्होंने स्थापना की थी; और 2 मई 1998 को, ईस्टर भजनों के साथ एक भव्य जुलूस के दौरान, पूजनीय के अवशेषों वाले अवशेष-पात्र को पवतिर प्रस्तुत के कैथेड्रल में स्थानांतरित कर दिया गया, जो करागांडा का प्रमुख चर्च बन गया था। इस हस्तांतरण को अल्मा-आटा और सेमीपालाट्सिक के आर्चबिशप एलेक्सी ने किया था, और उनके साथ धर्मप्रांत के पुरोहित, करागांडा के ऑर्थोडॉक्स ईसाई और कजाखस्तान तथा रूस के विभिन्न शहरों से आए अनगिनत तीर्थयात्री भी मौजूद थे।

परम पूजनीय सेबेस्टियन की अवशेषों को केंद्रीय पार्श्व-गरिजाघर के दाईं ओर पूजनार्थ स्थापित किया गया है। यह भव्य अवशेष-पात्र और इसके ऊपर का छत्र, जो रंगीन धातुओं से जड़ावट के साथ बना है और जो राडोनेज़ के परम पूजनीय सेरजियस के अवशेष-पात्र और छत्र की याद दिलाता है, सेरगेव पोसाद के कारीगरों द्वारा बनाया गया था।

अगस्त 2000 में, ज्यूबिली बशिपों की परिषद में, करागंद के पूजनीय सेबेस्टियन को चर्च में सर्वत्र पूजा के लिए रूस के नए शहीदों और स्वीकारकर्ताओं के सनिक्ससि में शामिल किया गया था।

अगस्त 2000 में, ज्यूबिली बशिपों की परिषद में, करागंदा के पूजनीय सेबेस्टियन को रूस के नए शहीदों और स्वीकारकर्ताओं में से एक के रूप में महिमामंडित किया गया।

संत जॉन क्लाइमक्स कहते हैं, "संन्यासियों का प्रकाश स्वर्गदूत हैं, और सभी लोगों के लिए प्रकाश संन्यासी जीवन है।" लेकिन ईसाई धर्म का सार, संन्यासवाद की सबसे उत्तम अभिव्यक्ति, वरिष्ठ का पद है।

भवषियसूचक मंत्रालय के प्रत्यक्ष नरितरता के रूप में, मठाधीश का पद मठवाद के उदय के साथ-साथ ईसाई धर्म के शुरुआती दनों में उत्पन्न हुआ, जो इसके मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता था। इसने आंतरिक आध्यात्मिक श्रम के तपस्वीय कार्य को संपूर्ण दुनिया की सेवा के साथ जोड़ा, जो इसकी आध्यात्मिक और दैनिक दोनों जरूरतों को संबोधित करता था।

रूस में, कोज़ेलस्क वेडेन्स्काया ऑप्टिना हरमटिज इस आध्यात्मिक प्रयास का एक विशेष रूप से प्रभावशाली मूरत उदाहरण था। ऑप्टिना का हृदय, और वह स्थान जहाँ इसके जीवन की धड़कन धड़कती थी—जसिसे वह अनुग्रह-पूर्ण शक्ति उत्पन्न होती थी जसिने मठ के नवासियों के जीवन को पवतिर किया—वह प्रसिद्ध ऑप्टिना स्केट था: ऑप्टिना के पवतिर बुजुर्गों का नवासि स्थान।

इसे स्थापित करने का विचार मठवाद और वृद्ध-संप्रदाय के संरक्षक तथा कीव के भावी मेट्रोपॉलिटन बशिप फिलारेट का था, जिन्होंने रोस्लावल के जंगलों में रहने वाले परम पूजनीय पैसयिस वेलीचकोव्सकी के तपस्वी शिष्यों और अनुयायियों को ऑप्टिना पुस्तनि में एक स्केट की स्थापना करने के लिए मनाया। इस प्रकार, फादर मूसा (पुतलिव) अपने भाई एंथनी के साथ ऑप्टिना पुस्तनि पहुँचे। जब, ऑप्टिना स्केट (1821) की स्थापना के बाद, फादर मूसा पूरे मठ के मठाधीश बने (1826), ईश्वरभक्त और धर्मनिराज फादर लियोनदि, जो स्कीमा में लेव के नाम से जाने जाते थे (1829), अलेक्जेंडर-स्वीर मठ से स्केट में आए, और उन्होंने ही वहाँ वृद्ध परंपरा की नींव रखी। ऐसा करने से, उन्होंने एक ऐसी प्रेरणा प्रदान की जसिने ऑप्टिना पुस्तनि के जीवन और समृद्धि के अंत तक, पूरे सौ वर्षों तक, बाद की पीढ़ियों के संतों को प्रेरित किया। बाद के संत, फादर मकारियस और फादर एम्ब्रोस, जो स्वयं भी महान संत थे, उनके करीबी शिष्य थे।

वृद्ध मकरियस के समय से, जिन्होंने पादरियों के साहित्य का अनुवाद करने के लिए शक्ति वर्ग के कई व्यक्तियों को शामिल किया, ऑप्टिना पुस्तनि समकालीन लेखकों के बीच प्रसिद्ध हो गई। तब से, रूस के बौद्धिक जगत के शीर्ष लोगों ने ऑप्टिना पुस्तनि और उसके स्केट का दौरा करना शुरू कर दिया। महात्माओं के कई दैवीय उपहारों और, उतनी ही महत्वपूर्ण, ऑप्टिना के संतों के बीच उत्तराधिकार की अखंड श्रृंखला ने ऑप्टिना पुस्तनि को पूरे रूस में प्रसिद्ध कर दिया है। महात्मा अंब्रोज़ के अधीन—जिन्हें फादर लेव ने, एक नवसंन्यासी होते हुए भी, अपनी मृत्यु से ठीक पहले नेतृत्व का 'पूर्ण दायित्व' फादर मैकारियस को सौंप दिया था—ऑप्टिना अपने शिखर पर

पहुँच गई। महात्मा की ख्यात पूरे रूस में गूँज उठी, और देश के कोने-कोने से लोग उनके पास आने लगे। उनके बाद के महात्मा—महात्मा अनातोली (ज़र्टसालोव), जो महात्मा एम्ब्रोज़ के शिष्य थे; महात्मा जोसेफ; और महात्मा वरसोनोफी—ईश्वरीय प्रकाश की कृपा से, अपने गुरुओं के समान थे।

धार्मिक व्यक्तियों, दार्शनिकों और लेखकों के कई प्रतष्ठिति नाम ऑप्टिना पुस्तानि से जुड़े हैं। गोगोल, दस्तोयेव्स्की, व्लादमीर सोलोव्योव, इसके गुप्त मठवासी दीक्षित कॉन्स्टेंटिनि लियोनोव, और करिपेव्स्की भाइयों—जन्हें बुजुर्गों के साथ ऑप्टिना की दीवारों के भीतर दफनाया गया है—सभी ने यहाँ का दौरा किया है; मरते समय टॉलस्टॉय की अंतिम इच्छा गहराई से प्रतीकात्मक थी—ऑप्टिना जाना, जिसका उनके लिए अर्थ था मसीह के चर्च में प्रवेश करना। इवान वासिलीवचि करिपेव्स्की ने लिखा, "किसी भी कतिब या वचिारधारा से कहीं ज्यादा ज़रूरी है, एक पवित्र ऑर्थोडॉक्स वृद्ध को खोजना जो आपका मार्गदर्शक हो, जिससे आप अपने हर वचिार को साझा कर सकें और उनकी राय न सुनें—चाहे वह कतिनी भी बुद्धिमानी भरी क्यों न हो—बल्कि पवित्र पतिओं के निर्णय को सुनें।"

इन संतों में से अंतिम – थियोडोसियस द वाइज़ (†1920), अनातोलीयस द कम्फर्टर (पोतापोव, †1922) और अद्भुत नेक्टारियस (†1928) – ने उसी परंपरा को जारी रखा। उनके भाग्य में यह था कि वे उस समय को देखें जब रूसी राज्य की सदियों पुरानी इमारत ढह गई और नास्तिकों और अधर्मी लोगों के एक दल ने देश पर कब्ज़ा कर लिया। प्रभु ने यह वधान किया कि वृद्ध थियोडोसियस और अनातोलीयस ऑप्टिना पुस्तानि (1923) के बंद होने से पहले परमधाम सधिर जाएँ और पवित्र मठ की दीवारों के भीतर दफनाए जाएँ।

वरष्ठि नेक्टारियस, जब खोल्मशिची गाँव में सख्त नगिरानी में नरिवासन में थे और आगंतुकों को मलिन पर प्रतबिंध था, तब उन्हें सुसमाचार के वचन याद आए: 'जो कोई मेरे पास आएगा, मैं उसे कभी बाहर नहीं निकालूँगा' – और उन्होंने उन लोगों की आध्यात्मिक प्रयास बुझाना जारी रखा, जो क्रांतिकारी नास्तिकता के बीच, आध्यात्मिक सहायता के लिए वरष्ठि के पास आए थे।

धीरे-धीरे कमजोर पड़ते हुए, वरष्ठि ने 29 अप्रैल 1928 को चुपचाप इस अस्थायी और दुखद जीवन को त्यागकर शाश्वत जीवन में प्रवेश किया और कोज़ेल्स्क से 60 किलोमीटर दूर खोल्मशिची गाँव के एक एकांत कबरस्तान में दफनाया गया। [16 जुलाई 1989 को, एल्डर नेक्टारियस के अवशेष खोल्मशिचे गाँव के कबरस्तान से ऑप्टिना पुस्तानि में प्रेजेंटेशन कैथेड्रल में स्थानांतरित कर दिए गए।]

ऑप्टिना पुस्तानि में अंतिम सर्व-रात्रि जागरण सेवाओं में से एक का संचालन 15 जून 1924 को, कालगा के पूजनीय टर्किऑन के पर्व दविस पर, हयिरोमोंक नकिऑन (बेलेयेव) द्वारा किया गया था। फादर नकिऑन, जो वृद्ध वरसोनोफी के प्रिय शिष्य और नकिटतम साथी थे, आयु में युवा थे, फरि भी आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता में वे सफेद बालों वाले अन्य वृद्धों से श्रेष्ठ थे। ईश्वर की इच्छा से, यह जम्मेदारी अकेले उन पर आई कि वे उस प्रिय मठ को छोड़ने वाले अंतिम व्यक्तियों में, जहाँ शरदधालु अभी भी आध्यात्मिक सांत्वना और सलाह की तलाश में आते थे। और फादर नकिऑन ने न केवल एक आध्यात्मिक पति के कर्तव्य, बल्कि एक वृद्ध (एल्डर) के कर्तव्य भी अपने ऊपर ले लिए। मठ की चर्च में अब पूरी रात की प्रार्थना सभा नहीं होती थी, बल्कि अस्पताल की रसोई में होती थी। और फरि, आने वाली वपित्तियों की आशंका में, कोज़ेल्स्क में फादर नकिऑन के लिए एक दुखों से भरा, अपरचित और कठिनाइयों से घिरा जीवन शुरू हुआ, साथ ही ओप्टिना के वे भाई जो वहाँ बस गए थे और तबाह शमोर्डनी मठ की नननयियाँ भी वहाँ थीं। ओप्टिना के भाई कैसे और किस पर जीते थे - यह केवल प्रभु ही जानते हैं।

ऑप्टिना के पहले वृद्ध, हयिरोस्केमामोंक लेव, ने एक बार टपिपणी की थी कि वह समय आएगा जब हमारा स्केट वीरान हो जाएगा, और वहाँ केवल बलिलियाँ ही रहेंगी।' और अपने धन्य नधिन (†1841) से पहले, उन्होंने यह प्रार्थना की: 'मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, हे प्रभु, मेरे दयालु सृष्टिकर्ता, कि मैं उन दुर्भाग्यों और दुखों से बच गया हूँ जो आने वाले समय में आने वाले हैं। लेकिन मुझे नहीं पता कि आप उनसे बच पाएँगे या नहीं।' ये अंतिम शब्द वृद्ध की सेल सहायक को संबोधित थे।

क्रांतिसे बहुत पहले, वृद्ध वरसोनोफी ने अपने शिष्य फादर नकिऑन (तब नकिोलाई के नाम से जाने जाते थे) से एक पति की तरह अपने बेटे से बात करते हुए कहा: "यहाँ मैं तुम्हें, युवा और अनुभवहीन, देख रहा हूँ, और मुझे लगता है कि मैं उन भयानक दनों को देखने के लिए जीवित नहीं रहूँगा, लेकिन तुम रहोगे। मठों को बड़े उत्पीड़न और अत्याचार का सामना करना पड़ेगा... वह समय आएगा जब ऑप्टिना में हालात कठिने हो जाएँगे... सचचे ईसाई छोटी-छोटी गरिजाघरों में एक साथ दुबक कर रहेंगे... आप शायद उन दनों को देखने के लिए ज़िदा रहेंगे जब ईसाइयों को एक बार फरि से प्रताड़ित किया जाएगा। मैं प्राचीन समय जैसी यातनाओं की बात कर रहा हूँ... प्रारंभिक ईसाइयों पर हुए उत्पीड़न और यातनाएँ दोहराई जा सकती हैं... आप उन समयों को देखने के लिए जीवित रहेंगे। मेरे शब्दों को याद

रखना। तब आप कहेंगे: 'हाँ, मुझे याद है, फादर वरसोनोफी ने मुझे यह सब बताया था... तब से कतिने साल बीत गए हैं।' मेरे शब्दों को याद रखना कि आप एक 'क्रोध का दिन' देखेंगे। और मैं एक बार फिर दोहराता हूँ कि आपको डरने की कोई बात नहीं है। ईश्वर की कृपा आपकी रक्षा करेगी।"

फादर नकिोन का शरीर दूरस्थ पाइनेगा में अरखान्गेलस्क क्षेत्र में पड़ा है, जहाँ बोलशेवकों ने उन्हें 1930 में 'स्वैच्छिक नरिवासन' के लिए नरिवासति किया था। 25 जून 1931 को वहीं उनकी फेफड़ों के क्षयरोग से मृत्यु हो गई।

अंतमि संतों में से एक [नमिनलखिति को भी ऑप्टनि के अंतमि संतों में गनिा जाता है: ह्यरोस्केममोंक मकारयिस (इनोजेम्त्सेव, † 4 मई 1970 (पुराना संस्करण)), बेलेव, तुला क्षेत्र; शेमाओंक जोआसाफ (मोइसेव, † 25 मार्च 1975 (पुराना संस्करण)), ग्र्याजी, लपितस्क ओब्लास्ट; शेमा-आर्कमिंड्राइट एम्बरोज़ (इवानोव, † 2 अक्टूबर 1978 (पुराना संस्करण)), बलाबानोवो, कलुगा ओब्लास्ट; स्कीमा-हेग्यूमेन पॉल (ड्राचेव, † 16 मार्च 1981 (पुराना कैलेंडर)), चेरकासी गाँव, तुला क्षेत्र।], जो क्रांत-पूर्व ऑप्टनि की जड़ों से उपजे थे, स्कीमा-आर्कमिंड्राइट सेबस्टियन (फोमनि, † 1966) हैं, - एल्डर जोसेफ और उनके नधिन के बाद, एल्डर नेक्टारयिस के शिष्य थे। उन्होंने ऑप्टनि पुस्तनि के पवतिर पतिताओं की परंपराओं और अनुग्रह-पूर्ण आत्मा को आत्मसात किया था और आयरन की तरह, आग के परीक्षणों की भट्टी में तपकर, सोवियत शिविरों में नरिवासन और कारावास को सहन किया, उन्होंने, ईश्वर की अनुग्रह की अकल्पनीय योजना के अनुसार, मध्य कजाखस्तान के तपते मैदानों की राजधानी, कारागंडा के दीर्घ-पीड़ति और धन्य शहर में अपना मठवासी मंत्रालय नभिया, जहाँ 1930 से 1950 के दशक के दौरान, हमारी सदी के नास्तिक नाटक का सबसे दुखद अध्याय सामने आया। एक नरितर एंटमिंशियन की तरह, कजाखस्तान का असीम मैदान—जो शहीदों के रक्त से सना और उनकी प्रार्थनाओं से पवतिर है—पसार हुआ है, जिसके ऊपर ऑप्टनि के एल्डर, स्कीमा-आर्कमिंड्राइट सेबस्टियन की पुण्य स्मृतनि अपने प्रबल पंख फैलाए।

वरषिठ, स्कीमा-आर्कमिंड्राइट सेबस्टियन का जीवन

धन्य एल्डर, स्कीमा-आर्कमिंड्राइट सेबस्टियन (स्टीफन वासिलीवचि फोमनि), का जन्म 28 अक्टूबर/10 नवंबर 1884 को ओरीओल गवर्नरेट के कोस्मोडेम्यांस्कोये गाँव में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। उनके पतिता का नाम वासिली और उनकी माँ का नाम मतरोना था। उनके तीन बेटे थे। सबसे बड़े हलियन थे, जिनका जन्म 1872 में हुआ था; दूसरे बेटे का नाम रोमन था, जिनका जन्म 1877 में हुआ था; और सबसे छोटे का नाम सम्मानति स्टीफन साव्वाइट, जो कैनन के रचयिता थे, के सम्मान में स्टीफन रखा गया था, जिनके पर्व के दिन उनका जन्म हुआ था।

1888 में, उनके माता-पति बच्चों को एल्डर एम्बरोज़ से मलिन के लिए ऑप्टनि पुस्तनि ले गए। उस समय स्टीफन चार साल का था, लेकिन उसे उस यात्रा के साथ-साथ धन्य एल्डर की दयालु आँखें भी अच्छी तरह याद थीं। भवषिय के फादर सेबास्टियन चार साल की उम्र में अपने पतिता की मृत्यु पर अनाथ हो गए, और पाँच साल की उम्र में अपनी माँ की मृत्यु पर। "जब हमारे माता-पति का नधिन हुआ," उनके बड़े भाई हलियन ने याद किया, "मैं 17 साल का था। हमारे पास नौ देसयिना ज़मीन थी, जसि हाथ से जोतना पड़ता था; यह एक छोटा सा खेत था - इसे कौन चलाता? हम तीन भाई थे; हम झगड़ते और मारपीट करते थे - हमें कौन अलग करता और सुलह कराता?" परिवार को मजबूत करने के लिए, माता-पति की मृत्यु के एक साल बाद, बड़े भाई, हलियन ने शादी कर ली।

पाँच वर्षीय स्टीफन अपनी कोमल आत्मा और नरम दिल के कारण अपने बीच वाले भाई रोमन से बहुत लगाव रखता था। लेकिन रोमन ने संन्यासी जीवन चुना और, 1892 में, हलियन से उसे ऑप्टनि पुस्तनि ले जाने का आग्रह किया, जहाँ उसे संत जॉन द फोररनर के स्क्रेट में एक नवसखिआ के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

हलियन का चरतिर अलग था - वह मांग करने वाला और नरिदयी था। स्टीफन ने कम उम्र में ही अनाथ होने की कठिनाइयों को सीखा। अपने बचपन को याद करते हुए, एल्डर सेबास्टियन ने कहा: 'काश कोई महिला रह जाती: कोई दादी, बहन या चाची - कोई भी जो इतनी कम उम्र में आपकी देखभाल कर सकती।' माँ के बनिा मुश्कलि होता है, बहू के होते हुए भी। मुझे याद है जब मैं लगभग आठ साल का था। मैंने अपनी बहू से कुछ दूध माँगा, और उसने मुझसे कहा, 'रुको।' मुझे गुस्सा आ गया, मैं गया और भांग के कपड़ों को—जनिहें मेरी बहू धोकर धूप में सुखा रही थी—जमीन पर फेंक दिया, और उन्हें कीचड़ में लथपथ कर दिया। मेरी भाभी ने मेरे भाई से शकियत की। मेरे भाई ने मुझे डांटा और पीटा। मुझे पीटने या डांटने वाले तो बहुत थे, लेकिन मुझ पर तरस खाने वाला कोई नहीं था।"

स्टीफन एक अच्छा छात्र था और उसने तीन साल का पैरशि स्कूल पूरा किया। पैरशि का पादरी उसे कतिबें पढ़ने देता था। जन्म से ही, स्टीफन की सेहत खराब थी और वह बहुत कम खेत का काम करता था, अपना ज्यादातर समय चरागाह में एक चरवाहे के रूप में बताता था। उसे पालतू जानवरों से प्यार था, वह उनकी देखभाल करना जानता

था, और किसान उसे बहुत मान-सम्मान देते थे। लेकिन सबसे बढ़कर, उसके पास कतिबे पढ़ने और प्रार्थना करने का समय था। उसके साथियों को उससे इसलिए नफरत थी क्योंकि वह वनिमर और नमर था। वे उसका मजाक उड़ाते और उसे चढ़ाते थे, उसे 'भक्तिषु' कहते थे। और भी बुरा यह था कि, यह जानते हुए कि वह न केवल लोगों बल्कि जानवरों के प्रति भी दयालु था, उन्होंने एक बार एक बलिली पकड़ी और उसे कुत्तों के झुंड पर तब तक फेंकते रहे जब तक कि उन्होंने उसे चीर-फाड़ नहीं दिया - फादर सेबेस्टियन ने बाद में इस बात को अफसोस के साथ याद किया। सर्दियों के महीनों के दौरान, जब वह खेत के काम से मुक्त होता था, तब स्टीफन के लिए आनंद और आराम का एक स्रोत ऑप्टिनि पुस्तनि में अपने मध्यवर्ती भाई से मिलना था। इन मुलाकातों का स्टीफन पर गहरा आध्यात्मिक प्रभाव पड़ा, और जब वह बड़ा हुआ, तो उसने हलियन से ऑप्टिनि पुस्तनि जाने की अनुमति मांगनी शुरू कर दी। लेकिन उसका भाई उसे ऐसा करने नहीं देता था। "तुम किस काम के भक्तिषु बनोगे?" वह कहते थे। "तुम किसी काम के नहीं हो। और खेतों में मेरी मदद कौन करेगा?" और स्टीफन अपने भाई की मदद करने के लिए वहीं रहे।

1908 में, उनके बीच वाले भाई, रोमन फोमनि ने बीमार होने पर नज़ी मठवासी संस्कार ग्रहण किए और राफेल नाम अपना लिया; और 16 दिसंबर 1908 को, मसिर की संत मेरी को समर्पित मठ के चर्च में, उन्हें मठाध्यक्ष, फादर जेनोफोन द्वारा मठवासी चोगा पहनाया गया।

इस समय तक, बड़े भाई का छोटा परिवार बसा-बसाया हो गया था, और स्टीफन, मठवासी जीवन की अपनी इच्छा में दृढ़ होकर, ऑप्टिनि पुस्तनि हर्मटिज में फादर राफेल के पास गए, जहाँ, 3 जनवरी 1909 को, उन्हें एल्डर जोसेफ द्वारा एक सेल-नवासी के रूप में स्वीकार किया गया।

बड़े भाई के साथ रहते हुए, स्टीफन ने उनमें एक महान आध्यात्मिक मार्गदर्शक पाया। वे बाद में अक्सर उस समय को याद करते थे: "हम (एक अन्य सेल सहायक) बड़े भाई के साथ ऐसे रहते थे जैसे कि वे हमारे अपने पिता हों। उनके साथ हम प्रार्थना करते थे, खाते थे, पढ़ते थे या उनके उपदेशों को सुनते थे।"

वरिष्ठ ह्यरोस्कमामोंक जोसेफ महान वरिष्ठ ह्यरोस्कमामोंक एम्ब्रोज़ के सबसे निकटतम शिष्य थे। वह न केवल रूप में, बल्कि आत्मा में, अपनी आज्ञाकारिता, भक्ति और परेम की दृढ़ता में भी उनके सबसे निकटतम शिष्य थे। वह वास्तव में फादर एम्ब्रोज़ के 'प्रिय पुत्र' थे, जिन्हें उन्होंने महान संतों लिये और मकरयिस की शक्तिओं से परिपूर्ण एक साधारण झोपड़ी की दीवारों के भीतर आध्यात्मिक रूप से पुनर्जन्म दिया और पोषित किया। यहाँ, इस तंग कोठरी में, जो फादर जोसेफ के लिए भक्तिका विद्यालय बन गई, उन्होंने अभ्यास के माध्यम से सभी विज्ञानों में सर्वोच्च - मठवाद - में महारत हासिल की और समय के साथ स्वयं भक्तिषुओं के लिए एक मार्गदर्शक बन गए।

बारह वर्षों तक उन्होंने स्केटे और मठ के स्केटे-सुपरियर और एल्डर के रूप में सेवा की, लेकिन 1905 में खराब स्वास्थ्य के कारण उन्होंने यह पद छोड़ दिया। वे पहले से ही अपने जीवन के संध्याकाल में थे, और उनकी शक्तिस्पष्ट रूप से कृषि हो रही थी। मठवाद का यह प्रकाशस्तंभ धीरे-धीरे बुझ रहा था, फरि भी जहाँ उनका शरीर कमजोर हो रहा था, वहीं उनका मन सतर्क और स्पष्ट बना रहा। 1905 में पवित्र धर्मसभा के आदेश से, हेगुमेन वरसोनोफी को स्केटे के अधीक्षक के पद पर नियुक्त किया गया।

1910 में, यासनाया पोल्याना से अपने गुप्त प्रस्थान के बाद, लेव टॉल्स्टॉय ऑप्टिनि पुस्तनि पहुँचे। स्टीफन ने इस घटना को देखा।

लेव निकोलायेविच देर रात कोजेल्स्क से ऑप्टिनि पहुँचे और मठ के अतिथि गृह में रात बिताई। अतिथि गृह चलाने वाले फादर मखाइल ने बाद में बताया कि चाय पर टॉल्स्टॉय ने उनसे बुजुर्गों के बारे में पूछा, यह पूछते हुए कि उनमें से कौन आगंतुक स्वीकार कर रहे थे और क्या एल्डर जोसेफ किसी से मिल रहे थे; उन्होंने कहा कि वह बुजुर्गों से मिलने और बात करने आए थे।

"और जब वे पहुँचे," फादर मखाइल ने याद किया, "तो वे दोनों थे। उन्होंने दरवाजा खटखटाया। मैंने दरवाजा खोला। लेव निकोलायेविच ने पूछा, 'क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?' मैंने कहा, 'ज़रूर।' और उन्होंने कहा, 'शायद मुझे नहीं आना चाहिए: मैं टॉल्स्टॉय हूँ।' मैंने कहा, 'क्यों नहीं, हम उन सभी का स्वागत करते हैं जो हमसे मिलना चाहते हैं।' फरि उन्होंने कहा, 'खैर, नमस्ते, भाई।' मैंने जवाब दिया, 'नमस्ते, महाशय।' उन्होंने कहा, 'क्या आपको बुरा नहीं लगा कि मैंने आपको 'भाई' कहा? सभी लोग भाई हैं।' मैंने जवाब दिया, 'बलिकुल नहीं, और यह सच है कि हम सभी भाई हैं।' तो वे हमारे साथ रहे। मैंने उन्हें सबसे अच्छा कमरा दिया। और अगली सुबह जल्दी ही मैंने एक नौकर को स्केट के अधीक्षक, फादर वरसोनोफी के पास यह बताने के लिए भेजा कि टॉल्स्टॉय स्केट की ओर आ रहे थे।' फादर सेबेस्टियन ने आगे जो हुआ, उसे इस प्रकार बताया: "एल्डर जोसेफ बीमार थे, और मैं उनके बगल में बैठा था। एल्डर वरसोनोफी अंदर आए और हमें बताया कि फादर माइकल ने हमें चेतावनी देने के लिए संदेश भेजा था कि एल. टॉल्स्टॉय हमारे यहाँ आ रहे हैं। 'मैंने,' उन्होंने कहा, 'उनसे पूछा: "और यह आपको किसने बताया?"' उन्होंने जवाब दिया, 'टॉल्स्टॉय

ने खुद मुझे बताया।' एल्डर जोसेफ ने कहा, 'अगर वह आते हैं, तो हमें उन्हें दया, सम्मान और आनंद के साथ स्वागत करना चाहिए; भले ही उन्हें चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया हो, चूंकि वह अपनी मर्जी से आए हैं—किसी ने उन्हें मजबूर नहीं किया—हम कुछ और नहीं कर सकते।' फरि उन्होंने मुझे बाड़ के पार देखने के लिए भेजा। मैंने लेव नकिलोलायेवचि को देखा और बुजुर्गों को बताया कि वह घर के पास-पास चल रहे थे, कभी पास आ रहे थे, तो कभी दूर जा रहे थे। बुजुर्ग जोसेफ ने कहा: "यह उनके लिए मुश्किल है। आखिरकार, वह हमारे पास जीवित जल के लिए आए हैं। जाओ और उन्हें अंदर आने के लिए कहो, अगर वह हमारे पास आए हैं। उनसे पूछो।" मैं गया, लेकिन वह जा चुके थे; वह घोड़े पर सवार होकर चले गए थे। वह घोड़े पर सवार होने के बावजूद बहुत दूर नहीं गया था, इसलिए मैं उससे नहीं मल सकता। फरि उसकी बहन, ससिटर मारिया, का बुजुर्गों के पास एक संदेश आया, जिसमें कहा गया था कि वह उसे भी शमोरदिनो में छोड़ गया था। बाद में, एस्तापोवो स्टेशन से एल.एन. की बीमारी के बारे में हमें एक टेलीग्राम मिला; उसमें, उनकी ओर से, बुजुर्ग से उनके पास आने के लिए कहा गया था। फादर वरसोनोफी तुरंत निकल पड़े, लेकिन टॉलस्टॉय के आसपास के लोग उन्हें लेव नकिलोलायेवचि से मिलने नहीं देने वाले थे। फादर वरसोनोफी ने अपना एक पत्र अपनी बेटी अलेक्जेंड्रा को दिया। उन्होंने उसे लिखा था कि आखिरकार, यह उसके पति की इच्छा थी कि मैं आऊँ। वह वैसे भी उन्हें अंदर नहीं आने देते थे। न ही उन्होंने उनकी पत्नी, सोफिया आंदरेयेवना को उन्हें देखने दिया। वह अपनी बग़्घी में सवार होकर आई थीं और स्टेशन पर उसी में ठहरी हुई थीं। फादर वरसोनोफी को यह सब बहुत बुरा लगा; वह खुद लगभग बीमार होकर लौटे और जब भी इसे याद करते थे तो हमेशा दुखी हो जाते थे। और वह कहते थे: 'भले ही वह लेव थे, वह अपनी बेड़ियों को तोड़ नहीं सके। "क्या अफ़सोस की बात है, कतिना बड़ा अफ़सोस है।" और एल्डर जोसेफ ने अपनी कसिमत पर शोक व्यक्त किया। "जहाँ तक इस दावे की बात है कि किसी ने मुझे भेजा था, वह सच नहीं है। मैं अस्तापोवो केवल लेव नकिलोलायेवचि के स्वयं के अनुरोध पर गया था," फादर वरसोनोफी ने दृढ़ता से कहा।

अप्रैल 1911 में, ईस्टर के तीसरे दिन, एल्डर जोसेफ एक लाइलाज बीमारी से ग्रस्त हो गए। 9 मई को, उनकी आत्मा ने अपने दीर्घकालीन कष्टदायी शरीर से चुपचाप वृद्धि ले ली, और 10 मई को सुबह साढ़े एक बजे, स्कैट घंटी की तीन बार की घंटी, जिसके बाद मठ की घंटी बजी, ने एल्डर के नधिन की घोषणा की। 12 मई को, उनके शरीर को संभाले ताबूत को भाइयों के हाथों से कब्र में उतारा गया—जो एल्डर एम्ब्रोज़ की कब्र के पास तैयार की गई थी। वह नम्र शिष्य, जिसने महान एल्डर के साथ 30 वर्ष बतियाए थे, को उनके गुरु के चरणों में सुलाया गया।

वरषिठ की मृत्यु पर स्टीफन का शोक बहुत गहरा था। लेकिन प्रभु ने उसे सांतवना के बनि नहीं छोड़ा। वरषिठ नेक्टारियोस (फादर अनातोली (जर्ट्सालोव) और फादर एम्ब्रोस के आध्यात्मिक पुत्र) फादर जोसेफ की कोठरी में आ गए। स्टीफन उनके सेल सहायक के रूप में उनके साथ रहे और उनकी आध्यात्मिक मार्गदर्शन में आ गए। 1912 में, स्टीफन को रसोफोर की दीक्षा दी गई।

उसी वर्ष अप्रैल में, षड्यंत्रों और बदनामी के परिणामस्वरूप, एल्डर वरसोनोफी को ओप्टिना पुस्तानि से स्थानांतरित कर स्टारो-गोलुत्वनि मठ का मठाधीश बना दिया गया। जब वे वृद्धि प्रार्थना सभा के बाद स्कैट से जा रहे थे, तो एल्डर वरसोनोफी ने शोकग्रस्त भाइयों को सांतवना देते हुए कहा: "मठ में हाल ही में नधिन हो चुके फादर हेग्यूमेन मार्क ने मुझे बताया था कि जब फादर मकारीय मर रहे थे, तो उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि उनके बाद संन्यासी होंगे: फादर एम्ब्रोज़, फादर हलियन और फादर अनातोलीयस, और यह कि स्कैट संन्यासियों से वंचित नहीं रहेगा। बाद के संतों में महान संतों से भी आध्यात्मिक वरदानों में बड़े पुरुष होंगे: फादर लियो, मकरयिस, एम्ब्रोज़ और अनातोली।" ऑप्टिना से फादर वरसोनोफी के स्थानांतरण के बाद, वरषिठ भिक्षुओं की परिषद द्वारा फादर नेक्टारियोस को समुदाय के आध्यात्मिक पति और संत के रूप में नियुक्त किया गया।

फादर नेक्टारियोस ने एकांतप्रिय जीवन जिया; उन्हें कम प्रोफ़ाइल बनाए रखने और अदृश्य बने रहने का तरीका आता था। वे उपमाओं और पहेलियों में बोलते थे, जिसमें पवित्र मूर्खता का एक स्पर्श होता था, और अक्सर इसमें गहरी अंतर्दृष्टि होती थी। वरषिठ के समकालीन मानते हैं कि जिसने भी उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं देखा है, वह केवल विवरणों से ही उनके बारे में एक स्पष्ट चित्र नहीं बना पाएगा; उनके चरित्र या उनके अद्भुत गुणों का आकलन करना कठिन होगा: उनकी मूर्त वनिमृता, असाधारण नम्रता और शालीनता, उनका प्रेम, और उनके व्यक्तित्व का अकथनीय आकर्षण। अपनी गहरी वनिमृता के कारण, वह स्वयं को एक वृद्ध नहीं मानते थे और हमेशा अपने बारे में इस प्रकार कहते थे: 'मैं एक नौसखिया हूँ; मैं सीख रहा हूँ; मैंने सारी समझ खो दी है। मैं पुरनियों का उत्तराधिकारी कैसे हो सकता हूँ? उनमें अनुग्रह की भरमार थी, जबकि मेरे पास तो बस एक छोटी सी झलक है।' वह आगंतुकों से भी कहते थे: "इस बारे में मेरे सेल-अटेंडेंट स्टीफन से पूछो; वह तुम्हें मुझसे बेहतर सलाह देगा, क्योंकि वह सूक्ष्मदर्शी है।" फादर नेक्टारियोस में एक अद्भुत मानवीय सादगी थी, और सबसे ज़िदी और आहत आत्मा भी उनके महान प्रेम की ईमानदारी को महसूस कर सकती थी, जिसके बारे में स्वयं संत ने एक बार कहा था: 'मेरे बच्चे! हम एक ऐसे प्रेम से

प्यार करते हैं जो कभी नहीं बदलता। तुम्हारा प्यार क्षणिक है; हमारा आज भी वैसा ही है और हजार साल बाद भी वैसा ही रहेगा।'

इस प्रकार, इस संत के मार्गदर्शन में, दुर्बल मानवीय आत्माओं के लिए इस शांत और शांतपूर्ण आश्रय में, उनके शिष्य और भावी संत, फादर सेबेस्टियन, आध्यात्मिक रूप से विकसित हुए, और उन्होंने अपने अद्भुत गुरु के प्रेम, ज्ञान और वनिमरता को अपनी आत्मा में समाहित किया।

एल्डर नेक्टारियस के दो सेल अटेंडेंट थे। वरिष्ठ सेल अटेंडेंट फादर स्टीफन थे, जिन्हें उनकी कोमलता और करुणा के लिए 'समर' के नाम से जाना जाता था, जबकि जूनियर फादर पीटर (श्वयरेव) थे [रसोफोर भिक्षु पीटर (श्वयरेव) - एक पूर्व नाविक जो क्रांति से पहले माउंट अथोस की यात्रा कर चुके थे। वह एल्डर नेक्टारियस के जूनियर सेल अटेंडेंट थे, जिनके प्रतीक सच्चे दिल से समर्पित थे और जिन्हें वे बहुत प्यार करते थे। वह सरल-दिल और थोड़े खुरदरे स्वभाव के थे। उन्होंने खदानों में काम किया था। उनकी मृत्यु एक दुर्घटना में हुई।], और उन्हें 'वटिर' के नाम से जाना जाता था; वह व्यवहार में अधिक खुरदरे और सख्त थे। जब झोपड़ी में मौजूद लोग इतने लंबे समय तक साधु की प्रतीक्षा करने के बाद हतोत्साहित होने और बड़बड़ाने लगे, तो फादर नेक्टारियस उन्हें सांतवना देने के लिए फादर स्टीफन को भेजते थे। हालाँकि, जब प्रतीक्षा कर रहे लोग उपद्रवी हो जाते थे, तो फादर पीटर बाहर आते और सख्ती से भीड़ को शांत कर देते थे।

और कभी-कभी ऐसा होता था (यह बात स्वयं फादर सेबेस्टियन ने बताई थी)। आमतौर पर, बड़े संत, फादर नेक्टारियस, अपनी कोठरी से दर से निकलते थे, दोपहर के 2 या 3 बजे। भीड़ बार-बार फादर स्टीफन को बड़े संत से यह कहने के लिए भेजती थी कि वे उनका इंतजार कर रहे हैं, और कई लोगों को घर जाना था।

फादर स्टीफन वृद्ध के सेल में जाते, जहाँ वृद्ध तुरंत कहते, 'मैं अभी तैयार हो रहा हूँ, कपड़े पहन रहा हूँ, मैं आ रहा हूँ' - लेकिन वे बाहर नहीं आते थे। और जब वह बाहर आते, तो वह सभी के सामने पति स्टीफन की ओर मुड़कर कहते: 'तुमने मुझे एक बार भी यह क्यों नहीं बताया कि इतने सारे लोग इतनी बेचैनी से मेरा इंतजार कर रहे हैं?' और पति स्टीफन क्षमा मांगते और उनके पैरों पर सरि झुकाते।

13 अप्रैल 1913 को महा शनचिर के दिन, जब शव-पोश को बाहर ले जाया जा रहा था, तब फादर स्टीफन के भाई, फादर राफेल, लगभग तीन सप्ताह की बीमारी के बाद अस्पताल में फेफड़ों के क्षयरोग से नधिन हो गए। अपने अंतिम दिनों में, उन्हें प्रतिदिन पवित्र परमप्रसाद प्राप्त हुआ और अपनी मृत्यु से एक दिन पहले, उन्हें एक स्कीमा भिक्षु के रूप में दीक्षा दी गई। जैसा कि स्कीट के वृत्तांत में वर्णित है, फादर राफेल वरिष्ठ माली के रूप में सेवा करते थे और कभी-कभी दाहिनी ओर के गायन-मंच पर गायक-प्रमुख की जगह ले लेते थे। वे अपनी मौनता और कोमलता के लिए जाने जाते थे।

वह 1917 का वह दुर्भाग्यपूर्ण वर्ष था जब फादर स्टीफन को सेबेस्टियन नाम देकर मंटल में टोंसरड किया गया (18/31 दिसंबर को स्मरण किए जाने वाले शहीद सेबेस्टियन के सम्मान में)। क्रांति भड़क उठी। रूसी राज्य की सदियों पुरानी इमारत ढह गई। मसीह के चर्च पर अत्याचार का समय शुरू हो गया।

आने वाले अपरिहार्य परिवर्तनों की आशंका में, ऑप्टिना के संन्यासी मठ में चुपचाप और बना किसी ध्यान आकर्षण किए हुए जीवन जीते रहे। चर्चों और मठों के बंद होने और उनकी संपत्ति जब्त किए जाने की खबरें उन्हें पहले ही मलि चुकी थीं। और ऑप्टिना में, मठ की दीवार पर पहले ही एक अशुभ, चुनौतीपूर्ण शिलालेख दिखाई दे चुका था, जिसमें मठ पर आकर लूटपाट करने की धमकी दी गई थी। ऐसे बयान मौखिक रूप में भी सुने गए थे।

23/10 जनवरी 1918 को, पीपुल्स कमिसर्स की परिषद के एक फरमान द्वारा ऑप्टिना पुस्तानि को बंद कर दिया गया, लेकिन मठ एक कृषि सहकारी समिति के भेष में बना रहा। कई लोग, विशेष रूप से युवा नवसंन्यासी, कृषि सहकारी समिति में काम से असंतुष्ट होकर मठ छोड़ गए, जहाँ उन पर सख्त माँगें रखी गई थीं। जो लोग रुके रहे—ज्यादातर वृद्ध भिक्षु—वे दृढ़ संकल्पित थे कि वे अंतिम क्षण तक, जब तक उन्हें बाहर नहीं निकाल दिया जाता, मठ नहीं छोड़ेंगे। वे सभी डर में जीते थे, हर दिन और हर घंटे नषिकासन, गरिफ्तारी, कारावास या मृत्यु की आशंका में रहते थे।

मठ के परिसर में 'ऑप्टिना पुस्तानि' नामक एक संग्रहालय स्थापित किया गया। सक्टे अब मौजूद नहीं था, लेकिन एल्डर नेक्टारियस अपने सेल-मेट्स के साथ एल्डर्स की झोपड़ी में रहते रहे और, यद्यपि अपने दुख के बोझ से दबे हुए थे, फिर भी आगंतुकों का स्वागत करते रहे।

1923 में, महा-उपवास के पांचवें सप्ताह के अंत में, मठ में एक परसिमापन आयोग ने काम शुरू कर दिया। चर्च की सेवाएं बंद हो गईं। भिक्षुओं को धीरे-धीरे बेदखल कर दिया गया। मठ 'ग्लावनाउका' के अधिकार क्षेत्र में आ गया। मठ की इमारतों में एक बच्चों का घर, संग्रहालय का कार्यालय और नजी फ्लैट बसा दिए गए। मठवासियों के

अधिकांश आवास संग्रहालय द्वारा छुट्टियाँ मनाने वालों को फ्लैट के रूप में करिए पर दे दिए गए। ऑप्टिनि समुदाय के अधिकांश सदस्य कोजेलस्क और आसपास के गांवों में चले गए। कुछ ने छोटे-छोटे घर खरीदे और कई लोगों के समूह में एक साथ रहते थे। उनके साथ अब बंद हो चुके शमोर्डिनी कॉन्वेंट और अन्य महिला मठों की नन भी शामिल हो गईं, जो पहले ऑप्टिनि के संतों की आध्यात्मिक देखरेख में थीं। उन संतों के लिए जनिके सरि पर छत नहीं बची थी, जनिके पास रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं था, और जनिके भविष्य की कोई संभावना नहीं थी, प्रार्थना ही उनका एकमात्र सांत्वना थी। स्कूटे में, फादर सेबेस्टियन के निर्देशों के अनुसार, बुजुर्गों की कोठरियों को अंदर और बाहर से उनकी मूल स्थिति में बहाल किया गया।

1923 में, मठ बंद होने से दो महीने पहले, फादर सेबेस्टियन को एक हाइरोडीकन के रूप में नियुक्त किया गया था।

मार्च 1923 में, एल्डर नेक्टारियोस को गरिफ्तार कर प्रांत की सीमाओं से बाहर नरिवासति कर दिया गया। कहा जाता है कि उनकी गरिफ्तारी के दौरान, जब अधिकारियों ने पादरी से आगंतुकों को मलिन से इनकार करने की मांग की, तो ऑप्टिनि के सभी वृद्ध उनके पास प्रकट हुए और कहा: 'यदि आप हमारे साथ रहना चाहते हैं, तो अपने आध्यात्मिक बच्चों को दूर न करें।' और उन्होंने इनकार नहीं किया।

पहले तो वृद्ध पुजारी गाँव प्लोखिनी (कोजेलस्क से पैतालीस वर्स्ट) में रहे, फरि वे ब्रायनस्क प्रांत के गाँव खोल्मशिची (कोजेलस्क से पचास वर्स्ट) में चले गए। बड़े भाई की गरिफ्तारी के बाद, फादर सेबेस्टियन ऑप्टिनि समुदाय के साथ कोजेलस्क में रहे और नरिवासन में बड़े भाई से अक्सर मलिन जाते थे। 1927 में, फादर सेबेस्टियन का कलुगा के बशिप द्वारा हायरोमोनक के रूप में अभिषेक किया गया। 29 अप्रैल 1928 को, बड़े भाई नेक्टारियोस का नधिन हो गया। उन्होंने अपनी पवतिर आत्मा को ईश्वर के हवाले किया, जबकि उनके आध्यात्मिक पुत्र, फादर एड्रियन रमिरेनको (बाद में रॉकलैंड के आर्चबशिप एंडर्यू, † 1978), जो कीव से आए थे, ने एपटिरैचेलियन पहना। फादर सेबेस्टियन अंतिम संस्कार में और बाद में बूढ़े की कब्र पर फूट-फूट कर रोए। बूढ़े द्वारा मृत्यु के बाद दिए गए आशीर्वाद का पालन करते हुए, कवि एक पैरिश में सेवा करने जाएँ, फादर सेबेस्टियन पहले कोजेलस्क गए, फरि कलुगा गए, और बाद में, कोजलोव में सेंट इलिया चर्च के रेक्टर, आर्चप्रीस्ट व्लादमीर आंदरेवचि नेचाएव के नमिर्त्तण पर [जो वोलोकलामसक और यूरीव के वर्तमान जीवति मेट्रोपॉलिटिन पटिरिमि (नेचाएव) के पति थे], वे कोजलोव पहुँचे और तामबोव और कोजलोव के बशिप वासयिन (प्यातनित्स्की) से सेंट जॉन द बैपटिस्ट चर्च में नियुक्ति प्राप्त की। वहाँ उन्होंने 1928 से 1933 तक, अपनी गरिफ्तारी तक सेवा की। इस अवधि के दौरान, उन्होंने कोजलोव में नवीनीकरणवादियों के खिलाफ एक अथक संघर्ष छेड़ा।

फादर सेबेस्टियन ने प्रवास में रह रहे ऑप्टिनि पुस्तनि के भाइयों के साथ संपर्क बनाए रखा। इस प्रकार, 1929 में, उन्होंने मरणासन्न हाइरोडीकन सरिल (ज्लेनको, † 19 जुलाई 1932 (पुराने संस्करण के अनुसार)) को पवतिर रहस्य प्रदान किए, जो कज्यल-ओर्दा से नरिवासन से लौटे थे और एल्डर वरसनोफी के पूर्व सचिव थे।

थोड़ी ही देर बाद, आर्चप्रीस्ट व्लादमीर नेचायेव को गरिफ्तार कर लिया गया, और फादर सेबास्टियन ने उनके परिवार: उनकी पत्नी ओल्गा और उनके बच्चों की देखभाल की ज़िम्मेदारी खुद ले ली।

पैरिश चर्च में होने वाली धार्मिक सेवाओं का भक्तपूरण माहौल ऑप्टिनि स्केट की श्रद्धेय सेवाओं से काफी अलग था, जनिका फादर अभ्यस्त हो गए थे। कभी-कभी ऐसा होता था कि किसी परव के दनि वे चर्च से बाहर नरिश महसूस करते थे। उन्हें ध्यान-वहीन संगीतमय गायन पसंद नहीं था और वे चाहते थे कि गायन मंडली स्केट में जैसा गाती थी, वैसा ही गाए। हालाँकि, कोयरमास्टर चाहता था कि गायन जोरदार और अधिक जीवंत हो, और उसे ताल पर अपना पैर पटकने में कोई आपत्ति नहीं थी। फादर इस बात पर जोर देते थे कि सेवा से पहले, कोयरमास्टर को क्या और कैसे गाना है, इस बारे में उनकी आशीर्वाद लेनी चाहिए। फादर कहते थे: "हमें इस तरह गाना चाहिए कि लोगों के मन में प्रार्थना करने और रोने की इच्छा जागृत हो।" लेकिन कोयरमास्टर ने आपत्ति जताई: 'वह वेदी है, यह कोयर है।' फरि भी फादर ने ऐसी छूट बर्दाश्त नहीं की, और इसलिए उन्होंने मठ के तरीके से, उसी तरह गाया जैसा उन्होंने आशीर्वाद दिया था।

यह भी होता था कि बड़े परवों के दनों में पुरुष गायक मंडली के सदस्य शराब के लिए पैसे माँगते थे। लेकिन फादर सेबेस्टियन ने कभी यह अनुरोध नहीं माना; और अगर मान भी लेते, तो वह 'कागोर' ही होती, और वह भी पानी मिलाकर। वे दोपहर के भोजन में उन्हें तृप्त कर खलाते, प्रत्येक को एक कमीज खरीदते, और वोदका को छोड़कर किसी भी चीज से उनका मनोबल बढ़ाते। और इसी 'तरिस्कार' के कारण, फादर सेबास्टियन को अपने पूरे जीवन भर इन पुरुषों से परेशानी झेलनी पड़ी।

कोजलोव में पादरी सेबेस्टियन के पास आध्यात्मिक बहनें जुटने लगीं। सबसे पहले आगमन हुआ अग्रपिपिना का, जो शमोर्डनो कॉन्वेंट की एक नन थी, जिन्हें पादरी सेबेस्टियन ने गायन मंडली में गाने के लिए नियुक्त किया; फरि फेवरोनिया आई, जो उसी कॉन्वेंट की एक और नन थी, जिन्हें पादरी सेबेस्टियन ने हाउसकीपर नियुक्त किया। एक दिन, अपने घरेलू काम नपिटाने के बाद, वह आराम करने के लिए आँगन में चली गई। उसके मन में विचारों का तूफान चल रहा था: "मैं यहाँ क्यों आई? फादर भी बाकी सभी पादरियों की तरह ही हैं; काम तो घर जैसा ही है।" अचानक, फादर घर से बाहर आए, उसके बगल में बैठ गए और कहा: "तुम मेरे पास क्यों आई? मैं बाकी सभी पादरियों की तरह ही हूँ।" उसे एहसास हुआ कि वह उसके सभी विचारों को देख सकता था, वह उसके पैरों पर गरि पड़ी और क्षमा याचना करने लगी। और उसे यह एहसास हुआ कि फादर सेबेस्टियन वास्तव में, बाकी सभी लोगों जैसे नहीं थे। मदर फेवरोनिया अपनी बाकी ज़िंदगी फादर सेबेस्टियन के साथ रही; वह कार्लाग में उनकी कैद के वर्षों के दौरान उनके साथ थी और अपनी मृत्यु तक करागंडा में रही।

कुछ ही समय बाद, एक व्यापारी के परिवार की दो युवतियाँ पादरी से मिलने आईं। उनमें से एक, नन वरवारा, को उसके माता-पिता ने बारह साल की उम्र में शमोर्डनो भेजा था। वे पादरी के घर शहर के कपड़ों में पहुँची: चप्पलों, नाजूक पोशाकों और दुपट्टों में। पादरी ने उन्हें देखा और मदर फेवरोनिया से कहा: "इन लड़कियों के लिए कुछ 'फेज़-शैली' के जूते, जैकेट और शॉल लाओ। उन्हें कपड़े पहनकर चर्च जाने दो।" उन्होंने बना किसी सवाल के आज्ञा मानी और उनके लिए लाए गए कपड़ों में चर्च चली गई। वहाँ, वे चूल्हे के ठीक पीछे, दहलीज के पास खड़ी रहीं, ताकि कोई उन्हें या उन युवतियों को न देखे और न घूर सके। इस तरह फादर कभी-कभी उन्हें वनिम्रता सिखाते थे।

नन वरवारा की आवाज़ बहुत अच्छी थी—एक ऑल्टो—और उसकी याददाश्त बहुत तेज़ थी। वह गायन मंडली की मुखिया भी थी। इसके अलावा, उन्हें शांतदित कहा जाता था क्योंकि वह झगड़ रहे लोगों में सुलह कराती थी। फादर उनके बारे में कहा करते थे: "अगर वरवारा एक भिक्षु होती, तो वह एक हायरोमंक होती।"

उस समय, खंडहर हो चुके मठों के अन्य भिक्षु और भिक्षुणियाँ भी कोजलोव में रह रहे थे, साथ ही सामान्य लोग भी जो पहले ऑप्टिना पुस्तनि जा चुके थे। और जो लोग ईश्वर की आत्मा की सृजनात्मक शक्त के माध्यम से सच्चे मन से मोक्ष की खोज कर रहे थे, उनके हृदय फादर सेबेस्टियन की ओर आकर्षित हुए। इससे स्थानीय अधिकारियों का ध्यान आकर्षित होना स्वाभाविक था।

25 फरवरी 1933 को, फादर सेबेस्टियन को बहनों वरवारा, एग्रपिपिना और फेवरोनिया के साथ गरिफ्तार कर जांच के लिए तम्बोव ओजीपीयू भेजा गया। पूछताछ के दौरान, जांचकर्ता ने फादर सेबेस्टियन के समान विचारधारा वाले लोगों के संपर्कों का पता लगाने की कोशिश की, साथ ही सोवियत अधिकारियों के प्रति उनके रवैये को भी जानना चाहा। इस पर फादर ने सीधा जवाब दिया: "मैं सोवियत अधिकारियों की सभी कार्रवाइयों को ईश्वर का प्रकोप मानता हूँ, और यह शासन लोगों के लिए एक दंड है। मैंने ऐसे विचार अपने करीबियों के बीच, साथ ही उन अन्य नागरिकों के बीच भी व्यक्त किए हैं जिनसे मुझे इस विषय पर बात करने का अवसर मिला है। साथ ही, मैंने कहा कि हमें प्रार्थना करनी चाहिए—भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए—और प्रेम में जीना चाहिए; केवल तभी हम इससे मुक्त होंगे। मैं चर्चों और मठों को बंद करने के लिए सोवियत अधिकारियों से बिल्कुल भी खुश नहीं था, क्योंकि यह ऑर्थोडॉक्स धर्म को नष्ट करता है" [तम्बोव क्षेत्र का एफएसबी, मामला संख्या R-12791, खंड 1]।

ओजीपीयू बाहरी लोगों से पारसल स्वीकार नहीं करता था, इसलिए पादरी के आध्यात्मिक बच्चे जो अभी भी स्वतंत्र थे, उन्होंने तम्बोव में पादरी के एक दूर के रक्षितदार को बुलाने के लिए एक टेलीग्राम भेजा। वे उसे जेल तक साथ ले गए; उसने पारसल पहुँचाया और पादरी से बात की। जहाँ तक बहनों का सवाल है, दोपहर के भोजन के समय, जब कैदियों को जेल से बाहर निकालकर आँगन पार करके कैटीन ले जाया जाता था, तो वे दरवाज़े के पास खड़ी हो जातीं और दरारों से झाँकतीं। जब फादर दरवाज़े से गुजरते, तो वे उन्हें आशीर्वाद देते।

2 जून 1933 को, ओजीपीयू (OGPU) की विशेष आयोग की गैर-न्यायिक कार्यवाही की एक बैठक में यह फैसला सुनाया गया: "आपराधिक संहिता की धारा 58-10, भाग II के तहत आरोपी स्टेपान वासिलीवचि फोमनि को, 25 फरवरी 1933 से शुरू होकर, सात साल की अवधि के लिए एक सुधारात्मक श्रम शिविर में भेजा जाए।"

फादर बैट्यूशका ने अपने बाल छोटे कटवा लिए थे और अपना सरि मुंडवा लिया था। और जब वह आखिरी बार द्वार से गुज़रा, तो वह अपने दुख के मारे सरि भी नहीं उठा सका।

तम्बोव क्षेत्रीय श्रम शिविर के चकितिसा बोर्ड ने यह स्वीकार किया कि बाएं कोहनी के जोड़ में सीमिति गतिशीलता के कारण (पुजारी ने बचपन में अपनी बाईं बांह में चोट लगाई थी), वह भारी शारीरिक श्रम के लिए अयोग्य था। आयोग के नषिकर्ष के बावजूद, फादर सेबेस्टियन को लकड़ी काटने के लिए तम्बोव क्षेत्र में भेजा गया, यह एक ऐसा काम था जसि वह करने में असमर्थ थे। उनके आध्यात्मिक बच्चों ने पता लगा लिया कि लकड़ी काटने का स्थान

कहाँ था और, दूरी की परवाह किए बिना, वे उसके लिए पारसल लाने, उसे सांत्वना देने और उसकी यथासंभव सहायता करने में सफल रहे। रविवार को, कैदियों को घर जाने की अनुमति दी जाती थी। फादर सेबेस्टियन के लिए कोजलोव के घर का रास्ता बहुत लंबा था, लेकिन जंगल के इस पार भी, एक छोटे से गाँव में, आध्यात्मिक बच्चे थे जो शनिवार की शामों को उनका इंतजार करते थे। वहाँ सब कुछ उपलब्ध था: नहाने, कपड़े बदलने, खाने, प्रार्थना करने और आराम करने के लिए एक जगह। रविवार प्रार्थना और बातचीत में बीतता था, जिसके बारे में फादर सेबेस्टियन ने खुद कहा: "ठीक ईस्टर की तरह! ऐसा लगता है जैसे आप स्वर्ग में हों!" और सोमवार को, काम के लिए जंगल में वापस जाने का समय हो गया। लेकिन उसका भी अंत हो गया। एक साल बाद, फादर सेबेस्टियन को डोलकि गाँव में करागंडा शिविर में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ वे 26 मई 1934 को पहुँचे।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यदि कोई करागंडा की उत्पत्ति की जांच करे, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इस शहर का इतिहास कुछ और नहीं बल्कि कारागार का इतिहास और 1930 के दशक के किसान 'वर्षा बस्तियों' का इतिहास है। 1930 के दशक की शुरुआत तक, करागंडा, जैसा कि है, अस्तित्व में नहीं था। केवल उस स्थान पर जहाँ अब ओल्ड टाउन [आधुनिक करागंडा के जिलों में से एक का नाम] है, एक टीले पर, एक लाल ईंटों की बाहरी इमारत खड़ी थी, जिसकी छत पर बरगंडी रंग की टनि की चादरें थीं, जिसे जार के दिनों में अंग्रेजों ने बनाया था। इसी लोगों (यानी, अंग्रेजों) ने उस जगह पर पहला परीक्षण गड्ढा खोदा, जहाँ बाद में पहली कोस्टेको खदान बनी, और पहला कोयला नकिला, जिसे ऊँटों पर ले जाया गया था। और इस स्टेप के इस हिससे में कई बसाहती गाँव थे जो सदी के मोड़ पर बसे थे – स्टारया तकिनोवका, बोल्शया मखिइलोव्का, डुबोव्का, फेदोरोव्का और डरेश्चेनोव्का – जहाँ रूसी बस्तियाँ बसी थीं और कुछ में ऑर्थोडॉक्स चर्च भी थे। 1930 तक स्थिति ऐसी ही थी, जो 'महान मोड़' का वर्ष था, जब पूरे रूस में व्यापक सामूहिकीकरण, यानि किसान वर्ग का बड़े पैमाने पर उत्पीड़न शुरू हुआ।

वर्षा बस्तियाँ

युवा राज्य की पहली पंचवर्षीय योजना के कार्यक्रम में, जिसने कम समय में अपनी शक्त को सुदृढ़ करने का लक्ष्य रखा था, मध्य कज़ाखस्तान की अछूती भूमि को विकसित करने और करागंडा कोयला क्षेत्र का दोहन करने का कार्य शामिल था। चूंकि इस कार्य के लिए अत्यंत सस्ती श्रम शक्त की आवश्यकता थी, इसलिए 1931 की शुरुआत में आंदरेई आंदरेयेविच आंदरेव की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया गया, जिसने ओजीपीयू के साथ मिलकर इस मुद्दे को हल करना शुरू कर दिया। आयोग ने 52,000 किसान परिवारों को मध्य कज़ाखस्तान नरिवासित करने का फैसला किया, जिसमें बच्चे और बुजुर्गों को मिलाकर लगभग पचास हजार लोग थे। और इस प्रकार, फरवरी-मार्च 1931 में, किसानों की बड़े पैमाने पर गरिफ्तारी शुरू हुई, जिसके बाद उन्हें काफिलों में मध्य कज़ाखस्तान के तपते मैदानों में नरिवासित कर दिया गया। शुरू में, अकमोलस्क से उस क्षेत्र तक रेलवे बनाने के लिए, जिसे बाद में करागंडा कहा जाने लगा, परिवारों के मुखिया और उनके सबसे बड़े बेटों को अकमोलस्क भेजा गया, जहाँ उन्होंने आश्चर्यजनक रूप से कम समय में लाइन का निर्माण किया। चार महीने के भीतर - यानी मई 1931 तक - यह पहले ही पूरा हो गया था। इसके बाद, रेलवे निर्माताओं के परिवारों को करागंडा क्षेत्र और ओसाकारोव जिले में भेजा जाने लगा। किसान परिवारों से खचाखच भरी ट्रेनें ओजीपीयू (OGPU) की कड़ी नगरानी में करागंडा के लिए रवाना हुईं। वे वोल्गा क्षेत्र के हर कोने से आए थे, अस्त्रखान ओब्लास्ट से लेकर चुवाशिया और मॉर्डोविया तक, पेनज़ा, तम्बोव, कर्सक, वोरोनेज़ और ओर्योल ओब्लास्ट से, और खार्कीव और ओरेंबर्ग क्षेत्रों से। उन्हें हरमेटिक रूप से सीलबंद मवेशी डब्बों में जलती हुई घास के मैदानों के पार ले जाया गया, जहाँ पूरे डब्बे के लिए सरिफ एक शौचालय का डरम था। उन डब्बों में गर्भवती महिलाएं, स्तनपान कराने वाली माताएं, बच्चे और बुजुर्ग यात्रा करते थे। लोग डब्बों में ही मरने लगे, और मृतकों को जीवित लोगों के साथ उनकी मंजिल तक ले जाया गया। एक बार फिर, करागंडा-बाल्खैश रेलवे बनाने के लिए नए आए लोगों में से सबसे मजबूत युवा पुरुषों और महिलाओं का चयन किया गया। प्रत्येक मजदूर के लिए दैनिक कोटा (सर्दियों में भी) 8 टन मट्टी था। उनके औजारों में एक ठेला, एक बेल्चा, एक कुदाल और एक फावड़ा शामिल थे। जो लोग कोटा पूरा करने में विफल रहते थे, उनका राशन काट दिया जाता था। और लोग गरि-गरि कर मरने लगे। उनके लिए कोई कब्र नहीं खोदी गई; इसके बजाय, उन्हें सीधे रेलवे की ढलान पर लटका दिया जाता और मट्टी से ढक दिया जाता। इसलिए अकमोला से बालकाश तक की यह रेलवे लाइन सचमुच हड्डियों पर खड़ी है।

तो, 1931 की गर्मियों और शुरुआती पतझड़ में, 52,000 किसान परिवारों को उस क्षेत्र में लाया गया जो बाद में करागंडा और आसपास का इलाका बना, और उन्हें बना किसी आश्रय, पर्याप्त भोजन और पानी के खुद का ख्याल रखने के लिए खुले में छोड़ दिया गया। लोग खुद खोदे गए तात्कालिक गड्ढों में बस गए, जिनमें उन्होंने खुद ही खोदा

था, और उन्हें फटे-पुराने कपड़ों से ढक लिया ताक़ावे तपती धूप और सूखी स्टेपी की तेज हवा से बच सकें। और 1931 की उस असाधारण रूप से गर्म गर्मियों के दौरान, छह साल से कम उम्र के लगभग सभी बच्चे हैजा और भूख से मर गए। बाकी बचे लोग, जिनमें दस साल के बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक शामिल थे, उन्हें मट्टी के बैरक बनाने के लिए जबरन काम पर लगा दिया गया। वे सर्दियों तक बैरकों का निर्माण पूरा नहीं कर पाए, और नवंबर में, जब बर्फ पहले ही गरि चुकी थी और कड़ाके की ठंड पड़ रही थी, लोग अधूरे, बर्ना इन्सुलेशन वाले और बर्ना हीटिंग वाले बैरकों में रहने लगे, जिनमें से कुछ की छत तक नहीं थी। 50 वर्ग मीटर के बैरक में 100 या उससे अधिक लोग ठूस दिए गए थे। और 1931-32 की सर्दियों के दौरान, बड़े पैमाने पर मौतों की एक लहर चल पड़ी। मृत्यु के मुख्य कारण ठंड, भूख, महामारी टाइफस और स्कर्वी थे। परणामस्वरूप, बस्ती-क्वार्टाइन शिविरों में कुल कसानों में से आधे से अधिक की मौत हो गई। हालांकि, मृतकों का कोई रिकॉर्ड नहीं रखा गया। केवल कमांडेंट के कार्यालयों से संलग्न दफन टीमें थीं, जो शवों को गाड़ियों पर लादकर बस्तियों के बाहरी इलाके में खोदे गए गड्ढों में फेंक देती थीं।

1932 के पतझड़ के अंत में, ओसाकारोव्सकी जल में मारे गए वशिष बस्तियों वालों की जगह लेने के लिए - जहाँ लगभग सभी ठंड से जमकर मर गए थे - मदद के लिए कुछ दल आए: कुबान के दमनग्रस्त नवासियों के कई काफ़लें। और 1933 में, जब लगभग पूरे देश में अकाल पड़ा, तो वशिष बस्तियों वालों में मौतों की एक नई लहर आ गई।

उन भयानक वर्षों के दौरान, पूरे करागंडा क्षेत्र में एक भी ऑर्थोडॉक्स चर्च नहीं था। वशिष बसने वाले गुप्त रूप से खोदे गए घरों में प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा होते थे। बाद में इन्हीं लोगों ने करागंडा चर्च के पहले समुदाय बनाए, जिनोंने 1942 से खदानों और नवगठित बस्तियों में ऑर्थोडॉक्स चर्चों और प्रार्थना घरों को खोलने के लिए याचिकाएँ दीं।

पहली पंचवर्षीय योजनाओं की योजनाओं के बारे में क्या कहा जा सकता है? बेशक, वे पूरी हुईं। पहली वर्जनि लैंड्स कार्यक्रम के वशिष बस्तियों ने हजारों-हजारों हेक्टेयर कुंवारी भूमिका खेती के काबलि बनाया; 1930 के दशक के मध्य तक, उन्होंने करागंडा क्षेत्र और ओसाकारोव्सकी जल में 25 आर्थिक रूप से मजबूत सामूहिक खेत स्थापति कर दिए थे और करागंडा कोयला क्षेत्र की पहली खदानें विकसित कर ली थीं।

लेकिन अगर कोई 1931 और 1933 के बीच यहाँ मारे गए कसान वशिष बस्तियों वालों की संख्या का हिसाब लगाए और अनुमान लगाए - यह देखते हुए कि हर चार लोगों में से केवल एक ही जीवित बचा - ऐसा पता चलता है कि अब साठ से अधिक वर्षों से, लगभग चार लाख कसानों और उनके बच्चों के अवशेष अकमोला से बालख़ाश तक फैली वशिष बस्तियों के बाहरी इलाके में और रेलवे की पटरी के नीचे, जल्दबाजी में खोदी गई कब्रों में पड़े हैं।

ठीक वैसे ही जैसे 'डेकुलाकसिड' वशिष बसाहतियों के परिवहन के मामले में, एक समान समस्या उत्पन्न हुई - कज़ाखस्तान के नरिजन स्टेप्स को विकसित करने के लिए सस्ती और कम मांग वाली मजदूरी कहाँ से लाई जाए, ऐसी मजदूरी जो पारिवारिक बंधनों से मुक्त हो और एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए तैयार हो, जिससे न तो उचित आवास, न अस्पताल और न ही स्कूलों की आवश्यकता हो, - का समाधान भी उतनी ही सरलता से किया गया।

19 दिसंबर 1931 को, मध्य कज़ाखस्तान में गुलाग की एक शाखा - कार्लाग - स्थापति करने का निर्णय लिया गया, जिससे शुरू में 'कारागंडा ओजीपीयू जायंट स्टेट फार्म' का नाम दिया गया था, और इसकी स्थापना का उद्देश्य मध्य कज़ाखस्तान के तेजी से विकसित हो रहे भारी उद्योग का समर्थन करने के लिए कृषि उत्पादन की नींव रखना था। सबसे शुरुआती नीतिदस्तावेजों में से एक में कहा गया है: "1931 में स्थापित करागंडा ओजीपीयू जायंट स्टेट फार्म को मध्य कज़ाखस्तान के विशाल क्षेत्र के विकास का सम्मानजनक और ज़िम्मेदार कार्य सौंपा गया है।" और यह विकास तब शुरू हुआ जब 1931 के अंत के करीब, राजनीतिक दमन के शिकारों के काफ़लें, अपराधियों के साथ, सोवियत संघ के सभी कोनों से सार-अर्का के प्राचीन मैदानों में आने लगे। पहले काफ़लें, जिसमें 2,567 लोग थे, को एक तंबू शिविर में रखा गया था जो चारों ओर से कांटेदार तारों से घिरा हुआ था। कैदियों की संख्या साल-दर-साल बढ़ती गई, और इसके साथ ही, विशाल सरकारी फार्म का वसितार और विकास हुआ। इसका प्रभाव क्षेत्र अलताई से बेटपाक-दला तक, 'कज़ाखस्तान के स्वटिज़रलैंड' से जैलीस्की आला-ताऊ तक फैला हुआ था। कार्लाग का क्षेत्रफल फ्रांस के आकार के बराबर था। कार्लाग की राजधानी डोलिका बस्ती (कारागंडा से 33 किलोमीटर दूर) थी; जिस प्रवेश द्वार से कैदी गुजरते थे वह काराबास स्टेशन था; और मध्य कज़ाखस्तान की पूरी असीम घास का मैदान इसके हजारों-हजार कैदियों की सामूहिक कब्रगाह बन गया।

कार्लाग के पास वास्तविक अधिकार, हथियार और परिवहन था, और उसने डाक सेवा और टेलीग्राफ को भी बनाए रखा था। यह 26 शाखाओं ('पॉइंट्स') से बना था, जो डोलिका से 2 से 400 किलोमीटर के दायरे में स्थित थीं। इन शाखाओं को एक एकल आर्थिक योजना में एकीकृत किया गया था, और ऐसा कभी नहीं हुआ कि यह योजना पूरी न हुई हो। यहाँ की परिस्थितियाँ अनूठी थीं। डोलिका के चारों ओर, इसे कसकर घेरे हुए, शिविर क्षेत्र भी उभर आए थे, जो

शविरि व्यवस्था की सभी तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सुसज्जति थे: कांटेदार तारों की छतरी वाली बाड़ें, पहरेदार मीनारें, एक नियंत्रण पट्टी जिससे जोता और जुता गया था, और प्रहरी कुत्तों द्वारा पहरे पर रखे गए गोलाकार खंभे। डोलिका के केंद्र में तीसरा सेक्शन (जिससे बाद में पहला नाम दिया गया) था - एक जेल के भीतर एक जेल, जहाँ कैदियों की सजा बढ़ाई जाती थी, उन्हें यातना दी जाती थी, और उन्हें फांसी दी जाती थी।

कारलाग में 'त्रिक' के नाम से जाना जाने वाला कारागंदा कषेत्रीय न्यायालय का एक तीन-सदस्यीय दौरा करने वाला पैनल काम करता था। सजाएँ वहीं पर सुनाई जाती थीं। सजा पाए गए लोगों को पहले से ही अन्य कैदियों द्वारा खोदे गए एक गड्ढे के किनारे घुटने टेकने के लिए मजबूर किया जाता था, और सरि के पछिले हस्से में गोली मार दी जाती थी। गोली मारे गए लोगों को रजिस्टर में 'मृत' के रूप में दर्ज किया जाता था, और उनकी व्यक्तिगत फाइलें नष्ट कर दी जाती थीं।

कारलाग की अर्थव्यवस्था फल-फूल रही थी। कारलाग में न केवल सस्ती मजदूरी की भरमार थी, बल्कि यह एक जबरदस्त बौद्धिक केंद्र भी था। इसमें विश्व-प्रसिद्ध वैज्ञानिक, सैन्य कमांडर, सांस्कृतिक हस्तियाँ, राजनेता, पादरी और भिक्षु शामिल थे। ' ' (स्टेप डिवीजनों) की कांटेदार तार के पीछे, सभी विशेषज्ञताओं के बड़ी संख्या में उच्च योग्य कृषि विज्ञानी, पशुपालक, चिकित्सा कर्मचारी और अर्थशास्त्री केंद्रित थे। कारलाग के कैदियों की रहने की स्थिति असहनीय थी। 5 फरवरी 1941 को गुलाग नरीकषकों द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट में कहा गया है:

"कैदियों को मानक बैरकों में रखा जाता है। बैरकों की दीवारें मट्टी की ईंटों से बनी हैं; अंदरूनी हस्से में दो मंजिला बंक लगे हैं। फर्श मट्टी के हैं; सर्दियों के लिए खड़ियों के फ्रेम नहीं हैं। बैरक कीचड़ भरे और नम हैं; चूल्हे रोजाना गरम नहीं किए जाते। पुरुषों की बैरक में वायु का तापमान +4° और महिलाओं की बैरक में +16° है। कई कैदियों के पास बसितर नहीं हैं। ईंधन की कमी के कारण स्नानघर, लॉन्ड्री और अनुशासनात्मक सेल में काफी रुकावटें आ रही हैं। व्यापक रूप से जूँ पाए गए, साथ ही अंडरवियर की कमी भी थी, जिससे न तो बदला जाता है और न ही धोया जाता है। 50 प्रतिशत से भी कम कैदियों को सर्दियों के कपड़े प्रदान किए गए हैं। अधिकांश लोग मौसम के लिए अनुचित कपड़े पहने हुए हैं और गर्मियों के जूते पहने हुए हैं। बैरक में या कार्य स्थलों पर, कहीं भी उबला हुआ पानी उपलब्ध नहीं है। कार्य स्थलों पर तो सामान्य पानी भी उपलब्ध नहीं है। कैदी पानी पीने के बजाय बर्फ खा रहे हैं। खाने की गुणवत्ता उसके कैलोरी मूल्य के अनुरूप नहीं है। जूते और कपड़ों की कमी के कारण कैदियों के काम पर रिपोर्ट न करने के मामले सामने आए हैं। इन कारणों से काम पर रिपोर्ट न करने वाले कैदियों को काम से इनकार करने वाला घोषित कर दिया जाता है और उन्हें इनकार करने वालों का राशन दिया जाता है। उन्हें एकांत कारावास में भी भेजा जाता है।"

कारलाग में भागने के प्रयास अक्सर होते रहते थे। उन सभी का अंत 'लक्विडेशन' (नपिटारा) में हुआ।

और इस पृष्ठभूमि में, यूएसएसआर के आंतरिक मामलों के मंत्रालय के कारागंदा राज्य फार्म (समय बदला, और नाम भी) और इसके प्रयोगात्मक कृषि स्टेशन की ख्याति पूरे देश में फैल गई। यहाँ पततागोभी, खीरा और टमाटर ने रिकॉर्ड उपज दी। पौध प्रजनकों ने अभूतपूर्व परिणाम हासिल किए। उन्होंने सर्दियों और वसंत की फसलों के साथ-साथ चारे की फसलों की नई कस्मिमें विकसित कीं। कृषि विज्ञानी मतिरोशनि, जिन्हें अनुच्छेद 58 के तहत 25 साल की सजा सुनाई गई थी, ने 'एपकियूर' आलू की कस्मिमें विकसित की और प्रति हेक्टेयर 60 टन की उपज हासिल की। इसके अलावा, एक पशु फार्म भी स्थापित किया गया। उदाहरण के लिए, मास्को में ऑल-यूनियन प्रदर्शनी में 'मोरोशका' नामक एक गाय प्रदर्शित की गई थी, जो एक साल में 12,000 लीटर दूध देती थी। मध्य-गर्मियों से देर से पतझड़ तक, भेड़ों के विशाल झुंड विभिन्न कारागंदस्काया लेबर कैम्प (कारला) प्रभागों से पूरी तरह अपने दम पर पेट्रोपावलोवस्क मांस प्रसंस्करण संयंत्र तक पहुँच जाते थे। कारलाग में एक चीनी मलि, एक कांच का कारखाना, एक सूती मलि और एक चमड़ा कारखाना था। युद्ध के दौरान, आरएमजेड की कार्यशाला संख्या 3 ने एम-82 बारूदी सुरंगें बनाईं। कैदी हर जगह काम करते थे। कारलाग ने सेना को खलाया और राज्य को अनाज, मांस, हथियार और कपड़े की आपूर्तिकी। लेकिन कैदियों को इंसान नहीं माना जाता था। उन्हें दलिया और 'अनुत्का की आँखें' जौ खलाया जाता था। हर दनि, डोलिका से न्यायाधीश कैदियों पर एक गाजर या चुकंदर लेने के लिए मुकदमा चलाने के लिए आते थे।

और यह कोई रहस्य नहीं है कि कारलाग में मृत्यु दर बेहद अधिक थी [अपने अस्तित्व के वर्षों (1931 से 1956 तक) में, कारलाग में लगभग दस लाख लोग कैद थे। लेकिन चूँकि कारलाग के अभिलेखागार आज भी वर्गीकृत हैं, इसलिए इसके पीड़ितों की संख्या का कोई अनुमान देना भी असंभव है।]

"अंततः," प्रयोगात्मक स्टेशन की एक शोध रिपोर्ट में कहा गया है, "गृह मंत्रालय के राज्य फार्म की सभी आर्थिक गतिविधियों को अत्यंत शुष्क स्टेप और अर्ध-मरुभूमियों में भूमिके सफल कृषि विकास के एक बड़े पैमाने

पर उत्पादन प्रयोग के रूप में माना जा सकता है।" और ऐसा ही था। लेकिन यह सब कैदियों द्वारा, अपनी जान की कीमत पर, डजिइन और नरिमति किया गया था।

कारागंदा में एनकेवीडी शविरि में फादर सेबास्टियन की नजरबंदी

इसलिए, मई 1934 में, ऑप्टिना पुस्तानि के एक हायरमोंक, फादर सेबास्टियन को, काफलैं द्वारा मध्य कज़ाखस्तान के तपते मैदानों में कार्लाग की एक शाखा में लाया गया।

कैंप में बताया अपने समय को याद करते हुए, फादर सेबास्टियन ने कहा कि वहाँ उन्हें पीटा और यातना दी गई, और उन्होंने उनसे एक ही बात की माँग की: ईश्वर का त्याग करें। उन्होंने जवाब दिया: "कभी नहीं।" फिर उन्हें अपराधी कैदियों के साथ एक बैरक में भेज दिया गया। उन्होंने कहा, "वहाँ, वे तुम्हें जल्दी से फिर से शक्ति कर देंगे।" कोई भी कल्पना कर सकता है कि कैदियों ने एक वृद्ध और कमजोर पादरी के साथ क्या किया होगा।

उनके खराब स्वास्थ्य के कारण, फादर को ब्रेड काटने के काम पर, और बाद में शविरि के भीतर गोदाम के गार्ड के रूप में नियुक्त किया गया। अपनी रात की पाली के दौरान, फादर खुद को कभी सोने नहीं देते थे; वे समय प्रार्थना में बताते थे। और अधिकारी, जब नरीक्षण के लिए आते थे, तो हमेशा उन्हें जागते हुए पाते थे। फादर ने बताया कि कैसे कभी-कभी कैंप में फलिमें लाई जाती थीं और सभी कैदियों को क्लब में इकट्ठा किया जाता था। उन्होंने याद किया, "मैं सनिमा नहीं गया, बाकी सब चले जाते थे, लेकिन मैं अपने सहकर्मी से कहता था: 'तुम मेरी जगह सनिमा जाओ, और मैं तुम्हारी रखवाली करूँगा।'" और अगर उसे जाना ही पड़ता, तो बट्युष्का क्लब में जल्दी आकर किसी सुनसान कोने में या किसी बेंच के नीचे लेट जाता। वह सोता, आराम करता और अपनी प्रार्थनाएँ करता।

अपनी कैद के अंतिम वर्षों में, बट्युष्का को गार्ड की ड्यूटी से मुक्त कर दिया गया था और वह डोलकि के पास स्थिति, कैंप के तीसरे सेक्शन में एक गार्ड की झोपड़ी में रहता था। वह टीएसपीओ (केंद्रीय औद्योगिक सब्जी उद्यानों) के नविसियों के लिए बैलों पर पानी ढोया करता था। कभी-कभी, सर्दियों में, वह पानी लाता, एक बैल के पास जाता और अपनी सुन्न हाथों को उसकी देह की गर्मी से गर्म करता। वे उसके लिए कुछ दस्ताने लाते और उन्हें उपहार के रूप में दे देते। लेकिन अगले दिन वह फिर से बिना अपने दस्तानों के आ जाता (या तो उन्हें किसी को दे चुका होता या वे उससे छीन लिए गए होते) और एक बार फिर से अपने हाथ बैल से गर्म करता। वह जो कपड़े पहनता था, वे पुराने और फटे-पुराने थे। जब पादरी रात में ठंड से जम जाते, तो वे मवेशियों के खाने के पात्र में चढ़ जाते और जानवरों की शरीर की गर्मी से खुद को गर्म करते। शर्मि शविरि के नविसियों ने उन्हें खाना दिया - पाई और चर्बी। वे जो कुछ भी खा सकते थे, वह खाते, लेकिन चर्बी को अपने वार्ड के कैदियों के लिए वापस ले जाते। "मैं जेल में था," फादर ने याद किया, "लेकिन मैंने अपना उपवास नहीं तोड़ा। अगर वे मुझे मांस के टुकड़े के साथ कुछ दलिया देते, तो मैं उसे नहीं खाता; मैं उसे अतिरिक्त ब्रेड के लिए बदल लेता।"

उनकी बहनें वरवारा और फेवरोनिया, जिन्हें बट्युष्का के साथ गरिफ्तार किया गया था, उन्हें जेल की सजा नहीं दी गई। उनकी बहन एग्रपिना को सुदूर पूर्व भेजा गया था, जहाँ से उन्हें एक साल बाद रहि कर दिया गया। उन्होंने बट्युष्का को अपने स्वदेश लौटने के इरादे के बारे में लिखा, और उन्होंने उन्हें तुरंत कारागंदा आने का आशीर्वाद दिया। 1936 में वह आई, उन्हें फादर से मलिन की अनुमति मिली, और उन्होंने सुझाव दिया कि वह बोलशाया मखाइलोवका गाँव के पास, कार्लाग के करीब एक छोटा सा घर खरीद लें, वहीं बस जाएँ, और हर रविवार को किसी भी गुजरते वाहन से उन्हें देखने आएँ, "जो भी कार उन्हें मलि सके।" दो साल बाद, उसकी बहनें फेवरोनिया और वरवारा कारागंदा पहुँचीं। और नज़िनयाया स्ट्रीट पर एक छोटा सा घर खरीदा गया - एक पुरानी झोपड़ी जिसकी छत लटक रही थी। उन्होंने दो कमरे, एक रसोई और एक बरामदा बनाया। वहाँ एक कुएँ के साथ एक सब्जी का बगीचा भी था। बहनों एग्रपिना और वरवारा को नोवी गोरॉड के अस्पताल में काम मलि गया, जबकि फेवरोनिया, नरिक्षर होने के कारण, सामूहिक खेत में काम करती थीं। अन्य नन भी कारागंदा में आई: कीरा, मार्था और मैरी। वे तकियोवका में बस गईं। बहनें स्थानीय विश्वासियों को जानने लगीं और धीरे-धीरे सामूहिक प्रार्थना के लिए इकट्ठा होने लगीं। जब यह पता चला कि फादर सेबास्टियन डोलकि में हैं, तो विश्वासियों ने उनकी मदद करना शुरू कर दिया। रविवार को, बहनें वार्ड में फादर सेबास्टियन से मलिन जाती थीं। भोजन और साफ चादरों के अलावा, वे पवित्र उपहार, एक पेक्टोरल क्रॉस और एक एपिटैरेकलियन भी लाती थीं। वे सभी एक साथ जंगल में जाते; फादर स्वयं कम्युनियन ग्रहण करते और बहनों का पाप-स्वीकार सुनते और उन्हें कम्युनियन देते थे। कैदी और शविरि के अधिकारी फादर के करीब आ गए। उनके दिल में बसे प्रेम और विश्वास ने द्वेष और शत्रुता को जीत लिया। उन्होंने शविरि में कई लोगों को ईश्वर में आस्था का मार्ग दिखाया—और केवल आस्था ही नहीं, बल्कि सिच्ची आस्था का। और जब फादर रहि हुए, तो शविरि में उनके आध्यात्मिक बच्चे थे, जो अपनी सजा पूरी करने के बाद, उनसे मलिन के लिए मखाइलोवका की यात्रा करते थे। कई

साल बाद, जब मखिाइलोवका में एक चर्च खुला, तो सेंटरल लेबर कैप की डोलसिकी शाखा के नविसी वहां गए और उन्होंने उस सममानति वृद्ध पुरोहित में अपने पूर्व पानी ढोने वाले को पहचान लिया।

उनकी कैद की अवधि समाप्त होने की थी। फादर को 29 अप्रैल 1939 को, स्वरगारोहण के पर्व की पूर्व संध्या पर, शविरि से रहि कर दिया गया। वह अपने नवोदितों के पास एक बहुत छोटे से घर में गए, जहाँ फर्श पर पीली मट्टी का लेप लगा था, और रसोई में, एक बड़ी संदूक के ऊपर एक परदे के पीछे, उनका बसितर था। और इस प्रकार वे वहाँ रहते थे - मदर फेशा, मदर वरिया, मदर गुरुशा, और बाद में मदर एकेटेरिना, जो जेल से उनके साथ शामिल होने आई थीं, फादर के साथ। वे सुबह जल्दी उठते, नरिधारति प्रार्थनाएँ पढ़ते, बहनें काम पर जाती थीं, जबकि फादर घर पर रहते थे। वह पानी लाते, दोपहर का खाना बनाते, और जूतों की मरम्मत और सफाई करते थे। बहनें इससे शर्मिदा थीं, लेकिन टकिोनोवका में रहने वाली वरिष्ठ ननों ने उनसे कहा: 'तुम नहीं समझती कि पतिताजी क्या कर रहे हैं, इसलिए चुप रहो।' धर्मोपचार गुप्त रूप से किया जाता था, और हर दिन पतिताजी दैवीय सेवाओं का दैनिक चक्र पढ़ते थे।

युद्ध से पहले, वह तम्बोव क्षेत्र की यात्रा पर गए थे। फादर के आध्यात्मिक बच्चे, जो कई वर्षों से शविरि से उनकी वापसी का इंतजार कर रहे थे, इस उम्मीद में थे कि वह रूस में उनके साथ रहेंगे। लेकिन फादर, अपनी इच्छा पूरी करने के बजाय ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित होने की चाह में, सुखोटकि गाँव में एक सप्ताह बताने के बाद, एक बार फरि करगंदा लौट आए, उस भाग्य की ओर जो दैवीय व्यवस्था द्वारा उनके लिए नरिधारति किया गया था।

उन वर्षों में, करागंदा की आबादी में कोयला खदानों में 'स्थायी रूप से' नयिकृत वही विशेष बसाहती और कारलाग के पूर्व कैदी शामिल थे, जिनमें 'करागंदा में स्थायी नरिवासन' का प्रमाण पत्र देकर रहि किया जा रहा था। शहर की आबादी के दो-तहाई से अधिक के पास पासपोर्ट नहीं थे। नरिवासति अंधेरे गोदामों, खुदाई करके बनाए गए कमरों और छोटे झोपड़ियों में रहते थे, और उन्हें हर दस दिनों में कमांडेंट के कार्यालय में हाजिरी लगाने के लिए बाध्य किया जाता था।

करागंदा एक ऐसा शहर था जो भूख से तरस्त था; युद्ध और युद्धोत्तर वर्षों के दौरान रोटी की स्थिति विशेष रूप से गंभीर थी। पादरी स्वयं अपने राशन कार्ड का उपयोग करके रोटी लेने के लिए दुकान पर जाता था। वह एक साधारण बूढ़े आदमी की तरह, एक बहुत ही सादे ग्रे सूट में कपड़े पहनता था। और इस तरह वह वहाँ पैदल जाता और कतार में लग जाता। जब उसकी बारी आती, तो लोग उसे एक तरफ धकेल देते, तो वह कतार के अंत में वापस चला जाता - और ऐसा एक से अधिक बार हुआ। लोगों ने यह देखा और, उसकी सौम्यता और वनिम्रता को देखते हुए, फादर को कतार में आगे आने देने और उसे रोटी देने लगे।

1944 में, फादर और बहनों ने जापाडनाया स्ट्रीट पर एक बड़ा घर खरीदा। फादर घर के चारों ओर घूमे, एक माहिरि की नज़र से सब कुछ देखा और कहा कि क्या करना है और कैसे करना है। "लेकिन क्यों, फादर," बहनों ने आपत्तजिताई, "हम अपनी बाकी ज़िंदगी कज़ाखस्तान में नहीं बताने जा रहे हैं! "जंग खत्म होते ही, हम आपके साथ अपने वतन वापस जाएँगे।" "नहीं, फादर," बहनों ने कहा, "हम यहीं रहेंगे। यहाँ की ज़िंदगी बलिकुल अलग है, और लोग भी। यहाँ के लोग दिलदार, मेहनती हैं, और उन्होंने भी काफी तकलीफें झेली हैं। तो, मेरी प्यारी बहनों, हम यहीं रहेंगे। हम यहाँ अधिक उपयोगी होंगे; आखिर यह हमारा दूसरा घर है—पछिले दस वर्षों में हम इसकी आदत डाल चुके हैं।" और इस तरह वे अपने जीवन भर के लिए करागंदा में ही रहे। वे सभी फादर के साथ मखिाइलोव्सकोये कबरसितान में दफन हैं। फादर ने स्वयं अपनी तीन ननों - एग्रपिपिना, वरवारा और एकेटेरिना - को दफनाया, भले ही वे उनसे बहुत छोटी थीं। नज़िन्याया स्ट्रीट पर डाकुओं के छोटे से घर पर हमला करने के बाद उन सभी को दिल की बीमारी हो गई। वे मौत के डर से कांप रहे थे, और इससे उनकी सेहत खराब हो गई। माँ फेवरोनिया उस रात घर पर नहीं थीं, और वे उन तीनों से भी ज्यादा समय तक जीवित रहीं। फादर ने, मुसीबत की आशंका को भांपते हुए, अपने नवसखियों से मेलकोम्बानाट जल्लि में जाने के लिए जोर दिया। लेकिन वह बी. मखिाइलोवका से बहुत दूर था, और नन चर्च से दूर जाने के लिए बलिकुल भी तैयार नहीं थीं। उन्होंने एल्डर की सलाह पर कभी ध्यान नहीं दिया, जिसके कारण उन्हें भुगतना पड़ा, और वे एक के बाद एक दिल का दौरा पड़ने से मर गए। हमले के कुछ ही समय बाद, पादरी ने उनके लिए चर्च के बगल में एक घर खरीद लिया, लेकिन तीनों ननों के स्वास्थ्य पर पहले ही बुरा असर पड़ चुका था। उनके मठ के नाम अलेक्जेंड्रा, वेरा और एलेना थे। पादरी की मृत्यु के बाद मदर फेवरोनिया का मुंडन किया गया, और उन्होंने थेकला नाम अपना लिया। उनका नधिन 1976 में हुआ।

उस समय, 1944 में, जापाडनाया स्ट्रीट पर बने नए घर में एक छोटा सा घरेलू चैपल स्थापित किया गया था, और फादर सेबास्टियन वहाँ गुप्त रूप से दवि्य लटिर्जी का आयोजन करते थे। फादर का घर हमेशा साफ-सुथरा, शांत और असाधारण शांतिकी भावना से भरा रहता था। कमरे आइकन (धार्मिक चित्रों) से भरे थे, जिनके सामने तेल के दीयों की रोशनी धीरे-धीरे जगमगाती थी।

समय बीतता गया। मखाइलोवका के नवासियों ने पादरी के बारे में सुनकर उन्हें अपने घरों में आमंत्रित करना शुरू कर दिया। उनके पास धार्मिक सेवाएँ करने का कोई अधिकार नहीं था, लेकिन पादरी ने कभी कोई नमिंत्रण अस्वीकार नहीं किया। कारागंदा के लोग वफादार थे – वे उससे विश्वासघात नहीं करेंगे। न केवल मखाइलोवका में, बल्कि अन्य जिलों में भी, लोग फादर से प्रेम करने लगे और उनकी प्रार्थनाओं की शक्ति में विश्वास करने लगे। देश के सभी कोनों से, एल्डर के आध्यात्मिक बच्चे कारागंदा की ओर आने लगे – आध्यात्मिक मार्गदर्शन की तलाश में भिक्षु और आम लोग। वे रूस के यूरोपीय भाग, यूक्रेन, साइबेरिया, और उत्तरी तथा मध्य एशिया के दूर-दराज के इलाकों से आए थे। उन्होंने सभी का प्रिय से स्वागत किया और उन्हें अपने नए परिवेश में बसने में मदद की। उस समय कारागंदा में घर ससते थे। वे विशेष बस्तियों के लोग थे, जिन्होंने समय के साथ अपने लिए नए घर बनाए और अपनी मट्टी की झोपड़ियाँ बेच दीं। पादरी उन लोगों को घर खरीदने के लिए पैसे देते थे जिनके पास घर नहीं था, या उन लोगों के लिए धन में इजाफा करते थे जिनके पास पर्याप्त पैसे नहीं थे। यह पैसा अंततः उन्हें वापस कर दिया जाता था, और वह इसे दूसरों को दे देते थे, और यह सलिसला चलता रहता था।

कारागंदा के आसपास नई खदानें और पत्थर की खदानें खुल रही थीं, और काम भी मलिना मुश्किल नहीं था। जल्द ही मखाइलोवका में 'फादर के लोगों' की संख्या बहुत बढ़ गई, और उनकी संख्या बढ़ती ही चली गई, जबकि फादर हमेशा खुशमज्जा, सभी के प्रति प्रिय करने वाले, दयालु और सभी के लिए सुलभ रहते थे। और एक बार, जब वह टकिनोवका के आगे के सामूहिक कब्रस्तान तक नन मारिया और मारथा के साथ जा रहा था—जहाँ, कब्रस्तान के ठीक केंद्र में, सामूहिक कब्रें थीं जिनमें भूख और बीमारी से मरने वाले दो सौ मृत विशेष बसने वालों को हर दिन रखा जाता था और बना किसी उचित दफन के दफना दिया जाता था, बना टीलों, बना क्रॉस के – सब कुछ देखकर और सब कुछ सुनकर, बुजुर्ग ने कहा: 'यहाँ, दिन-रात, इन शहीदों की सामूहिक कब्रों पर, जमीन से आकाश तक मोमबत्तियाँ जलती हैं।' और फादर सेबेस्टियन ने उन सभी के लिए प्रार्थना की।

कारागंदा बढ़ा और विकसित हुआ, जसिमें पुराने बसाहती गांव—जो स्टेपी, खदानों और पत्थरखानों के विशाल वसितार से वभिजित थे—1930 के दशक के विशेष पुनर्वासियों की बस्तियाँ, और युद्ध के वर्षों के दौरान वोल्गा क्षेत्र से कारागंदा में नरिवासित किए गए जर्मनों के गांव शामिल हो गए। सबसे पहले कोपाय-गोरोद का नरिमाण हुआ, फिर पहली और दूसरी खानों के बस्तियाँ बनीं; इसके बाद, बड़ी खानों के पास ओल्ड टाउन का नरिमाण हुआ; और युद्ध के बाद, एक क्षेत्रीय औद्योगिक केंद्र के अनुरूप बड़े पैमाने पर बहु-मंजिला न्यू टाउन का नरिमाण शुरू हुआ। मकिहाइलोवका सबसे नजदीकी जिला नकिला, जो न्यू टाउन के ठीक बगल में स्थित था। और करांडागा में केवल एक ही चर्च था – खदान संख्या 2 पर।

नवंबर 1946 में, पुरोहित के आशीर्वाद से, बोल्शया मखाइलोवका के ऑर्थोडॉक्स नवासियों ने एक धार्मिक समुदाय को पंजीकृत करने के लिए संबंधित स्थानीय अधिकारियों को एक आवेदन प्रस्तुत किया। स्थानीय स्तर पर सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने में वफिल रहने के बाद, श्रद्धालुओं ने अल्मा-आता में कजाकस्तान में धार्मिक मामलों के आयुक्त को एक याचिका प्रस्तुत की। इस याचिका के जवाब में, नवंबर 1947 में कारागंदा क्षेत्रीय कार्यकारी समिति को एक आदेश मिला: "पुजारी, सेबेस्टियन फोमनि को अनधिकृत चर्च में प्रार्थना सभा आयोजित करने से प्रतिबंधित किया जाए।" 1947 और 1948 दोनों में अल्माटी को और आवेदन भेजे गए। विश्वासियों ने अधिकारियों से नविदन करने के लिए मास्को की यात्रा की और अल्मा-आटा डायोसीन प्रशासन से समर्थन मांगा। महान देशभक्त युद्ध के दौरान मारे गए सैनिकों के माता-पिता ने करांडाज क्षेत्र के सैन्य कमिश्नर को लिखा; उनका एकमात्र सांत्वना अपने उन बेटों के लिए प्रार्थना करना था जो युद्ध में मारे गए थे: पत्र में कहा गया, "लेकिन हमसे तो इस अवसर से भी वंचित किया जा रहा है" [काज़ाख एसएसआर की मंत्रपरिषद के अधीन धार्मिक मामलों की परिषद, अधिकृत प्रतिनिधि के साथ पत्राचार, फाइल 1, पृ. 12; फाइल 4, पृ. 45.]

नोवी गोरॉड के अलावा, बोल्शेमकिहाइलोवस्की पैरिश में मेल्कोम्बानाट जिले, फेदोरोव्स्की कोयला पट्टी, मकिहाइलोवस्काया रेलवे स्टेशन, सरानी और डुबोव्का जिले, 10 ईट भट्टियाँ, नोवोस्ट्रोयका जिला, पाँच करागंदा कोयला खुली खदानों के जिले, कई कोयला खदानें और अन्य शामिल थे। (कुल 20 बस्तियाँ)। फिर भी वहाँ केवल एक पुरोहित था, जिसकी सहायता केवल नन ही करती थीं।

विश्वासियों ने प्रार्थना गृह को पंजीकृत करने का अनुरोध किया, कम से कम खदान संख्या 2 पर स्थित मौजूदा करीव प्रार्थना गृह की एक शाखा के रूप में।

परिणामस्वरूप, 1951 में, मखाइलोवस्की प्रार्थना घर, जहाँ कुछ समय से सेवाएँ चल रही थीं, को अंततः बंद कर दिया गया। 1953 में ही बोल्शेमकिहाइलोवस्की प्रार्थना घर में चर्च के संस्कार और अनुष्ठान – बपतिस्मा, अंतिम संस्कार सेवाएँ, विवाह और पाप-स्वीकृति – करने की आधिकारिक अनुमति दी गई। अब बहुत अधिक संख्या में

लोग फादर की ओर मुड़ सकते थे, लेकिन वह केवल गुप्त रूप से, शरदधालुओं के नज्जी घरों में ही धर्मवधिका अनुष्ठान कर सकते थे। और एक थका देने वाले दिन के काम के बाद, अपनी नज्जी प्रार्थनाओं के बाद, फादर, जो छोटे और दुबले-पतले थे, लंबे काले कोट और काली टोपी पहनकर, सुबह तीन बजे करगंडा की अंधेरी सड़कों पर अपनी हल्की, फुरतीली चाल से एक पहले से तय घर की ओर चल पड़ते थे, जहाँ ऑर्थोडॉक्स वशिवासी एक-एक या दो-दो करके इकट्ठा होते थे। मुख्य पर्व के दिनों में, सुबह एक बजे से पूरी रात की प्रार्थना सभा आयोजित की जाती थी, और एक छोटे से वरिष के बाद, दैवीय अनुष्ठान किया जाता था। रोशनी को बाहर रखने के लिए खडिकियों को कंबलों से कसकर ढक दिया जाता था, जबकि घिर के अंदर उज्ज्वल और भीड़भाड़ वाला माहौल होता था। सेवा भोर से पहले समाप्त हो जाती थी, और उसी तरह, अंधेरी सड़कों पर, लोग एक-एक या दो-दो करके अपने घरों को लौट जाते थे।

लगभग इसी समय महान आध्यात्मिक गहराई वाली दो नन - मदर अग्निया और मदर अनास्तासिया - करागंडा पहुँचीं; फादर सेबास्टियन उन्हें ऑप्टिनि पुस्तनि में अपने समय से अच्छी तरह जानते थे। मदर अग्निया - जो एल्डर वरसोनोफी की एक आध्यात्मिक बेटी और एक प्रतभिषाली कलाकार थीं - को जनामेनो-सुखोट्सि की मठ में कम उम्र से ही आइकन पेंटिंग की कला में प्रशिक्षित किया गया था। वह बहुत पढ़ी-लिखी थीं, पवित्र पत्रों की रचनाओं से पूरी तरह परिचित थीं, और दिल से बहुत संजीदा और बुद्धिमान थीं। मदर अनास्तासिया ने एल्डर नेक्टारियोस के आशीर्वाद से, पवित्र मूर्खता के तप का अभ्यास किया। वह अक्सर ऐसे कार्य करती थीं जो सामान्य ज्ञान के विरुद्ध थे, जिनका महत्व बाद में ही स्पष्ट होता था। और वह सभी के प्रति अपनी चिंता और अपनी आत्मा की दैवीय दया को एक बाहरी कठोरता के पीछे छिपाने की कोशिश करती थीं, कभी-कभी अपने आस-पास के लोगों से तीखी बातें कहती थीं और उनके पापों और कमियों को उजागर करती थीं। लेकिन केवल वे लोग जो माता अनास्तासिया से अभी परिचित नहीं थे, उनसे डरते थे; जो उन्हें जानते थे, उन्होंने उन्हें उसी प्रेम और बड़े सम्मान का बदला दिया। ये दोनों वृद्ध महिलाएँ दैवीय वरदानों से संपन्न थीं। वे लोगों को बखूबी समझ जाती थीं और कई सूक्ष्म भविष्यवाणियाँ करती थीं, फरि भी, गहरी वनिमरता से युक्त, वे पति सेबास्टियन के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में रहती थीं।

इस बीच, चर्च खोलने के प्रयास जारी रहे। अलेक्जेंडर पावलोवचि क्रविनोसोव, जो फादर सेवेस्टियन के प्रति समर्पित व्यक्ति थे, बार-बार मास्को की यात्रा करते रहे और अंततः 1955 में, बोलशाया मखाइलोवका में एक धार्मिक समुदाय के पंजीकरण के लिए जो दस्तावेज़ उन्होंने हासिल किया था, उसे वापस ले आए।

आवासीय इमारत को चर्च में बदलने का नवीनीकरण कार्य शुरू हुआ। फादर सेवासियन ने हर चीज़ की देखरेख की। दीवारों के बीच के विभाजन हटा दिए गए, और जंगली आश्रमों के प्राचीन चर्चों में पाए जाने वाले समान, एक नीले प्याज-नुमा गुंबद वाला छत बनाया गया। स्थानीय अधिकारियों, जो काम की प्रगति पर बारीकी से नज़र रख रहे थे, ने चर्च की छत को एक सेंटीमीटर भी ऊपर उठाने पर कड़ाई से रोक लगा दी। तब पादरी ने लोगों को एक रात गुप्त रूप से इकट्ठा होने और उस रात चर्च का फर्श एक मीटर नीचे करने का आशीर्वाद दिया। लोगों ने अपनी फावड़ियाँ उठा लीं, और रात भर में, 50 घन मीटर मट्टी टुकड़ों से ले जाई गई। परिणामस्वरूप, फर्श के ऊपर छत पहले की तुलना में एक मीटर अधिक ऊँची हो गई थी। फर्श को जल्दी से तख्तों से ढक दिया गया, और सुबह तक चर्च में प्रार्थना सभा चल रही थी।

आँगन में एक इमारत बनाई गई, जसै उन्होंने 'गार्डहाउस' कहा; इसमें धीरे-धीरे चार कमरे जोड़े गए: रसोई के साथ एक भोजनशाला, ननियों के लिए एक कोठरी, और एक बड़ा, उज्ज्वल कमरा एक गर्म प्रवेश-कक्ष के साथ, जो पुजारी का कोठरी बन गया। आँगन में और आगे, ईस्टर मैटनिस और एपफिनी जल आशीर्वाद के उत्सव के लिए एक खुली हवा वाली चैपल स्थापित की गई; रसोई में आगंतुकों के लिए बंक स्थापित किए गए, जो विशेष रूप से त्योहारों के दिनों में बहुत बड़ी संख्या में आते थे (कुछ साल बाद, सेंटि काउंसिल के आदेश पर बंक हटा दिए गए)। मखाइलोवका के निवासियों ने वे आइकन लाना शुरू कर दिया जो उन्होंने संरक्षित करने में कामयाबी हासिल की थी। कुछ आइकन उन्होंने तब बचाए थे जब 1928 में पुरानी मखाइलोवका चर्च बंद कर दी गई थी। इस प्रकार, पुरोहिती ने आइकनोस्टेसिस के भीतर 'कवकि टू हयिर' (शीघ्र सुनने वाले) की आइकन रखने का फैसला किया, जो बोलशाया मखाइलोवका के पहले बसने वालों - बेलारूस के प्रवासियों - द्वारा माउंट अथोस पर बनवाई गई अद्भुत सुंदरता की एक कृति थी। मदर अग्निया ने आइकनोस्टेस के लिए सुसमाचार के साथ उद्धारकर्ता का एक आइकन, ईश्वर की माता के आइकन के समान आकार में चित्रित किया। उन्होंने सेंट माइकल चर्च के लिए कई अन्य आइकन भी चित्रित किए। चर्च के वेस्टमेंट, पूजा-संबंधी पुस्तकें और पवित्र पत्रों के लेखन कारलाग के पूर्व कैदी, प्रोटोडीकन जैकब द्वारा मास्को से भेजे गए थे। और 1955 में, प्रभु के स्वर्गारोहण के महान पर्व पर, बोलशाया मखाइलोवका में परम पवित्र माता ईश्वर की जन्मतथि के सम्मान में चर्च का अभिषेक किया गया।

फादर स्वयं अपने पुरोहितों का चयन करते थे। पहले वे उन्हें देखते थे, फिर उन्हें बुलाकर कहते थे: 'तुम्हें पुरोहित बनना होगा।' ऐसा ही अलेक्जेंडर पावलोवचि क्रवोनोसोव के साथ हुआ, जो क्पेत्तीय कार्यकारी समिति में कृषि क्पेत्तर में एक वरिष्ठ पद पर थे। वे इन शब्दों से डर गए; वे घर चले गए और सो नहीं सके – वे रो पड़े। लेकिन उन्होंने अवज्ञा करने की हिम्मत नहीं की; वे फादर के पास गए और कहा: "मुझे आशीर्वाद दें, मैं मान गया हूँ।" – "बहुत अच्छा। कुछ समय के लिए पढ़ाई करो, और फिर तुम दीक्षा ग्रहण करने के लिए अल्मा-आटा जाओगे।"

एलडर सेबास्टियन का अल्माटी और कज़ाखस्तान के मेट्रोपोलिटन निकोलस (मोगिलेव्स्की) को लिखा गया एक पत्र संरक्षित है:

"आपकी उत्कृष्टता, पवतिर बशिप निकोलस, मैं आपका पवतिर आशीर्वाद मांगता हूँ। आपका नवसखिआ, अयोग्य सेबास्टियन। हे पवतिर प्रभु, मैं आपसे वनिती करता हूँ, यदासंभव हो तो अलेक्जेंडर पावलोवचि क्रवोनोसोव को पुरोहित के रूप में नियुक्त करें, क्योंकि मेरा स्वास्थ्य बगिड़ रहा है और मुझे पैरिश की सेवा करना बहुत मुश्किल हो रहा है। अब लेंट का समय आ रहा है, और पाप-स्वीकार और पवतिर कम्युनियन के लिए बहुत से लोग आ रहे हैं, इसलिए मेरे लिए यह पवतिर कार्य अकेले करना कठिन है। अतः मैं, एक पापी, नविदन करता हूँ कि आप मेरी और मेरे पैरिशवासियों की प्रार्थना को अस्वीकार न करें, और अलेक्जेंडर पावलोवचि को पुरोहित नियुक्त करें। अलेक्जेंडर पावलोवचि एक अच्छे चरतिर वाले, संयमी, और हर तरह से पुरोहित के पद के योग्य व्यक्ति हैं।"

अलेक्जेंडर पावलोवचि क्रवोनोसोव के बारे में थोड़ा और कहना उचित होगा। अपनी युवावस्था में, उन्होंने शमोर्डनी कन्वेंट का दौरा किया, और वहाँ रहने वाली धन्य पेलैजिया ने उनके जीवन के भवषिय के मार्ग के बारे में उनसे वसितार से बात की। उन्होंने उदाहरण के लिए कहा कि वह ऑर्थोडॉक्स से मुंह मोड़ देगा, वभिनिन धार्मिक और राजनीतिक आंदोलनों में शामिल होगा, और अपने जीवन के अंत में 'आर्कमिंड्राइट दवियेव' बन जाएगा। उनके शब्द बाद में सच साबित हुए। उसने वास्तव में ऑर्थोडॉक्स से मुंह मोड़ लिया, पुराने विश्वासियों में शामिल हो गया, और अन्य धार्मिक आंदोलनों में भी शामिल हो गया। लेकिन जब उनकी मुलाकात करागांडा में एलडर सेबास्टियन से हुई, तो एलडर का उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि वे ऑर्थोडॉक्स धर्म में दृढ़ता से और अपरिवर्तनीय रूप से स्थापित हो गए और उन्हें पादरी के रूप में नियुक्त किया गया। फादर अलेक्जेंडर एक दयालु, सनेही पादरी और यीशु प्रार्थना के अभ्यासी बन गए। अपनी मृत्यु तक, वह धन्य पेलagia की भवषियवाणी के पूरा होने की प्रतीक्षा करते रहे और कहा करते थे: "उन्होंने मेरे लिए जो कुछ भी भवषियवाणी की थी, वह सब सच हो गया है। केवल एक बात पूरी नहीं हुई है।" लेकिन अगर बड़ी तस्वीर देखी जाए, तो सब कुछ पूरा हो गया है। इस भवषियवाणी से, यह नषिर्कष निकाला जा सकता है कि एलडर सेबास्टियन ने करागांडा में 'दवियेवो मठ' की स्थापना की—यानी, दवियेवो समुदाय के समान एक महिला समुदाय। एलडर की मृत्यु के बाद, फादर अलेक्जेंडर मठाध्यक्ष बने। इसका मतलब है कि ईश्वर की दृष्टि में, वह 'डाइवेवो के आर्चमिंड्राइट' थे, जिसकी भवषियवाणी धन्य पेलagia ने की थी। फादर अलेक्जेंडर का 5 जुलाई 1971 को प्रभु में नदिन हो गया।

एक अन्य पादरी, सेराफिम निकोलेवचि टरुफानोव, को बहुत पहले उनके पति के अनुरोध पर अभषिकित किया गया था, जो स्वयं भी एक पादरी थे, लेकिन कई वर्षों तक एक अर्थशास्त्री के रूप में काम कर चुके थे। फादर अलेक्जेंडर की तरह, वह भी अविवाहित थे। बाद में, फादर ने चर्च के चौकीदार, पावेल अलेक्जेंड्रोवचि कोवालेनको को अभषिक के लिए अल्मा-आटा भेजा। फादर पावेल चौथे पादरी बने। डकिन निकोलाई समारटसेव, जिन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया था, भी फादर के शषिय थे।

फादर ने 1955 से 1966 तक, अपनी मृत्यु के दिन तक, ग्यारह वर्षों तक चर्च के रेक्टर के रूप में कार्य किया।

22 दिसंबर 1957 को, 'अप्रत्याशति आनंद' नामक ईश्वर की माता के आइकन के परव के दिन, पेट्रोपावलोवस्क और कुस्तानई के आर्चबशिप जोसेफ (चेरनोव) द्वारा फादर को आर्चमिंड्राइट के पद पर पदोन्नत किया गया और 'पवतिर चर्च की उत्साही सेवा के लिए' एक पेट्रिआर्कल डपिलोमा प्रदान किया गया।

1964 में, उनके नाम दविस पर, उन्हें एक बशिप का दंड प्रदान किया गया – एक अभूतपूर्व सम्मान। अपने धन्य नदिन से पहले, फादर को एक स्कीमा-भकिषु के रूप में दीक्षित किया गया था।

फादर ने 1909 से 1966 तक, 57 वर्षों तक ऑर्थोडॉक्स चर्च के प्रति अपनी अथक तपस्वी सेवा की—ऑप्टिना पुस्टनि के व्वेडेन्स्काया स्केट में एक नवसखिया के रूप में अपने समय से लेकर एक मठाधीश के रूप में अपने कार्यकाल और एक आर्चमिंड्राइट के रूप में अपने अभषिक तक।

फादर ने चर्च के वधिान का बेदाग पालन किया, और दविय सेवाओं के दौरान किसी भी प्रकार की चूक या संक्षपिताक्षर की अनुमति नहीं दी। चर्च सेवाएँ उनके आंतरिक जीवन का एक अभिन्न अंग थीं। फादर प्रभु के स्वरगारोहण और पवतिर त्रमिर्रति के परवों को वशिष रूप से उच्च सम्मान देते थे, क्योंकि वे मसीहा मसीह के कार्य

की पूर्णता और मसीह के सभी रहस्यों की चरम महिमा को चहिनति करते थे। अपनी बातचीत में, उनका पसंदीदा व्यक्तित्व जॉन द थयिलोजियन थे, जिनकी स्मृति वे विशेष गंभीरता और श्रद्धा के साथ मनाते थे। वे अक्सर अपने अनुयायियों द्वारा प्रेम के इस प्रेरित के प्रति उचित श्रद्धा की कमी पर दुःख व्यक्त करते थे, और कहते थे: "देखो, आज संत निकोलस के अवशेषों के स्थानांतरण का पर्व है – और चर्च लोगों से भरा है। फरि भी कल, संत जॉन द थयिलोजियन, प्रेरित और सुसमाचार प्रचारक का पर्व था – और चर्च आधा खाली था। आप यह कैसे नहीं समझ सकते कि कौन महान है और जिसका आपको अधिक सम्मान करना चाहिए? कौन सा पर्व अधिक महत्वपूर्ण है?" इसी तरह, उन्होंने प्रभु के अग्रदूत और बपतिस्मादाता, यूहन्ना के स्मरणोत्सव के सभी सात दिनों को, और कोस्मास और डामियन, अनमरसेनरीज़ (1/14 जुलाई) के पर्व को, जो उनके जन्म के क्षेत्त्र के संरक्षक संत थे, विशेष सम्मान दिया।

फादर लोगों द्वारा मोमबत्तियाँ जलाने को बहुत महत्व देते थे। कभी-कभी वह अपने किसी आध्यात्मिक संतान या पैरिश के सदस्य को अपने पास बुलाते, उन्हें मोमबत्तियों का एक गुच्छा देते और कहते: 'प्रार्थना करो और अधिक बार मोमबत्तियाँ जलाओ।' या तो उस व्यक्ति को कोई खतरा था, या फादर यह देख सकते थे कि वे शायद ही कभी मोमबत्तियाँ जलाते थे। इसका कारण अक्सर बाद में स्पष्ट हो जाता था। लेकिन एक अवसर पर, उन्होंने अपनी एक आध्यात्मिक बेटी से कहा, जिसने मठवासी संन्यास का व्रत लिया था: 'तुम्हें मोमबत्तियाँ जलाने की ज़रूरत नहीं है; खुद एक मोमबत्ती बन जाओ।' इसी तरह, फादर ने हमें आइकन की पूजा करना सिखाया और उनका सम्मानपूर्वक उल्लेख किया: 'ऑर्थोडॉक्सी की वजिय एक पर्व है। तो फरि, क्या मनाया जा रहा है? कप्रिस्मा-भंजक वधिरम को हराया और उखाड़ फेंका गया। ईश्वर की कृपा प्रतमाओं पर वशिजमान है। वे हमें ईश्वर द्वारा सहायता के रूप में दी गई हैं और हमें अंधकार की शक्तियों से बचाती हैं। ऐसे विशेष पवतिर स्थल हैं जहाँ पवतिर आत्मा की कृपा संचित होती है। और ऐसी प्रतमाएँ भी हैं जो कृपा की महिमा में विशेष हैं। चमत्कारी प्रतमाएँ हैं जिनमें सदयों से पूजित किया जाता रहा है, और वे, छोटी-छोटी धाराओं की तरह, प्रभु से ईश्वर की कृपा को हमारे पास लाती हैं।" यदपिताजी को ध्यान आता था कि कोई प्रतमाओं को चूम नहीं रहा है, तो वे उनसे कहते थे: "मेरे प्रिय, जब भी आप किसी भी बात पर विचार करें और उसे अस्वीकार करें, तो अपने मन और हृदय में सही विवेक बनाए रखें।" एक व्यक्ति से उन्होंने कहा: "मेरे प्रिय, पहले यह समझो कि तुम्हारे लिए कई बातों को समझना मुश्किल है, और इसीलिए तुम इतनी आसानी से गलती करते हो। क्योंकि लोग अक्सर अपनी अज्ञानता को ही बुद्धिमानी समझ बैठते हैं।" एक बार, बातचीत के दौरान, फादर ने कहा कि एल्डर नेक्तरियोस हमेशा कहते थे कि बुद्धिमानी, बुद्धि और सही नरिणय पवतिर आत्मा के उपहार हैं। वे धर्मपरायणता की ओर ले जाती हैं। और यह कि विवेक के वर से वंचित व्यक्ति अक्सर दूसरों पर श्रेष्ठता के विचार पालता है। "अहंकार के बजाय नम्रता प्राप्त करके यदि नहीं, तो बुराई से सुरक्षा के लिए और कहाँ जाया जा सकता है?"

फादर की नरितर चिंता लोगों की अपनी इच्छा को वश में करके उनके आत्मा में गहरी शांति स्थापित करना थी। उन्होंने दुनिया में रहते हुए अपने और अपने अनुयायियों के जीवन को मठवासी जीवन शैली के करीब लाने का प्रयास किया। यदि कोई उनकी अवज्ञा करता या उनके सलाह पर अमल करने में विफल रहता, तो वे बहुत दुखी हो जाते थे - यह हमेशा व्यक्ति के नुकसान के लिए होता था और अक्सर उनकी बदकसिमती का कारण बनता था। वे इतने व्यथित हो जाते थे कि यह दुःख में बदल जाता था। वे उन्हें फटकारते, मुँह फेर लेते और अपना आशीर्वाद रोक लेते थे। लेकिन अगर वे आँसू देखते, या अगर उस व्यक्ति ने पश्चाताप किया और अंततः उनकी सलाह मानी, तो वे अत्यंत प्रसन्न हो जाते थे, उन पर दया करते थे, और कुछ ही समय बाद वे स्वयं उनके लिए कुछ खुशियाँ लाते थे। एक बार उन्होंने एक युवती से कहा: "तुमने मेरी नहीं सुनी, तो अब रोते और भीख माँगते हुए क्यों आई हो? अब तुम्हें कष्ट झेलना होगा।" और, युवतियों की ओर मुड़कर उन्होंने कहा: "तुम मेरी बात क्यों नहीं सुनती? क्यों? आखिरकार, मैं... - वह हकलाया - हमेशा गलत नहीं होता।" ऐसी थी उनकी वनिम्रता। पति अपने बच्चों की अवज्ञा पर भी रो पड़ते थे। वे पाप-स्वीकर्ता सुनते समय भी उतनी ही बार रो पड़ते थे। क्यों? या तो वे उनके पापों से भयभीत हो जाते थे, या उन्हें कोई उचित पश्चाताप नहीं दखिता था, या वे कुछ पूर्वानुमान लगा लेते थे...

फादर का प्रियार कोमल और देखभाल करने वाला था। कभी-कभी वह गुस्सा हो जाते थे, लेकिन बहुत कम। जब ऐसा होता था, तो वह बहुत बचकाना लगता था। वह कहते थे: 'मैं एक लाठी लेकर तुम्हें अच्छी-खासी पट्टाई करूँगा, मैं लाठी से तुम्हें अच्छी-खासी पट्टाई करूँगा!' ऐसे मौकों पर लोग अक्सर घुटनों पर गिर पड़ते थे और माफी माँगते थे। बेशक, डरावनी छड़ी नहीं थी, बल्कि यह तथ्य था कि उन्होंने पति को नाराज़ कर दिया था। एक बार, एक स्पष्ट बातचीत के दौरान, उनके मुँह से निकल गया: 'मैंने कितने लोगों की जान लंबी की है...'

पुरोहिता के पास सूक्ष्म हास्यबोध था और उन्हें मजाक करना पसंद था, लेकिन हमेशा बहुत दयालु ढंग से। वे लोगों से बात करने में लगने वाले समय को कभी बुरा नहीं मानते थे। उनकी हर सलाह खुशी की ओर ले जाती थी। फादर के वफादार बच्चों का जीवन व्यवस्था का एक आदर्श था। उन्हें 'फादर के बच्चे' के नाम से जाना जाता था, और कहा जाता था कि मिखाइलोकवा का लगभग आधा हिस्सा बनि बोले ही एक मठ जैसा था।

फादर की सेहत नाजुक थी। उन्हें खास तौर पर अनननली संकीर्ण होने की समस्या थी। हर कोई जानता था कि जब वह खाना खा रहे होते, तो किसी भी हालत में उन्हें बातचीत से परेशान या वचिलति नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें तुरंत खांसी आने लगती, जो कभी-कभी उल्टी में बदल जाती थी। यह बीमारी उस मानसिक आघात का परिणाम थी जो एल्डर ने अपने लंबे जीवन में झेला था। वह हमेशा तनाव में रहते थे। जब चर्च का पंजीकरण नहीं हुआ था, और फादर अपने सबसे करीबी साथियों के साथ गुप्त रूप से लटिर्जी का अनुष्ठान करते थे, तो वह लगातार डर के मारे कांपते थे। वह कहते थे: 'यहाँ तुम हो – फादर, जाओ और अनुष्ठान करो! क्या आपको अंदाज़ा है कि मैं क्या झेल रहा हूँ?' आखिरकार, वह कानून तोड़ रहा था; वे किसी भी पल आ सकते थे और उन सभी को गरिफ्तार कर सकते थे। और बाद में भी, जब चर्च में सेवाएँ खुलेआम आयोजित होने लगीं, तब भी फादर में वह डर कुछ हद तक बना रहा। कभी-कभी वर्दीधारी कोई व्यक्ति चर्च में आ जाता था, और पादरजी तुरंत सोचते थे: 'वे अभी आ सकते हैं, सेवा में बाधा डाल सकते हैं और हमें गरिफ्तार कर सकते हैं।' एक बार, एक पारशियिन ने पादरजी से कहा: 'मुझे फलाना-ढाकिना से डर लगता है।' लेकिन वे मुस्कुराए और कहा: 'सच में? खैर, मुझे उससे डर नहीं लगता। मुझे किसी से डर नहीं लगता। लेकिन मुझे डर है कि चर्च बंद हो जाएगा। मुझे इसी बात का डर है। मुझे अपनी चिंता नहीं है, मुझे आपकी चिंता है। मुझे पता है कि मुझे क्या करना है। लेकिन आप क्या करेंगे - मुझे नहीं पता।' ये फादर के शब्द थे।

जब फादर स्वस्थ थे, तो वे हर लटिर्जी के बाद प्रार्थना सभा का आयोजन करते थे। गायन मंडली गाती थी, और दो अकाथसिट पढ़े जाते थे। लेकिन जब उनका स्वास्थ्य बगिड़ने लगा, तो केवल आधे अकाथसिट ही पढ़े जाते थे। प्रार्थना सभा के अंत में, फादर लोगों से क्रॉस का चुंबन करवाते थे और हमेशा कुछ संक्षिप्त शब्द कहते थे। यद्यपि बहुत ही धीमी आवाज़ में, वे हमेशा कुछ शक्तिप्रद बातें कहते थे। बेशक, पूरी मंडली प्रार्थना सभा के लिए रुका करती थी। चर्च में बहुत सारे युवा थे। अकेले गायन मंच पर ही, सत्रह लड़कियों तक के समूह खड़े होकर गाते थे। और जब भी कोई अधिकारी नरीक्षण करने आता, तो हर कोई छिप जाता। जैसे ही कोई चलिलाता, 'अधिकारी आ गए!', तो हर कोई छिप जाता। अधिकारी के साथ आठ लोग आते थे। वे चर्च में प्रवेश करते, और गायन मंच पर केवल कुछ बूढ़ी महिलाएँ खड़ी होती थीं। अधिकारी सभी चर्च को बंद करने के लिए उत्सुक थे, और पुरोहिता को अक्सर 'वहाँ' बुलाया जाता था। वह आता, और वे कुछ भी नहीं कह पाते। वे कहते, "यह कैसा बूढ़ा आदमी है, जिससे हम कुछ नहीं कर सकते? खैर, उसे और बूढ़ा होने दो, और जब उसकी बुढ़ापा खत्म हो जाएगा, तो हम चर्च बंद कर देंगे।" और स्थानीय अधिकारी हमेशा फादर अलेक्जेंडर के साथ ही सभी चर्चाएं करना पसंद करते थे। वे स्पष्ट रूप से फादर की आध्यात्मिक प्रतिष्ठा को भांप लेते थे; ऐसा लगता था कि यह उन्हें डराता था, और उनमें एक श्रद्धापूर्ण भय भर देता था। एक अवसर पर, क्षेत्रीय कार्यकारी समिति के धार्मिक मामलों के आयुक्त ने फादर के चर्च के वार्डन से यह मांग की कि पादरी सरां शहर और डुबोवका गांव की यात्रा करना बंद कर दें, क्योंकि वे दूसरे जिले में आते थे। चर्च के व्यवस्थापक ने यह मांग पादरी को बता दी, और अगले ही दिन पादरी स्वयं चर्च के व्यवस्थापक के साथ क्षेत्रीय कार्यकारी समिति गए। और जब पादरी ने प्रतिनिधि से बात की, तो उसने तुरंत अपना लहजा बदल लिया – वह अपना पक्ष समझाने लगा और पादरी से माफी भी मांगने लगा। पादरी ने उससे कहा: "साथी प्रतिनिधि, कृपया खनकों के अनुरोध पर हमें सरां, डुबोवका और अन्य बस्तियों में धार्मिक सेवाएं करने की अनुमति दें। कभी-कभी वे किसी बीमार माँ के लिए पवित्र संस्कार (होली कम्युनियन) प्राप्त करने, या किसी मृतक के लिए अंतिम संस्कार की प्रार्थना के लिए अनुरोध करते थे। अधिकारी ने वनिमरता से जवाब दिया: 'कृपया, फादर सेबास्टियन, आगे बढ़ें; उन्हें मना न करें।' और फादर ने उनसे जो भी अनुरोध किया, उन्होंने लगभग कुछ भी अस्वीकार नहीं किया, और बाद में इस बारे में फरि कभी ग्राम प्रधान से कोई चर्चा नहीं की।

फादर के अनुयायियों के लिए एक विशेष अवसर उनका नाम दविस और जन्मदिन होता था। हर कोई फादर के पास आकर उन्हें बधाई देना और कम से कम एक छोटा सा उपहार देना चाहता था। लेकिन फादर को सम्मान या विशेष ध्यान पसंद नहीं था, और न ही उन्हें उपहार स्वीकार करना पसंद था। सब लोग उन्हें बधाई देने के लिए इकट्ठा होते, लेकिन वह देर शाम या अगले दिन लौटते। एक बार, अपने नाम के दिन, फादर शाम को घर लौटे, अपनी कोठरी का दरवाज़ा खोला और अंदर कदम रखने से पहले ही, अचानक चलिला उठे: "कौन?! मेरी आत्मा और मेरी कोठरी को गंदा करने की कसिने अनुमति दी?!" इस प्रतिक्रिया से घबराई हुई ननयियों ने कोठरी में झाँका और देखा कि उसके बसितर के पास नए चोगा रखे हुए थे। किसी ने उन्हें पतिजाजी की अनुमति के बिना वहाँ रख दिया था।

इसी तरह, फादर को यह पसंद नहीं था जब किसी की विशेष रूप से प्रशंसा की जाती थी; वह तुरंत उस व्यक्ति में कोई न कोई कमी नकिल देते थे। और अगर वह किसी को नीचा दिखाया जाता देखता, तो वह तुरंत उस व्यक्ति में सबसे अच्छी खूबियाँ ढूँढ़ लेता। चाहे उन्होंने कोई भी पाप किए हों, वह कुछ अच्छा ढूँढ़ ही लेता था।

फादर ने अपने लिए उच्च मानक निर्धारित किए थे। वह अक्सर दोहराते थे कि मनुष्य को अपने कर्तव्य का अटूट रूप से पालन करना चाहिए। एक स्मृतिसभा के बाद किसी ने उनसे कहा: 'आज आप फिर से बहुत थके हुए हैं। आप इतने लंबे समय से स्मृतिसभा का संचालन कर रहे हैं।' उन्होंने मेज से एक बन उठाया और उसे ऊपर उठाकर कहा: 'देखिए, इस तरह के हर बन के लिए मुझे एक प्रार्थना करनी होती है।' साथ ही, फादर हर चीज़ में हमेशा संयम रखते थे। वे कहते थे, 'एक को राजमार्ग का पालन करना चाहिए, यानी हर चीज़ में सुवर्ण मध्यम का पालन करना, और, सबसे महत्वपूर्ण बात, हमेशा ईश्वर की इच्छा और उनकी दिय व्यवस्था पर भरोसा रखना।'

वे प्रकृत से बहुत प्यार करते थे, जानवरों के प्रतिदयालु थे, और उनकी आत्मा विशेष रूप से कोमल थी। एक बार, रसोई में रहने वाली एक बिल्ली ने पाँच या छह बिल्ली के बच्चे दिए। रसोई ने बिल्ली के बच्चों को डुबाने का विषय उठाया। संयोग से वहाँ से गुज़र रहे पादरी ने यह बातचीत सुन ली। वह पूरे शरीर से काँप उठे, जोर से थरथरा गए और लगभग चिल्ला पड़े: "उनकी डुबाने की हमिमत मत करना! हम उन सभी का पालन-पोषण करेंगे!" बिल्ली के बच्चों को बचा लिया गया, और जब वे थोड़े बड़े हो गए, तो मखियाइलोवका के पार्षदों ने उन्हें 'पादरी के आशीर्वाद के लिए' आपस में बाँट लिया—जिसमें वे लगभग आपस में लड़ ही पड़े।

पादरी अक्सर डुबोव्का, सारान, फेदोरोव्का और टोपर के गांवों की यात्रा करते थे। वह लोगों के घरों में बपतस्मा और अंतमि संस्कार की रस्में अदा करते थे। जिन स्थानों में वह जाते थे, वहाँ उनकी प्रार्थनाओं से अब चर्च की स्थापना हो चुकी है। वह डोलकि गाँव में भी जाते थे, जहाँ उन्होंने अपनी जेल की सज़ा काटी थी। और डोलकि में, उस शिविर में जहाँ उन्हें कैद किया गया था, फादर के अपने हाथ से एक पेड़ पर उकेरा गया एक क्रॉस संरक्षित है। तब से, वह पेड़ बढ़ा है, और उसके साथ क्रॉस भी। वहाँ, डोलकि में, लगभग हर पेड़ के नीचे एक व्यक्ति को दफनाया गया है—एक कैदी—और लगभग हर पेड़ के नीचे एक कब्र है।

लेकिन फादर को विशेष रूप से मेल्कोम्बाट बस्ती का दौरा करना पसंद था। वह कहा करते थे कि मखियाइलोवका में उनका 'ऑप्टनि' था, और मेल्कोम्बाट में उनका 'स्कैट'। वहाँ वह अपने अनार्थों और वधिवार्थों को इकट्ठा करते, उनके लिए छोटे-छोटे घर खरीदते और उनकी देखभाल करते थे। और जब वे प्रार्थना करने के लिए मेल्कोम्बाट आते थे, तो लोग अपने काम-काज और चर्चाओं को एक तरफ रखकर, एक-एक करके, सिर्फ उनका आशीर्वाद लेने और सांत्वना पाने के लिए उस जगह की ओर दौड़ते जहाँ फादर थे। फादर सभी का प्यार से स्वागत करते थे और प्रत्येक व्यक्ति को अपने मार्गदर्शन के शब्द देते थे। वहाँ शांतिका माहौल रहता था।

उनके वधुर बड़े भाई, हलियन, जो पतिता के पास रहने आए थे, मेल्कोम्बानात में अपनी सबसे छोटी बेटी और पोती, तैसिया, के साथ रहते थे। वह पहले से ही एक सम्माननीय बुजुर्ग थे, लंबे और सीधे-सादे स्वभाव के। रविवार और पर्व के दिनों में, हलियन वासलिविचि अपनी बेटी और पोती के साथ चर्च आते थे। जब आशीर्वाद के लिए पतिताजी के पास आते, तो वे जमीन पर झुककर वनिमरता से उनका हाथ चूमते, और पाप-स्वीकार के दौरान घुटने टेकते थे। अपनी मृत्यु से पहले, उन्हें एक रासोफोर के रूप में दीक्षा दी गई थी, और पतिताजी ने स्वयं अपने बड़े भाई, संन्यासी हलियन के लिए अंतमि संस्कार की प्रार्थना का संचालन किया।

अपनी वरिसत में मली मठवासी परंपरा के अनुरूप, फादर को विशेष रूप से स्मृतिसेवाएं आयोजित करना पसंद था, और वे स्वयं प्रतिदिन स्मृतिसेवाएं आयोजित करते थे। वे कहा करते थे कि वे अंतमि संस्कार सेवाएं आयोजित करना और महिलाओं का स्मरण करना पसंद करते थे, क्योंकि उनके पाप बहुत कम होते थे। वे दविंगत लोगों के पाप देख सकते थे। ऐसा होता था कि सुबह तीन या चार बजे वह अपने नवसखियों को जगाते थे ताकि वे उन्हें मृतकों के लिए स्मरण-प्रार्थनाएँ ला सकें। और लोगों ने - फादर की मृत्यु के बाद - एक सपना देखा जिसमें उन्होंने कई चर्च देखे, जो सभी सुनहरे और ऊँचे थे, और उनके बीच एक छोटा सा चर्च था जो पूरी तरह से क्रॉस से ढका हुआ था। लोग पूछते थे: 'क्रॉस से ढकी यह चर्च किसकी है?' - उन्हें बताया गया, 'यह, शेमा-आर्कमिंड्राइट सेबस्टियन की चर्च है। उन्हें दविंगतों के लिए प्रार्थना करना पसंद था, और इसीलिए यह चर्च पूरी तरह से क्रॉस से घरी हुई है, ताकि कोई भी इसके साथ कुछ भी न कर सके।' और यह अब 40 साल से वहीं खड़ी है।

फादर से बात करते समय, यह किसी तरह स्वतःस्पष्ट और अस्वीकार न करने योग्य हो जाता था कि आत्मा हमेशा जीती है, कि मृत्यु के साथ जीवन समाप्त नहीं होता, बल्कि केवल शरीर का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। और यह सरल था, और उन्होंने इसके बारे में सरलता से बात की। इसमें कोई संदेह नहीं है कि फादर के पास दूरदर्शिता का

वरदान था, हालांकि उन्होंने इस वरदान को खुले तौर पर प्रदर्शित नहीं किया। उनकी दूरदर्शिता केवल तब ही खुले तौर पर प्रकट होती थी जब स्थिति इसकी मांग करती थी।

एक बार, फादर एक समर्पण सभा का संचालन कर रहे थे और नामों की एक सूची पढ़ रहे थे: "इओआन्ना, समियिन, ओल्गा, मारिया..." पढ़ते-पढ़ते, वे रुके और, हाथ में सूची पकड़े हुए, इधर-उधर देखने लगे। "स्मरणोत्सव के लिए अनुरोध किसने किया था - इओआन्ना, समीओन, ओल्गा, मारिया?" "मैंने किया था, फादर," एक महिला ने जवाब दिया। "और समीओन की मृत्यु कब हुई थी?" "बहुत समय पहले, फादर।" "अपना नोट वापस ले लो; मैं उसका स्मरणोत्सव नहीं करूँगा। मृत्यु प्रमाण पत्र लाओ।" महिला भड़क उठी: "आप क्या कह रहे हैं, फादर? मैं इतना भी जवान नहीं हूँ कि यह सब करूँ!" (एक अंधविश्वास है कि यदि आप किसी जीवित व्यक्ति का नाम आत्मा की शांति के लिए बनाई गई सूची में लिख देते हैं, तो वह व्यक्ति बहुत परेशान हो जाएगा और उसे उस व्यक्ति के पास लौटने का मन करेगा जो इस तरह से उसकी याद में श्रद्धांजलि दे रहा है)। - "ठीक है, तो लाओ प्रमाणपत्र।" फादर इस महिला को नहीं जानते थे; वह एक बाहरी व्यक्ति थी, वरना वह उन्हें धोखा देने की हिम्मत नहीं करती।

ऐसी ही एक और घटना हुई। मारिया स्ट्रानोवा नाम की एक युवती चर्च के गायन मंडली में गाती थी। उसे एक नर्सरी से बच्चों के घर में स्थानांतरित करके पाला गया था, और वह अपने माता-पिता के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी। एक दिन, मारिया फादर के पास गई और उन्हें बताया कि वह इस बात से दुखी है कि वह अपने माता-पिता का नाम या उनकी राष्ट्रियता नहीं जानती थी, और वह उनकी आत्मा की शांति के लिए स्मरण या प्रार्थना नहीं कर सकती थी। "मैं इस समय व्यस्त हूँ" फादर ने कहा, "कल आना, हम बात करेंगे।" अगले दिन, उन्होंने खुद उसे बुलाया और कहा: "मारिया, तुम्हारे माता-पिता रूसी, ऑर्थोडॉक्स ईसाई थे जिन्हें नरिवासित किया गया था। तुम्हारे पिता का नाम था..." - और उन्होंने उसे उसके पिता का नाम, और फरि उसकी माँ का नाम बताया। मारिया बहुत खुश हुई और उसने उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया।

फादर ने कभी किसी को खुले तौर पर ठीक नहीं किया और न ही फटकारा, और अपनी विनम्रता और सादगी के कारण वे हमेशा कहते थे: 'मैं किसी को ठीक नहीं करता, मैं किसी को फटकारता नहीं; अस्पताल जाओ।' 'मैं,' वे कहते थे, 'एक मछली की तरह हूँ, नशिबद' - इस तरह वे खुद को नम्र करते थे। वे अपनी गुप्त प्रार्थनाओं के माध्यम से लोगों की मदद करते थे। भूत-प्रेत बाधित लोगों के बारे में बात करते हुए, वह कहते थे: 'यहाँ वे कष्ट सहेंगे, लेकिन वहाँ उनके परीक्षण बिना दर्द के गुजरेंगे... मैं आपकी तकलीफें आपसे छीनना नहीं चाहता। यहाँ आप कष्ट सहेंगे, लेकिन स्वर्ग में आपको एक बड़ा इनाम मिलागा,' - और वह पीड़ित लोगों को सांत्वना देते थे। फादर के पास आध्यात्मिक ज्ञान और महान धैर्य था। जब कोई पड़ोसी के बारे में शिकायत करता, तो वह कहते: 'मैं तुम सबको सहन करता हूँ, फरि भी तुम एक व्यक्ति को भी सहन करने को तैयार नहीं हो।' यदि कोई दूसरे से झगड़ता, तो वह चतिति हो जाते: 'मैं मठाधीश हूँ, फरि भी मैं तुम सबकी सुनता हूँ।' वह सभी की मोक्ष की परवाह करते थे; यही उनका लक्ष्य था। वे कहते थे: 'और शांति से जियो।' एक बार हम एक प्रार्थना सभा के लिए निकले और धूपदान भूल गए। हम एक-दूसरे को कोसने लगे। फादर ने कहा: 'यह मेरी ही गलती है,' - और सभी चुप हो गए। फादर कहते थे: 'देखो, मैंने तुम सभी को यहाँ इकट्ठा किया है - अंधे, लंगड़े, इस और उस के बेटे और बेटियाँ। मैं खुद बीमार हूँ, और मैंने बीमार लोगों का एक झुंड इकट्ठा किया है।' फादर अलेक्जेंडर, जिनकी आवाज़ नहीं थी, उनके साथ सेवा करते थे, और फादर पावेल की आवाज़ भी बहुत कमजोर थी। 'खैर, हम इकट्ठा हो गए हैं, और हम धीरे-धीरे सेवा करेंगे, तुम बीमारों के झुंड!"

फादर अन्य मठों की यात्रा करने के पक्ष में नहीं थे। "यहाँ," वे कहते, "लाव्रा, पोचेव और ऑप्टिना हैं। चर्च में सेवाएँ होती हैं - सब कुछ यहीं है।" अगर कोई जाने की योजना बना रहा होता, तो वे कहते: "कहीं मत जाओ; हर जगह आपदाएँ होंगी, हर जगह उथल-पुथल होगी, लेकिन करागंडा केवल इसकी चपेट में थोड़ा सा आएगा।"

फादर सेबस्टियन की बीमारी

परम पावन पैटरआर्क अलेक्सी प्रथम पतिजाजी से मिलने और उनसे बात करने के लिए बहुत उत्सुक थे। उन्होंने बशप पटिरिमि (नेचाएव) को पतिजाजी को हवाई जहाज से ही सही, लाने का आशीर्वाद दिया। लेकिन फादर पहले से ही कमजोर थे और उन्होंने सहमत नहीं दी: "मैं हवाई जहाज से उड़ने के लिए उपयुक्त नहीं हूँ" एल्डर ने उत्तर दिया, और करागंडा में ही रहे।

और इस प्रकार, ईश्वर और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम और नस्तिवारथ सेवा के एक कार्य में, वर्ष बीतते गए। फादर स्पष्ट रूप से कमजोर हो गए। उनकी कमजोरी, सांस फूलना, पूरे शरीर में दर्द और भूख की पूरी तरह से कमी बढ़ गई। उन्हें अपने हरनिया के हसिसे और छाती में लगभग लगातार दर्द होता था। उनका इलाज कर रहे डॉक्टरों ने व्यापक उपचार दिया, लेकिन फादर की हालत में सुधार नहीं हुआ; उनका दुख केवल अस्थायी रूप से कम हुआ। फरि

भी पादरी पूजा के समय हर दिन चर्च जाते थे। वे कहते थे: "अगर मैं द्रव्य प्रार्थना सभा या पूरी रात की प्रार्थना के दौरान घर पर रहूँ तो मैं किस तरह का पादरी रहूँगा?" वे प्रतिदिन स्मृतिसेवाएँ आयोजित करते थे, लेकिन तब तक वे केवल पर्व के दिनों में ही प्रार्थना सभा आयोजित करते थे।

उस समय का एल्डर सेबस्टियन का अल्मा-आटा और कजाखस्तान के आर्चबिशप जोसेफ (चेर्नोव) को लिखा एक पत्र संरक्षित है:

"जोसेफ महामहोदय। मैं हम सभी पर आपकी आर्चबिशप की आशीर्वाद की कामना करता हूँ और अब तक आपको जवाब नहीं लिख पाने के लिए क्षमा याचना करता हूँ। मैं लंबे समय से आपको लिखकर पर्व के दिन बधाई देना चाहता था, लेकिन मैं ऐसा कर नहीं पाया। मैंने टेलीग्राम से अपनी बधाई भेजी थी, लेकिन मैं अपना जवाब टालता रहा: बीमारी और शारीरिक कमजोरी, साथ ही मेरा मंत्रालय, घरेलू चर्चाएँ और पूजा-संबंधी कर्तव्य – यह सब मुझे थका देता है, क्योंकि मैं बीमार और कमजोर हूँ। मेरी बीमारियाँ मुझे रात में भी चैन नहीं लेने देती: मेरी खांसी और हर्निया मुझे बहुत परेशान करती हैं। और समय चलता रहता है, यह किसी का इंतजार नहीं करता। हाल ही में क्रिसमस था, और तब से तीन सप्ताह बीत चुके हैं। हमने त्योहार का मौसम अच्छी और शांति से मनाया। फलिहाल, हम शांति और सौहार्द से रह रहे हैं और सेवा कर रहे हैं। मैं फादर निकोलाई को पादरी और गाँव के बुजुर्ग, पावेल अलेक्सेवचि को डीकन बनाने की उम्मीद कर रहा था, क्योंकि वह अपने पढ़ने और गाने में बहुत उत्साही हैं; आजकल ऐसे वफादार और उत्साही लोग बहुत कम मिलते हैं। बाकी सब कुछ ईश्वर की इच्छा और आपकी पवित्र आशीर्वाद पर निर्भर है। जहाँ तक निर्माण कार्य की बात है, उसमें अभी तक कोई प्रगति नहीं हुई है। ग्लेबोव, जिसने आपकी उपस्थिति में फादर अलेक्जेंडर और फादर आंद्रेई को स्वीकार किया था, वह इस पूरे समय असवस्थ रहा है, और हम सटीक परिणाम जानना चाहेंगे: क्या पुराने स्थान पर या कहीं और निर्माण की अनुमति दी जाएगी, या इसे पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया जाएगा। हम धीरे-धीरे निर्माण सामग्री इकट्ठा कर रहे हैं, लेकिन चूंकि स्थान अभी तक अंतिम रूप से तय नहीं हुआ है, इसलिए हमें नहीं पता कि उन्हें कहाँ रखेंगे। परम पावन जोसेफ, मैं आपकी पवित्र आशीर्वाद मांगता हूँ कि मुझे सक्रिय मंत्रालय से सेवानिवृत्त होने और अपनी आत्मा का ध्यान रखने की अनुमति मिले, जबकि फादर अलेक्जेंडर, या फादर सेराफिम, या फादर निकोलस, रेक्टर के रूप में सेवा कर सकते हैं। मेरा दमिग जवाब दे रहा है, और मेरी खराब सेहत मुझे इन मामलों से नपिटने से रोकती है। विशेष रूप से, निर्माण कार्य से जुड़ी चर्चाएँ और मेहनत, साथ ही दैवीय सेवाओं से संबंधित कार्य, मेरी सेहत की स्थिति को देखते हुए मेरी क्षमता से परे हैं। कृपया मुझे सेवानिवृत्त होने का अपना आशीर्वाद प्रदान करें, और, आपकी तथा पल्लीवासियों की सहमति से, फादर अलेक्जेंडर को रेक्टर नियुक्त करें। हम सभी—मैं स्वयं, आपका अयोग्य नवसखिया, साथ ही फादर अलेक्जेंडर, फादर सेराफिम, फादर निकोलस, पुरोहितगण, चर्च का संपूर्ण कर्मचारी वर्ग, और सभी पारशिवासी—आपके समक्ष नतमस्तक होते हैं और आपकी पवित्र आशीर्वाद तथा पवित्र प्रार्थनाओं का आग्रह करते हैं।"

चर्च में, स्मारक सेवा कक्ष के पीछे, उनके लिए एक छोटा कमरा बाँधा गया था, जहाँ वे 'केबिन' कहते थे। पीछे की दीवार के सहारे, एक पर्दे के पीछे, एक बसितर लगा था जहाँ वे सेवा के दौरान दर्द या गंभीर कमजोरी से परेशान होने पर आराम कर सकते थे। खड़की के पास एक छोटी मेज रखी थी, जिसके सामने एक आराम कुर्सी थी, जिसके ऊपर मदर अग्निया द्वारा चर्च पर परम पवित्र त्रिमूर्ति का एक बड़ा आइकन लटका हुआ था। कभी-कभी फादर एक चीख मारते, खाट पर लेट जाते, और अपने पैरों के नीचे एक तकिया रखवा लेते ताकि वे थोड़े से उठे रहें। उन्होंने आधा-मंथल, एक एपटिचेलियन और कफ पहन रखे होते थे। और वे कभी-कभी लेटे-लेटे एक्टेनिया का पाठ करते थे। वे हमेशा सुसमाचार के लिए खड़े हो जाते, अपना फेलोनियन पहनते और उसे पहने हुए ही सुसमाचार पढ़ते थे।

फादर कुर्सी पर बैठे-बैठे पापियों का पाप-स्वीकार सुनते थे। उन्होंने उनसे मिलने आने वालों से कम बात करना शुरू कर दिया और अब वे सभी से नहीं मिल पाते थे। वे दूसरे शहरों से आने वाले आगंतुकों को वापस नहीं भेजते थे, लेकिन बाद में उन्होंने उनसे भी अपनी बातचीत संक्षिप्त कर दी।

दिसंबर 1965 में, कड़ाके की ठंड पड़ने लगी, और तापमान गरिकर 40° तक पहुँच गया। जब वे अपनी कोठरी से चर्च तक आँगन पार कर रहे थे, तो फादर को जोर-जोर से खाँसी होने लगी। उनकी सेहत पर नज़र रखने वाली डॉक्टरों, ओल्गा फओदोरोव्ना ऑर्लोवा और तात्याना व्लादमिरोव्ना टॉर्टनस्टेन ने कहा: "आपको इतनी कड़ी ठंड में आँगन में नहीं चलना चाहिए।" फादर ने अप्रसन्नता जताते हुए उन्हें देखा और कहा: "तो मैं उड़कर ही पार कर लूँगा।"

जनवरी 1966 से, उनका स्वास्थ्य काफी बगड़ गया, और उनकी पुरानी बीमारियाँ और बढ़ गईं।

उनकी देखभाल करने वाली डॉक्टर, ओल्गा फओदोरोव्ना ऑर्लोवा ने नमिनलखिति स्थितियों का नदिान किया: ब्रोंकिएक्टिसिस और छोटे फोड़ों के साथ पुरानी ब्रोंकाइटिस, फुफ्फुसीय एम्फसीमा, अननली का संकीर्ण होना, और संबंधित जटिलताओं के साथ प्रोस्टेट एडेनोमा: गंभीर लक्षणयुक्त उच्च रक्तचाप के साथ पुरानी

पाइलोनफ्राइटिस, और बार-बार आंशिक जकड़न के साथ द्वपिक्षीय जांघीय हरनयि। पतिजी कई वर्षों से इन बीमारियों से पीड़ित थे।

पति इस बात से बहुत दुखी थे कि उनके लिए लटिर्जी (प्रार्थना सभा) का आयोजन करना मुश्किल हो गया था – वे अक्सर प्रार्थना सभा के दौरान खाँसी से परेशान रहते थे और उन्हें साँस लेने में तकलीफ होती थी। डॉक्टरों ने सुझाव दिया कि वे प्रार्थना सभा से पहले सुबह इंजेक्शन लगवाएँ। पति बहुत खुश हुए और मान गए। इंजेक्शन और थोड़ी देर आराम करने के बाद, वह मुश्किल से ही सही, चर्च तक चलकर जा सके और सेवा का संचालन कर सके। लेकिन बीमारी बढ़ती गई, और जल्द ही वह इंजेक्शन के बाद भी चर्च नहीं जा पाते थे। उनकी पीड़ा को देखकर, डॉक्टरों ने पतिजी से सुझाव दिया कि निवसखिए उन्हें कुरसी पर बठाकर चर्च ले जाएँ। पहले तो उन्होंने मना कर दिया, लेकिन जब बहुत मनाने के बाद, उनकी देखभाल करने वाली डॉक्टर, तात्याना व्लादमिरोव्ना, अपने मरीज की अवज्ञा पर रोने लगीं, तो फादर ने उनके सर पर हाथ रखा और कहा: "रोओ मत; उन्हें मुझे उठा लेने दो।"

लड़के डकिन, फादर के निवसखिए अलेक्जेंडर कसिलेव [अब आर्चप्रीस्ट अलेक्जेंडर, चर्च ऑफ द नेटविटी ऑफ द मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड के रेक्टर।], अलेक्सी वेरेटेनकिव [स्वर्गीय हायरॉमोनक जर्मन।], और पीटर गोरोंशको [अब हेग्यूमेन पीटर; वे उसी चर्च में सेवा करते हैं।], वासिली पसारेव [स्वर्गीय भिक्षु वासिली], ने जल्दी से एल्यूमीनियम ट्यूबों से एक हल्की कुरसी बनाई; सेल सहायक ने फादर के मुँह पर एक गरम स्कार्फ बांधा, उन्हें कुरसी पर बठाया और उन्हें चर्च ले गया। पहले तो वह बहुत संकोच कर रहे थे, लेकिन फिर उन्हें इसकी आदत हो गई। वह मुस्कुराते और मजाक भी करते थे। जब भी सेल अटेंडेंट लड़कों का इंतज़ार करते हुए उन्हें तैयार करता, तो वह कहते: "ठीक है, मैं तैयार हूँ! मेरे छोटे घोड़े कहाँ हैं?" और एक बार, जब वे उन्हें उठाकर ले जा रहे थे और तात्याना व्लादमिरोव्ना उनके बगल में चल रही थीं, तो उन्होंने कहा: "अच्छा, गाड़ी खींचने में मदद के लिए एक और आ गया है।"

पादरी के डॉक्टर इस बात से चकित थे कि वह कतिना आज्ञाकारी, धैर्यवान और सौम्य मरीज था। वह बिना किसी शिकायत के अपने लिए निर्धारित उपचार का पालन करता था, लेकिन पहले वह पूछता था कि कौन सी दवा दी जा रही है, उसके प्रभाव क्या हैं और उपचार का कोर्स कतिने समय तक चलेगा।

पतिजी चिकित्सा कर्मचारियों का सम्मान करते थे और नर्सिंग सहायकों से लेकर डॉक्टरों तक, हर किसी के काम को महत्व देते थे। जब लोग अपनी पढ़ाई शुरू करने का आशीर्वाद लेने उनके पास आते थे, तो वह अक्सर उन्हें मेडिकल कॉलेज जाने का आशीर्वाद देते थे, कभी-कभी विश्वविद्यालय जाने का, और अस्पताल में नर्सिंग सहायक के रूप में काम करने का। वे कहते थे, "उपचार कराना कोई पाप नहीं है, और जो लोग अस्पताल में काम करते हैं, उनके लिए लोगों की देखभाल करना एक उद्धारकारी और अच्छा कार्य है।" वे सर्जिकल उपचार की सफारिश केवल तभी करते थे जब यह बिल्कुल आवश्यक हो, जब उन्हें पता होता कि रूढ़िवादी उपचार से मदद नहीं मिलेगी। जिन लोगों ने उनकी आज्ञा से सर्जरी करवाई, वे पूरी तरह से ठीक हो गए। फादर स्वयं एक कुशल निदानकर्ता थे। जब वह अपनी देखभाल करने वाली डॉक्टर, ओल्गा फओदोरोव्ना को किसी मरीज की जांच के लिए भेजते थे, तो वह कहते थे: "ओल्गा फओदोरोव्ना, कृपया मरीज की जांच करें। मुझे लगता है कि उसे यह या वह बीमारी है।" उनका निदान हमेशा सही साबित होता था।

दनि बीतते गए, और हर गुजरते दनि के साथ फादर की हालत बगिड़ती गई। फरवरी में, बशिप जोसेफ करागंदा पहुँचे। हालाँकि फादर काफी कमजोर थे, फिर भी उन्होंने बशिप के साथ मिलकर मसिसा किया। जब वे विदा लेने लगे, तो उन्होंने कहा: "और अब मैं ईस्टर के बाद आऊँगा और तुम्हारे लिए एक इनाम लाऊँगा – अंगूरों की एक टोकरी।" सभी को एहसास हो गया था कि हमें आँसुओं का सामना करना पड़ेगा।

पति अक्सर मृत्यु और अनंतकाल में प्रवेश के बारे में बात करते थे। जब लोग उनसे पूछते थे, 'हम आपके बिना कैसे जिएँगे?', तो वे सख्त लहजे में जवाब देते थे: 'मैं कौन हूँ? मैं क्या हूँ? ईश्वर था, है, और रहेगा! जो कोई भी ईश्वर में आस्था रखता है—भले ही वह मुझसे हजारों किलोमीटर दूर रहता हो—वह मोक्ष पाएगा। लेकिन जो कोई भी, भले ही वह मेरे चोगा की छोर से चपिका रहे, फिर भी ईश्वर का भय नहीं रखता, वह मोक्ष प्राप्त नहीं करेगा। जो लोग मुझे जानते थे और मेरे निधन के बाद मुझे देखेंगे, वे मुझे उन लोगों की तुलना में कम महत्व देंगे जो मुझे जानते या देखते नहीं थे।' "नज़दीक, फिर भी फसिलन भरा; दूर, फिर भी गहरा।"

महान उपवास शुरू हुआ – एल्डर के जीवन का अंतमि। [एल्डर सेबेस्टियन के अंतमि दनिों और निधन का यह वृत्तांत एल्डर के देखभाल करने वाले डॉक्टरों, तात्याना व्लादमिरोव्ना टॉर्टनस्टेन और ओल्गा फओदोरोव्ना ऑर्लोवा द्वारा लिखित पांडुलिपियों पर आधारित है।] क्षमा रविवार को, उन्होंने लटिर्जी का अनुष्ठान किया और शाम को क्षमा का अनुष्ठान संपन्न किया। वे सचेत थे और उनका चेहरा दीप्तिमान था।

महान लेंट के दौरान, पहले सप्ताह के पहले चार दिनों में, चर्च में पकाया हुआ कुछ भी नहीं खाया जाता था, सविय बुधवार को पूर्व-पवतिरकृत उपहारों की लतिरजी के बाद सूप के। उस दिन, फादर ने कमजोर लोगों को पवतिर सहभाग प्राप्त करने की अनुमति दी। शुक्रवार तक के शेष दिनों में कुछ भी पकाया नहीं जाता था; यहाँ तक कि चाय भी नहीं उबाली जाती थी। वे ग्रेट वेस्पर्स (Great Vespers) के बाद खाने के लिए बैठते थे। उन्हें काली रोटी, सॉकरक्राउट, अचार वाले खीरा और कच्चा प्याज परोसा जाता था। फादर ने पेट खराब होने वालों को गर्म बेकड आलू और बेकड प्याज खाने की अनुमति दी। शुक्रवार को, पूर्व-पवतिरकृत उपहारों की लतिरगी में, बहुत बड़ी संख्या में संप्रदायिक होते थे। लतिरगी के बाद भोजन आता था: मशरूम का सूप और मीठी दलिया। शाम को – दोपहर के भोजन से बची दलिया, सफेद रसक और सफेद ब्रेड।

लेंट के पहले सप्ताह के दौरान, फादर ने रोजाना सेवा की, और स्वयं एक स्पष्ट और स्पष्ट आवाज़ में सेंट एंड्रयू ऑफ़ करीट का महान प्रायश्चित्त कैनन पढ़ा। रविवार को, ऑर्थोडॉक्सी के परव पर, उन्होंने लतिरजी की सेवा की। उन दिनों में, फादर ने किसी से बात नहीं की और न ही किसी आगंतुक को मिला।

महा-प्रायश्चित्त के दूसरे और तीसरे सप्ताह बीत गए। सब कुछ सामान्य रूप से चलता रहा, और ऐसा लग रहा था कि पिताजी हमेशा हमारे साथ रहेंगे।

13 मार्च को, कीव विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर का बेटा, युवा हायरोडीकन फादर पावेल, फादर पावेल से मिलने कीव से आया। उनका जन्म पेरिस में हुआ था। उनका परिवार लगभग दस साल पहले रूस लौट आया था।

चौथे सप्ताह के दौरान, फादर पावेल ने चर्च में प्रार्थना सभा का पाठ किया – बहुत खूबसूरती से, भावपूर्ण ढंग से, हर शब्द का स्पष्ट उच्चारण करते हुए; उन्होंने वेदी पर सहायता की और अपना सारा खाली समय फादर के साथ बताने की कोशिश की। फादर उनसे देर तक बातें करते थे। न केवल फादर, बल्कि चर्च में रहने वाला हर कोई फादर पावेल का प्रशंसक हो गया। वह बहुत विनम्र थे, फरि भी उनके हर काम में उच्च संस्कृतिकी झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। फादर उन्हें बारीकी से देखते थे।

21 मार्च को, फादर आंद्रेई ओसाकारोव्का गाँव से आए। उन्होंने फादर से चर्च में पढ़ने और गायन मंडली का संचालन करने में उनकी सहायता के लिए किसी को भेजने को कहा। फादर ने एक अनुभवी महिला गायिका को भेजने का आशीर्वाद दे दिया, और अचानक फादर पावेल को भी ओसाकारोव्का तक उनके साथ जाने का आशीर्वाद दे दिया। फादर पावेल और फादर के बीच एक बहुत ही मार्मिक बातचीत हुई। बेशक, फादर पावेल पेरिस से रूस और फरि फादर के पास सिर्फ इस लिए नहीं आए थे कि वे खुद को दूरस्थ मैदान में अकेला पाएँ। वह फादर के करीब रहने आया था, लेकिन चूँकि फादर उसे भेज रहे थे, उसने कहा: "मुझे घर लौटने का आशीर्वाद दें। मैं कीव के पास अपने आश्रम में लौट जाऊँगा।" फादर: "मैं तुम्हें एक आश्रम दूँगा! तुम मेरे पास आए, और मैंने तुम्हारा स्वागत किया। तुम अपनी मर्जी से आए हो; मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। यहाँ, ओसाकारोव्का में तुम्हें एक आश्रम मिलेगा!" फादर पावेल: "मुझे जाने दो; मुझे हमेशा के लिए जाने का आशीर्वाद दो।" फादर बेचैन हो गए: "मैं तुम्हें कीव दे दूँगा, मैं तुम्हें डंडे से दूँगा, मैं तुम्हें डंडे से दूँगा, और मैं रस्सी भी लूँगा, मैं तुम्हें रस्सी से दूँगा!" क्या तुम एक भिक्षु हो?!" फादर पावेल फादर के पैरों में गरि पड़े: "मुझे माफ़ करें, मुझे आशीर्वाद दें; मैं ओसाकारोव्का जाऊँगा।" वह उस आइकन (चित्र) को लाने के लिए अपने कमरे में भागा, जसिसे उसके पिता ने उसे बचपन में ही भिक्षु जीवन के लिए आशीर्वाद दिया था। उसने और कुछ नहीं लिया।

सबको फादर पावेल के लिए दुख हुआ; हर कोई परेशान था। उन्होंने फादर से शिकायत की और कहा: "हमें खुद फादर पावेल की जरूरत है—वह बहुत अच्छी तरह से पढ़ते हैं और गायक मंडली में गाते हैं। हमारे पास पुरुष आवाज़ें लगभग नहीं हैं। और वह हर जगह मदद करते हैं: पवतिर स्थल में और पवतिरालय में। क्या तुम सभी को भगा दोगे? फादर एंड्रयू को अपने लोग खुद खोजने और चुनने दो। फरि दूसरे भी तुमसे यही मांगने आएंगे।" फादर चुप रहे।

फादर एंड्रयू जाने की जल्दी में थे। सभी फादर पावेल को वृद्धि करने आए। सभी ने फादर एंड्रयू को टोका। फादर पावेल हैरान और परेशान दखि। पादरी अपनी कोठरी से बाहर नहीं आए।

सारी रात की प्रार्थना सभा से पहले, फादर ने चाय पी और किसी से बात नहीं की। अगले दिन सेबास्टे के चालीस शहीदों का परव था। सारी रात की प्रार्थना सभा के दौरान, पादरी बेचैन थे और, जैसा कनिन कहती थी, 'क्रोध में थे'। फादर अलेक्जेंडर को यह पूछने के लिए डांटा गया कि 'महानतम में ईश्वर की महिमा' गाया जाए या पढ़ा जाए। फादर अलेक्जेंडर और अलयाओशा वेरेतेनकोव को फरि से फटकार लगाई गई जब उन्होंने फादर को पूरी चर्च में धूप छड़िकने से रोकने की कोशिश की। उन्होंने गुस्से में कहा: "मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए; मैं खुद जाकर धूप छड़िकूँगा।" वह खुद पूरे चर्च में घूमकर धूप छड़िकने लगे।

शुक्रवार 22 मार्च को, फादर ने अपनी एक आध्यात्मिक बेटी के लिए अंतिम संस्कार की प्रार्थना सभा का आयोजन किया, जो अभी जवान भी नहीं हुई थी। वह प्रार्थना सभा के दौरान रो पड़े।

एक दैत्य-ग्रस्त महिला को साइबेरिया से लाया गया था। फादर ने पूर्व-पवतिरति उपहारों का अनुष्ठान संपन्न किया। पूरे अनुष्ठान के दौरान, वह ग्रस्त महिला बारी-बारी से म्याऊँ करती, भेड़ की तरह बँ-बँ करती, और मुरगे की तरह बाँग देती रही। उसे नारथेक्स में बाहर घसीट लिया गया। यह मुश्किल नहीं था - वह अत्यधिक दुबली-पतली थी।

रविवार 24 मार्च की शाम को, जब उपासक चले गए थे और चर्च लगभग खाली था, फादर अभी भी अपनी 'केबनि' में थे। दैत्य ग्रस्त महिला एक कोने में चुपचाप पड़ी थी, उसके साथ आई हुई महिलाओं में से एक उसके साथ थी। अचानक शाही द्वार खुल गए, और फादर अपने पूरे वेषभूषा में, अपना लबादा पहनकर और अपना दंड लेकर उपदेश-मंच पर आ गए। वह महिला फर्श से उठी और भौंकते और म्याऊँ करते हुए उनकी ओर चल दी। पैदल चलने से पहले उसने मुरगे की तरह जोर से बाँग दी। "अरे!" पादरी ने जोर से कहा, उसकी आवाज़ पहचान में नहीं आ रही थी। राक्षस-ग्रस्त महिला ने फरि से चीख मारी, लेकिन बहुत धीरे से। "अरे!" पादरी ने दोहराया। वह बहुत धीरे से चीखी, मानो दूर से आ रही हो। पादरी ने तीसरी बार कहा, "खैर!" वह चुप रही। फरि उसने कहा, "तुम जोशुआ हो।" "मैं जोशुआ नहीं हूँ, मैं सेबेस्टियन हूँ।" पादरी ने अधिकारपूर्वक कहा, "कल सुबह तुम यहाँ पादरी के पास आओगी, अपने पापों का इकबाल करोगी और पवतिर कम्युनियन ग्रहण करोगी।"

शुक्रवार को, फादर ने प्रार्थना सभा का संचालन नहीं किया; वह पवतिर स्थल में बैठे रहे। पूर्व में भूतग्रस्त महिला प्रार्थना सभा के दौरान शांत खड़ी रही और चुपचाप पवतिर परमप्रसाद ग्रहण किया। उस शाम, उसे साइबेरिया ले जाया गया।

छठे सप्ताह के रविवार को, फादर ने सेवा का संचालन नहीं किया; वे पवतिर स्थल में एक कुर्सी पर बैठे रहे। पवतिर भोज के बाद, उन्होंने उन्हें 'हे जीवन दाता, मेरे लिए पश्चाताप के द्वार खोलो...' गाने का नरिदेश दिया। उस दिन से, उनकी ताकत में स्पष्ट रूप से कमी आने लगी।

31 मार्च को सुबह 3 बजे, फादर ने सेल सहायक को जगाया और कहा: "मैं पहले से कहीं अधिक बीमार महसूस कर रहा हूँ। नसिंदेह, मेरी आत्मा मेरे शरीर को छोड़ रही है।" उन्होंने पूरी रात ऑक्सीजन देकर उनकी सांसों में सहायता की। फादर ने शांत होकर सांस लेना शुरू कर दिया।

2 अप्रैल, लाजर सप्ताहांत को, फादर के साथ कुछ बहुत महत्वपूर्ण और असाधारण रूप से महत्वपूर्ण हुआ। सुबह 3 बजे, उन्होंने अपनी सेल सहायक को जगाया और उससे फादर अलेक्जेंडर को अपने पास बुलाने के लिए कहा। आनंद से दमकते और कांपते हुए, उन्होंने अपने आध्यात्मिक पिता, फादर अलेक्जेंडर को कुछ बताया। कोई नहीं जानता कि उन्होंने किस बारे में बात की। हम केवल इतना जानते हैं कि फादर अलेक्जेंडर ने फादर का पाप-स्वीकार सुना और उन्हें पवतिर परमप्रसाद दिया, क्योंकि वह पवतिर उपहार प्राप्त करने के लिए पवतिरस्थान में गए थे। परमप्रसाद ग्रहण करने के बाद, फादर ने गाना शुरू किया: 'मसीह जी उठे हैं!' - और नवसखिया को गायिकाओं को जगाने और उन्हें अपने पास बुलाने के लिए भेजा ताकि वे उनके लिए ईस्टर के भजन गा सकें। लड़कियाँ आई, सभी ने सफेद दुपट्टे पहने हुए थे, और उन्होंने कैनन के पासकाल टरोपारियन, स्टचिरा और इरमोस गाना शुरू कर दिया। जब उन्होंने गाना समाप्त कर लिया, तो फादर ने पूछा: 'रसोई में कौन है? उन्हें तीन तरह से अंडे उबालने के लिए कहो: नरम, कठोर और थैली में।' यह सब किया गया।

सुबह, फादर ने हाउसकीपर से उसके लिए कुछ दूध लाने को कहा: "अरे अब," उन्होंने कहा, "यह सब क्वास और ओकरोशका है। तुम मुझे हमेशा क्वास पीने के लिए क्यों मजबूर करते हो? तुम्हें मुझे कुछ दूध देना चाहिए था।" हाउसकीपर दुकान गया और कुछ दूध ले आया। किसी ने पादरी का वरिध नहीं किया। नन ने दूध एक मग में डाला और बहुत ही डरते हुए कहा: "फादर, आज तो सरिफ लाजर सटर्डे है; फरि होली सटर्डे आता है, और उसके बाद ही ईस्टर। अगर आज ईस्टर होता, तो हमारे पास कतिने रंगे अंडे होते, कतिने कुलकि केक होते!" उन्होंने सभी को देखा और कहा: "आह... तो बात यह है!" - दूध का मग एक तरफ धकेलते हुए। "दूध तो खत्म हो गया! तो फरि मुझे कुछ ओकरोशका ला दो।"

उस शाम, फादर खड़िकी के पास मेज पर बैठे, चर्च जाते समय वल्लो की टहनियाँ ले जाते लोगों को देख रहे थे। उन्होंने कहा, "लोग पूरी रात की प्रार्थना सभा के लिए इकट्ठा हो रहे हैं, और मुझे भी अपने पूर्वजों, अपने दादा-दादा और परदादा के पास जाने की तैयारी करनी चाहिए।"

मंगलवार, 5 अप्रैल को, स्मरणोत्सव सेवा के बाद, फादर ने फादर अलेक्जेंडर से कहा: "ओसाकोरोव्का को जल्द से जल्द एक टेलीग्राम भेजो, जिसमें फादर पावेल से हमेशा के लिए लौटने के लिए कहा गया हो।"

9 अप्रैल। पवतिर सप्ताह का शनिवार। धर्मवधिका के दौरान, फादर अपने कमरे में लेटे रहे। धर्मवधिसिमापत् होने के बाद, उन्होंने अपना कासक और कौल पहना और मंडली को वदिाई देने के लिए बाहर आए। उन्होंने सभी को आने वाले परव के लिए बधाई दी और कहा: "मैं आपको छोड़ रहा हूँ। मैं इस सांसारिक जीवन को छोड़ रहा हूँ। मेरे लिए आपसे वदिा होने का समय आ गया है। मैंने वदिाई लेने का वादा किया था, और मैं यहाँ अपना वादा नभा रहा हूँ। मैं आप सभी से एक बात का आग्रह करता हूँ: शांति से जाँ। शांति और प्रेम ही सबसे महत्वपूर्ण हैं। यदि आपके बीच ये हैं, तो आपके आत्मा में हमेशा आनंद रहेगा। अब हम 'ब्राइट मैटर्निस' के आगमन, ईस्टर के परव के आगमन - शाश्वत आनंद के लिए आत्मा के उद्धार का इंतजार कर रहे हैं। और यह कैसे प्राप्त किया जा सकता है? केवल शांति, प्रेम और सच्ची, हार्दिक प्रार्थना के माध्यम से। आप स्वयं के बाहर किसी भी चीज़ से नहीं बचेंगे, बल्कि केवल उसी से बचेंगे जो आप अपनी आत्मा और अपने हृदय के भीतर प्राप्त करते हैं - शांतिपूर्ण स्थिति और प्रेम। आपकी दृष्टि किसी के प्रति भी विकृत न हो। सीधे आगे देखें, किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया के लिए, किसी भी प्रकार के कार्य के लिए तैयार रहें। यह आपसे मेरी अंतिम विनंति है। और मैं आपसे यह भी निवेदन करता हूँ - मुझे क्षमा करें।" उन्होंने कमर झुकाई और लड़खड़ा गए। चुपचाप, बड़ी कठिनाई से, वे गर्भगृह में पहुँचे और अपनी कोठरी में घर ले जाने के लिए कहा। लोग तितर-बितर नहीं हुए; वे सभी रो रहे थे।

10 अप्रैल को, ईस्टर की रात, फादर चर्च ले जाए जाना चाहते थे, लेकिन उठ नहीं सके। उनके चारों ओर मौजूद हर कोई दुख से अभिभूत था। प्रार्थना चल रही थी। डॉ. तातियाना व्लादिमीरोव्ना ने प्रार्थना सभा छोड़ दी और फादर के पास दौड़ी। उन्होंने उनकी ओर देखा और कहा: "तुमने चर्च क्यों छोड़ा? मैं अभी मर नहीं रहा हूँ। मेरे पास यहाँ दविंगतों के साथ क्रॉस का चहिन बदलने का समय भी होगा। शांति से प्रार्थना सभा में वापस जाओ।"

जब धर्मवधिशुरू हुई, तो डॉ. ओल्गा फ्योदोरोव्ना को फादर के पास बुलाया गया। दर्द निवारक इंजेक्शन के बाद, उनकी हालत शांत, यहाँ तक कि प्रसन्न हो गई। "मैं चर्च जाना चाहता हूँ। आखिरकार, मैं खुद भी अच्छी तरह गाता था। मैंने पूरे पवतिर सप्ताह अपनी कोठरी में 'पास्खा' गाया था। और अब मुझे दूसरों से मेरे लिए गाने को कहना पड़ता है। लेकिन मैं यहाँ नहीं रहना चाहता; मैं चर्च में रहना चाहता हूँ। मैं सचमुच अपना कासक और कौल पहनकर ऐसे ही बैठना चाहता हूँ, कम से कम दवि लटिर्जी के लिए।" सेल अटेंडेंट ने उन्हें कपड़े पहनाना शुरू कर दिया, जबकि उन्होंने कहना जारी रखा: "मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप एक-दूसरे को सांत्वना दें, प्रेम और शांति से जाँ, और कभी भी एक-दूसरे पर अपनी आवाज़ न उठाएँ। मैं आपसे इससे ज्यादा कुछ नहीं चाहता। मोक्ष के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। यहाँ सब कुछ अस्थायी, क्षणिक है—इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, या अपने लिए किसी चीज़ के लिए प्रयास करने की ज़रूरत नहीं है। यह सब जल्दी ही बीत जाएगा। हमें शाश्वत के बारे में सोचना चाहिए।" उन्होंने पादरी को तैयार किया, और लड़के उसे चर्च ले गए।

रविवार दोपहर को, फादर अपनी कोठरी में लेटे थे, उन्होंने नया क्रीम रंग का रेशमी कासक पहना हुआ था। "मैं अभी यहीं लेटा था, याद कर रहा था," उन्होंने कहा, "कि ऑप्टिनि के बुजुर्ग कैसे गुजर गए। फादर जोसेफ बहुत लंबे समय तक बीमार रहे, जबकि फादर अनातोली 'छोटे' एक मिनट के लिए भी बीमार नहीं थे। वह एक अत्यंत अद्भुत तरीके से मरे... यह एक संस्कार है... एक वास्तव में अद्भुत संस्कार। अपने आत्मा में, अपनी महान विनम्रता में, वह सभी में सबसे अधिक मेरे बड़े भाई, फादर नेक्टारिस के करीब थे। क्रांति के बाद, दो बड़े भाई मरे और ऑप्टिनि कब्रस्तान में दफनाए गए। स्कूट-सुपरियर, फादर थियोडोसियस का 1920 में निधन हो गया, जब ऑप्टिनि में जीवन पहले की तरह ही था। लेकिन जैसे ही गृहयुद्ध समाप्त हुआ, 1920 में सब कुछ बदल गया। विशेष रूप से 1922 में, बहुत अधिक उत्पीड़न, तलाशी और गरिफ्तारियाँ हुईं। अब बारी थी बड़े भाई, फादर अनातोली की। 28 जुलाई को, वे उनके पास आए और उनकी लंबी तलाशी ली। फिर उन्होंने कहा, 'ठीक है, तैयार हो जाइए।' उन्होंने सुबह तक की मोहलत मांगनी शुरू कर दी ताकि वे अपनी चीज़ें पैक कर सकें। वे मान गए, लेकिन सेल सहायक को सख्त लहजे में आदेश दिया कि वह सुबह तक बड़े भाई को जगा दे और उन्हें रवाना होने के लिए तैयार कर दे। वे चले गए। वरिष्ठ ने प्रार्थना करना शुरू कर दिया। सेल का चौकीदार लगभग दो घंटे तक इंतजार करता रहा - वह अभी भी प्रार्थना कर रहे थे। फिर वह उनके पास गया और कहा, 'फादर, चलिए तैयार हो जाइए।' लेकिन वरिष्ठ ने जवाब दिया, 'दूर हटो, मुझे परेशान मत करो।' वह फिर से आया और पूछा, 'फादर, चलिए तैयार हो जाइए।' "तुम मुझे बार-बार क्यों परेशान कर रहे हो? मैं उनके साथ कहीं नहीं जा रहा हूँ; दूर हट जाओ।" सेल अटेंडेंट तीसरी बार आया, और फादर अनातोली अपने बसिटर पर लेटे थे, उनके हाथ छाती पर जुड़े हुए थे - मृत। खैर, सेल के परिचारक ने ज़रूरी लोगों को बुलाया; उन्होंने वृद्ध को उनके अंतिम संस्कार के वस्त्र पहनाए, उन्हें एक मेज़ पर लटाया, मोमबत्तियाँ जलाई, और सुसमाचार से पढ़ा। जल्द ही वे उन्हें लेने आए, पूछते हुए, 'क्या वृद्ध तैयार हैं?' सेल के परिचारक ने जवाब दिया, 'वह तैयार हैं, अंदर आओ।' वे अंदर आए, और वहाँ वह मेज़ पर मृत पड़ा था। स्वाभाविक रूप से, वे बहुत हैरान थे। फादर अनातोली का ऑप्टिनि कब्रस्तान में,

एल्डर मकरई के बगल में, अंतमि संस्कार कयिा गया। कब्र खोदते समय, उन्होंने एल्डर मकरई के ताबूत को नुकसान पहुँचाया और एल्डर के अपरविरत्नीय अवशेषों को खोज नकाला।"

सोमवार, 11 अप्रैल को, मदर अग्न्या ने फादर के लिए एक ईस्टर का अंडा भेजा। वह खुशी से खलि उठे: "प्रभु उन्हें बचाएं और आशीर्वाद दें। उन्होंने हमारे चर्च के लिए बहुत कुछ कयिा है! उन्होंने जतिना कयिा है, उतना किसी और ने नहीं कयिा है। और वास्तव में, उन्होंने अपने पूरे जीवन में कतिना भला कयिा है। मैं मर रहा हूँ। अब से, हर बात के लिए उनकी ओर रुख करना।"

सुबह 3 बजे, फादर के गले से खून बहने लगा। उन्हें एक रक्तस्राव रोधी दवा दी गई, और फादर झपकी लेने लगे। सुबह, अलमाटी में बशिप जोसेफ को फोन कयिा गया। उन्होंने कहा: "वह इस हफ्ते नहीं मरेंगे, लेकिन मौत पहले ही दरवाजे पर है। मैं आपके पास आ रहा हूँ।"

12 अप्रैल की सुबह, ईस्टर मंगलवार को, फादर को बेहतर महसूस हुआ और वह आसानी से सांस ले रहे थे। उन्होंने अपनी नौकरानी से कहा, "वेरा, मेरे जुते लगा दो; मुझे लोगों के पास ईस्टर की शुभकामनाएं देने के लिए बाहर जाना है, ताकि वे दुखी न हों। मैं वादा करता हूँ। मैं सभी को वह बताऊँगा जो सबसे महत्वपूर्ण है।" – "फादर, आपके पैर बहुत सूज गए हैं; मैं आपको चप्पल भी नहीं पहना सकती, बूट तो दूर की बात है।" – "नहीं, नहीं, मुझे वह कहना है जो सबसे महत्वपूर्ण है। मुझे तैयार करो!"

वेरा ने कुछ चप्पलें लाईं और उनकी कनारों को काट दिया। लड़के फादर को चर्च तक ले गए। उन्होंने अपना कासक और कौल पहना हुआ था। वे कुछ देर के लिए वेदी के पास बैठे, फरि उठे, रॉयल डोरस से होते हुए बाहर बुलंद दरवाजे पर गए। अपने दंड पर सहारा लेकर, उन्होंने एक बार फरि से मंडली को वदिाई देना शुरू कयिा: "अलवदिा, मेरे प्रयि, मैं अब जा रहा हूँ। अगर मैंने आप में से किसी को दुख पहुँचाया हो तो मुझे माफ कर देना। मसीह के वास्ते, मुझे माफ कर देना। मैं आप सभी को सब कुछ माफ करता हूँ। मुझे आपके लिए बहुत दुख है। मैं आपसे एक बात मांगता हूँ, मैं आपसे एक बात की वनिती करता हूँ, मैं एक बात की मांग करता हूँ: एक-दूसरे से प्रेम करो। ईश्वर करे कि आप सब में हर बात में शांतबिनी रहे। शांत और प्रेम। यदि आप मेरी बात मानते हैं—और मैं आपसे यह बहुत वनिमरता से कहता हूँ—तो आप मेरे बच्चे होंगे। मैं अयोग्य और एक पापी हूँ, लेकिन प्रभु में बहुत प्रेम और दया है। मैं उन पर अपना भरोसा रखता हूँ। और यदि प्रभु मुझे अपने महमिमय नविस के योग्य समझें, तो मैं आपके लिए अवशिष्ट प्रार्थना करूँगा। और मैं कहूँगा: 'प्रभु, प्रभु! क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ; मेरे बच्चे मेरे साथ हैं। मैं उनके बिना प्रवेश नहीं कर सकता; मैं आपके स्वरगीय नविस में अकेला नहीं हो सकता। वे मुझे आपके द्वारा सौंपे गए हैं'... और फरि, धीरे से, मुश्कलि से सुनाई देने वाली आवाज़ में: 'मैं उनके बिना नहीं कर सकता।' – उन्होंने यह कहा, और झुकना चाहा, लेकिन नहीं सके; उन्होंने केवल अपना सरि झुकाया। लड़कों ने उन्हें बाजुओं से पकड़कर वेदी तक ले गए।

चर्च में हर कोई रो रहा था।

बुधवार 13 अप्रैल को, बशिप पटिरिमि की बहन, नादेज्दा व्लादमिरोवना, और अकादमी से अनातोली प्रॉस्वरिनिकि [बाद में आर्चमिंड्राइट इनोकेन्टी († 1994)] आए। दविय लटिरजी के बाद फादर ने अपने केबनि में नादेज्दा व्लादमिरोवना से लंबी बात की।

अलमाटी से खबर आई: बशिप जोसेफ को 40 का बुखार होने के कारण गंभीर रूप से बीमारी हो गई थी, इसलिए वे उड़कर नहीं आ सकते थे।

गुरुवार की रात, फादर लगभग सोए नहीं; वे दर्द से कराह रहे थे, हांफ रहे थे, और उन्होंने कहा: "मेरे पूरे शरीर में एक भी ऐसा अंग नहीं है जो दर्द-मुक्त हो। मेरी रीढ़ की हड्डी आग की तरह जल रही है; मैं सांस नहीं ले पा रहा हूँ। और सबसे बुरी बात - आत्मा का कष्ट।" वे बार-बार पूछते रहे कि कतिनी देर हो गई है।

चर्च से कुछ ननजयिाँ उसे देखने आईं। जब ससिटर फेवरोन्या अंदर आई, तो फादर ने उनकी ओर एक लंबी, अवचिल दृष्टि से देखा, दो बार उनका आशीर्वाद दिया और कहा: "प्रभु आपको आपके हर काम के लिए, आपकी सारी दया और भक्तिके लिए बचाएं। मैं अपने साथ सब कुछ ले जा रहा हूँ। प्रभु तुम्हें बचाएँ।" जब वह जा रही थी, तो उन्होंने उनकी ओर कई बार क्रॉस का चहिन बनाया।

ससिटर अग्न्या के संदेशवाहक आए, जिन्होंने बताया कि मदर सुपीरियर ने खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया था और किसी को अंदर नहीं आने दे रही थीं।

शाम को, हेगुमेन दमित्तिरी कोक्चेताव से वमिान से आए। उन्होंने बशिप जोसेफ को फोन करके फादर दमित्तिरी को स्कीमा में दीक्षा देने की अनुमत मांगी। बशिप ने जवाब दिया: 'कोई जरूरत नहीं है। कल, बशिप पटिरिमि माँस्को से आएंगे और सब कुछ संभाल लेंगे।'

फादर से अनुरोध किया गया कि यदि संभव हो तो टोनसुर के समय अपना नाम न बदलें, क्योंकि हिर कोई उन्हें उसी नाम से जानता था, और नाम बदलना, मानो, सभी के लिए चर्चा का एक अतिरिक्त स्रोत होगा। फादर मान गए और कहा कि वे इस बारे में बशप पटिरिमि से पूछेंगे।

"मेरे नदिन का दिन नज़दीक आ रहा है," फादर ने अपने आसपास मौजूद लोगों से कहना शुरू किया, "मैं बहुत परसन्न हूँ कि प्रभु ने मुझे स्कीमा ग्रहण करने के योग्य समझा; मैं इस दिन का लंबे समय से इंतज़ार कर रहा था। आप सभी को पीछे छोड़कर जाना दुःख है, लेकिन ईश्वर की यही इच्छा है।" "फादर, हमारी देखभाल कौन करेगा?" फादर एक क्षण के लिए गहरे विचार में चुप रहे, फिर बोले: 'शोक मत करो। मैं तुम्हें स्वर्ग की रानी की देखभाल में छोड़ता हूँ। वह स्वयं तुम्हारा खयाल रखेगी। और तुम्हें एक-दूसरे के साथ शांति से रहने की कोशिश करनी चाहिए, हर संभव तरीके से एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा; मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगा, यदि मुझे प्रभु के सामने हार्मिमत मिले। और तुम्हें भी प्रार्थना करनी चाहिए। चर्च को न छोड़ना; रविवार और पर्व के दिनों में आने का विशेष प्रयास करना। ऐसा करने से, तुम ईश्वर की दया और स्वर्ग की रानी की मध्यस्थता से बच जाओगे।

शाम के देर से, जब डॉ. तात्याना व्लादमीरोवना फादर को इंटरवेनस डरपि लगा रही थीं, तो उन्होंने बोलना शुरू किया: 'यहाँ, मेरी प्रिय डॉक्टर, मेरी पुरानी डॉक्टर। मेरे लिए एक शब्द बोलना भी मुश्किल है, फिर भी मैं आपको यह बताना चाहता हूँ। मेरी जीभ नहीं हल रही है, मेरा मुँह सूख गया है, और हर जगह दर्द हो रहा है। आपको सुई से ऐसा कोई भी स्थान नहीं मिला होगा जहाँ दर्द न हो। मेरी टाँगें अब मुझे सहारा नहीं दे सकतीं; मेरे पूरे शरीर में इतनी कमजोरी है कि अपनी पलकें उठाना भी मुश्किल हो रहा है। फिर भी मेरा मन शांत और स्पष्ट है; मेरे विचार स्पष्ट, गहरे और शांत रूप से प्रवाहित हो रहे हैं। मेरी चेतना न तो धुंधली है और न ही बदली हुई—नहीं। मैं यहाँ लेटा हुआ सोचता हूँ: तो विचार शरीर पर निर्भर नहीं करते। और मस्तिष्क शरीर है। अब मेरे शरीर में सोचने के लिए कोई ताकत नहीं बची थी। विचार आत्मा से आते हैं। अब यह स्पष्ट हो गया है। तो, प्रभु की स्तुति हो, मैं आपको यह बताने में कामयाब रहा।"

शनिवार 16 अप्रैल को, सुबह 9 बजे, बशप पटिरिमि हवाई अड्डे से आए। वह सीधे फादर के पास गए और उनकी हालत देखकर दंग रह गए। बाद में उन्होंने अपने आसपास के लोगों से कहा, 'मैंने उन्हें कभी इस हालत में नहीं देखा, तब भी नहीं जब वह बीमार थे।' उन्होंने नज़ी तौर पर काफी देर तक बात की।

दोपहर के भोजन के बाद, फादर की हालत में अचानक गिरावट आई; उन्होंने बशप पटिरिमि को तुरंत अपने पास बुलाने के लिए कहा। जब बशप आए, तो फादर ने उनसे तुरंत स्कीमा में प्रवेश के लिए मुंडन संस्कार करने का अनुरोध किया। तैयारियाँ शुरू हो गईं। बशप ने सभी को जाने के लिए कहा; केवल ससिटर अनास्तासिया ने मुंडन में सहायता की।

केशच्छेदन के बाद, फादर ने बहुत कम बात की। उनका चेहरा और उनका पूरा आचरण असाधारण रूप से बदल गया था। वे अनुग्रह से इतने परपूर्ण थे कि उन्हें देखकर आत्मा काँप उठती थी, और व्यक्ति अपनी पापी प्रकृति को तीव्रता से महसूस करता था। वे एक भव्य एल्डर थे, जो अब इस दुनिया के निवासी नहीं रहे थे।

सुबह 3 बजे, फादर ने अपना पाप-स्वीकार सुनने और उन्हें पवित्र कम्युनियन देने के लिए फादर अलेक्जेंडर को बुलाया। सुबह तक, उनके भीतर जीवन मुश्किल से ही धड़क रहा था। वह अपनी आँखें बंद करके, भारी साँसें लेते हुए लेटे थे, और अपनी उंगलियों को कंबल पर ऐसे फेर रहे थे जैसे पियानो की कुंजियों पर। जब उन्होंने अपनी आँखें खोलीं, तो उन्होंने उपस्थित लोगों से परे एक दूर की, उदास नज़र से देखा। फिर उन्होंने बशप पटिरिमि से बात की। जल्द ही उन्होंने डॉक्टर, तात्याना व्लादमीरोवना को बुलाया: "मेरी पुरानी डॉक्टर, मेरी मदद करो; मैं बहुत तकलीफ में हूँ, बहुत दर्द में हूँ।" – "पतिजी, कहाँ दर्द हो रहा है?" उन्होंने अपने हाथों की ओर इशारा किया, जिन पर नस में दरद डालने के बाद पट्टी बंधी हुई थी। उनकी नसों पहले से ही दूढ़ना मुश्किल थी; दवा उनकी त्वचा के नीचे रसि रही थी, जिससे उन्हें अतिरिक्त दर्द हो रहा था। – "अभी, फादर; मैं आपको दर्द निवारक का इंजेक्शन लगा देता हूँ, और दर्द चला जाएगा।"

– असली दर्द तो वह नहीं है। असली बात तो आत्मा का कष्ट है। क्या तुम्हें लगता है कि मौत कोई मज़ाक है? मेरे पाप तो बहुत हैं, लेकिन पुण्य बहुत कम हैं।

'पतिजी, आपके पाप तो सूक्ष्मदर्शी से भी नहीं देखे जा सकते, जबकि आपके पुण्य समुद्र के समान विशाल हैं।'

'लेकिन मैंने क्या किया है? मैं एक कठोर और साधारण जीवन जीना चाहता था, और फिर भी, जो भी वे हों, मैंने सुख और आराम में मग्न रहा हूँ। और मैंने सुंदरता, विशेष रूप से प्रकृति की सुंदरता को नहारा है।'

– पतिजी, क्या सुंदरता ईश्वर की कृपा नहीं है?

— ईश्वर की कृपा ईश्वर से मिलने वाली खुशी है। जहाँ तक पुण्यों की बात है—मेरे अपने कोई पुण्य नहीं हैं! कोई वीर कर्म नहीं! एक व्यक्ति जीता है, लेकिन किसलिए? सब कुछ ईश्वर से आता है। और ईश्वर का क्या? यह सभी पर लागू होता है; यह परिवर्तन सभी के लिए अपरिहार्य है। यहाँ सब कुछ अस्थायी, क्षणभंगुर है। एक व्यक्ति जीवन का अपना मार्ग क्यों चलता है? प्रेम के लिए, , सदगुण के लिए। और इसीलिए उन्हें दुख सहना पड़ता है और अपने दुख को धैर्यपूर्वक सहना पड़ता है। और शाश्वत आनंद के लिए शाश्वत जीवन में प्रवेश करने का प्रयास करना पड़ता है। लेकिन मैं, आप देखिए, जिया, अच्छा किया, जैसा आप कहते हैं, और फिर मैंने पाप किया। एक व्यक्ति गलतियाँ करता है, क्रूरता से काम लेता है, और जो कुछ भी उसने अर्जित किया है, वह सब खो देता है। मैंने अपना भारी मठवासी सलीब उठाकर बहुत कष्ट सहे हैं। मठवासी जीवन कठिन है, फिर भी यह सबसे आसान भी है। और फिर भी मैंने कभी-कभी शिकायत की है। और इस शिकायत के कारण, सब कुछ खो गया—मेरे सभी पुण्य। और इस प्रकार—आनंद के बजाय आत्मा का क्लेश।

— फादर, मुझे कैसे जीना चाहिए? पादरी ने रुककर कहा:

— जैसे जी रहे हो, वैसे ही जीते रहो। हम सब पापी हैं। बस कोई घोर पाप मत करना... खैर, हमारी बात यहीं खत्म। आज मेरे लिए बोलना और सांस लेना आसान है। मसीह आपके साथ हो।

सोमवार शाम को, राडोनटिसा के लिए स्मृतिसेवा के दौरान, पादरी को चर्च में ले जाया गया। वह अपने 'केबिन' में लेटे रहे, किसी से कुछ नहीं कह रहे थे, किसी की ओर नहीं देख रहे थे। वह बार-बार क्रॉस का चनिह बना रहे थे, गायन और सेवा को सुन रहे थे। बशिप पटिरिमि सेवा का संचालन कर रहे थे। जब उन्होंने 'शाश्वत स्मृति' गा ली, तो उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें घर ले जाया जाए। सेवा के बाद, उन्होंने हजि ग्रेस से बात की, और फिर फादर जॉन से, जो रात 10 बजे मचिरसिक से उड़कर आए थे। फादर ने खुशी-खुशी उनका स्वागत किया, यह कहते हुए कि उन्हें खुशी है कि वह उन्हें अभी भी जीवित पाए। 'आप मुझसे मिलने आ गए, और आज मैं सभी दविंगतों के साथ क्रॉस का चनिह बदलने और उनके लिए प्रार्थना करने में कामयाब रहा। बस देखिए कि आज कतिना सुहावना दिन है! आज महामहिम ने प्रार्थना की, और कल वह मेरे सभी दविंगत बच्चों के लिए प्रार्थना करेंगे। मैं राडोनटिसा देखने के लिए ज़िदा रहा। प्रभु दयालु हैं। और दविंगत आत्माओं को जीवित लोगों की प्रार्थनाओं की कतिनी जरूरत होती है, वे उन्हें कतिनी संजोते हैं। मैं हमेशा सबसे ज्यादा मृतकों के लिए प्रार्थना करता आया हूँ। और आपसे, फादर जॉन, मैं यही नविदन करता हूँ: सबसे ज्यादा मृतकों के लिए प्रार्थना करें। हर चीज़ के लिए ईश्वर की महिमा! हर चीज़ के लिए ईश्वर की महिमा!"

फादर के जीवन के इन अंतिम दिनों के दौरान, उनके कई आध्यात्मिक बच्चे, जो वरिष्ठ के पास से दूर नहीं होना चाहते थे, ने चर्च में रात बिताई। 18 अप्रैल को, सामान्य शाम की प्रार्थनाओं के बाद (थॉमस सप्ताह की शुरुआत), फादर ने पासकाल घंटों को पढ़ने के लिए कहा, जिसके बाद सभी अपने-अपने स्थान पर लौट गए। उनके सेल के परिचारक, उनकी पोती तैसिया और डॉक्टर ओल्गा फ्योदोरोव्ना, फादर के सेल के पास ड्यूटी पर रहे। फादर बेचैनी से सो रहे थे, पलटते-पलटते। सुबह 4 बजे, उन्होंने अपने सेल से घंटी बजाई। ओल्गा फ्योदोरोव्ना तुरंत उठकर सेल में चली गई। पादरी ऐसा लग रहे थे मानो वे पीड़ा में हों। ओल्गा फ्योदोरोव्ना ने पूछा, "फादर, मेरे प्रिय, क्या आप ठीक नहीं हैं?" उन्होंने हाँ में सरि हिलाया और कहा, "हाँ, मैं ठीक नहीं हूँ।" ओल्गा फ्योदोरोव्ना ने उन्हें इंजेक्शन लगाने की पेशकश की। उन्होंने सहमति दे दी: "हाँ, कृपया, करें।" उसका सरि और हाथ जल रहे थे। उसने कुछ गाँज गीला किया और उसे फादर के माथे पर रख दिया। इंजेक्शन के बाद, वह शांत हो गया और दर्द कम हो गया। ओल्गा फ्योदोरोव्ना ने सरिजि धोना शुरू कर दिया। अचानक, फादर को जोर से खांसी आई, वह बसितर पर सीधा बैठ गया, अपनी कोहनी के बल उठ खड़ा हुआ, एक थैले में कफ़ थूका, और सवालिया नगिहों से ओल्गा फ्योदोरोव्ना और फिर थैले की ओर देखा। उसमें खून था। फिर उसने दो-तीन बार और कफ़ थूका। ओल्गा फ्योदोरोव्ना उसके बगल में बसितर पर बैठ गई, उसकी पीठ सहलाने की कोशिश करते हुए। अचानक, तेज खांसी का दौरा फिर से पड़ा। पादरी बसितर पर झटके से सीधा हो गया, एक गहरी सांस ली, और अपनी आँखें फैला दीं। उसकी नगिहें दूर ठहरीं, मानो उसने किसी को देखा हो और वह हैरान हो गया हो। यह बस एक पल के लिए था। उसका चेहरा मौत के घाट उतरा हुआ था; वह थोड़ा सा सीधा हुआ, आखिरी सांस ली और चल बसा। उसकी खुली आँखों में एक सवालिया, हैरान नगिह जमी रह गई। फादर का नदिन 19 अप्रैल को सुबह 4.45 बजे हुआ। यह मंगलवार था। राडोनटिसा।

ओल्गा फ्योदोरोव्ना चीख पड़ी; नन और तैसिया तुरंत अंदर दौड़ आईं। रोना-धोना शुरू हो गया और हड़कंप मच गया। बशिप पटिरिमि और उस रात पास में मौजूद सभी लोगों को बुलाया गया। बाकी सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा होना चाहिए था।

सुबह 5.30 बजे, उनकी ग्रेस ने अंतिम संस्कार की प्रार्थना शुरू की। फादर एक सफेद चादर पर बछ्छे अपने बसितर पर लेटे थे, उन्होंने एक नया क्रीम रंग का रेशमी कासोक पहना हुआ था। उसी क्रीम रंग के कपड़े ने उनका चेहरा और पैर ढके हुए थे। उनके हाथ उनकी छाती पर एक क्रॉस के आकार में जुड़े हुए थे। एक गहरी और गंभीर शांति थी। अब कोई रो नहीं रहा था। कोई दुख नहीं था - एक शांतिकी अनुभूति आत्मा में समा गई थी।

स्मृति सभा समाप्त होने के बाद, सभी लोग कोठरी से चले गए। वेस्मेट समारोह शुरू हुआ। फादर अभी भी काफी गरम थे, उनका चेहरा शांत था, मानो वे जीवित हों। फादर का शरीर लगभग समाप्त हो चुका था, केवल हड्डियाँ बची थीं। उन्होंने उस पर जैतून का तेल लगाया और उसे स्कीमा पहनाया। उनकी कृपा ने उसे एक मंटल से ढक दिया और एक कौल से उसका चेहरा छपा दिया।

कमरे में मोमबत्तियाँ जल रही थीं। पुजारी सुसमाचार पढ़ रहे थे। मेज पर, उनके कासोक के नीचे, हमारे पति लेटे थे, जनिका प्रेम पृथ्वी पर किसी भी मनुष्य के लिए संभव किसी भी प्रेम से परे था। उनके प्रत्येक आध्यात्मिक संतान उनके सबसे प्रिय थे। केवल उनके सबसे प्रिय में से एक नहीं, बल्कि प्रत्येक, बिना किसी अपवाद के, उनके सबसे प्रिय थे। जो असंभव लगता है, वह ईश्वर के लिए संभव है; और केवल संभव ही नहीं, बल्कि समझ में आने वाला और स्वाभाविक भी। और अब एक काला कपड़ा मेज पर रखी वस्तु को ढक रहा है। सब जानते हैं कि यह फादर हैं। नसिंदेह, फादर। और फरि भी, यह अब वे नहीं थे। उनके और हम सबके बीच, उनके काले चोगा के नीचे लेटे हुए, एक अटूट खाई खुल गई थी, जो सबसे गहरे गर्त से भी गहरी थी।

सुबह, उनकी कृपा ने राडोनटिसा की स्मृति सेवा का अनुष्ठान किया। शाम को पाँच बजे, उन्होंने काले कपड़े से ढकी ताबूत लाई और उसमें फादर को लटिा दिया। उनकी कृपा ने फादर की कमलाउखा उतार दी, उनके सरि पर माइटर (शीर्ष-परधिन) रख दिया, और 'सहायक और रक्षक...' गाते हुए, ताबूत को चर्च के अंदर ले जाया गया। आध्यात्मिक भजनों के शब्द, अपनी गहराई में वसिम्यकारी, प्रवाहित हो रहे थे—वचिरमग्न दुख और सांत्वना से भरे, जो हमारे लिए अकल्पनीय की सीमाओं तक पहुँच रहे थे, फरि भी पवित्र पति की आत्मा द्वारा पहले से ही ग्रहण कर लिए गए थे। उनके दुखद कष्ट समाप्त हो गए थे—उनके बलदिनी प्रेम के सूली पर चढ़ाए जाने जैसे कष्ट, उनके शारीरिक यातनाएँ, उनकी 'आत्मा का कषीण होना'। उसकी आत्मा को मुक्ति मिल गई थी। और हम वह आनंद खो चुके थे कि हम पादरी से किसी भी बात पर हमेशा पूछ सकते थे। जो कुछ भी होता, बस उनके पास जाना होता, उन्हें बताना होता, और सब कुछ अपने आप ठीक हो जाता, सब कुछ सही हो जाता। उनकी कोमल दृष्टि, उनकी आवाज़, जब वे सुसमाचार पढ़ते हुए अपने वाक्यों को खींचकर बोलते थे - वह भी अब नहीं रहा। लेकिन क्या हम शोक मना सकते हैं, रो सकते हैं, या व्याकुल हो सकते हैं? क्या पति के साथ आध्यात्मिक बंधन को तोड़ा जा सकता है? अब हमारा मलिन एक अलग तरह का हो सकता है - प्रार्थना का।

कजाखस्तान, साइबेरिया और रूस के यूरोपीय भाग के हर कोने से, पुरोहिती और आम लोग - फादर के आध्यात्मिक बच्चे - उनके चर्च के धन्य आश्रय में उमड़ पड़े। पुरोहिती पूरी रात स्मृति सभा आयोजित करते रहे, जबकि गायन मंडली गाती रही। और लोग आते ही रहे। उनकी परम पावनता पैटरआर्क का एक टेलीग्राम मलिा: "मैं दयालु वरिष्ठ, आर्चमैड्राइट सेवेस्टयिन के नधिन पर चर्च के अनुयायियों को अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूँ। आपकी कृपा, वोल्कोलामस्क के बशिप पटिरिमि, को प्रभु में नधिन पाए हुए की अंत्येष्टि करने हेतु अधिकृत किया जाता है। पैटरआर्क अलेक्सी।"

तीसरे दिन, फादर को मखाइलोव्सकोये कबरसितान में दफनाया गया। ताबूत को एक शव वाहन पर मुख्य सड़क तक थोड़ी ही दूरी तक ले जाया गया। मुख्य सड़क पर मुड़ते ही, ताबूत को फैली हुई बाहों पर कबरसितान तक ले जाया गया। यह विशाल भीड़ के ऊपर तैरता हुआ था और हर तरफ से दिखाई दे रहा था। मुख्य सड़क पर सभी यातायात रोक दिया गया था; भीड़ ने सड़क और फुटपाथ के किनारे एक घनी दीवार बना ली थी। घरों की खडकियाँ खुली थीं, और लोग उन से बाहर झाँक रहे थे। कई लोग अपने घरों के दरवाजों पर और बेंचों पर खड़े थे। युवा महिलाओं का एक गायन मंडली, 'मसीह जी उठे हैं' गाते हुए, ताबूत के पीछे-पीछे चल रही थी। हजारों की भीड़ ने 'मसीह जी उठे हैं' का गायन किया। जब जुलूस सीमेंट फैक्ट्री के पास से गुज़रा, तो पूरी बाड़ पर बैठे मजदूरों से वह भर गई, और गीले मोर्तार से सने ओवरऑल पहने पूरी शफिट के कर्मचारी फैक्ट्री के आँगन में उमड़ पड़े। लोग भीड़ को चीरकर ताबूत को छूने के लिए अपने हाथों से आगे बढ़े। कई लोग पहले ही आगे जा चुके थे और कबरसितान में ताबूत का इंतजार कर रहे थे।

कबरसितान के किनारे फादर के लिए एक कबर खोदी गई थी, जिसके आगे तक अनंत कजाख स्टेप फैला हुआ था। ताबूत को कबर के पास रखा गया, और महाधरमाध्यक्ष ने अंतिम संस्कार की रस्म संपन्न की। फादर ने अपनी कामेलौक पहनकर दफनाए जाने की इच्छा व्यक्त की थी। उनकी प्रसादी ने अपने सरि से माइटर हटाकर उन पर कामेलौक रख दिया। ताबूत को कबर में उतारा गया, मटिटी का एक ढेर लगाया गया, और एक क्रॉस खड़ा किया गया।

हे दयालु एल्डर, अथक मध्यस्थ, जीवति जल के फव्वारे, उपचार की बुद्धिमत्ता के शक्तिष्क – आत्मा से प्रवाहति शब्द, आपकी स्मृतशाश्वत रहे।

पादरी की मृत्यु के कुछ ही समय बाद, बशिप जोसेफ करागंदा पहुँचे [अलमा-आटा और कजाखस्तान के मेट्रोपॉलिटिन जोसेफ (चेर्नोव, 1893–1975) ने कुल 20 साल शक्ति और नरिवासन में बताया। इनमें से, उन्होंने कारलाग में छह साल बताया।]

उन्होंने फादर के लिए एक स्मारक लटिर्जी का आयोजन किया, कब्रस्तान गए और एक स्मारक सेवा का संचालन किया। उन्होंने कुछ लोगों को फटकारा, दूसरों को वनिमूर बनाया, कुछ औरों को सात्वना दी - और सभी को 'अंगूर' खिलाए, कुछ मीठे, कुछ कड़वे। और जाने से पहले, उन्होंने कहा: 'महान सम्माननीय, धन्य एल्डर, फादर सेबेस्टियन, रात में बहुत रोए और प्रार्थना की। और यह बात केवल ईश्वर और वही जानते थे। और वे किस बात पर रोए? कई लोग, जिनमें पदस्थ अधिकारी भी शामिल थे, उनसे सहमत नहीं थे और न ही उन्होंने उनकी सलाह मानी। उन्होंने यह सब वनिमूरता से सहन किया, और उन सभी के उद्धार और ज्ञानोदय के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। और इस प्रकार, प्रभु के प्रति उनकी आँसुओं और प्रार्थनाओं के कारण, पवित्र आत्मा की कृपा दूसरे आगमन तक कारागंदा पर बनी रहेगी।

बशिप जोसेफ को करागंदा आना बहुत पसंद था। वे कहा करते थे: "करागंदा को शहद से अभिषिक्त किया गया है," "करागंदा संतों की हड्डियों पर बना है" और "आओ हम धन्य करागंदा चलें।"

बोल्शेमखाइलोव्स्की पैरिश के बारे में बात करते हुए, उन्होंने कहा: "पति ने यहाँ अंगूर की बेलें लगाई, जिन्हें उन्होंने बाद में अपने आँसुओं से पोषित किया।" "एक छोटा सा चर्च, जो जमीन से दिखाई नहीं देता, फिर भी उसका दीपक स्वर्ग तक चमकता है।"

करागंदा की अपनी एक यात्रा के दौरान, उनकी प्रेमादर ने पैरिशों का दौरा किया और पुरोहिती की चर्च में लटिर्जी का अनुष्ठान किया, लेकिन वे पुरोहिती की कब्र पर नहीं गए। उन्हें हवाई अड्डे पर वृद्धि किया गया; बेशक, हर कोई बहुत दुखी था। और हुआ यह कि: वमिान अल्माटी तक उड़ गया, लेकिन वहाँ मौसम की स्थिति अनुकूल नहीं थी; अल्माटी ने इसे स्वीकार नहीं किया, इसलिए वमिान वापस मुड़कर करागंदा लौट आया। और महामहोदय ने वमिान में मजाक किया: "यह सेबेस्टियन का काम है! हम उनकी कब्र पर नहीं गए, और उन्होंने हमें सीधे वापस भेज दिया!" हवाई अड्डे से, ने मखाइलोवका के लिए एक टैक्सी ली, एक स्मृतसेवा का आयोजन किया, फादर की कब्र पर गए, और तभी उड़ान भरी।

उन्होंने फादर के बारे में इन शब्दों में कहा: "मुझे पूरा यकीन है कि फादर को पूजनीय लोगों में गिना जाता है।"

फादर के बच्चे

फेडोसिया फेदोतोव्ना प्रोकोपेन्को (श्वैगर)

हमें 1 अगस्त 1931 को ओसाकोरोव्का, पांचवें बस्ती में लाया गया था। हमारे साथ हमारी माँ और हम सात बच्चे थे। हमारे सबसे बड़े भाई पव्लिक, उम्र सोलह साल; मैं बारह साल का था; हमारा छोटा भाई झेन्या; हमारी बहनें नादिया और वरिया; फरि वान्या; और सबसे छोटा, ग्रशिा। यह एक बड़ा परिवार था। उन्होंने पहले हमारे पति को ले गए, और हमें नहीं पता था कि वह कहाँ थे।

हम स्तालनिग्राद क्षेत्र में रहते थे; मेरे पति गाँव की पंचायत में काम करते थे। 1929 में, जब उन्होंने अमीर किसानों से उनकी संपत्ति छीननी शुरू की, तो मेरे पति को 'पार्टी कार्यकर्ता' के रूप में शामिल कर लिया गया। उन्होंने किसानों की संपत्ति जित करने से इनकार कर दिया, कहते हुए: 'मैं नहीं जाऊँगा; मैं ऐसा नहीं कर सकता' – और इसलिए उन्होंने मेरे पति और हम सभी को 'कुलाकों के सहयोगी' के रूप में ले गए। हम छोटे किसान थे, जिन्हें उस समय 'मध्यम किसान' कहा जाता था। हमारे पास एक खोदा हुआ कुआँ, एक गाय, दो घोड़े और कुछ भेड़ें थीं। मेरे पति ने एक साल एकांत कारावास में बताया। पहले तो उन्होंने हमें स्तालनिग्राद से चालीस किलोमीटर दूर ले गए, और 1931 में हमें ओसाकोरोव्का, 5वीं बस्ती में ले आए, जहाँ समतल मैदान था। उस बस्ती में पचास हजार लोग थे। चारों ओर, घोड़ों पर सवार पुलिस पहरा देती थी ताकि कोई भाग न पाए। लेकिन भागोगे तो कहाँ? वहाँ इशिम नदी थी। हम वहाँ से पानी लाते थे और वहीं कपड़े भी धोते थे। हम जंगली जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करते, उन्हें उबालकर खा लेते थे। मैदान में, हमने तहखाने जैसा एक गड्ढा खोदा, उसे जो कुछ भी मिला उससे ढक दिया, और वहाँ रहने लगे। पहले साल हर कोई इसी तरह रहता था। पूरे सेटलमेंट नंबर 5 के लिए सरिफ एक ही कुआँ था, जो पच्चीस मीटर गहरा था - वह आज भी मौजूद है। दिने-रात

हम पानी के लिए कतार में लगते थे। माँ आपको एक छोटी बाल्टी लेकर भेजती थीं, और आप बीमार बच्चों के लिए पानी लाने जाते थे। कोई शौचालय नहीं था; बस लगभग तीस मीटर लंबी एक खाई खोदी गई थी, जिसमें सभी साझा करते थे। और इस तरह, लोग मरने लगे – हैजा का एक व्यापक प्रकोप। हर शाम एक ठेला आता था; मृतकों को लकड़ी की तरह उस पर फेंक दिया जाता और खाइयों तक ले जाया जाता। ऐसा भी हुआ कि पूरे परिवार मर गए। और हमारे बच्चे हैजा से बीमार पड़ने लगे। उन्हें तेज बुखार था; कोई डॉक्टर नहीं थे। उनके होंठ फटकर खून कर रहे थे, इसलिए हमने उन्हें थोड़े से पानी से भीगा दिया। और इस तरह, 31 अगस्त को, मेरा छोटा भाई जेन्या मर गया; फरि, 11 सितंबर को, मेरी छोटी बहन नादिया मर गई; और 17 सितंबर की सुबह, वार्या मर गई। सूरज अभी-अभी उगा था, आधा ही निकला था, जब माँ और मैंने वह गड्ढा खोदा; हम वहाँ लेटे हुए थे जब वार्या मर रही थी। और जैसे ही सूरज पूरी तरह से निकला, उन सब में सबसे छोटा, ग्रशिा, मर गया। ताबूत नहीं थे; हमने खुद कब्रें खोदीं और लाशों को उनमें फेंक दिया। हम भाग्यशाली थे कि हमारे अपने ही फार्मस्टेड से चाचा पेट्या जैसे रशितेदार थे। उनकी आत्मा को शांति मिली। वह माँ से कहते थे: 'चिंता मत करो, दाशा, हम तुम्हारे बच्चों के लिए कुछ टोकरियाँ बुन देंगे' – वहाँ कुछ झाड़ी की लकड़ियाँ थीं। और माँ ने सभी बच्चों को टोकरियों में डाल दिया। और माँ उस खेत के लड़कों से कहतीं: 'बैरल के नीचे जगह खोदो ताकि हम टोकरी को उसमें फिसला सकें।' और फरि वे उस पर और, और, और ढेर करते, और फरि ऊपर, और, और फरि वे सब कुछ ढक देते। पचास हजार में से, क्या आधे बच पाए, या नहीं? लेकिन हम बचे थे: पावलकि, मैं और वान्या, और हमारे साथ माँ।

फरि हम काम पर जाने लगे। वहाँ, वे घास की टायल्स खोद रहे थे, और हम कशोर—हममें से लगभग बारह लोग—एक गाड़ी से खुद को बाँध लेते और घास की टायल्स को नरिमाण स्थल तक खींचते थे; वे घर बना रहे थे, घास की टायल्स से दीवारें खड़ी कर रहे थे। लेकिन हम उन पहले घरों में नहीं रहे। फरि माँ टाइफस से बीमार पड़ गई; वे दो हफ्ते तक बेहोश पड़ी रहीं, जबकि हम इंतजार करते रहे।

सरदी आ गई, और हम पर थोड़ी बर्फ जमने लगी। बर्फ गरिने के बाद, पापा हमें देखने आए; उन्होंने हमारे फरि से मिलने की व्यवस्था कर ली थी। पापा ने काम करना शुरू कर दिया, और हमारे लिए चीजें थोड़ी आसान हो गईं। पापा ने हमारे खोदे हुए घर के एक कोने में मटिटी की परत बछिआई और गड्ढे को ऊपर से मटिटी से ढक दिया। वह अपने साथ एक भेड़ की खाल का कोट लाया था, जिससे हम चोरी-छुपि उसे दे पाने में कामयाब रहे। और मेरा छोटा भाई और मैं पूरी सरदियों में उसी कोट के नीचे लेटे रहे, क्योंकि हम नंगे थे; उन्होंने हमें सरिफ पीठ पर पहने कपड़ों के साथ ही ले जाया था, और हमें उसी हालत में वापस लाया था। बेशक, मुझे यह कहते हुए माफ करना, लेकिन हम गनिती किया करते थे कि हम में से प्रत्येक ने कतिनी जूँ पकड़ी और मारी; जूँ हम पर हर तरफ रेंग रही थीं। हम सूखा राशन खाते थे; वहाँ पकाने के लिए कोई जगह नहीं थी। वे दाल लाते, और हम उसे चबाते थे। वह सरदी सबसे कठिनी थी। पावलकि और वान्या उसमें बच नहीं पाए, और सभी बच्चों में से मैं ही बचा था, माँ-पापा के साथ। दूसरे साल तक, उन्होंने पहले ही एक घर बना लिया था; उन्होंने उसे पाँच फ्लैटों में बाँट दिया, और हम पहले से ही अपना चूलहा बना रहे थे।

हमने जो कुछ झेला - ईश्वर न करे कि किसी को कभी झेलना पड़े! जिसने कभी कजाखस्तान नहीं देखा, उसने असली तकलीफ नहीं देखी, लेकिन जो कोई भी वहाँ रहता है, वह अपनी मौत के दिनी तक इसे कभी नहीं भूल पाएगा!"

और 5वीं बसूती में कब्रें कहाँ थीं? अब वहाँ बस एक समतल ज़मीन का टुकड़ा है। मैं अब कल्पना भी नहीं कर सकता कि उन्हें कहाँ दफनाया गया था; बसूती बहुत बड़ी है। वहाँ बहुत से गड्ढे थे, लेकिन मुझे नहीं पता कि उन्हें अब कहाँ खोजूँ। क्या किसी को याद भी है कि वे गड्ढे कहाँ थे? मुझे नहीं लगता। पुरानी पीढ़ी के अब बहुत से लोग नहीं बचे हैं। अगर माँ ज़िंदा होती, तो शायद उन्हें याद होता।

नीना 'कोखलुशका'

मेरा नाम नीना 'कोखलुशका' है। खैर, अगर मैं आपको अपना उपनाम भी बता दूँ, तो कोई मुझे उससे नहीं जानता। मैं मूल रूप से सुमी क्षेत्त्र की रहने वाली हूँ, ज़र्नोवो स्टेशन से। '41 में, जब युद्ध शुरू हुआ, तो मैं टेरनोपलि में थी। हमें टेरनोपलि से कीव ले जाया गया; हम कीव तक दौड़कर गए, और हमें बताया गया: "जैसे भी हो, अपनी जान बचाओ।" किसी तरह मैं अपने पति और माता के पास घर पहुँचने में कामयाब हो गई। मैं पहुँची ही थी कि ज़िर्मन आ गए। मैंने उनके लिए काम किया – उनके जूते साफ करने का। मेरी दो बहनों को तुरंत ज़र्मनी भेज दिया गया, जबकि मुझे किसी कागज पर दस्तखत करने का आदेश दिया गया और जूते साफ करने के लिए छोड़ दिया गया। और जब हमारी सेना आई, तो मुझसे यह निकल गया कि मैंने किसी तरह की रसीद पर हस्ताक्षर किए थे – हालांकि आज भी मुझे नहीं पता कि वह क्या था। और इसलिए, उस रसीद के आधार पर, मुझ पर आरोप लगाया गया। बाद में उन्होंने मुझे समझाया कि मैं एक ज़र्मन एजेंट थी। और मुझे दस साल की सज़ा सुनाई गई। मैंने करिब क्षेत्त्र के लकड़ी काटने वाले शविरीं में

चार साल काम किया, और फरि वे मुझे करागंडा ले गए। मैंने कारलाग में छह साल बतियाए। मैंने वहाँ क्या देखा? केवल पीड़ा और यातना। मेरे शरीर पर तीन नंबर दाग दिए गए थे - एक नंबर यहाँ, एक नंबर वहाँ, एक नंबर वहाँ - मैं पूरी तरह से दाग दिया गया था। और फरि, जब मुझे रहिा किया गया, तो उन्होंने लिखा: 'अकमोलसिक के लिए स्थायी नरिवासन।' वे मुझे करागंडा से अकमोलसिक ले आए, और मैं तुरंत ही पीलिया की मरीज हो गई। और जब मैं ठीक हुई, तो मैं अस्पताल से निकल आई और सोचा: 'मुझे कहाँ जाना चाहिए?' मैं सड़क पर खड़ी थी - अपने कैप के कपड़े पहने हुए - और हर कोई मुझसे दूर हट रहा था। मैं वहाँ खड़ी कड़के-कड़के रो रही थी। कुछ लोग मेरे पास आए और पूछा, 'अरे औरत, तुम ऐसे क्यों रो रही हो?' मैंने कहा, 'ऐसा-वैसा है।' - 'ओह, मेरी जान, तुम कैप से हो, और हम यहाँ के वशिष बसाहती हैं। हम तुम्हें आश्रय देंगे।' ईश्वर का क्या चमत्कार था! उन्होंने मुझे आश्रय दिया, अस्पताल में नौकरी दिलाई, और मैंने वहाँ चार साल तक काम किया। और तभी, सभी को उनके आजीवन नरिवासन से रहिा कर दिया गया। मैं अकमोला से घर आई, और उस समय हर कोई मुझ पर तुच्छ दृष्टि से देखता था, क्योंकि मैं जेल में रही थी। लेकिन वहाँ, ब्रायन्स्क क्षेत्र में, ब्रासोवो गाँव में, प्लोश्चांस्काया हरमटिज के फादर मैथ्यू नामक एक वृद्ध व्यक्ति रहते थे। मैं उनके पास गया और कहा, 'फादर, यहाँ मेरा कोई जीवन नहीं है।' और तब फादर मैथ्यू ने कहा, 'वहाँ वापस जाओ जहाँ से तुम आए हो। वहाँ तुम्हें अपनी हर चीज़ मलि जाएगी, और तुम्हें अपरत्याशति आनंद प्राप्त होगा।' हे भगवान! मेरे रोंगटे खड़े हो गए! वहाँ क्या था? वहाँ कैसी खुशी हो सकती थी? मैंने वहाँ बहुत दुख झेला था, बहुत आँसू बहाए थे; मैंने अपनी सज़ा वहाँ काटी थी! अकतस में! कराबास में! मैं अभी-अभी डोलकिा से रहिा हुआ था और - 'जहाँ से आए हो, वहीं वापस जाओ।'

मैं अकमोला लौट आई और हमेशा चर्च जाने लगी, और पादरी, फादर निकोलाई मोईसीव, ने मुझसे कहा: "तुम जानती हो, नीना, करागंडा जाओ; वहाँ फादर सेबास्टियन हैं।" अब तुम अकेली हो; शायद वह तुम्हें आश्रय दे दे।" और इस तरह मैं पहली बार फादर सेबास्टियन से मलिने गई। जब मैं उनके पास गई, तो वह एक बड़े परिवार के पति की तरह खड़े थे, शांतपूर्वक सभी को आशीर्वाद दे रहे थे। दरवाज़ा खुलते ही मदर अनास्तासिया चलिंलाई: 'यह हमारी लड़की है! यह हमारी लड़की है!' फरि, जब फादर ने मुझे बुलाया और मैं उनकी कोठरी में गई, तो मैं उनके पैरों पर गरि पड़ी, उनके जूते चूमते हुए, यह नहीं जानती थी कि क्या कहूँ, और जोर-जोर से रो रही थी: 'परयि फादर! परयि फादर! मैं तो करागंडा के बारे में सोचना भी नहीं चाहती थी—यहाँ आने की तो बात ही छोड़िए—मैं यह याद भी नहीं करना चाहती थी कि विह इस धरती पर मौजूद भी था! मैं अपनी किसी गलती के बनिा यहाँ बैठी थी, अकतस और कराबास में अपनी सज़ा काट रही थी; मुझे डोलकिा से रहिा किया गया था। और अब मैं आपके पास आई हूँ।" - और मैं उन्हें सब कुछ बताती गई, और जोर-जोर से रो पड़ी। पतिाजी की आँखों में आँसू भर आए। और हमारी वलिाप से सभी बहनें भी आँसुओं से भर आईं। पतिाजी ने मुझे 'शहीद' कहा, क्योंकि मैं अपनी किसी गलती के बनिा कैद हुई थी - जैसा कि पतिाजी ने कहा, 'पूरे परिवार के पापों के लिए।' उन्होंने मुझे पवतिर त्रमिरुत्किा एक बड़ा आइकन दिया और मुझे बहुत सारी मठाइयाँ दीं: 'और यह, नीना, तुम्हें अकमोला में अपने सभी जानने वालों को बांटना है।' मैं वहाँ दो दिन रुकी, और फरि मुझे वापस आना पड़ा। उन्होंने मुझे वदिा किया, मुझे ट्रेन में बठाया, और फादर ने कहा: 'तुम फरि से मुझसे मलिने आओगी।' और इस तरह मैं उनसे मलिने आने लगी। मैंने लगभग तीन साल तक यात्रा की, और फरि फादर ने मुझे करागंडा में रहने का आशीर्वाद दिया। यह लगभग 1960 की बात है। मैं यहाँ आई, और फादर ने मुझे अस्पताल में काम पर भेज दिया। उन्होंने अपने सभी लोगों को अस्पताल में भेज दिया। मैंने बच्चों के वार्ड में काम किया, और फादर के आशीर्वाद से हमने कई दुरभाग्यपूर्ण बच्चों को अंतमि वदिाई दी। और तभी दुश्मन मेरे खिलाफ उठ खड़ा हुआ। मुझे बहुत बुरा लगने लगा, और मैंने एक बच्चे से कहा: 'उफ़! तुम घुट-घुट कर मर जाओ, मैं तुमसे बहुत तंग आ गया हूँ।' मुझे होश आया और मैं फादर के पास भागा: 'फादर! देखिए आज मैंने क्या कर दिया है।' उन्होंने मुझे डांटा नहीं, बल्कि तुरंत कहा: 'लेकिन क्या यह वाकई तुम थे? उन्होंने कहा, 'यह तो शैतान था।' 'तुम्हें बाल रोग वार्ड छोड़ना होगा, क्योंकि बिच्चों को ट्रेन में चढ़ाने के कारण दुश्मन हम पर उठ खड़ा हुआ है। वार्ड 1 में जाओ; वहाँ हमारा कोई नहीं है।' और इस तरह मैं पूरे समय वार्ड 1, यानी बोटकनि वार्ड में ही काम करती रही।

हमें मेरी बहन मारया के बारे में पंद्रह साल से कोई खबर नहीं मलिी थी, जिसे जर्मन लोग जर्मनी ले गए थे। मैंने कहा, "पापा, हम नहीं जानते कि मारया के लिए कैसे प्रार्थना करें; वह जर्मनी से वापस नहीं आई है।" और उन्होंने कहा: "लेकिन वह ज़िदा है!" - "यह कैसे हो सकता है? हमें पंद्रह साल से उसकी कोई खबर नहीं मलिी है!" - "हाँ, वह ज़िदा है; तुम्हें जल्द ही उसकी खबर मलिेगी!" और सचमुच, हमें जल्द ही मारया का एक पत्र मलिा - वह फ्रांस में थी।

एक दिन मैं स्मारक चैपल में गई, और पादरी ने तुरंत कहा: "नीना! तुम्हारे परिवार ने मुझे एक बन भेजा है!" यह क्या हो रहा है? मैं यह समझे बनिा चली गई कि मेरे परिवार ने किस तरह का बन भेजा था। जब मैं घर पहुँची, तो पत्र-

बॉक्स में एक पत्र था — मेरे माता-पिता का, जिन्होंने लिखा था: "हम पादरी के लिए बहुत प्रार्थना कर रहे हैं! हमने एक सुंदर केक बनाया और चर्च में फादर को बाँट दिया।" तभी मुझे समझ आया।

मैं उस एल्डर, मैथ्यू के बारे में सोचना बंद कर चुकी थी; मैं उसके बारे में पूरी तरह भूल चुकी थी। लेकिन फरि मुझे अचानक याद आया, और मैंने फादर सेबास्टियन को उसके बारे में और उसने मुझसे जो कहा था, सब कुछ बता दिया। और फादर ने कहा: "नहीं, ऐसा नहीं चलेगा। तुम्हें वहाँ जाना होगा, उसे थोड़ी सी प्रॉस्फोरा देनी होगी, और उससे मेरे लिए प्रार्थना करने को कहना होगा।"

मैं चर्च में खड़ा था, घर वापसी की अपनी यात्रा के बारे में सोच रहा था। मैं उनका आशीर्वाद लेने के लिए फादर के पास गया, और उन्होंने पूछा, 'तुम कहाँ थे? तुम घर गए थे, है ना?' उन्होंने मुझे अपने पिता और माता के पास घर जाने का आशीर्वाद दिया। "फादर, मुझे वहाँ कतिनी देर तक रहना चाहिए?" — "जब तक तुम्हारी माँ तुम्हें रहने का आशीर्वाद देती हैं। उनके लिए कुछ चीनी खरीद लेना।" और अपने पत्र में, मेरे माता-पिता ने मुझसे लिखा: "हमारे लिए कुछ चीनी लाना।" उन्होंने यह सब पहले से ही जान लिया था। और जब मैं घर वापस पहुँचा, तो मैं एल्डर मैथ्यू से मिलने गया, उन्हें प्रॉस्फोरा का एक टुकड़ा दिया, और पादरी की तस्वीर दिखाई, और उन्होंने कहा: 'आह! लेकिन यह एक महान एल्डर हैं!' — उन्होंने तस्वीर को चूमा। — 'वह जल्द ही मर जाएगा, पाँच साल पहले, क्योंकि तुम उसकी नहीं सुनते।' और उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की, प्लोश्चांसकाया हरमटिज के एल्डर मैथ्यू ने। और मैं रो पड़ी — अकत्स... कराबास... डोलकि... और फरि यह अप्रत्याशति खुशी, मुझे यह मिला — पिता!

अनास्तासिया पेट्रोव्ना पार्शनि

स्कैमनुन यूफ्राक्सिया फादर की ही उम्र की थीं। उन्होंने मुझे बताया कि वह अक्सर ऑप्टिनि पुस्तनि में बुजुर्गों से मिलने जाती थीं। उस समय, फादर एक युवा नवसखिया थे। एक अवसर पर, वह आई, और वह उनके पास आए और सनेहपूर्वक कहा: 'मेरी छोटी, मेरी छोटी!' उसने मन ही मन सोचा: 'वह तो बस एक नवसखिआ है, फरि भी मुझे "मेरी छोटी" कह रहा है! मैं तो यहाँ बुजुर्गों से मिलने आई हूँ — वह मुझे ऐसा क्यों कह रहा है?' बाद में, वह उनसे मिलने करागंडा गई, और फादर ने उन्हें वहीं रोक लिया। और इस तरह वह उनकी 'छोटी' बन गई।

मदर यूफ्रेक्सिया ने यह भी बताया कि उन्हें नरिवासति कर दिया गया था, और उसी क्षेत्त्र में, हायरोमोंक हायरोथयिंस एक बस्ती में रह रहे थे। उनके साथ एक युवा लड़की, सेराफिमा, रहती थी, जो कषयरोग से गंभीर रूप से बीमार थी। और इस प्रकार फादर हरिथयिस को फादर सेबास्टियन का एक पत्र मिला। उन्होंने लिखा था: 'सीमा का मुंडन करके उसका नाम सोफिया रख दो। देरी मत करना।' यह पत्र किसी बड़े पर्व की पूर्व संध्या पर आया। उन्होंने सोचा, 'हम क्या कर सकते हैं? हम समारोह को टाल नहीं सकते,' और इसलिए उन्होंने 'ऑल-नाइट वजिलि' के तुरंत बाद ही उसके पास जाने का फैसला किया। वे प्रार्थना सभा के बाद जल्दी से इकट्ठा हुए और जब वे वहाँ पहुँचे तो समिा शर्म से लाल हो रही थी। फादर हायरोथयिस ने मदर यूफ्रेक्सिया और एक अन्य नन की उपस्थिति में सरि मुंडवाया, जो सरि मुंडवाने के लिए सोफिया की गॉडमदर बनी थीं। ससिटर सोफिया ने अपनी गॉडमदर से पहला मठवासी नियम पढ़ने के लिए कहा। गॉडमदर नियम पढ़ने के लिए वहीं रुकी रहीं, जबकि ससिटर सोफिया बेचैनी से अपने बसितर के चारों ओर टहल रही थीं। गॉडमदर ने पूछा, 'तुम्हें क्या हुआ है?' — 'राक्षस हर तरफ से मुझ पर घात लगाए हुए हैं और अपने दाँत पीस रहे हैं; इस भयानक दाँत पीसने से मेरी आत्मा पीड़ित है।' — "क्या तुम उनसे डरती हो?" — "नहीं, मैं डरती नहीं हूँ, लेकिन यह मेरी आत्मा को कष्ट पहुँचाता है।" और नियम पढ़ने के अंत तक, जब भोर हो ही चुका था, युवा नन सोफिया ने अपनी आत्मा ईश्वर के हाथों में सौंप दी।

फादर इओआन तमिकोव, एक सेवानवित्त पुरोहित, करागंडा

हमें 1931 की गर्मियों के मध्य में, समारा गवर्नरेट से स्टेप में, नोवाया तकिनोव्का नामक भावी बस्ती के स्थल पर लाया गया था। मैं जवान था; मेरी पत्नी और हमारा छोटा बच्चा मेरे साथ थे। हमने एक मीटर गहरा गड्ढा खोदा, छत पर तरिपाल बछिया, और हमारे सरि के पास सामान की एक बोरी रख दी। हमारा बच्चा एक महीने तक उस गड्ढे में रहा और फरि मर गया। और सर्दियों में, जब हमें आधी-अधूरी बैरकों में स्थानांतरित किया गया, तो हमारे दूसरे बच्चे का जन्म हुआ। उस पहली सर्दी में, टायफ़स फैला हुआ था; बहुत कड़ाके की ठंड थी, राशन पर गुजारा करना मुश्किल था, और लोग कमजोर पड़ गए थे। '31 और '32 में, सभी बच्चे और बुजुर्ग मर गए, और '33 तक केवल जवान बचे थे; कहीं भी कोई बुजुर्ग शायद ही दिखाई देता था। और फरि जवान भी मरने लगे। टकिनोव्का में, हर दिन दो सौ लोग मर रहे थे। तीन कार्य दसते कब्रें खोद रहे थे (दो मीटर चौड़ी, पांच मीटर लंबी)। वे एक व्यक्ति को गंदी कंबल में लपेटकर उसे गड्ढे में फेंक देते थे। सर्दियों में, हम कब्रें खोदने का काम संभाल नहीं पा रहे थे। मृतकों को घर के

आकार के ढेरों में इकट्ठा कर दिया गया, प्रत्येक ढेर में पाँच सौ से सात सौ लोग, एक-दूसरे के ऊपर लकड़ी की तरह पड़े हुए थे। हमारा दूसरा बच्चा भी मर गया। मेरी पत्नी और मैं इसलिए बच गए क्योंकि हमने उसकी लोमड़ी की खाल की कोट बेच दी - जो उसे अपनी माँ से वरिसत में मिली थी - और उस पैसे से जई खरीदी; हमने उन्हें पीसा, खाया, और किसी तरह अपनी जान बचाई।

मैं, अन्य विशेष बस्तियों के साथ, करिवा खान में काम करता था। खान से हमारी बस्ती तक आठ किलोमीटर की पैदल यात्रा थी। और हर दिन हमें मैदान के पार आना-जाना पड़ता था। जब आप खान में काम कर रहे होते हैं, तो छत से भूजल बारिश की तरह टपकता है। जब आप खदान से बाहर आते थे, तो आप पूरी तरह भीग जाते थे - आपके गेलोश (रबर के जूते) में पानी, आपके जूते के अस्तर गीले - और आप बस एक सूखी जैकेट पहनकर तीस डिग्री की ठंड में बस्ती तक दौड़ पड़ते थे। जब तक आप वहाँ पहुँचते, आपके कपड़े आपके शरीर से जम चुके होते थे। खनिक काम से घर जाते समय रास्ते में ही गरिकर मर जाते थे। और वे पूरे सर्दियों में सड़क पर पड़े रहते थे। कभी-कभी, बर्फ़ीले तूफान में, आप सड़क नहीं देख पाते थे, और मृतक स्टेपी पर सड़क के नशानों की तरह पड़े रहते थे। वसंत में, उन्हें गाड़ियों पर इकट्ठा किया जाता था। और मैं खुद भी ढहने की कगार पर था। मैं मुश्किल से घर पहुँच पाता था, कमजोरी के कारण मुश्किल से ज़िंदा। मैं बहुत बीमार था - एनीमिया, उल्टी। काफी समय तक मैं बस्ती के कमांडेंट से मनिनते करता रहा कि हमें खदान के पास एक सुरंग में रहने की इजाजत दे; बड़ी मुश्किल से मैं उसे मनाने में कामयाब हुआ। और जब हम वहाँ गए, तो जीवन स्वर्ग जैसा हो गया। अब मुझे सोलह किलोमीटर पैदल चलने की ज़रूरत नहीं थी। मैं खदान से निकलता, सड़क पार करता - और सीधे सुरंग में पहुँच जाता। वहाँ मैं थोड़ा-बहुत ठीक होने लगा।

1934 तक हमारे पास कोई पादरी नहीं थे। केवल एक पुराने विश्वास वाले पादरी, फादर सेरजयिस, बच्चों का बपतिस्मा देने आते थे। फरि, 1934 में, फादर जैकब पेनकोव को कार्लाग से रहिा किया गया। बड-गोरी गाँव के बुजुर्ग नवासियों ने एक एंटमिशन, एक क्रॉस और पादरी के परधान रखे हुए थे। ये सभी वस्तुएँ फादर जैकब को दे दी गईं, और उन्होंने घर-घर जाकर गुप्त रूप से प्रार्थना सभाओं का आयोजन करना शुरू कर दिया। कई बार उन्हें कोमसोमोल के सदस्यों द्वारा उठाकर कमांडेंट के कार्यालय ले जाया गया। उन्होंने उन्हें सेवा करने से मना किया और आगे की गरिफ्तारी की धमकी दी, लेकिन फादर जैकब ने जवाब दिया: "मैंने ईश्वर से व्रत लिया है और मैं सेवा करूँगा।" और वह जान-पहचान की बुजुर्ग महिलाओं से कहा करते थे: "मैं अपने धर्म के लिए कष्ट सहना चाहता हूँ।" और 1937 में वे उन्हें लेने आए, उन्हें ले गए, और आज तक उनका कोई पता नहीं चला।

1938 तक, हम पवतिर सहभाग ग्रहण करने के लिए अकमोला तक यात्रा करते थे। 1938 में, फादर व्लादमिर खोलोडकोव को कार्लाग से रहिा कर दिया गया, और एक बार फरि हम—एक समय में पंद्रह से बीस लोग—गुप्त रूप से खोहों में इकट्ठा होने लगे। हम पर्व के दिनों में धर्मवधि मनाते थे और पवतिर सहभाग ग्रहण करते थे।

और जब युद्ध शुरू हुआ, और स्टालिन ने लोगों को ईश्वर से प्रार्थना करने की अनुमति देने का आदेश जारी किया, तो फादर व्लादमिर नगर परिषद के पास गए और खुले तौर पर सेवाएं आयोजित करने की अनुमति प्राप्त की। और फरि लोग हमसे मिलने आने लगे। प्रार्थना का घर करिवा खान के पास एक सुरंग में था, जहाँ हम रहते और काम करते थे। हम सचमुच भूमिगत रूप से सेवाएँ आयोजित करते थे; हमारी खड्कियाँ छत में थीं। और जब हमने अपने दरवाजे खोले, तो सेवाओं के लिए पाँच सौ लोग इकट्ठा होने लगे। हमने उस भूमिगत कमरे का वसितार किया, कुछ छोटी-छोटी बाहरी इमारतें बनाई, और वहाँ 1950 तक सेवाएँ आयोजित करते रहे, जब आर्चएन्जेल माइकल का चर्च बना। मैंने पहली बार 1943 में फादर सेवस्टयिन के बारे में सुना और उनकी प्रार्थना सभाओं में जाने लगा। बाद में, उनकी आज्ञा से, मैं मेलकोम्बाट चला गया, अपना एक घर बनाया और उन वधिवाओं के लिए घर बनाने और खरीदने में मदद की जनिके बच्चे थे, और जनिके लिए फादर सेवस्टयिन ने भी मेलकोम्बाट में काम का प्रबंध किया था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, जीवन धीरे-धीरे सामान्य हो गया। 1955 में मखिइलोव्का में पहले ही एक चर्च खोल दिया गया था। और फरि, 1955 के अंत में, मेरी बहन ने मुझे कुइबशिव से लिखा: "वन्या, आकर हमसे मिलो; हमें तुम्हारी बहुत याद आ रही है।" मैं फादर के पास गई: "मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए; मैं घर जा रही हूँ।" और उन्होंने कहा: "मत जाओ, मत जाओ।" लेकिन लगभग तीन सप्ताह बीत गए, और 1956 के नए साल के पहले दिन, मैंने सेवा के बाद क्रॉस के पास जाकर प्रणाम किया, और पादरी ने अचानक कहा: "इवान सेमेनोवचि, तुम कुइबशिव जाना चाहते थे; जाओ, बस जल्दी से तैयार हो जाओ, जल्दी से!" और उसी शाम मैं ट्रेन में चढ़ गया और चल पड़ा। मैं कुइबशिव पहुँचा, और वहाँ - एक चमत्कार: ज़ोया वहाँ खड़ी थी। [1956 में, कुइबशिव (अब समारा) में एक ऐसी घटना हुई जिसने कई लोगों को ईश्वर की ओर मोड़ दिया। क्रसिमस के उपवास के दौरान, नए साल की पूर्व संध्या पर, ज़ोया नाम की एक युवती ने एक धर्मनंदा का कृत्य किया: अपने मंगेतर निकोलाई, जो पार्टी में नहीं आया था, के बजाय, उसने संत निकोलस के एक आइकन के साथ नृत्य करने का फैसला किया। नृत्य करते समय, वह अचानक जीवित रहते हुए पत्थर में बदल गई। रात में, ज़ोया भयानक रूप

से चलिलाती थी, लोगों से पश्चाताप करने का आह्वान करते हुए। इस प्रकार, पत्थर में बदलकर वह एक सौ अट्ठाइस दिन तक रही। ईस्टर से एक रात पहले, उसका शरीर फरि से जीवति हो गया, और उत्सव के तीसरे दिन, जोया अपने पाप के प्रायश्चिति का कठनि मार्ग तय करने के बाद, प्रभु के पास चली गई।

कसबा उथल-पुथल में था। जोया के घर के बाहर भीड़ जमा हो गई, और लोग खुले तौर पर चर्च जाने लगे: वे क्रॉस का चहिन बना रहे थे और पश्चाताप कर रहे थे। और मैं जोई को देखने गया, लेकिन पुलसि ने मुझे अब घर के अंदर नहीं जाने दिया। मैंने कुइबशिव में एक हफ्ता बताया और, लौटने पर, करागंडा के लोगों को जोई के बारे में और पाप में नाश हो रही दुनिया के लिए ईश्वर की व्यवस्था के बारे में बताया।

पादरी की दूरदर्शिता के बारे में और। मेरी आठ साल की बेटी क्षयरोग से बीमार पड़ गई। हम उसे डॉक्टरों के पास ले गए, और उन्होंने कहा: 'हम उसे यहाँ ठीक नहीं कर सकते; उसे बोरोवोये के एक सैनटोरियम में ले जाओ, नहीं तो वह मर जाएगी।' हम पापा के पास गए: 'पापा, कृपया उसे सैनटोरियम भेजने का आशीर्वाद दें; नहीं तो हमारी बेटी मर जाएगी।' लेकिन पापा ने कहा: 'हाँ...', उन्होंने कहा, 'वहाँ जाने से बेहतर है कि उसे यहीं दफना दिया जाए।' मेरी पत्नी और मैं दलि से टूट गए थे – हमें उस छोटी बच्ची के लिए बहुत दुख हुआ! और वह लड़की बहुत अच्छी थी: होशियार, आज्ञाकारी, नरम-स्वभाव वाली, एक परी की तरह। तो मैं उसे बोरोवाय ले गया। वहाँ उन्होंने सचमुच उसका इलाज किया, लेकिन वह सैनटोरियम से एक बदली हुई इंसान बनकर लौटी; वह हमसे एक अजनबी सी हो गई। और फरि वह यंग पायनयिर्स, कॉमसोमोल और पार्टी में शामिल हो गई। और आज तक वह धर्म की राह पर नहीं आई।

मेरी दूसरी बेटी, जब वह बड़ी हुई, तो उसकी मुलाकात एक युवक से हुई, जो राष्ट्रीयता से जर्मन था, और उसने उससे शादी करने के लिए कहा। जिस पर मेरी बेटी ने जवाब दिया: 'मेरे पति धर्म में आस्था रखते हैं और वे मुझे तुमसे शादी नहीं करने देंगे, क्योंकि तुमने बपतस्मा नहीं लिया है।' और वोल्odya—उस युवक का नाम था—बपतस्मा लेने और चर्च में मेरी बेटी से शादी करने के लिए राजी हो गया। तो मैं आशीर्वाद लेने के लिए पादरी के पास गया, लेकिन पादरी ने कहा: 'हम उनकी शादी करा देंगे, लेकिन उसे बपतस्मा देने की कोई जरूरत नहीं है।'

अगर किसी दूसरे पादरी ने मुझसे ऐसा कहा होता, तो मैं वरिध करता, क्योंकि बपतस्मा नहीं लेने वाले व्यक्ति से शादी करना अनुमत नहीं है। लेकिन इस मामले में मैंने कुछ नहीं कहा, क्योंकि मुझे पता था कि पादरी गलत नहीं थे। और जब हमने वोल्odya की माँ से बात की, तो उन्होंने हमें बताया कि 1942 में एक पादरी, ई, उनके विशेष पुनर्वास गाँव में आए थे और उन्होंने वोल्odya सहित सभी बच्चों का बपतस्मा दिया था। और फादर सेबस्टियन यह सब जानते थे, भले ही उन्होंने वोल्odya को कभी नहीं देखा था।

वेरा अफनासयेवना त्काचेन्को, फादर सेबास्टियन की गृहस्वामिनी

मैं पहली बार फादर सेबस्टियन से 1939 में मिली थी। मैं आठ साल की थी, और फादर को अभी-अभी जेल से रहिा किया गया था। मैं नज़िन्याया स्ट्रीट पर अपनी चाची के साथ रहती थी। मेरी चाची एक धर्मपरायण वशिवासी थी, और पादरी और मैं अक्सर प्रार्थना करने के लिए एक साथ घर-घर जाते थे। और जब मेरी माँ की मृत्यु हो गई, तो पादरी और मैं वास्तव में बहुत करीब हो गए, क्योंकि उन्हें अनार्थों पर दया आती थी। वह कहते थे: 'अगर मैं खुद अनार्थ नहीं होता, तो मुझे दूसरों के प्रति इतनी सहानुभूति नहीं होती।' और फरि पापा ने कहा, 'मैं तुम्हें अपने पास रखना चाहता हूँ।' मैं तब ग्यारह साल का था। और उन्होंने मेरी एक नन के यहाँ रहने की व्यवस्था की, जहाँ मैं पापा की देखरेख में रहता था। और जब मैं सोलह साल का हुआ, तो पापा ने मुझे अपना नज़ी परचारक बना लिया, और मैं हमेशा उनके साथ रहता था, उनकी देखभाल करता था।

जब हम नज़िन्याया स्ट्रीट पर रहते थे, तो हम सब एक ही कटोरे से खाते थे। हम में से पाँच या छह लोग मेज पर बैठ जाते थे, और पतिजी हमारे साथ जुड़ जाते थे। कभी-कभी मुझे बहुत भूख लगती थी, लेकिन वे हम सभी के लिए सरिफ एक छोटा सा कटोरा ही रख देते थे। मैं सोचती, 'नहीं, यह पर्याप्त नहीं होगा।' और यह एक सचमुच का चमत्कार था! कटोरे में अभी भी खाना बचा रहता था, और सबका पेट भर जाता था। पतिजी यह कैसे कर पाते थे? मुझे नहीं पता।

हमारे चर्च का पंजीकरण अभी तक नहीं हुआ था, और लगभग दस साल तक हम लोगों के घरों में प्रार्थना करने जाते थे। तो, मान लीजिए कि हमें प्रार्थना के लिए फेदोरोवका जाना होता था, और पतिजी कहते: 'हम सुबह साढ़े चार बजे उठेंगे और फेदोरोवका जाएंगे।' और हम सब उठते और फेदोरोवका तक पैदल जाते। कंधे पर कतिबे लटकाए, एक छोटी घंटी लिए पतिजी, मदर वरिया और मदर गुरुशा – यही पतिजी का गायन मंडली था। हम वहाँ प्रार्थना करते, और साढ़े सात बजे पतिजी मुझे काम पर जाने का आशीर्वाद देते (काम न करना तो सवाल ही नहीं उठता था; जो लोग काम नहीं करते थे, उनका उत्पीड़न किया जाता था)। और जब मैं काम से घर आता, तो मुझे फरि से प्रार्थना करने

जाना पड़ता। हम करागंदा के एक छोर से दूसरे छोर तक पैदल चलते थे, क्योंकि हमें एक ही जगह पर सेवाएँ आयोजित करने की अनुमति नहीं थी।

पतिताजी एक असाधारण व्यक्ति थे। वे रोने वालों के साथ रोते थे, और खुश होने वालों के साथ खुश होते थे। वे हमेशा एक विचारशील प्रार्थना करते थे; वह उनके दिल से होती थी। लेकिन उनकी आत्मा का जीवन छिपा हुआ था। यह समझना मुश्किल है कि किस अर्थ में वह छिपा हुआ था; इसे कोई केवल स्वयं ही महसूस कर सकता था। मुझे याद है कि एक बार, जब मैं फादर को माँस्को की अपनी यात्रा, वहाँ के चर्चों, और इस बारे में बता रहा था कि कैसे मैं उनका आशीर्वाद लेने के लिए पैट्रिआर्क के पास गया था, तो फादर चुपचाप सुनते रहे, लेकिन उनके भीतर कुछ हो रहा था - उनकी आँखें बदल गईं; वे भूरे रंग से धूसर हो गईं। मैंने यह उनसे कहा, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया; वे बस अपनी नज़रें झुका गए। बेशक, पतिताजी बहुत बुद्धिमान थे; वे हमेशा खुलकर बात नहीं करते थे। लेकिन मैं अभी भी एक बच्चा था, इसलिए मेरे लिए यह समझना आसान नहीं था कि उनका क्या मतलब था। कभी-कभी वे मुझे प्यार से मेरे माथे पर भी थपथपा देते थे - मेरे सर से कुछ बकवास निकालने के लिए। आपके दमिग में तरह-तरह के विचार आते हैं। उदाहरण के लिए, मैं सोचता था: 'यह कैसी ज़िंदगी है? मैं सुबह काम पर जाता हूँ - वे प्रार्थना कर रहे होते हैं; मैं शाम को काम से घर आता हूँ - वे प्रार्थना कर रहे होते हैं। अब मैं और सहन नहीं कर सकता! इस सारे तनाव के बिना, धर्मनिरपेक्ष दुनिया में रहना बेहतर है।' और पतिताजी आकर अपने हाथ के पछिले हस्से से मेरे माथे पर धीरे से थपकी देते थे।

मेरी चिता यह थी: मैं कोयर लॉफ्ट से वेदी की ओर देखता—अहा, फादर कपड़े उतार रहे हैं; मुझे जल्दी से अपनी कोठरी में जाकर सब कुछ तैयार करना होगा ताकि जब फादर आएँ, सब कुछ पहले से ही मेज़ पर तैयार हो। एक बार फादर ने भोजन कर लिया, उन्हें यथाशीघ्र लेटकर आराम करना होता है। लेकिन लोग एक के बाद एक आते रहते हैं—और फादर, थके होने के कारण, कभी-कभी कहते: "मैं उन्हें देख नहीं सकता।" "फादर, मैं उन्हें क्या कहूँ?" "बस यूँ कह दो - उनका दिल मत दुखाओ, और कोई तरीका निकालो। अगर जरूरत पड़े, तो उन्हें इंतज़ार करने को कह दो।" तो मैं जाकर कहता: "फादर आराम कर रहे हैं।" फिर फादर आराम कर चुके होते और एक छोटी सी किताब पढ़ रहे होते। फिर: "पतिताजी, एक महिला आई है।" "उसे इंतज़ार करने दो।" और वह बस पढ़ते रहते हैं। आप फिर से जाकर स्थिति समझाते हैं। और लोग बड़बड़ाते हैं: "अरे, तुम ही तो उन्हें पतिताजी से नहीं मिलने देना चाहते!" मैं उनके पास जाता हूँ। वह कहते हैं: "नहीं, उन्हें इंतज़ार करने दो; अभी समय नहीं आया है।" "पापा, वे कह रहे हैं कि मैं ही आपको उनसे मिलने नहीं देता।" और वह कहते: "अगर तुम स्लेजिंग करना चाहते हो, तो तुम्हें स्लेज उठाने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। आखिरकार, मैं खुद ऑप्टिनि पुस्टिनि में वृद्ध के साथ रहा था।" ऐसे भी समय थे जब मैं किसी को भी उनसे मिलने नहीं देता था, क्योंकि पापा कहते: "मैं आज किसी से नहीं मिल सकता; मैं बहुत अस्वस्थ महसूस कर रहा हूँ।" और लोग कहते थे: "वेरा बहुत सख्त है; वह उन्हें अच्छी-खासी पटिई कर सकती है।" खैर, ऐसा एक मौका भी आया। पतिताजी ने मुझे माँस्को भेज दिया, जबकि मैं इलिया और मारिया ओब्राज़त्सोवा [मारिया ओब्राज़त्सोवा - पतिताजी की दूसरी सेल सहायक] उनके साथ रही। उन्होंने मुझे लिखा: "वेरा, वापस आ जाओ; तुम्हारे बिना सब कुछ उतना अच्छा नहीं है।" और पतिताजी भी कहते थे: "ओह, तुम सब! वेरा ऐसी गड़बड़ी होने नहीं देती।" हर कोई अपनी मनमर्जी से आता-जाता था। और जब पतिताजी पहले से ही बीमार थे, तो दो 'पुलिस वाले' पहरा दे रहे थे - शूरकि और अल्याओशा। वे भी संभाल नहीं पाए, तो उन्होंने मुझे बुलाया। मुझे जाकर 'मामले को संभालना' पड़ा। लड़के, बेशक, थोड़े नरम थे, लेकिन मैं पहले से ही फादर की रक्षा करने की आदी हो चुकी थी। वे फादर से शिकायत करते: 'फादर, वेरा इतनी गुस्से में क्यों है? वह हमें आपसे मिलने नहीं देती।' और वह कहते: 'हमें मठ में भी ऐसे लोगों की जरूरत है।'

एक बार, पादरियों ने बशिप पटिरिमि से उनके लिए दो टाइपराइटर भेजने को कहा। जब वे पहुँचे, तो पादरियों ने कहा: 'लो वेरा, एक तुम्हारे लिए और एक मारिया ओब्राज़त्सोवा के लिए।' और मैंने सोचा: 'मुझे इसकी क्या जरूरत है? मैं इसका क्या करूँगी?' लेकिन पादरियों की मृत्यु के बाद, मुझे पता चला कि मुझे उस टाइपराइटर की वास्तव में जरूरत थी। मैंने टाइप करना सीखा और पच्चीस साल तक टाइपिंग और कार्यालय प्रशासन के पाठ्यक्रम पढ़ाए। और मारिया ने सोचा: 'मुझे इसकी क्या जरूरत है?' यह शाम की बात थी। और सुबह, पादरी ने मारिया से कहा: "नहीं, तुम्हें इसकी जरूरत नहीं है; तुम भजन-पाठक बनोगी।" और उन्होंने टाइपराइटर एलेना अगाफोनोवा को दे दिया [एलेना अलेक्जेंड्रोवना अगाफोनोवा वर्तमान में अल्मा-आटा-सेमीपालाट्सिक डायोसीज़न प्रशासन में एक क्लर्क के रूप में काम करती हैं]।

मारिया ओब्राजत्सोवा, फादर की सेल सहायक

मैं पहली बार 1948 में टर्किनोव्का से फादर से मिलने आई थी। यह क्रस्मिस का दिन था। जब मैं पहुँची, तो सेवा एक छोटे से आवासीय घर में हो रही थी, जसि लकड़ी की बाड़ और कांटेदार तार से घेर रखा था – हमारे चर्च का यही हाल था। वे ग्रेट कॉम्पलाइन और दविय लटिर्जी का जश्न मना रहे थे। उस सेवा ने मुझ पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि उसका वर्णन करना असंभव है; मुझे भूल ही गया कि मैं कहाँ हूँ। जब सुबह चार बजे सेवा समाप्त हुई, तो मुझे और मेरी सहेली को नजिनयाया स्ट्रीट पर पादरियों की पत्नियों के साथ ठहरने के लिए रखा गया। हम वहाँ पहुँचे – एक छोटा सा कॉटेज, सब कुछ बहुत सलीके से था, महीन जाली के पर्दे और बछिआए हुए कालीन थे। हमने आराम किया और कुछ खाया – अब घर जाने का समय हो गया था। लेकिन माताओं ने पूछा: "क्या तुमने फादर को देखा?" – "नहीं, हमने नहीं देखा।" और अचानक फादर सड़क से प्रकट हुए – अपनी छड़ी से खड़की पर खटखटा रहे थे। मैं डर के मारे कांप रही थी, लेकिन हमारे निकोलाई, जो टर्किनोवो से थे, ने कहा: "हम यह करेंगे: हम उनका आशीर्वाद लेंगे, लेकिन चूँकि यह आपका पहला अनुभव है, आपको फादर के पैरों पर झुकना होगा।" फादर अंदर आए, उन्होंने अपने बाहरी कपड़े उतारे, और सभी को परव के दिन की बधाई दी। हम घुटनों के बल झुक गए, लेकिन उन्होंने कहा: "नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं है—यह एक बहुत बड़ा परव है।" फिर उन्होंने बाकी सभी को भेज दिया और मुझे और मेरे दोस्त को अपने कमरे में ले गए। मैं बहुत ज्यादा डर गया था, और फादर ने मुझसे सवाल करना शुरू कर दिया: 'तुम कहाँ रहते हो? तुम किसके साथ रहते हो? तुम्हारे रश्तिदार कौन हैं?' मेरा पूरा शरीर काँप रहा था। और उन्होंने मुझे उनसे मिलने आने का आशीर्वाद दिया।

पादरी से मेरी बातचीत के दो महीने बाद तक मैं खुशी से पागल था। मैं किस बात पर इतना खुश था? अब मैं पादरी को जानता था। और इसलिए मैं दो साल तक उससे मिलता रहा। फिर उसने कहा: "तुम्हें यहाँ आकर बसना होगा। 'तुम्हारी माँ को बुला लो।' माँ आई। उन्होंने पूछा, 'तुम्हारे कतिने बच्चे हैं?' – 'चार बेटियाँ और एक बेटा।' – 'ठीक है, मैं उनमें से एक को ले लूँगा।' – 'तो फिर, चलिए।' – 'चिता मत करना, तुम यहाँ आकर उससे मिल सकती हो।"

और उन्होंने मेल्कोम्बाट में हम तीन लड़कियों के लिए एक छोटा सा घर खरीद लिया। यह 1950 की बात है। उन्होंने घर खरीदा, हमें चाबियाँ दे दीं, और हम वहाँ बस गए। हम छुट्टियों पर मखियाइलोवका जाया करते थे, और फादर अक्सर हमें मेल्कोम्बाट में देखने आते थे। यह कतिना आनंददायक था! पतिाजी के आते ही भीड़ तुरंत इकट्ठा हो जाती, मानो खबर आग की तरह फैल गई हो। और पतिाजी हमारे लिए प्रार्थना सभा और स्मरण सभा आयोजित करते। जब पतिाजी मेल्कोम्बनाट से चले गए, तो दिन रात में बदल गया। "पादरी जी, मैं आपके साथ आ रहा हूँ।" – "नहीं, मैं तुम्हें नहीं ले जा सकता, बेशक; वहाँ जगह नहीं है।" लेकिन सांतवना के तौर पर, वह हमें एक तस्वीर या पोस्टर दे देते थे। "पादरी जी, क्या आप इस पर साइन करेंगे?" "अरे बाप रे! अगली बार, जब मैं तुम्हें नहीं ले जाऊँगा।"

और जब हम मेल्कोम्बाट में बस गए (यह पतझड़ का समय था), तो फादर ने कहा: "यहाँ पाँच गुणा पाँच का एक बड़ा कमरा बनाओ।" और हमने बनाना शुरू कर दिया। हम तीन लड़कियाँ थीं, और उन्होंने हमारी मदद के लिए एक आदमी दिया—जो बाकी हम लोगों की तरह ही काम का नहीं था—और वे हमें लकड़ी लाकर देते थे: और इस तरह, क्रस्मिस के दिन तक, पापा ने इस कमरे को पवित्र कर दिया था और वहाँ दविय लटिर्जी का अनुष्ठान किया था। वे त्योहारों के दिनों में, रविवार और शनिवार को गुप्त रूप से अनुष्ठान किया करते थे। स्टाखानोव्स्कोये में एक छोटी सी कुटिया में एक युवती रहती थी; उन्होंने उसके लिए भी दैवीय लटिर्जी का अनुष्ठान किया। फिर, एक मोरडोवियाई महिला के घर में—जसिकी खड़कियाँ और दरवाजे टेढ़े-मेढ़े थे—उन्होंने वहाँ दैवीय लटिर्जी का अनुष्ठान किया। 1955 तक ऐसा ही चलता रहा, जब हमें अपने समुदाय के पंजीकरण के दस्तावेज़ मिले। मेलकोम्बाट उनकी ही रचना थी, ठीक वैसे ही जैसे दवियेवो के पूजनीय सेराफिम की। चाहे किसी का घर गरि रहा हो, किसी झोपड़ी में छेद हो गया हो, या कोई कुआँ धंस गया हो – उन्होंने सब देखा। जब फादर यहाँ आते, तो हम प्रार्थना करते और जल्दी से मेज़ लगा देते। फादर जहाँ भी होते, सभी वहाँ होते।

फादर वहीं बैठे होते, शूरकि वहीं बैठा होता, पेट्या वहीं बैठा होता, और फिर—हर उम्र के तरह-तरह के लोग: इस तरह के और उस तरह के—सब! यह एक बड़ा परिवार था, जसिमें एक प्यार करने वाली माँ थी। आप फादर को पतिा नहीं कह सकते थे। वह एक प्यार करने वाली माँ थी।

तो फिर, मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ। एक बार, टर्किनोव्का से एक महिला पतिाजी के पास आई: "पतिाजी, शूरा बीमार पड़ गई है।" (अलेक्जेंड्रा सोफ्रोवोव्ना, उनकी आध्यात्मिक बेटी।) "वह बीमार पड़ गई है; उसका दिल खराब हो गया है।" पतिाजी ने कहा: "बहुत अच्छा, हम कल उसे देखने चलेंगे।" लेकिन आज बर्फ़ीला तूफ़ान था; कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, और सभी सड़कें बर्फ से ढकी हुई थीं। सुबह तक बर्फ़ीला तूफ़ान रुक गया था, लेकिन कड़ाके की ठंड थी। फिर भी, हम चल पड़े। फादर मुझे और निकोलाई को भी साथ ले गए—वह हमारे डीकन के रूप में सेवा करते

थे। हम जा ही रहे थे कि टैक्सी चालक हमें दूसरी खान तक ले गया और कहा, 'मैं और आगे नहीं जा रहा हूँ—वहाँ कोई सड़क नहीं है।' खैर, फरि हम पैदल ही चल पड़े। और ठंड असहनीय थी! एक छोटा घोड़ा गुजर रहा था, जो एक छोटी स्लेज खींच रहा था। हमने पादरी से उसमें बैठने का अनुरोध किया, जबकि निकोलाई और मैं पीछे की स्लेज की पटरी पर बैठ गए। एक बजे तक हम उस बीमार महिला तक पहुँच गए। पादरी ने दरवाजा पार ही किया था कि उसका पता उसके पैरों तले गिर पड़ा और फूट-फूट कर रोने लगा: "पादरी! "शूरा अस्पताल में है! एम्बुलेंस उसे ले गई!" पादरी ने बस सरि हलियाया: "खैर, कोई बात नहीं; ईश्वर की इच्छा है।" और पति रो रहा था: "शूरा मुझे पागल कर रही थी! कसि परस्थिति में पादरी को यहाँ बुलाया गया था, फरि भी मैं घर पर नहीं रहूँगी!" और पादरी ने मुझसे कहा: "जानती हो, मारिया, आज शाम अस्पताल जाकर उससे मल्लो और कहना कि पादरी नहीं आए, वरना वह बहुत चतिति हो जाएगी".... खैर, ऐसा कौन कर सकता था? केवल एक माँ।

मैं उस शाम अस्पताल गई और कहा, 'अलेक्जेंड्रा सोफ़ोनोव्ना, पापा ने मुझे यह बताने के लिए भेजा है कि वह आ नहीं सकते—सड़कें बंद हैं।' उसने कहा, 'तेरा नाम महमिमय हो, हे प्रभु! मैं पूरी रात यह सोचकर नहीं सोई थी कि जब मैं अस्पताल में हूँ तो पापा आएँगे।' और उसकी देखभाल करने वाली नन अंदर आई और बोली, "शूरा, पतिजी आखरिकार आ ही गए!" बेशक, वह बहुत परेशान थी, लेकिन उसने इस सब की सराहना की। "हे भगवान!" उसने कहा। "मैं क्या हूँ? मैं इतनी अयोग्य हूँ! और फरि भी पतिजी आखरिकार आ ही गए!"

और फरि पतिजी ने मुझे अपनी कोठरी की परचारिका बना लिया। हम अच्छी तरह रहते थे। माँ जूलिया और मैं फर्श पर, पुआल की चटाई पर सोते थे, जबकि वेरा एक तह वाला बसितर पर सोती थी। जब बहुत ठंड होती थी, तो पतिजी अपनी कोठरी का दरवाजा खोलते, बाहर आते और सोते समय हमें अपनी चोगा ओढ़ा देते थे। और कभी-कभी पादरनि मुझे नजिन्याया भेजती थीं, जहाँ माँ रहती थीं। मैं उन्हें बताती: "कमरा गर्म है, साफ़ है, और रात का खाना बहुत स्वादष्ट है।" और माँ वार्या कहती: "तुम्हें यहाँ लाठी से भी क्यों नहीं पीटकर लाया जा सकता? पुआल की चटाई पर सोना बेहतर है, लेकिन पादरनि के करीब।"

पापा ऐसे व्यक्त हैं कि शिबदों में उनका बखान नहीं किया जा सकता। यहाँ वे प्रार्थना सभा के बाद आ रहे हैं; अगर, उदाहरण के लिए, थोड़ी ठंड हो, तो वे कहेंगे: 'वेरा, मुझे अपने कंधों पर ओढ़ने के लिए एक बनि आस्तीन की जैकेट दे दो' – लेकिन वे कभी यह नहीं कहेंगे: 'ठंड क्यों है?' वे अपने परतसिखत थे, फरि भी दूसरों के परतदियालु थे। वे कभी यह नहीं कहेंगे कि कुछ गलत है। लेकिन एक बार एक घटना हुई – वास्तव में, एक काफी मजेदार घटना। यह बुधवार की शाम थी और महादूत माइकल का परव था। मैं उन्हें रात का खाना परोस रही थी: 'फादर, क्या आपको दूध वाली चाय चाहिए?' – 'नहीं, बनि दूध के।' मैं रसोई में गई और माता अनास्तासिया से कहा: 'माँ, फादर ने बनि दूध के चाय माँगी है।' – 'नहीं,' उन्होंने कहा, 'लो, इसे दूध के साथ ही ले जाओ।' – 'नहीं, माँ, मैं इसे नहीं लूँगी।' – 'ले लो, मैं कह रही हूँ।' तो मैंने उसे ले लिया। फादर ने मेरी ओर देखा और कहा, 'मैंने दूध के बनि चाय माँगी थी।' – 'फादर, माँ अनास्तासिया कह रही हैं कि इसे ले लो, और बस!'

वह उठा, दूध वाला वह कप ले गया, रसोई में गया और जाकर उसे माँ अनास्तासिया के चेहरे पर उड़ेल दिया। वह मेरी तरफ मुड़ी: "तुम बेवकूफ़ लड़की, तुमने दूध वाली चाय क्यों लाई?" "माँ, खैर, आपने ही तो मुझे यह दी थी!" – "उफ़! वेरा ने तो मुझे डाँटा होता, लेकिन वह यह नहीं लाती; तुम बस चली गई और कर दिया! अब देखो क्या हो गया है!"

लेकिन यह सब, बेशक, सरिफ़ एक खेल था। उनकी और फादर की बात करने की अपनी एक खास शैली थी, जसि हम नहीं समझते थे। फादर कभी-कभी कहते थे: "नास्त्या, अभी समय नहीं है," – जसिका मतलब था उनकी पवतिर मूरखता। वह पवतिर मूरखता का अभनिय करती थीं, लेकिन, बेशक, उतनी हद तक नहीं जतिनी वे चाहती थीं। माँ ने भी एक असाधारण जीवन जिया।

एक बार वह बीमार पड़ गई, और उस दिन मेरी माँ का नाम दविस था। और माँ ने पूरा दिन हमारे लिए पैनकेक बनाते हुए बतियाया, लेकिन दिन के अंत में उन्होंने एक एंटडोर माँगा। वह इतनी सख्त थीं। पतिजी भी बहुत कम खाते थे। माँ वरिया कहती थीं: 'उसने बनि उपवास किए उपवास किया।' वे उसके लिए 'ताजा-ताजा पकाया हुआ' भोजन लाते, और वह तीन चम्मच नगिलता: 'इसे हटा दो।' या फरि, उदाहरण के लिए, महा-उपवास का पहला दिन लें। आमतौर पर, पहले दिन, यहाँ किसी को भी खाने की अनुमत नहीं होती। महा-कैनन के बाद, वे सभी को पुरोस्फोरा का एक छोटा टुकड़ा देते हैं। लेकिन यहाँ, फादर बारह बजे आलू उबालने का आदेश देते थे, और तीन बजे, जब वे ठंडे हो जाते, तो वह आधा आलू खा लेते और कहते: 'देखो, मेरे साथी पुरोहित उपवास कर रहे हैं (मतलब उनके साथी मंत्री), लेकिन मैं नहीं कर रहा हूँ – इस तरह उन्होंने खुद को नम्र बनाया। वे कहते थे, 'आखरिकार मैं बीमार हूँ, इसलिए मैंने अपना उपवास तोड़ दिया है।'

वह असाधारण रूप से सनेही थे। उदाहरण के लिए, पुराने कैलेंडर के अनुसार 30 अगस्त को सेंट अलेक्जेंडर नेवस्की का पर्व लें; मैंने कहा, 'फादर, मैं आलू खोदने घर जा रहा हूँ।' – 'जाओ, जाओ; तुम्हारी माँ तुम्हारा वहाँ इंतजार कर रही हैं।' तो मैं चला गया। हम खेत में आलू खोद रहे थे कबिारशि होने लगी। लेकिन हमें सब कुछ समय पर नपिटाना था ताकि हम 'परमेश्वर की परम पवित्र माता के कमरबंद की अवतरण' के पर्व के लिए पाँच बजे चर्च पहुँच सकें। मैं बेचैन था। लेकिन फादर आराम कर रहे थे; फरि वे उठे, छोटी सी परदा हटाई और कहा: 'बारशि हो रही है, और कोई आलू खोद रहा है। वेरा, जाओ और मारिया को फोन करके बता दो कि उसे सारी रात की प्रार्थना सभा में नहीं आना है।' – "लेकिन मैं किसको फोन करूँ? वे तो खेत में हैं।" – "बस जाओ और उन्हें फोन कर दो।" वेरा हमें घर पर फोन करने चली गई। तभी, मेरी बहन ने दरवाज़ा खोला – वह दोपहर के खाने की छुट्टी पर घर आई थी। वह दरवाज़ा खोलती है और – फोन बज रहा है। उसने रसीवर उठाया, और वेरा ने कहा: 'अपनी अधिष्ठात्री से कहो कि वह रात्रि जागरण में न आएँ; उन्हें घर पर ही रहना चाहिए।' और मेरी बहन ने मेज पर एक नोट छोड़ दिया: "तुम्हें पूरी रात की प्रार्थना सभा में आने की ज़रूरत नहीं है।" खैर, जाहिर है, जब मैं भीगकर और थककर घर आई, और उस नोट को पढ़ा, तो मैं बस फूट-फूट कर रो पड़ी – क्या पादरी थे! उन्हें मुझसे कैसे पता था और उन्होंने मेरी आत्मा को भी पढ़ लिया था!

यह हुआ। पति ने कहा: "नताशा, ओब्राज़त्सोव्स के पास जाओ और उनसे गाय का वध करने के लिए कहो।" और यह मार्च की बात थी। उन्होंने सर्दियों में गाय को खलियाया था, और अब वे उसका वध करने वाले थे। माँ ने कहा: "हे भगवान, क्या शर्म की बात है!" कुछ समय बीता, और पति ने फरि से नताशा को बुलाया: "क्या तुम गई?" – "हाँ।" – "अब जा और उनसे कहो कि गाय का वध कर दें।" नताशा वापस आई और बोली: "क्या, मज़ाक कर रहे हो?" माँ ने कहा: "अरे, हम क्या करें? यह तो करना ही है, पर बहुत अफ़सोस की बात है।"

समय फरि से खसिकता गया; अप्रैल आ चुका था। और पति ने बहुत सख्त, लगभग चढ़कर कहा, "वे इस जानवर को और कतिनी देर तक तंग करेंगे?" नतालिया आई और बोली, "इसे अभी तुरंत काट दो! जब तक तुम इसे नहीं काट दोगे, मैं नहीं जाऊँगी।" उन्होंने गाय को काटा, और उसके पेट में एक जंग लगा कील था। वह इससे पीड़ित थी और वैसे भी मर ही जाती, और पतिजी को यह पता था।

जब हम वहाँ अपने पहले साल में मेलकोम्बाट में रहते थे, तब एक दिन लेंट के पहले सप्ताह में दोपहर एक बजे हमने फ्रूट जेली खाई, और सेब के बीज का एक टुकड़ा मेरे गले में अटक गया – मैं न तो सांस ले पा रहा था और न ही छोड़ पा रहा था। हम पादरी के पास गए, लेकिन वह पहले ही प्रार्थना के लिए चले गए थे, और सेवा रात के नौ बजे तक खत्म नहीं हुई। हम फादर के साथ नज़िन्याया घर चले गए। हम रात के खाने के लिए बैठे; मैं कुछ नहीं खा रहा था – मैं अपनी लार भी नहीं नगिल पा रहा था। फादर ने नतालिया से पूछा, 'तुमने क्या खाया, और तुमने यह कब खाया?' उन्होंने रोटी का एक टुकड़ा तोड़ा और मुझे दे दिया: 'लो, इसे खाओ।' मैंने सोचा, 'मैं इसे खाऊँगी भी कैसे?' मैंने एक छोटा सा टुकड़ा खाया – वह ठीक था, नगिल गया। फरि मैंने थोड़ा और खाया – और ऐसा लगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। मैंने कुछ नहीं कहा। और जब हमने शाम की प्रार्थना खत्म की, तो मैं पतिजी के पैरों में झुक गई: 'पतिजी, ईश्वर आपको सलामत रखे! ऐसा लगता है जैसे कुछ हुआ ही नहीं।' और उन्होंने कहा: 'खैर, इसके लिए ईश्वर का धन्यवाद।'

एक दिन पापा ने मुझसे कहा: "क्या तुम जानना चाहते हो कि परम पावन अपना नाम कैसे लिखते हैं?" – और उन्होंने मुझे मदर अग्निया की लिखावट में लिखा एक कागज़ का टुकड़ा दिया (मैंने उनकी लिखावट को पहचान लिया था)। और सबसे ऊपर, लाल पेंसिल से तरिछा लिखा हुआ, एक नोट था। "यह लो," उन्होंने कहा, "जो तरिछा लिखा है वह पढ़ो, लेकिन और कुछ मत पढ़ना।" उन्होंने मुझे कागज़ थमाया और छोटे से गलियारे में चले गए। और मैं उत्सुकता से जल रही थी – आखिर माँ अग्निया ने ऐसा क्या लिखा था जिस पर परम पावन ने हस्ताक्षर किए थे? और फरि मैंने सोचा: 'तुम शर्म-बनि की लड़की, तुम्हें खुद पर शर्म नहीं आती? पतिजी ने तुम्हें इसे पढ़ने के लिए नहीं कहा था।' मैंने कागज़ मेज पर रख दिया और वहाँ से चली गई। लेकिन पतिजी कहीं नजर नहीं आए। और मैं उत्सुक थी – खैर, माँ अग्निया ने लिखा क्या था? मैं फरि से मेज पर लौट जाती, और फरि से सोचती: 'नहीं, मैं नहीं पढ़ूँगी' – और वहाँ से चली जाती। और इस तरह, तीन बार, मेरी जिज्ञासा मुझ पर हावी हो गई। फरि पतिजी मुस्कराते हुए अंदर आए: 'चलो, इसे पढ़ो!' और वहाँ माता अग्निया की मठ-संस्कार के लिए सरि मुंडवाने की याचना थी। पतिजी ने जल्द ही उनका संन्यास-संस्कार कर दिया।

बेशक, पतिजी के नधिन से उबरना हमारे लिए मुश्किल था। हर कोई शोक मना रहा था, हर कोई रो रहा था। और छह महीने बाद, मैंने एक ऐसा सपना देखा जो मेरी याददाश्त से कभी नहीं मटिगा। मैंने सपना देखा कि मैं एक चर्च में जा रहा था, और पतिजी वेदी से पवित्र कण निकाल रहे थे, लेकिन वेदी हमारी नहीं थी—वह संकरी थी। मैं दरवाज़े के पास खड़ी थी, आशीर्वाद के इशारे में मेरे हाथ जुड़े हुए थे, और मैंने फुसफुसाकर आवाज़ लगाई: "फादर!" वह मुझे, मेरे पास आए और मुझे आशीर्वाद दिया। मैं चुप रहा, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ: अगर मैं ज्यादा बोलता, तो

शायद उनके पास समय नहीं होता; अगर मैं कम बोलता, तो मुझे मुख्य बात को शब्दों में बयां करना नहीं आता था, इसलिए मैं चुप रहा। लेकिन वह बहुत करीब आए और कहा, 'और मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करता हूँ।' और मैं जाग गया। ओह, मुझे नहीं पता कि मैं खुशी से कैसे इधर-उधर दौड़ता रहा! फादर जीवन जतिने ही वास्तविक लग रहे थे और उन्होंने मुझे एक बार फिर से सांत्वना दी थी।

और पतिजाजी की मृत्यु को एक साल बाद, घोषणा का पर्व पाम संडे के साथ मलि गया। यह सेवा बहुत जटिल है। मैं भजन-पाठक था और मुझे नहीं पता था कि दोनों पर्वों को सही ढंग से कैसे मिलाया जाए। पतिजाजी मुझे सपने में दिखाई दिए और उन्होंने सब कुछ क्रम से रख दिया: 'ध्यान से देखो, बहुत बारीकी से देखो। वह कहेंगे: 'यह 'वै' के लिए है, वह उत्सव (यानी, घोषणा) के लिए है। 'सटचिरा' उत्सव के लिए है, वे छह हैं, और 'वै' के चार हैं; 'ग्लोरी' ('महमि'): 'वै' के लिए, और 'नाउ' ('अब'): उत्सव के लिए।' एक बार फिर, पतिजाजी बलिकुल वैसे ही थे जैसे वे जीवति हों। जब उन्होंने सब कुछ समझा दिया, तो मैं जाग गया, मुझे सब कुछ याद रहा, और मैंने सेवा उसी तरह संपन्न की।

मुझे याद है कि कैसे, पतिजाजी के नधिन से पहले, हम बशिप पटिरिमि का इंतज़ार कर रहे थे। रात का समय था। पतिजाजी अपने कोठरी में स्टोव के पास बैठे थे। वेरा कुछ बना रही थीं, बसितर बदल रही थीं; ओल्गा फ़योदोरोव्ना पतिजाजी की चोटी खोल रही थीं; मैं उनके कानों के पीछे पोंछ रही थी। वहाँ मौत जैसी खामोशी थी... और पतिजाजी वहाँ पवतिर कोने की ओर देखते हुए बैठे थे... ऐसा लगता था कि हम पतिजाजी से जो कुछ भी चाहते, पूछ सकते थे, लेकिन हम सब जैसे सुन्न हो गए थे। पतिजाजी ने खुद ही खामोशी तोड़ी; उन्होंने कहा: "जब मैं मर जाऊँ, तो तुम्हें याद आएगा कि तुमने मेरी कतिनी देखभाल की थी..." और अब वह याद हमारे बाकी जीवन के लिए एक सांत्वना के रूप में हमारे साथ है। पतिजाजी का नधिन हो गया है। बेशक, यहाँ मखिाइलोव्का में भी हालात बहुत खराब नहीं हैं; हम चीजों को चलाए रखने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यह नशिचति रूप से वैसा नहीं है, क्योंकि पतिजाजी अब हमारे बीच नहीं हैं। खैर, वैसे हमारे पुरोहित भी बलिकुल उनके जैसे ही हैं, बलिकुल पतिजाजी जैसे, हाँ, हाँ। इसीलिए हर कोई अपनी पूरी कोशिश कर रहा है।

तात्याना आस्टेमोव्ना इज्यूमोवा

मेरे माता-पिता वशिष बसाहती थे जनिहें 1931 में वोल्गोग्राद क्षेत्र से नरिवासति किया गया था। मेरी माँ, पतिजा और तीन बच्चे। उन्हें एक बंजर स्टेप में, टेमरितौ से सोलह किलोमीटर दूर बस्ती संख्या 13 में ले जाया गया। उस बस्ती में पच्चीस हजार लोग थे, और वे सभी स्टेप में खुदाई करके भूमिगत घर बना रहे थे। सर्दी तक उन्होंने झाड़ियों की लकड़ी से एक झोपड़ी जैसी चीज़ बना ली थी, और इस पूरी तरह बनिा हीटिंग वाली झोपड़ी में दस परिवार रहते थे। इसमें कोई खड़कियाँ नहीं थीं, छत मुश्किल से झोपड़ी को ढक पाती थी, और सभी लोग बंकों पर लगभग नग्न लेटे रहते थे। कभी-कभी, पतिजाजी काम से घर आते तो माँ और सारे बच्चे बर्फ में ढके हुए लेटे मिलते। पतिजाजी बर्फ हटाते और पूछते: 'क्या तुम वहाँ ज़िदा हो?' - 'हाँ, हम ज़िदा हैं।' और खाने-पीने के लिए कुछ भी नहीं होता था। मेरे बड़े भाई को कहीं से एक छोटी लकड़ी का टुकड़ा मिला, वह उसे मेरे पतिजाजी के पास ले आया और कहा: "पापा, इस लकड़ी को काटकर हमें चाय बना दीजिए।" तभी कमांडेंट आ गया, उसने मेरे पतिजाजी को कॉलर से पकड़ लिया और उस लकड़ी के टुकड़े की वजह से उन्हें तीन महीने के लिए गरिफ्तार कर लिया।

वसंत तक, बस्ती संख्या 13 में लगभग कोई भी व्यक्ति नहीं बचा था; सभी मर चुके थे। हमारा परिवार चमत्कारकि रूप से बच गया - बच्चे और माँ। फिर उन्हें टकिोनोव्का ले जाया गया, जहाँ मटिटी और कारागना की झाड़ियों से बने पाँच कमरों वाले भूमिगत घर थे। और वहीं, 1939 में, मेरा जन्म हुआ था। फिर, 1940 में, माँ ब्रेड के लिए कतार में खड़ी होने के दौरान कुचलकर मर गईं। वह गर्भवती थीं और उनकी मृत्यु हो गई। '41 में, मेरे बड़े भाई को मोर्चे पर बुलाया गया और वह मारा गया। और युद्ध के दौरान, पतिजाजी खान में दो या तीन शफिट काम करते थे; यह 'दूसरा मोर्चा' था, और खान में हर दिन लोग मारे जाते थे। और हर बार जब वह काम पर जाते, तो पतिजाजी मुझसे कहते: 'खैर, मेरी बेटी, मैं वापस आऊँगा - या खान से वापस नहीं आऊँगा - यह तो भगवान ही जाने।'।

यही हमारी परवरशि थी। मुझे याद है कि वे हमें 'कुलाक' कहते थे। मुझे उस शब्द का मतलब समझ नहीं आता था और मैंने अपने पिता से पूछा: 'पापा, वे हमें कुलाक क्यों कहते हैं?' और वह कहते थे: 'मेरी जान, वे हमें ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि जब हम रूस में रहते थे, तो हमें तकिये पर सोने का समय नहीं मिला था; हम खेतों में अपने मुककों पर आराम किया करते थे। यह इसलिए है क्योंकि हमने कड़ी मेहनत की, ज़मीन जोती और अपनी मेहनत की कमाई से रूस का पेट भरा।'।

1955 में, जब मैं पहले ही सोलह साल का हो चुका था, मैं फादर सेवेस्टियन से मिला। यह पहली बार था जब मैं चर्च गया था। सेवा चल रही थी, जिसका नेतृत्व फादर सेवेस्टियन कर रहे थे। मैं वहाँ चुपचाप खड़ा रहा और सुनता रहा। और मेरी युवा आत्मा में एक पुनर्जन्म हुआ; मैं आनंद और प्रेरणा की एक अलौकिक भावना से दंग रह गया था। इसके

बाद, मैं चर्च जाने लगा और फादर सेबास्टियन को और बेहतर तरीके से जानने लगा, और उन्होंने मुझे अपने करीब लाना शुरू कर दिया। वह बहुत गरमिमय, असाधारण रूप से दयालु और बहुत स्नेही थे। वे लोगों के साथ बहुत सहज और सौम्य व्यवहार करते थे, और हर किसी का हार्दिक स्नेह से अभिविदन करते थे, खासकर यदि कोई व्यक्ति उनसे पहली बार मिल रहा हो। मुझे कोरल गायन की आदत पड़ने लगी। फादर ऑप्टिनि की स्तुति के बहुत शौकीन थे; कभी-कभी वे स्वयं गायकों के मंच पर आकर गाते थे। गायकों का समूह महिलाओं का बना था, ठीक एक मठ की तरह। नन और युवा लड़कियाँ गाती थीं। यहाँ वास्तव में कोई मठ नहीं था, लेकिन मठ जैसा भाव बहुत प्रबल था। समुदाय छोटा था—दस या बारह नन थीं, हालांकि कुछ छपिकर रहती थीं। फादर को लंबी प्रार्थना सभाएँ बहुत पसंद थीं। हमारी चर्च में, कुछ भी छोड़ा या छोटा नहीं किया जाता था। फादर इस चर्च में ऑप्टिनि पुस्तिका की भावना स्थापित करना चाहते थे, जिसके लिए उन्होंने बहुत प्रयास किया था; जैसा कि उन्होंने स्वयं कहा था: 'मैंने इस चर्च को स्थापित करने के लिए यहाँ पसीना बहाया है।'

जब मैं पहली बार पहुँचा, तो फादर ने पूछा: 'और तुम्हारी माँ कहाँ हैं?' मैंने जवाब दिया: 'फादर, मेरी माँ का नधिन हो गया है; मुझे उनकी याद नहीं है।' – 'क्या उनका अंतिम संस्कार हुआ है?' – 'नहीं।' – 'तो फिर, चलो तुम्हारी माँ के लिए अंतिम संस्कार का अनुष्ठान करते हैं।' और फादर ने तुरंत मेरी माँ के लिए अंतिम संस्कार का अनुष्ठान शुरू कर दिया।

मेरे साथ भी ऐसा ही एक वाक्या हुआ था। मेरा आठ साल का भतीजा सड़क पर दूसरे बच्चों के साथ खेलते समय लड़ पड़ा। घर पर डाँट पड़ने के डर से, वह एक दोस्त के साथ घर से भाग गया। वे ट्रेन में चढ़ गए और ताशकंद की ओर निकल पड़े। बेशक, पूरा परिवार बहुत ज्यादा चिंतित था। आँसू भरे चेहरे से, मैं फादर के पास गई, उनके पैरों पर गरि पड़ी और कहा: "फादर, मैं बहुत दुखी हूँ। मेरा भतीजा लापता हो गया है और हमें एक महीने से कोई खबर नहीं मिली है।" और पापा ने मेरे सरि पर हाथ फेरा और कहा, 'चिंता मत करो, तान्या, ईश्वर की कृपा से, वह मिल जाएगा।' कुछ समय बीता और एक तार आया जिसमें लिखा था कि मेरे भतीजे को अल्मा-आटा में हरिसत में लिया गया है। तो मेरी बहन गई और उसे वापस ले आई। अत्यंत प्रसन्न होकर, और अपनी कृतज्ञता के प्रतीक स्वरूप, मैं फादर के लिए अंगूर का एक बड़ा गुच्छा और एक बड़ा तरबूज ले आई। और फादर ने मेरे सरि पर हाथ फेरा और कहा: 'देखा, मैंने तुम्हें बताया था कि तुम्हारा भतीजा मिल जाएगा, और वह आ गया है।' तो, यह उनकी प्रार्थनाओं की बदौलत था।

वह एक महान व्यक्ति थे, ईश्वर के एक महान व्यक्ति, जो बड़े-बड़े चमत्कार करते थे, लेकिन गुप्त रूप से, दूसरों की नज़रों से दूर। फादर ने वनिमरता से अपनी द्रव्य दृष्टि का प्रदर्शन किया। जब वह अपनी आध्यात्मिक संतानों, छोटी लड़कियों से घेरि होते थे, तो वे कभी-कभी उन सभी को देखकर कहते थे: 'मैं तुम्हें खुद से भी बेहतर जानता हूँ।' उनकी अंतर्दृष्टि इतनी गहरी थी। ऐसा होता था कि आप इतने भारी बोझ के साथ, अपने दिल में इतनी पीड़ा, इतनी चिंता और दुख लेकर पाप-स्वीकार के लिए जाते थे; फिर भी, एक बार जब आप पाप-स्वीकार कर लेते और फादर से बात कर लेते, तो आप ऐसा महसूस करते हुए निकलते मानो आपके पंख लग गए हों, सब कुछ पीछे छोड़कर - यही वह एहसास था। फादर अपने शब्दों और अपने स्पर्श से लोगों की आत्मा को चंगा कर सकते थे। वे आपके सरि पर हाथ फेरते, या कोई ऐसा शब्द कहते जो तुरंत आत्मा को सुकून दे, शांति और प्रसन्नता लाए। लेकिन जब कोई व्यक्ति ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाता, या जब फादर किसी को किसी दुर्भाग्य से बचाना चाहते, तो वे सख्त हो जाते थे। वे, बेशक, डाँट-फटकार लगा सकते थे, और फिर कहते: "ओह, मैं सारी रात जागता रहा, मैं तुम्हारी चिंता कर रहा था, ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था।" वह हर बात को बहुत गहराई से दिल पर लेते थे; हर इंसान का दुख उनके लिए उतना ही अपना था। वह कहा करते थे: "मैं खुद अनाथ होकर बड़ा हुआ हूँ, और मैं अनाथों के दुख को अपना दुख मानता हूँ; दूसरों का दुख मेरे दिल के बहुत करीब है।"

पतिजी की मृत्यु के बाद ऐसा ही एक मामला हुआ। नोवोसबिरिस्क से एक महिला आई। उसका नाम नादेज़्दा था। वह कैसर से पीड़ित थी। वह पतिजी की कब्र पर गरि पड़ी और फूट-फूट कर रोई। फिर उसने अपनी पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की, मदद के लिए उनसे वनिती की, और जब वह जा रही थी, तो कब्र से कुछ मटिटी उठा ली। जब वह घर पहुँची, तो उसने इस मटिटी को एक साफ़ बरतन में रखा, उस पर पानी डाला, और वह पानी पीने लगी। धीरे-धीरे, उसकी बीमारी दूर हो गई, और उसने अपने ठीक होने का गवाह खुद ही दिया।

ऐसा हुआ कि हमारा गायन मंडली बनी संचालक के रह गया, और मुझसे यह भूमिका नभिये के लिए कहा गया। यह पतिजी के नधिन के बाद की बात थी। मैं बहुत चिंतित था कि क्या मैं गायन मंडली का नेतृत्व कर पाऊँगा, और मैंने पतिजी से प्रार्थना की: "पतिजी, क्या यह ईश्वर की इच्छा है? क्या मैं इसे संभाल पाऊँगा?" मैंने मन ही मन ऐसी प्रार्थना की, और उस रात मैंने पतिजी का सपना देखा। वह मेल्कोम्बानाट में थे, उनकी पसंदीदा जगह, उनका तपोवन। वहाँ एक छोटी मटिटी की झोपड़ी है, और मैंने दरवाज़ा खोला, अंदर गया, और वहाँ पतिजी पूरी पोशाक पहनकर द्रव्य

अनुष्ठान कर रहे थे, उनके हाथों में एक क्रॉस और एक धूपदान था। मैंने दरवाज़ा खोला और, यह सोचते हुए कि क्या मुझे गायक मंडली का नेतृत्व करने के लिए सहमत हो जाना चाहिए, पतिजाजी के पैरों में गरि पड़ा और कहा: "पतिजाजी, मुझे आशीर्वाद दीजिए!" और उन्होंने एक बड़े क्रॉस से मेरे ऊपर क्रॉस का चहिन बनाया। मैंने उनका हाथ चूमा और तुरंत जाग गया, अपने हाथ में उनके हाथ की गर्माहट महसूस करते हुए। मुझे एहसास हुआ कि यह ईश्वर की इच्छा थी। मैंने हाँ कर दी, गायन मंडली का नेतृत्व करना शुरू कर दिया और, ईश्वर का धन्यवाद, मैं आज भी इसका नेतृत्व कर रहा हूँ।

अन्ना वासिलीवना जाइकोवा

मैं मॉर्डोविया में रहती थी; मेरे माता-पिता का नधिन हो चुका था, और मैं उनकी अंतिम संस्कार की प्रार्थना के लिए एल्डर जैकब के पास आई थी। बारकी में एल्डर जैकब नाम के एक बहुत ही सूक्ष्मदर्शी व्यक्ति थे। मैं उनकी अंतिम संस्कार की प्रार्थना के लिए आई थी, और उन्होंने मुझसे कहा: 'तुम कहाँ जा रही हो? रास्ता कतिना सुंदर है! और वहाँ तुम्हारा कौन मल्लिगा? एक स्तंभ जो धरती से स्वर्ग तक जाता है!' और मैंने अपने मन में सोचा: "यह आखिर है क्या? क्या मुझे ज़मीन से आसमान तक फैला कोई स्तंभ मल्लिगा?" फरि, '59 में, मेरी बेटी तेमरितौ चली गई और लखिने लगी: "मम्मी, आओ मलिने, मम्मी, आओ मलिने!" मम्मी ने सब कुछ बेच दिया और यहाँ आ गई। लेकिन मेरे दिल में बहुत भारीपन था – आखिर मैं गाँव के गायन मंडल में गाती थी। तो, मैं यहाँ आई और सीधे चर्च पहुँच गई। जैसे ही मैं चल रही थी, मैंने फादर सेवेस्टियन को दो लड़कों के सहारे चलते हुए देखा। लोग उनके चारों ओर भीड़ लगा रहे थे, लेकिन वह सीधे मेरे पास आए और मुझे वहीं, चर्च के बीच में आशीर्वाद दिया। और तब से मैं यहाँ आ रही हूँ; मैं तीस साल से यहाँ आ रही हूँ और यह बहुत खुशी की बात है! ऐसी खुशी आपको कहीं और नहीं मल्लिगी! लेकिन जब मैं यहाँ आई, तो मेरे पास रहने के लिए कोई जगह नहीं थी, और इसलिए – हे प्रभु, मुझे माफ करना – मैं उनके पास गई और कहा: 'फादर, मैंने शादी कर ली है।' मैंने एक बूढ़े आदमी से शादी कर ली थी – मेरे पास रहने के लिए कोई जगह नहीं थी। उन्होंने कहा: 'तुमने शादी कर ली? अगर तुम्हारी चर्च में शादी नहीं होने वाली है, तो चली जाओ।' मैं घर गई और कहा: "दादाजी, मैं जा रही हूँ।" – "तुम कैसे जा सकती हो?" – "तुम चर्च में शादी नहीं करने वाले हो, है ना?" – "मैं चर्च में शादी करूँगी!" और सीधे यहाँ आ गई – शादी करने के लिए। और तब से, मैं बार-बार यहाँ आती रही हूँ। और जब मैं पहुँची, तो मदर अनास्तासिया ने मुझे पहचाना भी नहीं, लेकिन तुरंत पुकारा: उन्होंने कहा, 'अन्ना!' तुम अपनी गॉडमदर, अनास्तासिया के लिए प्रार्थना क्यों नहीं कर रही हो? जब तुम तीन दिन की थी, तब उन्होंने तुम्हें चर्च लाया था! और तुम उनके लिए प्रार्थना नहीं कर रही हो! आखिरकार, वह मर चुकी है।' और मुझे तो यह भी नहीं पता था कि मेरी गॉडमदर की मृत्यु हो गई है—मुझे कैसे पता होता? आखिर वह रूस में थी। तो मैं वहाँ खड़ी रही, उन्हें देखती रही—वह मुझसे और क्या कहती? उन्होंने मुझे कुछ प्रोस्फोरा दिया: 'लो, इसे अपने दादाजी के साथ बाँट लो।' दादाजी तुरंत ही बीमार पड़ गए; शायद उन्होंने उनके नधिन की पूर्व सूचना पा ली थी। हाँ, बुजुर्ग अद्भुत होते थे...

और बारकी में एल्डर जैकब – वह कतिने अद्भुत इंसान थे! वह एक संत हैं; उनके मकबरे पर लोग ठीक हो जाते हैं। और मैं एक बार उनसे मलिने गई थी, जब मैं अठारह साल की थी – हे भगवान, क्या पाप किया था! खैर, मुझे समझ में नहीं आया था! मैं अपनी दादी और अपने परिवार के साथ रह रही थी। मेरी दादी के पास कोई माचसि नहीं थी। मैंने अपनी दादी से बना पूछे घोंसले से कुछ अंडे ले लिए; खैर, मैंने सोचा – यह पाप तो नहीं है, है ना? मैंने उन्हें घोंसले से लिया, दुकान पर भागा, कुछ माचसि खरीदी, और उन्हें अपनी दादी के पास वापस ले आया। फरि मैं वहाँ फादर जैकब के पास गया, और उन्होंने कहा: 'तुमने अंडों के पैसों से माचसि खरीदी!' ऐसा लगता था मानो वह किसी व्यक्ति द्वारा किए गए हर पाप को जानता हो—आप उससे कुछ भी छिपा नहीं सकते! और मैंने उसे देखा, यह सोचते हुए: 'वह किससे बात कर रहा है?' लेकिन उसने सीधे मेरे चेहरे पर कहा: 'मैं तुमसे बात कर रहा हूँ।' तो मैंने कहा: 'अरे! फादर! मुझे माफ करें, मैंने ही किया है।' वह किसी व्यक्ति को ऐसे देख सकता था, जैसे किसी छलनी से!

फादर सेबास्टियन बहुत दयालु व्यक्ति थे; वह सभी से प्यार करते थे, और उनके लिए हम सभी उनके अपने बच्चों की तरह थे। जब हम तेमरिताउ से आते थे, तो वह हम सभी को खुश करने के लिए जी-तोड़ कोशिश करते थे, ताकि हम नाराज़ न हों। ऐसा लगता था जैसे हम राजघरानों के सदस्य हों, लेकिन हम तो कतिने पापी थे!

हाँ, मैंने उसे एक बार फरि देखा: वहाँ बहुत सारे लोग थे, और फादर सेबास्टियन वहाँ से चलिला रहे थे: "जहाँ हो वहीं रुको, अंदर मत आओ!" और यह आदमी स्पष्ट रूप से बुरे इरादों से अंदर आया था और उसके पास जाना चाहता था। लेकिन जैसे ही फादर सेबास्टियन ने अपना हाथ उठाया – वह आदमी वहीं का वहीं जड़ का हो गया, और न तो वह आगे बढ़ सका और न ही पीछे हट सका। पति सेबासियन के साथ ईश्वर का राज्य हो!

और मैं मदर अग्न्या को कैसे भूल सकती हूँ! मुझे अपनी पेंशन मलिन वाली थी, लेकिन मुझे वह मलि ही नहीं रही थी। मैं उन्हें देखने गई, अपनी प्रिय माँ को, वहाँ दरवाजे पर बैठ गई और इंतज़ार करने लगी। हर कोई उनके चारों ओर भीड़ लगा रहा था, हर कोई उनके चारों ओर भीड़ लगा रहा था, और फिर उन्होंने कहा: 'यहाँ आओ।' उसने मुझे अपने पैरों के पास बठाया, मुझे आशीर्वाद दिया: 'तुम्हें तुम्हारी पेंशन मलि जाएगी,' और फिर पूछा: 'क्या तुम आइकॉन बनाते हो?' और मैं आइकॉन को उनके फ्रेम में रख रहा था। – 'क्या तुम आइकॉन बनाते हो?' – 'हाँ,' मैंने कहा, 'माँ, मैं बनाता हूँ। मुझे माफ़ कीजिए, मैंने तो आइकनों की तस्वीरें भी खींचीं (कहीं भी कोई तस्वीर नहीं मली) – मैंने तस्वीरें खुद खींची थीं।' उन्होंने कहा: "तुम बहुत देर से आए हो, वरना मैं तुम्हें तब ही सखा देती कि उन्हें कैसे पेंट करते हैं। खैर, ईश्वर तुम्हारे साथ हो," – अगर कुछ करना ही है, तो कर डालो।

तेमरितौ में अब एक चर्च बन गया है; मैं पाँच साल से हर दिन तेमरितौ जा रहा हूँ और वहाँ गाता हूँ। और फादर सेबास्टियन हमेशा हमारे दिलों में हैं; हम तेमरितौ से यहाँ यात्रा करते हैं। यह यात्रा आनंद बन गई है; हम कभी देर से नहीं पहुँचते। सेवा अभी शुरू नहीं हुई है, दरवाजे अभी खुले नहीं हैं – लेकिन हम पादरी की प्रार्थनाओं के साथ उनकी चर्च में जाने के लिए निकल पड़ते हैं। यहाँ हर कोई परिवार जैसा लगता है, मैं कहीं भी होऊँ, लेकिन मेरा दिल यहाँ आने के लिए तड़पता है; मेरी पूरी आत्मा यहाँ है, आप समझ रहे हैं न? ऐसा क्यों है? यह नश्चिति रूप से मेरी आत्मा को खींचता है। मैं वहाँ गायन मंडली में खड़ा होकर गाता हूँ, लेकिन मेरा दिल यहाँ है।

मारिया वासलियेवना एंड्रीवस्काया

हमें 1931 में सारातोव क्षेत्र से नरिवासति कर दिया गया था। वे हमें मवेशी ट्रकों में ओसाकोरोव्का लाए और मवेशियों की तरह हमें ज़मीन पर फेंक दिया। मुझे यह कल की तरह याद है: मूसलाधार बारिश हो रही थी, और हमने बारिश का पानी इकट्ठा किया और पिया। उस समय मैं पाँच साल की थी; मेरा भाई मुझसे दो साल बड़ा था, मेरी बहन तीन साल की थी, और दो और बच्चे थे – कुल मिलाकर पाँच बच्चे, साथ में हमारी माँ, पतिजी और दादा-दादी। सारातोव क्षेत्र में, हम किसान थे और हमेशा चर्च जाते थे। और इस तरह, हमें ट्रेन से ओसाकोरोव्का, सुनसान मैदान में लाया गया, जहाँ हम दो दिन तक नहीं सोए; हम माँ और पतिजी के पास ज़मीन पर बैठे रहे, उनके पैरों से चपिके हुए। दो दिन बाद, कुछ कज़ाख घोड़े-खींचे ठेले पर आए, हमें उसमें बठाया और हमें 5वीं बस्ती में ले गए। जब वे हमें ले जा रहे थे, तो हमने पतिजी से पूछा: "पापा, पापा, हमारा घर कहाँ होगा?" उन्होंने कहा: "यह जल्द ही यहीं होगा, बस इंतज़ार करो।" वे हमें 5वीं बस्ती में ले गए: "घर कहाँ है? घर कहाँ है?" लेकिन वहाँ कुछ नहीं था—सिर्फ एक सूचना-पट्टा जिस पर '5वीं बस्ती' लिखा था, और सैनिकी पहरा दे रहे थे ताकि हम भाग न जाएँ। वे हमें इशमि नदी तक ले गए, फिर से हमें ज़मीन पर फेंक दिया, और हम बच्चे विलाप कर रहे थे। पतिजी चले गए, कुछ लकड़ियाँ काटीं, हमने एक चौकोर गड्ढा खोदा, अपने कंबलों को एक छोटे से तंबू की तरह लगा दिया, और उस खोदे हुए गड्ढे में ज़मीन पर, फर्श पर, हम मध्यस्थता के पर्य तक रहे। और मध्यस्थता के पर्य पर, पचास सेंटीमीटर बर्फ गरी। मेरा भाई सुबह उठा और बोला, 'मम्मी, दादाजी ठंड से जमकर मर गए हैं, और मुझे भी ठंड लग रही है।' हम दौड़कर गए, लेकिन दादाजी पहले ही चले गए थे; उनकी मौत हो चुकी थी।

हम बैरक बना रहे थे। कशोर और वयस्क लगभग छह किलोमीटर तक अपने कंधों पर मटिटी के टुकड़े ढोते थे। मध्यस्थता के पर्य के बाद, उन्होंने हमें इन बैरकों में रखा – न खड़कियाँ, न दरवाजे। तब मेरे पतिजी ज़िदा थे; वह एक खाँचे में पानी डालते, उसे जमने देते, और फिर काँच के बजाय उस बर्फ के टुकड़े को खड़िकी में लगा देते। प्रत्येक बैरक में दो सौ लोग ठूस-ठूस कर रखे गए थे। सुबह उठते तो यहाँ दस लोग, वहाँ पाँच लोग मर चुके होते थे – और हम उन लाशों को बाहर घसीट लाते थे। मैं यह भूल नहीं सकता। हमारे साथ एक मॉर्डवनि परिवार रहता था – कुल मिलाकर बीस लोग – और उनमें से केवल दो ही रूस भागने में कामयाब हो पाए; बाकी सब मर गए। अठारह हजार लोगों को बस्ती संख्या 5 में लाया गया था, लेकिन वसंत तक केवल पाँच हजार ही बचे थे। मेरे पतिजी की 1932 में मृत्यु हो गई, और एक महीने बाद मेरी माँ ने बच्चे को जन्म दिया; इस तरह हम अपनी अंधी दादी के साथ छह बच्चे रह गए। और हम कैसे जीते थे? हम भीख माँगते थे। माँ हमें चोरी करने से मना करती थी: 'नहीं, मेरी बेटी, तुम्हें दूसरों की चीज़ों से कभी पर्याप्त नहीं मिलेगा। तुम्हें जाकर हाथ फैलाना ही बेहतर होगा।' और मैं चली गई। कुछ लोग मुझे कुछ देते थे, जबकि दूसरे नहीं देते थे—वे बस मुझे धक्का दे देते थे।

फिर हमारा नवजात भाई, हमारी सबसे छोटी बहन और हमारी दादी, सभी की मौत हो गई। जैसे-जैसे हम बड़े हुए, हम बच्चों की कार्य ब्रिगिड में शामिल हो गए। और 1937 में, माँ को सामूहिक खेत में शामिल होने के लिए मजबूर किया गया, लेकिन वह नहीं चाहती थीं। उन्होंने उनसे कहा: 'क्या तुम जानती हो तुम कौन हो? तुम एक कुलाक हो।' और माँ को तीन साल की सज़ा सुनाई गई और सुदूर पूर्व भेज दिया गया। और हम बच्चे अकेले रह गए। मेरा भाई चौदह साल

का था, मैं बारह साल का था, मेरी बहन दस साल की थी, और मेरा सबसे छोटा भाई आठ साल का था। हम बच्चों की बर्गिड में काम करते थे, खाने के लिए खाना इकट्ठा करते थे, दूसरे बच्चों की देखभाल करते थे, और सूत कातने जाते थे। वे हमें जो कुछ भी देते थे, हम उसे लेकर एक-दूसरे का पेट भरने के लिए इस्तेमाल करते थे। तीन साल तक हम इसी तरह जीते रहे।

फरि माँ रहि हुई, और जल्द ही युद्ध शुरू हो गया। मेरे भाई को सेना में बुलाया गया और मोरचे पर उसकी मौत हो गई। हमारी 'खुशी' ऐसी थी; हमारा जीवन आँसुओं, गरीबी और दुख में बीता।

'55 में, हम फादर सेवासयिन से मिले। और उन्होंने हमारे पूरे परिवार को मखाइलोकवा जाने का आशीर्वाद दिया। हाँ... तब से ऐसा लगा जैसे हम स्वर्ग में रह रहे हों। एक साल के भीतर, उनकी कृपा से, हमने एक घर बना लिया था। और तब से हम हमेशा फादर के साथ थे; हम अपनी सभी जरूरतें और सभी दुख उनके पास ले जाते थे: 'कोई बात नहीं,' फादर कहते, 'भगवान पर अपना भरोसा रखो; भगवान तुम्हें कभी अकेला नहीं छोड़ेंगे।' और वह हमेशा अपनी पवित्र प्रार्थनाओं से हमारी मदद करते थे, जिनके हम, पापी होने के नाते, नश्चिती रूप से अयोग्य हैं।

मैट्रोना तकियोव्ना फरोलोवा

जब मैं 1945 में मोरचे से घर लौटी, तो मैं अपनी ज़िंदगी को संवारने के लिए बहुत उत्सुक थी। इसलिए मैं किसी को खोजने की उम्मीद में युवाओं के साथ बहुत बाहर जाती थी। मैं एक नर्स के रूप में काम कर रही थी, और एक दिन, जब मैं एक मरीज के घर कपडि ग्लास लगाने गई, तो मैंने उसकी दीवार पर एक पुजारी की तस्वीर देखी, जिसके चारों ओर सफेद दुपट्टे पहने कई नन थीं। मैं आस्थावान थी और लगातार प्रार्थना करती थी। मैंने पूछा, "वह कौन है?" उन्होंने जवाब दिया, "ओह, वह फादर सेबेस्टियन हैं, वे करागांडा में रहते हैं।" मेरा दिल दुख से इतना भारी था; उस सारे मेलजोल से मेरा दिल पहले ही तरस से भर चुका था, और मैंने अपने आप से सोचा: "हे भगवान, मोरचे से लौटने के बाद से मेरी कतिनी बदकसिमतियाँ आई हैं! मैं अपनी ज़िंदगी को संभाल ही नहीं पा रहा हूँ, और साल बीतते जा रहे हैं।" "खैर," उन्होंने कहा, "तुम उसे एक पत्र क्यों नहीं लिखते?" मैंने एक पत्र लिखा, और फादर सेबास्टियन ने मुझे करागांडा आने का नमिंतरण दिया। मैं कुछ समय के लिए गया और मैंने फादर सेबास्टियन को मोरचे से लौटने के बाद की अपनी सभी बदकसिमतियों के बारे में बताना शुरू कर दिया, और उन्होंने कहा: "परभु ने तुम्हारे लिए वैवाहिक जीवन का वधान नहीं किया है, और तुम शादी नहीं करोगे।" और मैंने सोचा: "यह क्या बात है? उन्होंने यह सबके लिए तो लिखा है, लेकिन मेरे लिए नहीं, क्या ऐसा है?" और पादरी ने फरि कहा: "रूस वापस जाओ, वहाँ अपने मामलों को सुलझा लो, और फरि यहाँ आओ। तुम्हारे पास करांडा में रहने का ईश्वर का आशीर्वाद है।" मैं वापस गया, लेकिन बहुत लंबे समय तक मैं रूस छोड़कर करांडा नहीं जा सका, क्योंकि दुनिया मुझे इतनी कसकर रोक रही थी—ऐसा था जैसे मैं जंजीरों में जकड़ा हुआ हूँ। यहाँ तक कि पादरी भी पूरी लगन से प्रार्थना कर रहे थे, लेकिन चार महीने बाद ही मैं वहाँ पहुँच सका।

मेरा बपतसिमा का नाम मैट्रोना है। लेकिन जब मुझे मोरचे पर पंजीकृत किया गया, तो उन्होंने दस्तावेजों पर 'मारिया' लिखा। इसलिए सब मुझे मारिया ही कहते थे। मैंने पादरी को एक तार भेजा: 'कृपया आकर मुझसे मिलें।' "मारिया।" लेकिन पादरी ने अपने घर वालों से कहा: "यहाँ मट्रोना आ रही हैं; जाओ और उनका स्वागत करो।" और पादरी ने मुझे अपने घर में बसा लिया। उन्होंने पहले कभी किसी को इस तरह नहीं बसाया था; वे शैतान से मेरी बहुत रक्षा करते थे। लेकिन मैं करागान्दा में टकि नहीं सकी और हमेशा जाने की चाहत रखती रही। मैंने अपना सूटकेस पैक किया और कहा, "मुझे जाना होगा; मैं यहाँ नहीं रह सकती।" लेकिन फादर ने मेरा सूटकेस अपनी कार में रखा और मुझे फरि से अपने घर ले आए। और इस तरह मैं उनके साथ फरि से रहने चली गई। मैं वहाँ लगभग एक साल तक रही, और पतिाजी के साथ रहने वाली सभी माताएँ मुझसे हमेशा नाराज़ रहती थीं, क्योंकि मैं बहुत ज़्यादा बात करती थी, और उन्हें यह पसंद नहीं था; वे चुपचाप रहने और एक भी अनावश्यक शब्द न बोलने की आदी थीं। लेकिन मैं हर छोटी-बड़ी बात पर बकबक करती रहती थी—हे परभु, मुझे क्षमा करना! और जब शाम को फादर सेवा से लौटते, तो वे उनके सामने मेरी शिकायत करतीं, लेकिन फादर उन्हें समझाने की कोशिश करते: "मैडम, आप इतनी सारी हैं, और मैं आप सबको बर्दाश्त करता हूँ। फरि भी आप एक ही मैट्रन को बर्दाश्त नहीं कर रही हैं।" इस तरह वे उन्हें मनाने की कोशिश करते रहे। और जब तक मैं वहाँ रही, लोग हमेशा मेरी शिकायत करते रहे, क्योंकि मेरा व्यवहार वाकई अनुचित था। लेकिन पतिाजी कहते: 'वह मोरचे पर थी; उसने बहुत कुछ सहा, और परभु ने उसकी रक्षा की। उसे परेशान मत करो; वह मुझसे मिलने आई थी, तुमसे नहीं।' फरि पतिाजी ने मेरे लिए एक छोटा सा घर खरीद लिया। कभी-कभी वे मुझसे मिलने आते, सब्जी के खेत को देखते और कहते: 'ओह! मैट्रोन का छोटा सा सब्जी का खेत।' जैसा उसके दिल में है, वैसा ही सब्जी के खेत में भी है!" और मेरे सब्जी के खेत में इतनी लंबी घास थी, कि वह लगभग मेरी कमर तक थी। और पतिाजी ने मुझे होश में लाने के लिए बहुत कोशिश की। मैं रोते-रोते उसके सामने घुटने टेक देती, मेरा दिल बहुत भारी होता था,

क्योंकि शैतान मुझे बहुत बुरी तरह लुभा रहा था। लेकिन पतिजी मेरी ओर देखते नहीं थे; वे एक तरफ देखते और कहते: 'शैतान, शैतान, तुम उसकी आत्मा को क्यों पीड़ा दे रहे हो!'

मैं एक नर्स थी, और मैं अक्सर पापा पर कपगि ग्लास लगाती थी, और वह कहते थे: 'मैट्रोना, तुम मेरा इलाज कर रही हो, लेकिन मैं तुम्हारा इलाज करूँगा।' और मुझे हल्का-हल्का महसूस होने लगा।

उन्होंने हमारे लिए बहुत कुछ किया; हम सभी उनके लिए बहुत कीमती थे। और अब, जब से मैं जी रही हूँ, मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं हुई है। मेरा कोई नहीं है—ना पति, ना बच्चे—और मैंने अपना पूरा जीवन अकेले जिया है। और मुझे कभी किसी चीज़ की कमी नहीं हुई—ना भोजन की, ना पेय की, ना जलाने की लकड़ी की, ना ही किसी भी चीज़ की—जैसे कोई मुझे पंखों पर उड़ा रहा हो।

लडिया व्लादमीरोवना झुकोवा

1931 में हमारे परिवार को समारा क्षेत्र से करागंडा मुफ्त में लाया गया था। हम बच्चों में चार लोग थे, साथ ही हमारी माँ और पतिजी। हमें ट्रेन से, मालगाड़ी के डिब्बों में लाया गया था। पहले हमें अकमोलसिक ले जाया गया, जहाँ हम झोपड़ियों में रहते थे। लेकिन मुझे वह याद नहीं है; मेरी माँ ने मुझे इसके बारे में बताया था। मुझे यह भी याद नहीं कि हम उन झोपड़ियों में कतिने समय तक रहे। मुझे यह भी याद नहीं कि मेरी बहन, तीन साल की नादेज़्दा, की मौत कैसे हुई। उस समय मैं लगभग पाँच साल की थी, और मेरे दो बड़े भाई थे। अकमोलसिक से, हमें स्टेप में, कंपान्यिसिक ले जाया गया। और जब मैं 11 साल की थी और हम बोलशाया मखाइलोव्का चले गए, तो किसी कारण से मुझे लगा कि यह मखाइलोव्स्कोये गाँव पुश्कनि का गाँव था।

हम सब बच गए, हम उस नरिवासन से बाहर आ गए; केवल हमारी छोटी नादेज़्दा की मृत्यु हो गई। मेरे माता-पिता फादर सेवस्तियन को जान गए। मुझे याद है जब मैं स्कूल खत्म करके घर आता था, तो कमरा पानी से ढका रहता था। अब मुझे एहसास है कि हमारे घर में बपतिसमा का संस्कार हो रहा था, लेकिन उस समय उन्होंने यह मुझसे छिपा कर रखा था। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने फादर को पहली बार 1952 में, विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद देखा था। मेरे माता-पिता पहले ही फादर की आज्ञा से मेलकोम्बानाट चले गए थे, और फादर वहाँ आते थे, अक्सर हमारे घर में मैटनिस या वेस्परस का आयोजन करते थे। मेलकोम्बाइनट के हर कोने से लोग तुरंत ही इकट्ठा हो जाते थे, इसीलिए हमने एक बड़ा घर बनाया ताकि सभी लोग समा सकें। और फादर हम सभी से बहुत प्यार करते थे। मुझे याद है, एक बार जब हमने प्रार्थना की और रात का खाना खाया, तो सभी अपने-अपने घर चले गए, लेकिन फादर हमारे यहाँ रात रुक गए। और नर्स, मैट्रोना, बस जा ही नहीं रही थी। खैर, वह हर पल पतिजी को देखना और उनकी बातें सुनना चाहती थी। वह हमेशा हमारे घर पर सबसे पहले आती और सबसे आखिर में जाती थी। तो मैंने पहले ही एक टब में पानी भर रखा था और उसे ऐसे इशारे से देख रही थी जैसे कह रही हो, 'चलो, जाओ!' लेकिन वह नहीं गई। मैंने पापा को बस्तिर पर लटियाया, उनके जूते उतारे, और उनके पैर धोने के लिए पानी लया। खैर, पापा ने देखा कि मैट्रोना झाँक रही थी, और कहा: "लडिया व्लादमीरोवना, ठीक है, फरि मैट्रोना को दूसरा पैर धोने दो!"

जब मेरे पतिजी सत्तर साल के थे, तो वे एक डीकन बने, फरि एक पादरी बने, और उन्होंने फादर के साथ सेंट माइकल चर्च में सेवा की। और माँ और पतिजी कहा करते थे: "कतिना अद्भुत है कि हमें नरिवासति किया गया! अगर हमें नरिवासति नहीं किया गया होता, तो हम इतने अद्भुत पादरी से नहीं मिलते!" – इस तरह वे ईश्वर का धन्यवाद करते थे।

सामरटसेव परिवार

वासिली इवानोवचि समारटसेव

हम ओरेनबर्ग क्षेत्र में रहते थे। हमारे माता-पिता बहुत धार्मिक लोग थे। 1931 में, मेरे पिता को एक कुलाक के रूप में उनकी संपत्ति से वंचित कर दिया गया और उन्हें जेल में डाल दिया गया, जबकि हम—छह बच्चे और हमारी माँ—को मई 1931 में करागंडा के पास खुले मैदान में बस्ती संख्या 9 में ले जाया गया। मेरे बड़े भाई 11 साल के थे, उसके बाद जेनोचका; मैं चार साल का था; मुझसे छोटे इवान, उम्र तीन साल, और येवगेनी, उम्र दो साल थे; और सबसे छोटे, पावलकि, एक शिशु था। हमारे साथ एक कोशमा और एक संदूक था। हमने ज़मीन में एक गड्ढा खोदा, उस पर कोशमा बछिया, संदूक को तोड़कर उसकी छत के रूप में इस्तेमाल किया। वही हमारा घर था। जब बारिश या बर्फबारी होती थी, तो हम गड्ढे को कोशमा से ढक देते थे। और इस तरह हम छह बच्चे, अपनी माँ के चारों ओर चूजों की तरह एक-दूसरे से सटे रहते थे।

फरि उन्होंने मट्टी के घर बनाना शुरू कर दिया और सभी को मट्टी गूँथने के लिए मजबूर किया। नगिरानीकर्ता घोड़े पर सवार होकर घूमता था और चाबुक से लोगों को मट्टी में धकेलता था। हमने घास की जड़ें काटीं, तरह-तरह की घास और झाड़ियाँ काटीं - हमें सर्दियों से पहले बैरक बनानी थी ताकि हिम मर न जाएँ। इस तरह खान संख्या 2 पर टकिोनोव्का बस्ती बसी। हमें बच्चों को बहुत कम राशन मिला था। वहाँ एक छोटी सी नदी थी, लेकिन वह सूख गई, और पानी पर्याप्त नहीं था। और इस तरह, सर्दियों तक हम दीवारें खड़ी कर लेते, खड़कियाँ और दरवाजे लगा देते, और हर बैरक में दो चूल्हे लगा देते थे। हर बैरक में बीस परिवार होते थे, और सर्दियों में हर कोई बंकों पर सोता था। एक परिवार एक बंकों के सेट पर, दूसरा अगले पर, और तीसरा तीसरे पर - बंकों की एक लगातार कतार जसिमें उनके बीच सरिफ एक संकरी गली होती थी।

1932 की सर्दियाँ बहुत कठोर थीं, और मैंने अपनी आँखों से देखा कि कैसे पूरे परिवार मृत पड़े थे। लोग भूख, ठंड और तरह-तरह की बीमारियों से मर रहे थे - हैजा और दस्त का प्रकोप फैल गया था, लेकिन उनका इलाज करने के लिए कुछ भी नहीं था, और रोटी भी बहुत कम थी - अकाल। ओरेनबर्ग और साइबेरिया के लोग ज्यादा मजबूत थे। लेकिन उपजाऊ भूमि - टैम्बोव, वोरोनज़, पेन्ज़ा - से आए लोग कमजोर थे; वे एक समय में पूरे-पूरे परिवार के रूप में मर रहे थे। उन्हें कैसे दफनाया गया? उन्होंने तीन मीटर चौड़ी खाइयाँ खोदीं; मृत परिवारों को बैरकों से घसीटकर बाहर निकाला जाता, एक गाड़ी पर फेंका जाता, ले जाकर खाइयों में लकड़ी की तरह फेंक दिया जाता। और उस सर्दी में एक ही सप्ताह में, हमारे भाई पावेल, इवान और येवगेनी तीनों मर गए। जहाँ तक जेनोचका की मौत का सवाल है, हमें तो इसकी खबर भी नहीं मिली। वे उसे खाने के लिए बुलाने गए, तो जेनोचका मर चुका था। उन्होंने बच्चों के लिए छोटी-छोटी ताबूतें बनाईं, और उन्होंने छोटे पाव्लकि को एक फटे-पुराने कपड़े में लपेटकर, उसे एक लोहे की पाइप में रख दिया, एक छोटी कब्र खोदकर उसे दफना दिया। बस ऐसे ही था। दो साल बाद, टकिोनोव्का में पाँच हजार लोग ही बचे थे। बीस हजार लोगों को वहीं, स्टारा टकिोनोव्का के पास दफनाया गया था। केवल दो भाई और हमारी माँ बचे थे।

1933 में, हमारे पति आए, और कुछ ही समय बाद हमारी माँ भूख से मर गईं। जबरन बसाहट का सामना कर चुके विश्वासियों के समूह प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा होते थे। और जब मारथा और मैरी नामक नन को डोलका से रहिा करके टकिोनोव्का में बसाया गया, तो उन्होंने हमें बताया कि ऑप्टिना के एल्डर, फादर सेबेस्टियन को भी जल्द ही डोलका से रहिा कर दिया जाएगा। और इस तरह हम उनका इंतजार करने लगे।

युद्ध से पहले, हम ब्रेड पाने के लिए राशन कार्ड का इस्तेमाल करते थे। टकिोनोव्का में लंबी कतारें लगती थीं, इसलिए मैं ब्रेड लेने के लिए शहर जाता था। और पतिजी, जब उन्हें रहिा किया गया और वे मखाइलोव्का में बस गए, तो वे भी खुद ब्रेड लेने जाते थे। मैं सचमुच उससे शहर में मलिना चाहती थी, और मैं उससे मिली भी; मैं उसके पास गई और बातें शुरू कर दीं। और कतिनी खुशी हुई जब उसने मुझे नज़िन्याया स्ट्रीट पर अपने घर ले जाया। हमारी दोस्ती की शुरुआत यहीं से हुई।

नीना पेट्रोव्ना सामार्त्सेवा

मेरी प्रसव प्रक्रिया कठिन रही, जिसके बाद मुझे जुकाम हो गया और संक्रमण हो गया। मुझे प्रसूतिगृह से एक नरिशानक मरीज मानकर छुट्टी दे दी गई, घर पर मरने के लिए भेज दिया गया। और पति मलिने आने लगे। वे आते और कहते: "लो, मैंने तुम्हारे लिए कुछ फल लाया हूँ; लो, मैंने तुम्हारे लिए कुछ मछली लाया हूँ।" यह लेंट का समय था, और वे मेरे लिए एक कार्प मछली लाते: 'कार्प पकाओ!' लेकिन मैं कुछ भी नहीं खा रही थी; मैं तो पहले से ही मर रही थी। अस्पताल का डॉक्टर आता और कहता, 'इलाज क्यों करें? अब इससे कोई फायदा नहीं होगा।' हमारी डॉक्टरें आई - ओल्गा फओदोरोव्ना और ताइसाइया ग्रगोर्येव्ना - और मुझे दनि में दो बार इंजेक्शन देती थीं। पादरी को मुझ पर बहुत तरस आया: "एक पुरुष," पतिजी कहते, "मजबूत होता है, लेकिन एक महिला - वह असहाय होती है।" पहले हमारे यहाँ लड़के हुए, और फिर लड़कियाँ। "पतिजी," हम कहते, "हमारे यहाँ लड़की हुई है!" "लड़की है तो क्या!" पतिजी कहते, "मुझे लड़कियाँ पसंद हैं!"

वह थोड़ी देर के लिए मेरे बसितर के पास बैठते और बातें करते। उनका सरि एक तरफ थोड़ा सा झुका होता और धीरे-धीरे हलिता रहता। और इस तरह, एक महीने तक, दनि-प्रतदिनि पतिजी मुझसे मलिने आते रहे, और वसंत तक, उनकी प्रार्थनाओं की बदौलत, मैं ठीक हो गई थी।

वालेटीना सरगेव्ना पोपोवा

हम करागंदा कन्फेक्शनरी फैक्ट्री में काम करते थे। फैक्ट्री कम्युनिस्टों द्वारा चलाई जाती थी; सभी मजदूर ट्रेड यूनियन में थे, लेकिन हम शामिल नहीं हुए थे। और फैक्ट्री में, हमें हमारी आस्था के कारण नीचा समझा जाता था।

लेकनि हम अपने काम से प्यार करते थे और उसे अच्छी तरह से करते थे। एक दिन, एक टेलीवज़िन करू उत्कृष्ट श्रमकों के बारे में एक कार्यक्रम फलिमाने आया। वे हमें फलिमाना चाहते थे, लेकिन प्रबंधक ने मना कर दिया, यह कहते हुए: "आप ऐसा नहीं कर सकते, वे आस्थावान हैं।" बेशक, फरि हमें खूब डांटा गया, और लोग हँसे: "तुम बहुत कुछ से चूक गए हो; तुम इतने युवा हो और फरि भी ईश्वर में विश्वास करते हो!" हम फादर सेवासयिन के पास गए, उन्हें सारी बात बताई, और उन्होंने हमें बहुत सांतवना दी—कोई भी माँ हमें फादर सेवासयिन जतिनी अच्छी तरह सांतवना नहीं दे सकती थी। उन्होंने कहा, 'सब ठीक है, तुम थोड़े समय के लिए यह सब सहन कर सकते हो। तुम फरि भी उनका भरोसा जीत लोगे; वे तुम्हें चाबियाँ सौंपेंगे और तुम्हें खज़ांची बना देंगे।'

बेशक, उन्होंने हमसे कड़ी मेहनत करवाई; सर्दियों में वे हमें कार्यशाला से बाहर निकालकर नरिमाण स्थलों पर काम करने के लिए ले जाते थे। हम गाड़ियों से कोयला उतारते और उसे ट्रकों पर लादते थे, और जो भी काम आवश्यक होता, वह करते थे। और फरि हम नदिशक और मुख्य अभयिता, इवान सेमेनोवचि, के दोस्त बन गए। इवान सेमेनोवचि हमसे मलिन आए, उन्होंने देखा कहिम उपवास कर रहे हैं, और उन्हें यह पसंद आया। उन्होंने उपवास और ईसाई छुट्टियों के बारे में हमसे तरह-तरह के सवाल पूछे, और कहा: "तुम कतिना अच्छा जीवन जीते हो! मैं भी ऐसे ही जीना चाहता हूँ।" तो उन्होंने हमें स्टोरकीपर बना दिया, हमें चाबियाँ सौंप दीं, और जब नरिदेशक कहीं जाते थे तो वह अपना फ्लैट भी हमें सौंप देते थे।

ससिटर नीना (कोरशुनोवा)

जब हम एक नरिमाण स्थल पर बाहर काम कर रहे थे, तो मैंने अपनी सेहत बगिड़ ली। फादर अब मुझे बाहर काम पर जाने का आशीर्वाद नहीं देते थे। मैं आधे साल तक बीमारी की छुट्टी पर थी। फरि फादर ने कहा, 'तुम्हें चर्च में काम करना चाहिए।' और मुझे दूसरी श्रेणी की वकिलांगता प्रदान की गई। मैंने चर्च में काम करना शुरू कर दिया और आज भी कर रही हूँ।

एक दिन, मेरी बाँह पर एक बहुत बड़ा गाँठ हो गया। और जब भी हमें कोई परेशानी या जरूरत होती है, हम सब पतिजाजी के पास दौड़ते हैं। तो मैं उनके पास गई और कहा, 'पतिजाजी, मेरी बाँह पर एक गाँठ हो गई है और वह बस बड़ी और बड़ी होती जा रही है।' माँ कहती हैं, 'तुम्हारा ऑपरेशन करवाना होगा।' लेकिन पतिजाजी खड़िकी से बाहर देखते हैं, मेरी बाँह पर प्यार से हाथ फेरते हैं और कहते हैं, 'हाँ, यह एक बड़ा गाँठ है। लेकिन नहीं, तुम्हें ऑपरेशन की जरूरत नहीं है।' और बस यँ ही वह गायब हो गई—चाहे उसी समय या थोड़ी देर बाद, मुझे तो पता भी नहीं चला—लेकिन जब मैं घर पहुँचा, तो मेरी बाँह की गाँठ पहले से ही गायब थी।

जब हम लगभग 15 या 16 साल के थे, तो हमने बनिा, बेशक, पतिजाजी की आजीजी लिए सनिमा के टिकिट खरीद लिए। लेकिन पतिजाजी ने इसकी पहले से ही भवषियवाणी कर रखी थी और हमें अपने साथ डेयरी फ़ैक्ट्री ले गए। वहाँ वे कुछ लोगों से मलिन जाते, थोड़ी देर बैठते, सबजियों के खेत में टहलते, फरि दूसरों से मलिन चले जाते। "अरे," वह कहते, "हमें कोई जल्दी नहीं है।" और हम, जाहरि है, जल्दी में होते थे, लेकिन चुप रहते थे। माँ वार्या हमारे साथ होती थीं; वह कहती, "ओह, लड़कियाँ कतिनी जल्दी में हैं।" लेकिन पतिजाजी बस मुस्कुराते और समय खींचने के लिए चलते रहते। पहले ही सात बज चुके थे, फरि आठ... और पापा ने कहा, "खैर, अब हम घर जा सकते हैं।" तो हम कभी सनिमा नहीं पहुँच पाए। वे हमारी जवानी के दिन थे।

एक बार, क्रसिमस से ठीक पहले, पापा ने मेरी बहन और मुझे फादर पीटर का कमरा सफेद रंग करने का आशीर्वाद दिया। हम सुबह पहुँचे, और काम शुरू करने से पहले, हम पापा से उनका आशीर्वाद लेना चाहते थे, लेकिन हाउसकीपर ने कहा, 'पापा बहुत बीमार हैं; आप उनसे नहीं मलि सकते।' हम नरिश हो गए, लेकिन फरि भी काम पर चले गए। हमने सब कुछ सफेद रंग से रंगा हुआ था और घर जाने की तैयारी कर रहे थे, तभी हम एक बार फरि से पतिजाजी का आशीर्वाद लेने के लिए गए, लेकिन सेल के परचारक ने फरि से कहा: "पतिजाजी बीमार हैं; आप उनके पास नहीं जा सकते।" तब तक देर हो चुकी थी, और बाहर अंधेरा हो गया था। जब हम पतिजाजी की खड़िकी के पास से गुज़रे, तो हमने देखा कबित्ती जल रही थी और परदे पीछे हटे हुए थे। हम पादरी को उनकी कोठरी में बैठे देख सकते थे, उनके पैरों के पास पादरी अनातोली प्रॉस्वरिनकि थे (वे उस समय अभी भी अकादमी में पढ़ रहे थे और क्रसिमस की छुट्टियों में पादरी से मलिन आए थे)। मैंने अपनी बहन से कहा, 'ओह, पादरी तो वहाँ बैठे हैं, लेकिन वेरा ने हमें उनका आशीर्वाद लेने नहीं दिया।' खैर, मैंने सोचा, मैं बस दूर से ही माँग लेती हूँ। तो हम खड़िकी के पास से गुज़रे और मैंने कहा, "फादर, हमें आशीर्वाद दीजिए!" लेकिन मेरी बहन ने कहा, "तुम खड़िकी से झाँक क्यों रही हो? यह सही नहीं है; फादर कुछ कहेंगे।" "अरे, वे कुछ नहीं कहेंगे," मैंने जवाब दिया, "वे हमारे बारे में नहीं सोचेंगे; वे तो बस यही सोचेंगे कयिहाँ ग्लाफरि इधर-उधर दौड़ रही है।" और हम घर चले गए।

अगले दनि हम चर्च गए; पादरी एक स्मृतिसिभा का संचालन कर रहे थे, और ग्लाफरि पास में खड़ी थी। मैं आशीर्वाद लेने के लिए पादरी के पास गया, और जब उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा, तो वे ग्लाफरि की ओर मुड़े और बोले, "तुम खड़िकियों से झाँक क्यों रही हो?" हे भगवान! ग्लाफरि फूट-फूट कर रो पड़ी, उसे कुछ भी समझ नहीं आया। मैं मदर अनास्तासिया के पास गई (हमारे समुदाय में, जब पादरी के पास जाना असंभव होता है, तो हम मदर अनास्तासिया के पास जाते हैं; वह सब कुछ सुलझा देती हैं)। मैंने कहा, 'मदर, यह और वह हुआ; ग्लाफरि कुछ भी नहीं समझ पाई और रो रही है। क्या मैं उसे समझा दूँ?' 'परेशान मत हो,' मदर अनास्तासिया ने कहा, 'एक शब्द भी मत कहना; सब ठीक हो जाएगा।'

पापा चाहते थे कि हम चारों बहनें करागांडा में एक साथ रहें और कहा करते थे: 'मैं तुम्हारे लिए एक घर खरीदूँगा, और तुम वहाँ रहोगी।' लेकिन मेरी एक बहन, येवगेनिया, जो तसेलनोग्राद कषेत्र के जाल्टरि में हमारे माता-पिता के साथ रहती थी, ने मुझे एक पत्र में लिखा कि विह शादी करने की योजना बना रही है। तो मैंने पतिजी को बताया कि झेन्या की शादी हो रही है, और उन्होंने पूछा, 'और कौन है तुम्हारा?' मैंने कहा, 'मेरा बड़ा भाई।' – 'वह कहाँ काम करता है?' – 'पुलिस में।' – 'ठीक है, वह मदद करेगा।' और मैंने मन ही मन सोचा, 'मेरा भाई आखिर मदद कैसे करेगा?' तो मेरा भाई जाल्टायर गया और हमारे माता-पिता को डाँटने लगा: 'तुम क्या सोच रहे हो? वह अभी केवल अठारह साल की है, और तुम उसे शादी के लिए दे रहे हो! मैं इसे नहीं होने दूँगा! मैं उसे अपने साथ रहने के लिए ले जा रहा हूँ; मैं उसे पढ़ाऊँगा; वह डॉक्टर बनेगी!' शादी रद्द हो गई, और मेरा भाई झेन्या को करागांडा ले आया। बाद में, बेशक, मेरे भाई को बहुत पछतावा हुआ: "मुझे उसे यहाँ नहीं लाना चाहिए था; कम से कम वहाँ तो उसकी शादी हो जाती, लेकिन यहाँ उसने चर्च जाना शुरू कर दिया है।" और मेरी बहन आखिरकार हमारे साथ रहने लगी, पतिजी के साथ।

कभी-कभी पादरजी हमारे यहाँ रात बताते थे। "पादरजी की छोटी सी चोटी कौन गूँथेगी?" यह हमारे लिए कतिनी बड़ी खुशी की बात थी, इसे बयां करना असंभव है! माता वरवारा कहती थी: "लड़कियों! पादरजी में प्रभु का एक अंश है, और प्रभु स्वयं बहुत प्यारे हैं!" आप उनके बाल संवारतीं और उनकी लटों को इकट्ठा करतीं। आज भी मेरे पास पतिजी के कुछ बाल हैं।

जब पतिजी बहुत कमजोर हो गए थे, और वे उन्हें अपनी बाहों में उठाकर चर्च ले जाते थे, तो उनकी सेविका वेरा, किसी को भी उनके पास नहीं आने देती थी। लेकिन मैं सच में पतिजी के करीब रहना चाहती थी। और इसलिए, जब पेट्या और शूरकि उन्हें चर्च से बाहर ले जा रहे थे, तो पतिजी ने मुझसे कहा: "अच्छा, चलो, मैं तुम्हें परीक्षाओं की यात्रा पर ले जाऊँगा।" मैंने सोचा, 'ऐसा कैसे हो सकता है?' – और मैं उनके पीछे हो ली, जबकि पतिजी कह रहे थे, 'अंदर आओ, अंदर आओ।' मैं अंदर गया, पतिजी ने अपनी छाती पर क्रॉस का नशान बनाया, और हम सबने भी छाती पर क्रॉस का नशान बनाया; और मैंने देखा कि विह मुस्कुरा रहे थे। वह मेज़ के पास गए और मुझे एक संतरा और एक सेब देते हुए बोले, "ठीक है, नकिल जा!" लेकिन मुझे जाने से डर लग रहा था; वेरा बहुत सख्त है। मैं दूसरे दरवाजे से बाहर जाना चाहती थी, लेकिन वह पहले से ही हुक से बंद था, इसलिए मुझे हॉल में जाना पड़ा। तभी वेरा मुझ पर टूट पड़ी और मुझे खूब डाँटने लगी। वह मुझे मार रही थी और पीट रही थी: 'तुम्हें कैसे हो गया? पापा बीमार हैं, और तुम वहाँ चली गईं?!' तभी पेट्या बीच में आ गया, और मेरी माँ दौड़ती हुई आई; वह और वेरा में धक्का-मुक्की होने लगी: 'तुम यह क्या कर रही हो?' और फिर मेरे पिता दौड़ते हुए आए: 'तुम शरारती लड़की, यह क्या कर रही हो?' पतिजी ने खुद तो इसे आशीर्वाद दिया था! दरवाजे तक पहुँचने के लिए मुझे ऐसी ही 'यातना' से गुजरना पड़ा। और पतिजी मुस्कुरा रहे थे: 'अच्छा, तो फिर चली जा!'

जब पापा बीमार थे, हम घर जाकर सोने नहीं गए; हम गेटहाउस में बंकों पर सोए। हमें डर था कि पापा की मौत हो जाएगी और हम उनके अंतिम क्षणों में वहाँ नहीं होंगे। और राडोनित्सा पर, सुबह 4.45 बजे, मैंने सपने में देखा: पापा स्मारक चैपल में खड़े थे, अपनी सेल सहायक वेरा को मोमबत्तियाँ दे रहे थे और कह रहे थे: "लो, सबको मोमबत्तियाँ बाँटो," – और उन्होंने खुद एक मोमबत्ती जलाई। मैं जाग गई और कहा: "तान्या, पापा की मृत्यु हो गई है।" मैंने यह कहा ही था कि दरवाजे पर दस्तक हुई: "पापा की तबीयत ठीक नहीं है!" उन्होंने यह नहीं कहा कि "वे मर गए हैं", उन्होंने कहा "उनकी तबीयत ठीक नहीं है।" हम कोठरी में दौड़े; पतिजी वहीं पड़े थे, उनका शरीर खुला हुआ था, और उन्होंने अपना एपटिराचेलयिन पहना हुआ था। बशिप सामने खड़े थे, उनके साथ वेरा, ओल्गा फ्योदोरोव्ना और ग्लाफरि थीं; वे सभी सरि झुकाए खड़े थे – पतिजी का नधिन हो गया था। और हमें यह खबर सबसे पहले खुद पतिजी ने ही दी थी।

ताइसयिा ग्रगोरयेवना फोमनि

इलारयिन वासिलीयेवचि फोमनि मेरे दादा थे। और पादरी भी मेरे लिए दादा जैसे थे। दादा इलारयिन की उम्र सत्तावन वर्ष की थी जब उनकी पत्नी का नधिन हो गया। उनके पीछे चार बच्चे रह गए थे, जिनकी उम्र चार, सात और उससे अधिक थी। उनकी बेटी, मारिया – मेरी गॉडमदर, जो उस समय उननीस साल की थी – ने खुद ही पूरा बोझ उठा लिया: उन्होंने सभी बच्चों का पालन-पोषण किया और दादाजी को जीवित रहने में मदद की। हमारा परिवार 1 अगस्त 1955 को, पतिजी की आज्ञा से, करागांडा पहुँचा। हम मेलकोम्बानाट में बस गए। दादा इलारयिन दुनियादार, लेकिन बहुत धार्मिक व्यक्ति थे। वह हमेशा प्रार्थना करते थे और आध्यात्मिक कतिबें पढ़ते थे। अपनी जवानी से लेकर अपनी मृत्यु तक, उन्होंने कभी दाढ़ी नहीं बनाई। और वह फादर का बहुत सम्मान करते थे; उनके बीच कभी अनबन नहीं हुई। मैं हमेशा दादा के साथ रहता था। जब उनकी मृत्यु हुई, तो फादर ने उनका अंतिम संस्कार किया।

पतिजी के पास आध्यात्मिक ज्ञान और अनार्यों तथा वधिवार्यों के प्रति प्रेम था; वह हमेशा उनकी मदद करने की कोशिश करते थे, भले ही वह सिर्फ एक रोटी का टुकड़ा ही क्यों न हो। लेकिन कभी-कभी, पतिजी बहुत सख्त हो सकते थे। हालाँकि मैं उनका रक्षितदार था, पर मैं पादरी की मौजूदगी में एक तरह का डर महसूस करता था; मैं उनके आस-पास आजादी से या सहजता से व्यवहार नहीं कर पाता था। एक बार, जब पादरी पहले से ही कमजोर हो गए थे, तो मैं उन्हें सड़क से उनकी कोठरी में ले जा रहा था। जब हम कोठरी में दाखिल हुए, तो वहाँ कोई सेल अटेंडेंट नहीं था जो उन्हें कपड़े उतारने में मदद कर सके। तो मैंने फैसला किया: 'अब मैं खुद फादर की मदद करूँगी।' वह मुड़े और बोले, 'क्या तुम्हें लगता है कि मैं अपना खयाल नहीं रख सकता?' मैं वहीं, उसी जगह जमी खड़ी रह गई। और उन्होंने खुद कपड़े उतारे और उन्हें टाँग दिया। 'मैं अभी भी खुद लोगों की मदद करने में सक्षम हूँ,' उन्होंने कहा। इस तरह उन्होंने मुझे मेरा स्थान दिखा दिया।

बहुत से लोग पादरी से मिलने मखिइलोवका आया करते थे, और बहनें उन सभी का स्वागत करतीं और उनकी देखभाल करतीं। पहले तो मैंने इसे सामान्य बात समझा, जब तक मुझे यह एहसास नहीं हुआ कि अजनबी कभी-कभी कतिने बोझ बन सकते हैं, और इन सब को सहना, इनकी सभी कमजोरियों को सहना और इनकी देखभाल करना कतिना कठिन है। बहनों की आतथिय-सत्कार की जतिनी प्रशंसा की जाए, उतनी कम है। वे आध्यात्मिक लोग थीं और एक आध्यात्मिक जीवन जीती थीं।

जब फादर का नधिन हुआ, तो बशिप जोसेफ अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हुए। लेकिन इसमें एक बुद्धिमानी थी: बशिप पटिरिमि आए, और बशिप जोसेफ को इसकी जानकारी थी। बशिप पटिरिमि पति के आध्यात्मिक पुत्र थे, और इसके अलावा, उन्हें अंतिम संस्कार करने का आशीर्वाद पैट्रिआर्क से मिला था। बशिप पटिरिमि एक बशिप थे, जबकि बशिप जोसेफ एक आर्चबशिप थे। और इसलिए कोई परेशानी न हो, इस हेतु बशिप जोसेफ उपस्थिति नहीं हुए।

पतिजी की मृत्यु के बाद, हमारे बीच कोई कलह नहीं थी। अगर कोई टकराव था भी, तो वे महज मामूली बातें थीं। प्रभु हमारी रक्षा करते हैं। जहाँ तक पतिजी के बच्चों द्वारा उनकी बात न सुनने की बात है – ऐसा हुआ है, हो रहा है, और होता रहेगा। हम इंसान ही ऐसे हैं। हमें अच्छा लगता है जब लोग हमारे पक्ष में बात करते हैं, लेकिन जब वे हमारे खिलाफ बोलते हैं, तो हमें अच्छा नहीं लगता। खैर, बाद में हमने माफी भी माँगी थी।

एंटीननि इवानोवा

मैंने 10 साल तक खदान में काम किया। लेकिन जब खदानों से सभी महिलाओं को हटाने का आदेश जारी हुआ, तो मैं बेरोजगार हो गई। और फिर पादरी ने मुझे बुलाया, तो मैं उन्हें देखने गई। उन्होंने कहा, "देखो, वह वहाँ बैठी औरत? उसका एक बीमार बच्चा है, एक लड़का। तुम उसके साथ जाओगी और उसकी देखभाल करोगी।"

अगले दिन मैं उस लड़के से मिलने अस्पताल गई। उसकी उम्र सात साल होने वाली थी। वह एक सुंदर, अच्छे व्यवहार वाला लड़का था, लेकिन वह चल नहीं सकता था; वह लकवाग्रस्त था। मैं उसके साथ अस्पताल में रात भर रुका, उसे खाना खिलाया और उसे टहलाने के लिए बाहर ले गया। फिर उस लड़के को एक नरिशोजनक मामले के रूप में छुट्टी दे दी गई। फादर सेबास्टियन ने तुरंत भविष्यवाणी की कि वोल्^{odya} बच नहीं पाएगा, और धीरे-धीरे उसके माता-पिता को इसके लिए तैयार किया। लेकिन उसके माता-पिता इसे स्वीकार नहीं कर सके; वह उनका एकमात्र संतान था। उसके माता-पिता कुछ भी करने को तैयार थे और उन्होंने सब कुछ आजमाया – उन्होंने कई डॉक्टरों को बुलाया, एक चीनी व्यक्ति को लाया जिसने उसकी रीढ़ की हड्डी में सुइयाँ लगाईं और मो^{oxibustion} (मसाला जलाने का एक प्रकार) का इस्तेमाल किया, और भविष्य बताने वाले उनके घर आए, लेकिन लड़का ठीक नहीं हुआ।

लड़के के बीमार पड़ने से पहले, उसके पिता बहुत शराब पीते थे, और जब भी वह नशे में होते, तो उत्पात मचाते और गाली-गलौज करते थे। और इसलिए आँगन में, ठीक उस लड़के के सामने, उसका पड़ोसी से झगड़ा हो गया; उनमें

से एक ने दूसरे पर वार करने के लिए एक कुल्हाड़ी उठा ली, और यह छह साल का लड़का, डर के मारे, दो मीटर ऊँची बाड़ पर चढ़ गया और फरि नीचे नहीं उतर सका; उसे वहाँ से नीचे उतारना पड़ा। वह तुरंत लकवाग्रस्त हो गया, फरि अंधा हो गया, और बोलने की क्षमता खो बैठा। उसकी माँ रोते हुए पादरी के पास गई, और पादरी ने उन्हें सांतवना दी। लड़का सात महीने तक बीमार रहा। पादरी अक्सर मलिन आते, उसे पवित्र Communion देते; वे कहते थे कि यह लड़का एक शहीद की तरह है। और जब वोल्odya की मृत्यु हो गई, तो पादरी ने मदर अनास्तासिया और कुछ अन्य माताओं को उनके घर भेज दिया। डीकोनेस ने लड़के के शरीर को धोया, प्रार्थना की, और अंतमि संस्कार की सभी तैयारियाँ कीं। मदर अनास्तासिया वहाँ कुछ देर के लिए बैठी रहीं, फरि कहा: 'झेन्या यहाँ नहीं है (वे लड़के के पिता थे)। चलो, पेट्या, कोल्या, झोपड़ियों के चारों ओर जलूँ करो, नहीं तो एक मिनट में एक और ताबूत आ जाएगा।' और सबसे दूर वाले खलहिन में उन्हें झेन्या मिला – वह पहले ही अपनी गर्दन में फाँसी का फंदा डाल रहा था। और इस तरह मदर अनास्तासिया ने उसे बचाया। वह भी एक असाधारण महिला थी, और पादरी ने उन्हें जानबूझकर वहीं भेजा था। और जब तक उस लड़के का अंतमि संस्कार नहीं हो गया, मदर अनास्तासिया वहाँ से नहीं गईं।

वैलेन्टिना पेट्रोवना पानोवा

हमारा परिवार तसेलनोग्राद में रहता था जब हमने स्थानीय चर्च में सुना कि करागंडा में एक बहुत ही असाधारण पादरी हैं। और 1955 की सर्दियों में, मेरे माता-पिता और मैं पादरी से मिलने के लिए करागंडा गए। उस समय मैं कक्षा 9 में था। हम पहुँचे, पाप-स्वीकार किया, पवित्र परमप्रसाद ग्रहण किया, पादरी से मिले और चले गए। और पादरी ने वास्तव में एक असाधारण छाप छोड़ी। यद्यपि बाहरी रूप से वह एक साधारण व्यक्ति थे, जब मैं उनके आशीर्वाद के लिए उनके पास गई, तो मेरे दिल की धड़कन श्रद्धापूर्ण भय से एक पल के लिए रुक सी गई। मैं इस भावना से अभिभूत था।

1956 में, मैंने स्कूल पूरा किया और चूंकमुझे पेंटगि का शौक था, इसलिए माँसको जाकर स्ट्रोगानोव स्कूल में आवेदन करने का फैसला किया। उस समय, फादर सेवस्टियन के यहाँ से हमारे एक रशितेदार आए और उन्होंने कहा कि फादर ने मुझे स्कूल में दाखिला लेने का आशीर्वाद नहीं दिया। लेकिन मैंने अपना टिकट पहले ही खरीद लिया था, इसलिए मैं वैसे भी चला गया और दाखिला नहीं लिया। फरि मेरे पिता मुझे वापस करागंडा ले आए। फादर ने मुझे रुकने का आशीर्वाद दिया और कहा, 'तुम मदर अग्न्या के साथ रहोगे और उनकी मदद करोगे।' मैं चार साल तक मदर अग्न्या के साथ रहा। मदर अग्न्या भी एक असाधारण व्यक्ति थीं। हम उन्हें बहुत मान-सम्मान देते थे, और जो कुछ भी वह कहती, हम बिना सवाल के मान लेते थे। सुबह से रात तक लोग उनसे मिलने आते रहते थे – और हम उन सभी को खिलाते थे; मुझे तो यह भी नहीं पता कि खाना कहाँ से आता था। माँ की आतथिय-सत्कार की भावना असाधारण थी। जैसे ही कुछ लोग जाते, दूसरे आ जाते, और हमें फरि से मेज़ सजाना पड़ता। आगंतुकों को मिलने के बीच में, माताजी आइकन (चित्र) बनाती थीं। कभी-कभी मैं कहती, 'माताजी, आखिर आप काम कब करेंगी? मैं दरवाज़ा बंद कर देती हूँ।' 'मैं कैसे कर सकती हूँ?' माताजी जवाब देती, 'लोग आ रहे हैं; हमें सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उनका स्वागत करना है।' उन्होंने लोगों के प्रति अपने प्रेम को हर चीज़ से ऊपर राख। और किसी छोटे से व्यक्ति के आ जाने पर सब कुछ एक तरफ रख देने में सक्षम थीं। दूसरे कसबों से लोग विशेष रूप से उनके पास, माँ के पास, आते थे क्योंकि वे उनकी गर्माहट, उनकी आतथिय-सत्कार और उनकी दयालुता को महसूस करते थे। और वह हर किसी के साथ केवल कोमलता और प्यार से पेश आती थीं। एक व्यक्ति अपने आप में इतनी गर्मजोशी और दया नहीं रख सकता। यह ऊपर से मिला था; उनकी दया आध्यात्मिक थी। जब मदर की मृत्यु हुई, तो लोग रो पड़े: 'हमारी पालक का नधिन हो गया है। अब हम किसके पास जाएँ, कौन हमें किसी भी समय स्वागत करेगा?' जहाँ तक मेरी बात है, मदर ने मुझे बगिड़ दिया था। उन्होंने मुझसे कुछ भी नहीं माँगा, उन्होंने बस मुझे स्वादष्टि भोजन खिलाया। जब मैं काम से घर आता, तो माँ पूछती, 'क्या तुम्हें भूख लगी है?' – 'नहीं माँ, हमने अभी-अभी खाना खाया है।' – 'नहीं, तुम्हें भूख लगी है; मैं तुम्हारे लिए कुछ बनाती हूँ।' और वह, बीमार होते हुए भी, बसितर के पास की मेज़ का सहारा लेकर, चूल्हे पर जाती और मेरे लिए कुछ असाधारण रूप से स्वादष्टि पैनकेक बनातीं।

मैं मम्मी के बारे में कुछ खास नहीं कह सकती। मुझे लगता है कि उस समय हर दिन खास होता था। यह सब काफी साधारण लगता था, लेकिन यह एक दैनिक उपलब्धि थी। सुबह से रात तक, हमारे दरवाज़े हमेशा खुले रहते थे। कभी-कभी हमारे लड़के – पेट्या और अल्याशा – आते थे, और वह उनका सम्मानपूर्वक स्वागत करती थीं। हम देखते और सोचते: 'वे शायद पादरी बन जाएँगे, क्योंकि माँ उन्हें ऐसे नमस्कार करती हैं।' मुझे याद है कि फादर अलेक्जेंडर जब कशोर ही थे, तब आया करते थे, और वह उनके साथ बहुत सम्मान से पेश आती थीं – बस इतना ही कि वह उनसे

आशीर्वाद लेने के लिए आगे नहीं बढ़ती थीं। आखिरकार, उन्होंने पादरी बनने के बारे में दूसरी बार सोचा भी नहीं था, लेकिन सब कुछ वैसा ही हो गया जैसा होना था।

मदर अनास्तासिया – वह बहुत स्पष्टवादी थीं; वह बेबाकी से अपनी बात आपके सामने कह देती थीं। उनकी आँखों में ऐसी नज़र होती थी कि ऐसा लगता था जैसे वह आपको भीतर तक देख सकती हों। मैं उससे थोड़ा डरता था, हालांकि वह बहुत दयालु भी थीं। उन्हें अपने घर में बनाए हुए क्वास से सभी को खिलाना बहुत पसंद था। आप चर्च पहुँचते, और मदर अनास्तासिया रास्ते पर ही खड़ी होतीं: 'कुछ क्वास लोगे?' – 'हाँ, माँ, मैं लूँगा।'

हम भी मदर अनास्तासिया का बहुत सम्मान करते थे। लेकिन कभी-कभी वह ऐसी बातें कहती थीं कि हमें उन पर यकीन करना मुश्किल हो जाता था। वह कहा करती थीं कि फादर का गौरव होगा, कि उन्हें यहाँ से ले जाया जाएगा। उन्होंने कहा कि ज़िम्माना बदलेगा, कि सोवियत संघ टूट जाएगा – लेकिन मुझे यह सब साइंस फ़िक्शन जैसा लगता था, क्योंकि उस समय सब कुछ पत्थर पर लकीर की तरह लिखा हुआ लगता था। उन्होंने यह भी कहा कि जब फादर को यहाँ से ले जाया जाएगा, तो उन्हें भी भूलना नहीं। मैंने यह खुद सुना, लेकिन उस समय मुझे विश्वास नहीं हुआ कि ऐसा कुछ हो सकता है।

मुझे तो पतिजाजी की हमारे परिवार के बारे में भविष्यवाणियों पर भी यकीन नहीं था। जब उन्होंने कहा कि हमारा परिवार तसेलनिग्राड से करागंडा जाएगा, तो मैंने वरिध कथि: 'नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा; हमारे सभी रश्तेदार वहीं हैं, मेरी बड़ी बहन और उसके पति वहीं हैं, और पापा मेरी बहन को कभी अकेले नहीं छोड़ेंगे।' लेकिन पतिजाजी बस मुस्कुरा दिए: 'तुम वहाँ जाकर एक घर खरीदोगे, एक बगीचा लगाओगे, और तुम्हारे पास सब कुछ होगा।' यह '59 की बात है, और '60 तक हमारा परिवार पहले से ही करागंडा में था, और हमने अपने सूटकेस पैक करके नए साल की पूर्व संध्या मनाई।

पापा ने मेरी माँ से भविष्यवाणी की थी कि उनकी मौत यात्रा के दौरान होगी। और जब भी माँ हमारे किसी रश्तेदार से मिलने निकलती थीं, तो हम उन्हें कुछ बेचैनी के साथ जाने देते थे। उनकी मौत वास्तव में यात्रा के दौरान ही हुई, लेकिन उस तरह से नहीं जैसा हमने सोचा था। 1976 में यहाँ करागंडा में माँ-पापा की एक साथ मौत हो गई, जब वे एक पुल से गुज़र रहे थे।

मेरे माता-पिता बहुत अच्छे थे। वे बहुत धार्मिक और दयालु थे। लेकिन हमारे आध्यात्मिक गुरु उससे भी ज्यादा स्नेहल थे। पुजारी महज़ एक शब्द कहता और आप उसके पास से पंखों की तरह उड़ते हुए निकल जाते। एक सांसारिक व्यक्ति उतना प्यार नहीं कर सकता और उतना नहीं दे सकता जितना हमारे आध्यात्मिक गुरुओं ने प्यार किया और हमारे दिलों को गर्माहट दी।

खमरिव परिवार

भक्तिषु सेबस्टियन (अलेक्जेंडर अलेक्सेयेवचि खमरिव)

1931 में, हमें तम्बोव क्षेत्र से बेदखल करके करागंडा में नरिवासति कर दिया गया। उन्होंने हमारी माँ, हम तीन भाइयों, और हमारे गाँव के 11 अन्य परिवारों को नरिवासति किया; वे हमारे साथ एक ही डब्बे में सफर करके आए। पहले, वे हमें पेट्रोपावलोवस्क ले गए, ठीक सेंट पीटर और पॉल के दिन के समय। और, जैसा कि मुझे आज भी याद है, उन्होंने पेट्रोपावलोवस्क में हमें बचिछू घास का सूप पिलाया। पेट्रोपावलोवस्क से, हमें कोम्पानेयस्क पहुँचने में लगभग दो सप्ताह लगे।

वहाँ एक बंजर मैदान था, एक झुलसा हुआ मैदान। हमें रात में उतारा गया; बारिश हो रही थी। हमने डब्बों से तख्तियाँ – जिन पर हम लेटे हुए थे – बाहर निकालीं, उन्हें चार टुकड़ों में तोड़ा, और तरिड़े बनाए। फिर हमने कुछ करागन की झाड़ियाँ काटीं, उन तरिड़ों को उनसे ढक दिया, और एक आश्रय बनाया। हम इन्हीं आश्रयों में रहते थे। सभी को मटिटी की ईंटें बनाने के लिए काम करने के लिए मजबूर किया जाता था। मैं तो बस एक बच्चा था, लेकिन मैंने भी काम किया, मटिटी की ईंटों को पलटता था ताकि वे धूप में सूख सकें। फिर मटिटी की ईंटों को नरिमाण स्थल पर ले जाया जाता था और झोपड़ियाँ बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। वे घास भी काटते थे और उसका इस्तेमाल भी घर बनाने के लिए करते थे। हम मुश्किल से दीवारें खड़ी कर पाए थे कि ही सरदियाँ आ गईं, और घरों में कोई छत नहीं थी। दसिंबर में, गंदगी और खराब आहार के कारण टाइफ़स फैल गया – सूप बेस्वाद था और हमें केवल 400 ग्राम रोटी दी जाती थी। लोग मर रहे थे। और फिर, प्रभु की प्रस्तुत के परव पर, मेरे दो भाई मर गए। वे पुराने शहर में ' ' में अस्पताल में थे, जसि तब पहली करागंडा कहा जाता था। उन्होंने मेरी माँ से कहा, और वह उन्हें खोजने अस्पताल गईं। वहाँ उन्होंने उनसे पूछा: 'आप क्या चाहती हैं?' 'खैर,' उन्होंने कहा, 'हमें बताया गया है कि हमारे परियजन यहाँ नहीं रहे, इसलिए हम उन्हें खोज रहे हैं।' 'और आपको कब बताया गया?' – 'कल।' – 'ओह!' उन्होंने कहा, 'उनकी तलाश मत

करो; वे लोग अब यहाँ नहीं हैं, उन्हें ले जाया गया है। आज पाँच गाड़ियाँ उन्हें ले गईं और एक सामूहिक कब्र में फेंक दिया। आपके भाई अब वहीं हैं। और ये ताजा शव यहाँ पड़े हैं।' लेकनि माँ ने अपने एक भाई को पहचान लिया। वे उसे ले गए, उसे एक स्लेज पर लटियाया, और उसे कोम्पानेयस्क ले आए। वहाँ पहले से ही एक कब्रस्तान था, और उन्होंने वहाँ एक गड्ढा खोदा, जो एक कब्र जैसा था, मेरे भाई को एक कंबल में लपेटा, और उसे दफना दिया। और इस तरह – वे लोगों को गाड़ियों में भरकर कोम्पानेयस्क ले जाते थे। यह एक बड़ी तरासदी है, यह भयानक है; आप इसे शब्दों में बयां नहीं कर सकते। वहाँ, छत के बनिा घर थे, बर्फ ढेरों में जमा हो रही थी। जो लोग अभी भी जीवति थे, वे बर्फ के नीचे से रेंगकर बाहर निकल आते थे। जो जीवति नहीं थे - वे बर्फ के नीचे पड़े रहते थे; उन्हें बाहर निकालकर एक गाड़ी पर रख दिया जाता था। और उन्हें ले जाया जाता था, गाड़ी को उतने ही दुबले-पतले लोग खींचते थे - उन्हें जबरदस्ती मृतकों को इकट्ठा करने और ले जाने के लिए कहा जाता था। और ऐसा होता था – वे इस गाड़ी को खींच रहे होते, और अचानक उसे खींचने वाले एक आदमी का शरीर ढीला पड़ जाता और वह मर जाता। वे उसे उठाते, गाड़ी पर रख देते, और उसे और आगे खींचते हुए आगे बढ़ जाते। उस समय जीवन बहुत कठिन था; उन वर्षों में हर किसी ने दुख झेला।

फरि मैं बड़ा हुआ; 1936 तक मैं पहले ही सोलह साल का हो चुका था। वहाँ सेवा की कोई नशिचति अवधनिहीं थी, और लोग जहाँ तक हो सके वहाँ से चले जाते थे। और मैं रूस चला गया। और युद्ध के बाद, जब मेरी शादी हुई, तो मेरी पत्नी, मेरी छोटी बेटी ल्यूबोव और मैं खुद 1951 में वहाँ बसने के लिए करागंडा आए। हमने सुना था कफिादर सेबेस्टियन यहाँ हैं, और हम उनसे करीब हो गए। हमारा परिवार बढ़ रहा था, बच्चे बड़े हो रहे थे, और इतनी सारी दुखद घड़ियाँ थीं - जनिहें शब्दों में बयां करना असंभव है। आप फादर के पास जाते, उनसे बातें करते, और वे आपको सलाह देते और आपका दुख कम करते। और जब मेरी माँ बीमार पड़ गई, जबकि हमारी सबसे छोटी बेटी केवल एक साल की थी, तो वे हमारे घर आए। मैं रोई, और वे मेरे साथ रोए। उन्होंने कहा: 'मैं जानता हूँ कि अिनार्थों के लिए जीवन कतिना कठिन होता है।'

नन एवनकियिा (अलेक्जेंडरा फ़लोरोव्ना ख़मरिीवा)

1964 की सर्दियों में, मैं गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। मेरे जगिर के लंबे और असफल इलाज के बाद, मेरे पति नलकिाओं में सूजन हो गई, और पति मेरे रक्तप्रवाह में चला गया। डॉक्टरों ने नषिकर्ष नकिला कअिगर मेरा ऑपरेशन नहीं हुआ, तो मैं तीन दिन से अधिक नहीं जियूँगी, लेकनि ऑपरेशन के बाद भी, वे यह गारंटी नहीं दे सके कि मैं बच जाऊँगी। मेरे पति फादर से मलिने गए, और उन्होंने तुरंत ऑपरेशन के लिए अपनी सहमति दे दी, और मेरे लिए दो स्कार्फ दिए – एक रूमाल और एक सरि का स्कार्फ।

मुझे पता था कि मेरी हालत लाइलाज है। मेरे लिए ऑपरेशन कराना मुश्किल था, क्योंकि मैं घर पर आठ छोटे बच्चों को छोड़ रही थी, यह जानते हुए कि मैं कभी उनके पास वापस नहीं आऊँगी। और उससे कुछ समय पहले, मैंने एक सपना देखा था जिसमें मैं घर से निकलकर एक छोटे बच्चे को अपनी बाहों में लेकर पूर्व की ओर जा रही थी (मेरी पाँच महीने की बेटी की मृत्यु हो गई थी)। मैंने फादर को यह सपना बताया और कहा, 'फादर, मैं मरने वाली हूँ।' फादर ने जवाब दिया, 'क्यों?' – और उनकी आँखों में आँसू भर आए, और उन्होंने उदास होकर कहा, 'यह बीमारी का संकेत है।'

ऑपरेशन कई घंटे चला। इस दौरान, चर्च में धर्मवधिचिल रही थी। फादर उपदेश-मंच पर आए और आँखों में आँसू लिए, वनिती करने लगे: 'भाइयो और बहनो! आइए प्रार्थना करें! कई बच्चों की एक माँ का अभी ऑपरेशन चल रहा है...' – लेकनि वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर सके; वह फूट-फूट कर रो पड़े और वेदी में चले गए। उनके बाद, फादर अलेक्जेंडर क्रविनोसोव भी उसी अनुरोध के साथ मंडली के पास आए, लेकनि वे भी अपना वाक्य पूरा नहीं कर सके और फूट-फूट कर रो पड़े। इसके बाद, पादरी फरि से बाहर आए, उन्होंने एक अकैथसिट के साथ प्रार्थना सभा का संचालन किया, और पूरी मंडली (और जब पादरी वहाँ होते थे तो चर्च हमेशा भरा रहता था) उनके साथ घुटनों पर बैठकर प्रार्थना करने लगी। ऑपरेशन सफल रहा।

जब मुझे अस्पताल से छुट्टी मिली, तो मेरी बड़ी बेटी चर्च चली गई। मदर अनास्तासिया ने पूछा, 'आपकी माँ कैसी है?' मेरी बेटी ने जवाब दिया, 'उन्हें तो अस्पताल से घर ले आया गया है।' 'देखो!' मदर अनास्तासिया ने प्रतमिा की ओर देखते हुए कहा, 'हमने उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना की है।' ऐसे थे उस संत के प्रेम और प्रार्थना की महानता।

1962 में लेंट के दौरान, मुझे भयंकर सरिदरद हो रहा था। उस समय, पादरी मेरी बीमार सास को पवतिर कम्युनियन देने के लिए हमारे घर आए। मैंने तुरंत पादरी से गर्मियों में सेंट पीटर्सबर्ग की धन्य जेनयिा की कब्र पर जाने का आशीर्वाद माँगा, और उन्होंने उत्तर दिया: "और मैं तुम्हें hereby आशीर्वाद देता हूँ कि तुम बनिा देरी के वरखोटुरी के धरमी समिोन के पास जाओ।" लेकनि मेरी गोद में छह महीने का बच्चा था। मैं उसे कैसे छोड़ सकती थी? फरि भी, उस साधु की प्रार्थनाएँ इतनी शक्तिशाली थीं कि उसी रात बच्चे ने दूध पीने से इनकार कर दिया – उसने

अपने आप मुंह फेर लिया। और जब मैं और मेरे पतियह पूछने के लिए फादर के पास गए कहिमें कसि दनि के लिए टिकिट बुक करना चाहिए, तो उन्होंने जवाब दिया: "ईस्टर के तीसरे दनि, 2 मई को।" हम सीधे टिकिट खरीदने गए, लेकिन उस दनि के लिए टिकिट कार्यालय में कोई टिकिट नहीं बची थी। हम फादर के पास वापस गए: "फादर, कोई टिकिट नहीं है।" और उन्होंने कहा: "जाओ और सरिफ दो टिकिटों के लिए पूछो।" हम वापस टिकिट कार्यालय गए और दो टिकिटों के लिए कहा। टिकिट क्लर्क ने कहा: "यहाँ, वरखोतुरी के लिए दो टिकिट वापस आए हैं," और हमें दे दिए।

हमारे जाने से पहले, फादर ने हमें आशीर्वाद दिया और हम दोनों के माथे पर चूम लिया। और रास्ते में ही मुझे अपनी बीमारी से राहत महसूस होने लगी। और जब मैंने धर्मी समिोन के अवशेषों को छुआ, तो मैं पूरी तरह से ठीक हो गया।

जब हम वरखोतुर्ये गए, तो फादर ने हमारे साथ वरखोतुर्ये के फादर लयिोनदि के लिए एक पत्र भेजा। और यह इस प्रकार हुआ। फादर अनास्तासिया और इरनि नामक ननों के साथ हमारे घर आए। हम सब एक ही मेज पर बैठे थे, लेकिन मेरे पति और मैं यह नहीं समझ पा रहे थे कविरिष्ठ ननों के साथ क्या चर्चा कर रहे थे; ऐसा था मानो ईश्वर ने इसे हमसे छपा दिया हो, भले ही वे रूसी में बात कर रहे थे। फिर, जब मदर इरनि ने पूछा, 'फादर, क्या मैं सब कुछ लिख लूँ?' तो उन्होंने जवाब दिया, 'सब कुछ, सब कुछ लिख लो।' उन शब्दों के बाद से, सब कुछ हमारे लिए स्पष्ट हो गया। फादर ने मदर इरनि को बताने का आशीर्वाद दिया, जबकि मैं फादर लयिोनदि को एक पत्र लिख रही थी। इस पत्र से, मुझे एहसास हुआ कि फादर लयिोनदि भ्रम की स्थिति में थे। वरखोतुरी पहुंचने पर, हमने पत्र फादर लयिोनदि को सौंप दिया। फादर सेबेस्टियन उनसे कभी नहीं मिले थे, लेकिन पत्र में उन्होंने उन्हें लिखा: "मैं तुम्हें तब से जानता हूँ जब से उनकी कृपा जॉन ने तुम्हें पादरी बनाया था," – और यह भी बताया कि यह कब और कहाँ हुआ था। पत्र पढ़ने के बाद, फादर लयिोनदि ने कहा: "सचमुच, वह एक महान व्यक्ति हैं! उन्होंने मुझे मेरे बारे में पूरा सच बताया, जबकि उन्होंने मुझे कभी देखा भी नहीं था।"

यह फादर लयिोनदि एक अच्छे पादरी थे; उन्होंने उन्नीस साल जेल में बित्ताए थे, लेकिन अब वे अपने पतन के कगार पर थे, और हमारे फादर, उनसे बहुत दूर होते हुए भी, आत्मा में उनके पतन की पूर्वानुमान लगाकर, उनकी मदद के लिए हाथ बढ़ाया।

फादर की मृत्यु के सत्रह साल बाद, 1983 में, मेरे सरिदरद वापस आ गए, ठीक वैसे ही असहनीय जैसे वे 1962 में थे। एक दोपहर मैंने फादर से कहा: 'फादर, मेरी मदद करें!' - और मैं सो गया। मैंने अपने सपने में पतिजी को देखा। वह मुझसे कुछ कह रहे थे—मुझे याद नहीं कि क्या—और उन्होंने अपने हाथ से मेरे सरि को छुआ। मैं जाग गई और महसूस किया कि दिरद बंद हो गया था।

मेरा बेटा मशिा (अब हेगुमेन अरसिदार्ख) तीन साल की उम्र में बहुत बीमार था और बसितर पर लेटे-लेटे वनिती कर रहा था: "हे परमेश्वर की माता, पतिजी को आने के लिए कहो; मैं बहुत बीमार हूँ!"

उस समय, फादर ससिटर इराइडा के साथ कहीं जा रहे थे जब उन्होंने अचानक कहा: 'हम उस बीमार बच्चे से मिलने चलेंगे; वह मेरा इंतजार कर रहा है।' फादर हमारे घर आए और पूछा: 'यहाँ बीमार बच्चा कहाँ है?' वह उस कमरे में गए जहाँ मशिा लेटा था, उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया, उसे एक बड़ा लाल सेब दिया, और चले गए। और बच्चा तुरंत उठ खड़ा हुआ, मानो वह कभी बीमार ही न हुआ हो। इस तरह फादर अपने आध्यात्मिक बच्चों की प्रार्थनाएँ सुनते और उन्हें स्वीकार करते थे। और जब मेरा बेटा अलेक्सी नौ महीने का था, तो वह डाइस्पेप्सिया से गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। दवाइयाँ उसे ठीक नहीं कर पा रही थीं। डॉक्टरों ने कहा कि बच्चा मर जाएगा। और वे उसे अस्पताल में भरती करने पर अड़े रहे। हम फादर के पास गए और पूछा, "क्या हमें अलेक्सी को अस्पताल में भरती कराना चाहिए या नहीं?" – "उसे लगातार तीन दनों तक पवतिर Communion (होली कम्युनियन) दें।" हमने ठीक वैसे ही किया। जब उसे तीसरी बार पवतिर Communion मिला, तो बच्चा तुरंत सो गया, और जागने के बाद, वह पूरी तरह से ठीक हो गया। अलेक्सी अब मॉस्को क्षेत्तर में एक डीकन के रूप में सेवा कर रहे हैं।

भक्तिषु सेबेस्टियन (खम्यरिनि)

मैं शाम को चर्च पहुँची, और अचानक, प्रार्थना सभा के दौरान, मुझे तेज बुखार चढ़ गया, और मेरी नाक में बहुत तेज दर्द होने लगा। मैंने अभिषिक्त तक रुकने और फिर जाने का फैसला किया - मैं बहुत अस्वस्थ महसूस कर रही थी। जब मैं अभिषिक्त के लिए आगे बढ़ी, तो पादरी ने मेरा अभिषिक्त किया और, जैसे कि गिलती से, मेरी नाक को छू लिया - और उसमें बहुत दर्द हुआ! मैं बाहर निकलने की ओर जा रही थी जब मुझे बेहतर महसूस होने लगा। मैं रुक गई। दर्द कम होने लगा, और मुझे एहसास हुआ कि फादर ने मेरी बीमारी का पूर्वानुमान लगा लिया था और मुझे ठीक कर दिया था।

एक बार, फादर ने मेरी सबसे बड़ी बेटी, सोलह वर्षीय ल्यूबा को, अपनी कोठरी में बुलाया। वह उससे बात कर रहे थे और बातचीत के दौरान, अचानक उनका रूप बदल गया: वह जवान, बनिा दाढ़ी वाले और एक देवदूत की तरह चमकदार हो गए; यहाँ तक कि कोठरी भी एक असाधारण प्रकाश से नहा उठी। इस प्रकार प्रभु ने उस वृद्ध की आध्यात्मिक महानता और पवित्रता को उनके जीवित रहते ही प्रकट किया।

एक घटना हुई। मेरे धर्म-पति एक लॉरी चला रहे थे और उन्होंने एक उथले नदी को पार करना था। कगार खड़ी थी, और लॉरी अचानक ढलान पर फिसलने लगी। ठीक उसी क्षण उन्होंने पुकारा: "फादर, मेरी मदद करें!" – और तुरंत सुरक्षा रूप से सड़क पर वापस आ गए। यह आश्चर्यजनक है कि फादर उन सभी को कैसे सुन सकते थे जो उनसे मदद मांगते थे, और कैसे उन्होंने उनसे दूर होते हुए भी उनकी मदद की।

ओल्गा सरगेव्ना मार्टिनोवा

हमारा परिवार अस्त्रखान क्षेत्र में रहता था। पति, माता और सात बच्चे। हमारे पास एक पवनचक्की, तीन गायें, बैल और घोड़े थे – मेरे पति एक अच्छे किसान थे। परिवार धर्मपरायण और ईश्वर-भयभीत था। 1930 में, मेरे पति को सामूहिक खेत में शामिल होने के लिए मजबूर किया गया, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। और इसलिए, मुझे याद है, तीन महिलाएँ और दो पुरुष हमारे घर में आए और कहा: "नमस्ते सरगेई पेट्रोवचि! तुम्हें बेदखल किया जाएगा!" "ठीक है, अगर ऐसा ही है," मेरे पति ने कहा, "तो कर लो।" और उन्होंने पूरी रात सूची बनाने में बताई, जिसमें हर एक चिड़िया और हर एक भगोने को दर्ज किया गया। मेरे दो बड़े भाइयों को गरिफ्तार कर लिया गया; उन्होंने अपनी सजा हमसे अलग काटी। मेरे पति, वकिलांग होने के कारण, गरिफ्तार नहीं किए गए। हमारे घर एक ठेला लाया गया, और मेरी माँ, पति, पाँच बच्चे, और हमारी शशि भतीजी क्लावोच्का को ठेले पर बठाकर अस्त्रखान के आगे एक सुनसान जगह पर ले जाया गया। हमारे साथ सत्तर अन्य परिवार भी वहाँ लाए गए थे। हमने तख्तों से एक झोपड़ी बनाई और डेढ़ साल तक उसमें रहे। 1 अगस्त 1931 को, हम सभी जो सटप पर रह रहे थे, हमें माल गाड़ियों में लादा गया और मवेशियों की तरह ले जाया गया। हमारे पास न तो पानी था और न ही रोटी, और हर कोई – पुरुष, महिलाएँ, बुजुर्ग और बच्चे – इन डिब्बों में एक-दूसरे पर चढ़कर यात्रा कर रहा था, और शौचालय भी वहीं था। डिब्बे ऐसे एक तरफ से दूसरी तरफ झूल रहे थे मानो वे नशे में हों, और हम यात्रा कर ही रहे थे कलिंगों की मौत होने लगी।

अठारह दिनों बाद, हमें करागंडा के बाहरी इलाके में ले जाया गया, उस जगह जहाँ अब माइकुडुक गाँव बसा है, और हमें सभी को जमीन पर उतार दिया गया। हम थके-हारे, मुश्किल से ज़िंदा थे, जबकि छोटी क्लावोच्का ने अपना मुँह खोला और अपनी छोटी उंगली से इशारा किया – उसे पीना था, उसे कुछ खाना था। मैदान में कज़ाख़ यर्ट्स खड़े थे। पापा वहाँ गए: 'हमें कुछ पानी दो,' उन्होंने कहा। 'अपने जूते दो,' उन्होंने कहा, 'तब तुम्हें मल्लिगा।' पापा कज़ाख़ भाषा जानते थे (अस्त्रखान में कज़ाख़ रहते थे); उन्होंने उनसे वनिती की, और उन्होंने उन्हें एक बाल्टी पानी दिया। हम एक परिवार थे, और दूसरे परिवार भी इस पानी को मांग रहे थे, इसलिए हमें इसे जैसे भी हो, बांटना पड़ा। देर शाम, हमें फरि से गाड़ियों पर चढ़ाया गया और प्रशासक ले जाया गया। वहाँ एक खेत था और लंबे कारागना के झाड़ थे। पहरेदारों के लिए तंबू लगाए गए, लेकिन हमारे लिए - कुछ नहीं; मानो हम मर ही गए हों। कोई सुपरवाइजर घूम रहा था, जो अपने कदमों से हर परिवार के लिए एक भूखंड नाप रहा था: 'इस तरफ चार मीटर और उस तरफ चार मीटर। आपका पता 12 रकिंस्ट्रक्शन स्ट्रीट है; आप घर पर लिख सकते हैं।' हमारे पास करगान की झाड़ी को काटने के लिए कुछ भी नहीं था। हम अपने 4 x 4 के भूखंड पर उसमें चढ़ गए और एक छोटा सा गड्ढा खोदना शुरू कर दिया। हमने उसे खोदा, कहीं से कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी कीं, उन्हें छेद के ऊपर एक छोटी झोपड़ी की तरह लगा दिया, उसे करगनक से ढक दिया, और तले में घास बछ्छा दी - वही हमारा आश्रय था। और हम सब वहाँ थे, हम नौ लोग, एक-दूसरे के ऊपर लेटे हुए। एक हफ्ते बाद, हमारी छोटी क्लावोच्का मर गई, और फरि बड़ों की भी मौत होने लगी।

सर्दियों तक, लोगों ने कारागना की झाड़ियों की जड़ों से पट्टियाँ काटकर भूमिगत घर बनाना शुरू कर दिया था। और वे इन्हीं पट्टियों से ये भूमिगत घर बनाते थे - न खड़कियाँ, न दरवाज़े। तो, उदाहरण के लिए, आपका कंबल दरवाज़े पर होता था, और मेरा कंबल खड़की पर। लेकिन एक व्यक्ति के पास खुद को ढकने के लिए कुछ भी नहीं था। और हमारे परिवार के पास खड़कियाँ और दरवाज़ों को ढकने के लिए कुछ भी नहीं था। खाने के लिए भी कुछ नहीं था, बस थोड़ा-सा अनाज था जैसा हम अपने साथ लाने में कामयाब रहे थे। लेकिन हमें खाना तो था ही। तो पापा ने मट्टी का एक चूल्हा बनाया। वह उस पर एक बर्तन रखकर जड़ी-बूटियों से कुछ न कुछ पकाते थे। और हम चूल्हे के पास बैठ जाते थे। उसमें से धुआँ निकलता, खड़कियों से बरफ़ीली हवा आती, और हम बस वहीं बैठे रहते थे।

18 मार्च 1932 को, हमारे पतिजी टाइफस से बीमार पड़ गए। हम उन्हें अस्पताल नहीं ले जा सके - पुलिस ने हमें जाने नहीं दिया। लेकिन मैं एक लड़की थी, इसलिए पुलिस ने मुझे नहीं मारा (उस समय वे सभी को मारते थे, लेकिन

उन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया), और माँ ने कहा: 'पतिजी को अस्पताल ले जाओ।' मैं गई, एक ठेला ढूँढ़कर उसे वहाँ ले गई। लेकिन अस्पताल में न तो खड़कियाँ थीं और न ही दरवाजे, और इमारत के अंदर फर्श पर बर्फ और बरफ जमी हुई थी। पापा को तेज बुखार था, इसलिए उन्होंने उन्हें बरफ पर लट्टी दिया। जब मैं सुबह आई, तो पापा पहले ही चले गए थे - वे बरफ पर जमकर ठंड से जकड़ गए थे।

वसंत में, उन्होंने सभी को मटिटी के ईंट बनाने के लिए काम पर भेजना शुरू कर दिया। उन्होंने बच्चों को ईंटों की रखवाली के लिए भेजा ताकि कड़ाख पशु उन्हें कुचल न दें। बच्चे, भले ही छोटे थे, छह सौ ग्राम रोट्टी का अपना राशन लेने बाहर जाते थे। वयस्कों को आठ सौ मिलते थे। और अगर आप स्टेप के पार, कबरस्तान की ओर देखें - तो मृतकों का एक घना काला काफिला। खैर, वे उन्हें सच में उठाकर नहीं ले जा रहे थे; वे एक तख्ती ढूँढ़ते, उसमें एक रस्सी बांधते, मृतक को तख्ती पर लट्टिते और रस्सी से खींचकर जमीन पर घसीटते। वे और कैसे कर सकते थे? उनमें अब कोई ताकत नहीं बची थी। यह प्रशासित था, तकिनोव्का, कोम्पानेइस्क - वहाँ सामूहिक कब्रें बीस मीटर लंबी और ढाई मीटर चौड़ी थीं, ताकि पैरों को एक-दूसरे के बगल में रखा जा सके। कोई ताबूत नहीं थे। वे उन्हें किसी पुराने कपड़े या तौलिये से ढक देते थे। वे उन्हें पंक्ति दर पंक्ति बिछाते जाते... एक बार कब्र भर जाने पर, वे उन्हें बस ऐसे ही दफना देते थे।

हमारे परिवार में मेरी बहन, मेरी माँ और वे दो भाई ही जीवित बचे थे जिन्हें अस्तरखान की जेल में डाल दिया गया था।

मैं 1946 में फादर सेवासयिन से मिली। तब तक मेरी शादी हो चुकी थी, और फरवरी 1946 में मेरे ससुर की मृत्यु हो गई। एक बुजुर्ग महिला फादर सेवासयिन को उनका अंतिम संस्कार करने के लिए ले आई। उस समय, मैंने यह पूछने की हिम्मत तक नहीं की कि फादर सेवासयिन का नाम क्या था, लेकिन वह खुद मेरे पास आए और मेरा नाम पूछा। उन्होंने मुझसे कुछ लेंच की पक्की बनाने के लिए कहा, क्योंकि यह उपवास का दिन था, जबकि अंतिम संस्कार की दावत में हर तरह के मांस के व्यंजन तैयार किए गए थे। जैसे ही मेरे ससुर की अंतिम संस्कार की रस्म पूरी हुई, उन्होंने ताबूत को एक स्लेज पर रखा, और एक छोटा घोड़ा उसे कबरस्तान तक ले गया। कबरस्तान बहुत दूर था, और कड़ाके की ठंड थी, साथ ही तेज हवा भी चल रही थी। हम सभी सरि से पाँच तक ढके हुए थे, लेकिन पादरी लगभग नंगे बदन, एक फटे-पुराने चोगा पहनकर बाहर निकले; उन्होंने अपने सरि पर एक पुराना मफलर बाँध रखा था और अपने नंगे हाथ में एक लोहे का क्रॉस पकड़ रखा था। इस तरह हम कड़ाके की ठंड में बारह किलोमीटर तक चले।

अंत्येष्टि के बाद, मैंने पादरी से उसका नाम कभी नहीं पूछा, लेकिन वापसी के रास्ते में उसने मुझे एक स्लेज पर बठा दिया। मैंने उससे पूछा: 'फादर, इतनी कड़ी ठंड में आप अपने नंगे हाथ से वह लोहे का क्रॉस कैसे पकड़ सकते हैं?' और उसने जवाब दिया: 'ओह, इसमें कोई बात नहीं! मैं एक बार इस तरह के एक मुकदमे का सामना कर चुका हूँ: जब उन्होंने मुझे ऑर्थोडॉक्स धर्म त्यागने के लिए मजबूर किया, तो उन्होंने मुझे पूरी रात केवल मेरे कसाक में, मेरे ऊपर एक पहरेदार तैनात करके, ठंड में बाहर छोड़ दिया। पहरेदार हर दो घंटे में बदलते थे, जबकि मैं बर्ना हल्ले-डुले उसी जगह पर खड़ा रहा। लेकिन ईश्वर की माता ने मुझ पर एक तरह का 'छोटा आश्रय' फैला दिया, जिससे मैं उसके अंदर गर्म रहा। और सुबह उन्होंने मुझे पूछताछ के लिए ले गए और कहा: 'चूँकि तुमने मसीह का त्याग नहीं किया है, इसलिए जेल जाओ।' और उन्होंने मुझे सात साल के लिए कैद कर दिया।

यह फादर के साथ मेरी पहली मुलाकात थी, जो वास्तव में कोई मुलाकात भी नहीं थी, क्योंकि मैंने इसे कोई खास महत्व नहीं दिया। मैंने फादर को खाने के लिए कुछ पाई दी, और बस यहीं खत्म हो गया।

एक साल बाद, सिसिटर एवडोकिया का नधिन हो गया। मैं अंतिम संस्कार की तैयारियों में मदद करने गई, और फादर आए। वह अंदर आए और बोले: "और यहाँ भी, ओलुश्का पकवान बना रही है! लेकिन इस ओलुश्का की 'अक्ल' अभी भी बलिकूल काम नहीं कर रही है।" उन्होंने मुझे 400 रूबल दिए और कहा: "तुम इस नन की स्मृतिसभा का पूरा खर्च उठाओगी।" यह फादर से मेरी दूसरी मुलाकात थी, लेकिन फरि भी कुछ भी स्पष्ट नहीं हुआ। हम तब उतने ही अनजान रहे जितने बाद में भी रहे।

कुछ और साल बीत गए, और 1950 का साल आ गया। मुझे भयंकर सरिदरद होने लगा; मैं कई दिनों तक पीड़ित रही, और एक रात मैंने अपने सरि को छुआ, अपने बालों को खींचा, और वे एक तरफ से निकल आए - मैं आधी तरह से पूरी तरह गंजी हो गई। कोई दवा कारगर नहीं हुई - एक भी बाल वापस नहीं उगा - और डॉक्टरों ने मेरा इलाज करने से इनकार कर दिया, क्योंकि बाल जड़ों (फॉलकिलस) के साथ ही झड़ गए थे। मेरे दोस्तों ने मुझे सलाह देना शुरू कर दिया: 'मकिखailovka जाकर फादर सेवेस्टयिन से मिलो - वह तुम्हें ठीक कर देंगे।' लेकिन मैंने इस बात पर फरि ध्यान नहीं दिया - इलाज के लिए पादरी के पास जाने का क्या मतलब था? ऐसा कैसे हो सकता था? फरि भी लोग मुझे सलाह देते रहे, और दूसरे भी यही कह रहे थे - 'पादरी के पास जाओ।' तो, आखिरकार, मैंने मन बना लिया और चला गया। जैसे ही

मैंने चर्च का दरवाजा खोला और फादर को देखा (वह उपदेश-मंच पर खड़े थे), मुझे वे थोड़े-बहुत जाने-पहचाने लगे। '46 में उनके बाल अभी भी थोड़े काले थे, लेकिन अब वे पूरी तरह से सफेद हो गए थे। प्रार्थना सभा के बाद, मैं उनके पास गया और उन्होंने कहा: "रात के लिए यहीं रुक जाओ; माता कोर्नलिया के पास जाओ।" मुझे उनके पास ले जाया गया, और फादर आए, और हमने पूरी रात बातें कीं। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से हूँ, मेरा जन्म कहाँ हुआ, हमें कैसे बेदखल किया गया, हमने क्या-क्या झेला, मैं अब किसके साथ रह रही हूँ, मेरे कतिने बच्चे हैं, कि मेरी एक माँ है, और कि मेरी माँ एक वशिवासी थी। "और आप?" – "खैर, मैं इधर-उधर रहा हूँ।"

"फादर," मैंने कहा, "मैंने सपने में देखा कि मुझे अपने लिए बीस प्रार्थना सभाएँ करवानी हैं।" मुझसे पैसे ले लो, एक साथ ही सब कर दो, और मैं तुम्हें फरि कभी परेशान नहीं करूँगा।" "नहीं," उन्होंने जवाब दिया, "हम तुम्हारे लिए बीस प्रार्थना सेवाएँ करेंगे, लेकिन तुम्हें लगातार बीस रविवारों तक चर्च आना होगा। मैं खुद तुम्हें अकथसिट पढ़कर सुनाऊँगा।" और इस तरह वह मुझे सैक्रेस्टी (चर्च का एक कक्ष) में ले जाता, जहाँ हम घुटने टेकते, और वह हर रविवार मुझे अकथसिट पढ़कर सुनाता। इसी तरह मैं फादर, चर्च और गायन मंडली, और वहाँ के रीति-रिवाजों की आदी हो गई। मैंने वशिवास करना शुरू कर दिया, पाप-स्वीकार के लिए जाने लगी, और पवतिर Communion ग्रहण करने लगी। मैंने अपने पत को भी राजी कर लिया; वह मेरे साथ चर्च जाने लगा। और फरि हमारे बच्चे बड़े हो गए। हम उन्हें अपने साथ ले जाते थे, और फादर उन्हें नाम से जानते थे। जल्द ही मुझे बेहतर महसूस होने लगा, और एल्डर की प्रार्थनाओं की बदौलत, मेरे बाल फरि से उगने लगे। मेरी बीमारी के दौरान, हमारा वशिवास पुनर्जीवित हुआ, और हम फादर के और करीब आ गए।

कुछ ही देर बाद, मेरा छह साल का भतीजा बीमार पड़ गया – वह अपनी साइकलि से गरि गया था और लंगडाने लगा था। उसके माता-पिता ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। मैंने खुद उसे डॉक्टर के पास ले जाने का फैसला किया। शल्य चिकित्सक ने उसकी जाँच की और कहा, 'उसका कूल्हा सड़ रहा है।' उन्होंने एक ऑपरेशन किया, लेकिन वह असफल रहा। उन्होंने दूसरी बार उसकी सर्जरी की, हड्डी को साफ़ किया, लेकिन फरि भी वह असफल रहा। फरि मैं चर्च गई, और अचानक पादरी ने खुद मुझसे पूछा, 'ओल्गा, क्या तुम्हारे परिवार में कोई बीमार है?' 'हाँ,' मैंने जवाब दिया, 'मेरा भतीजा।' 'तो उसे मखियाइलोवस्काया अस्पताल में भेज दो; वहाँ तुम्हारा एक सर्जन दोस्त है, है ना?' मैंने इंतज़ाम किया और अपने भतीजे को उस अस्पताल में भेज दिया। जैसे ही डॉक्टरों ने उसे देखा – लडका मुश्कलि से ज़िंदा था – उन्होंने उसे तुरंत वापस सर्जरी में ले जाकर एक आपातकालीन ऑपरेशन किया, जो कि उसका तीसरा ऑपरेशन था। रविवार नज़दीक आ रहा था, और मैं चर्च गई। पादरी ने पूछा: "क्या तुम लडके को लाई हो? तुम यह काम क्यों नहीं कर रही हो? तुम उसे मेरे पास क्यों नहीं लाई? मॉस्को और सेंट पीटर्सबर्ग से भी लोग मुझसे मिलने आते हैं, जबकि तुम इतने पास होते हुए भी उसे मेरे पास नहीं लाई। अभी अस्पताल जाओ और उसे अपनी बाहों में उठाकर मेरे पास ले आओ।"

मैं अस्पताल गया; उसकी माँ वहाँ लडके के साथ थी। हमने मशिा को उठाया और बारी-बारी से उसे अपनी बाहों में लेकर चर्च ले गए। यह वेस्पर्स (सायं प्रार्थना) से ठीक पहले की बात थी। हम उसे चर्च के अंदर ले गए और पादरी के पास ले आए; पादरी ने पुकारा: 'म-इशेंका, म-इशेंका!' लेकिन उसने बस अपनी आँखें घुमाई और वहाँ एक लकड़ी की तरह सख्त लेटा रहा, पूरी तरह से दुबला-पतला, नरिजीव। पादरी ने कहा, "उसे कन्फेशनल में पवतिर त्रिमूर्ति की प्रतमा के पास ले जाओ।" मैं उसे वहाँ ले गया। पादरी ने एक कुरसी लाने का आदेश दिया और कहा, "मशिा को कुरसी पर बठाओ!" मैं दंग रह गया! बच्चे की बाहें और टाँगें लकड़ी की तरह सख्त थीं; अगर वह खड़ा हो जाता, तो वह आधा मर चुका होता! फरि फादर ने उसकी माँ को बुलाया और कहा: "इसे दोनों तरफ से पकड़ो और ऊपर उठाओ। जल्दी करो, जल्दी करो!" हमने उसे ऊपर उठाया; उसके छोटे-छोटे पैर कुरसी को छू रहे थे, जबकि हम उसे दोनों तरफ से पकड़े हुए थे, उसे उसकी पूरी ऊंचाई तक खींच रहे थे। फरि फादर ने कुछ और ननों को बुलाया और उनसे कहा, "भगवान से प्रार्थना करो!" – और खुद प्रार्थना करने लगे। हम मशिा को पकड़े हुए थे, और मैंने देखा कि वह और भी मजबूत और सीधा होता गया, जब तक कि वह अपने दोनों पैरों पर सीधा खड़ा नहीं हो गया! फादर ने कहा: "उसे कुरसी से उतारो, उसे चलाओ; वह अपने पैरों पर चलेगा।" और मशिा अपने पैरों पर चला। सभी हैरान रह गए! फरि फादर ने उस पर पवतिर तेल का अभिषेक किया और उसकी माँ से कहा: "आज रात यहीं उसके साथ रुको; हम कल उसे पवतिर सहभाग देंगे, और वह लंगड़ाएगा भी नहीं।" लेकिन उसकी माँ नहीं रुकी; वह मशिो के साथ अत्यंत प्रसन्न होकर चली गई और घर लौट आई। और पादरी ने उनसे ईश्वर के प्रतीकृतज्ञता के प्रतीक के रूप में एक बोरी आटे लाने के लिए भी कहा था, लेकिन वह केवल एक छोटा सा थैला ही लाई। और हमारा नन्हा मशिो बड़ा होकर बहुत सुंदर लडका बन गया, लेकिन वह एक पैर से लंगड़ाता था – क्योंकि उसकी माँ ने आज्ञा नहीं मानी थी और उसे पवतिर सहभागिता प्राप्त करने के लिए नहीं छोड़ा था।

1954 में, ईस्टर पर, मुझे अपेंडिसि का दौरा पड़ा, और मैंने ऑपरेशन से पहले आशीर्वाद माँगने का सोचा भी नहीं – मैं अपनी मर्जी से चली गई। सेवा के दौरान, पुरोहिता ने देखा कि मैं वहाँ नहीं थी और अपनी जान-पहचान की एक महिला से कहा: "यह तुम्हारे लिए कुछ प्रोस्फोरा है; सीधे अस्पताल जाओ और ऑपरेशन से पहले ओल्गा को ले आओ – उसे यह प्रोस्फोरा खाने दो, नहीं तो उसका ऑपरेशन मुश्किल और दर्दनाक होगा।" वह आ गई, लेकिन वे मुझे पहले ही बुला रहे थे। मैंने प्रोस्फोरा खाया और सर्जरी के लिए चली गई – जो साढ़े चार घंटे तक चली।

कुछ समय बाद, मैं गर्भवती हो गई। डॉक्टरों ने कहा कि मैं बच्चे को जन्म नहीं दे सकती; मुझे गर्भपात करवाना होगा। मैं फादर के पास गई और पूछा, "मुझे क्या करना चाहिए?" और मैंने उनसे वनिती की, "कृपया मुझे गर्भपात करने का आशीर्वाद दें।" लेकिन उन्होंने जवाब दिया, "तुम खुद को नरक में धकेल रही हो और मुझे भी अपने साथ नीचे खींच रही हो! इसमें 'कृपया' की कोई गुंजाइश नहीं है।" और उन्होंने मुझे वेदी से फूलों का एक सुंदर गुलदस्ता दिया: 'मुरझाए हुए फूल फेंक दो, केवल ताजे फूल रखो, और हर दिन अपनी चाय में एक फूल डालकर पीयो, ताकि यह प्रसव पछिले प्रसवों से अधिक कठिन न हो।' उन्होंने मुझे 'घोषणा' का एक आइकन दिया और कहा: 'तुम एक बेटे को जन्म दोगी—सुंदर, बुद्धिमान, और सभी का प्रिय। उसका जीवन बर्बाद मत करना। वह तुम्हारी वृद्धावस्था में तुम्हारी मदद करेगा। और उसका नाम सेराफिम रखना, क्योंकि आजकल कोई भी सेंट सेराफिम का सम्मान नहीं करता, और किसी का भी यह नाम नहीं होता।' और वास्तव में, घोषणा के परव पर, मैंने बनिा किसी जटलिता के एक बेटे को जन्म दिया, और अब वह एक डॉक्टर है।

1957 में, मैं गर्भवती हो गई, इसलिए मैं पादरी के पास पाप-स्वीकार करने और पवित्र Communion ग्रहण करने गई। पादरी ने कहा, 'मैं तुम्हें एक छोटा सा उपहार दूँगा।' उस समय, उन्हें बहुत सारे सेब दिए गए थे। उन्होंने चुनने में बहुत समय लगाया, और अंत में मुझे एक सेब दिया—एक तरफ लाल और दूसरी तरफ हरा—और कहा: 'इसे तुम अकेले ही खा लेना; किसी को मत देना। तुम्हें एक बेटी होगी, और तुम लंबे समय तक मुझसे मिलने नहीं आओगी; तुम्हें जन्म के बाद जटलिताएँ होंगी।' मैंने एक बेटी को जन्म दिया, माशा; वह पंद्रह साल तक स्वस्थ रही, लेकिन अगले पंद्रह साल बीमार रही और तीस साल की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई। और सेब आधा लाल, आधा हरा था।

एक दिन मैं प्रार्थना सभा में गया, और पुरोहिता ने कहा: "मैं तुम्हें वेदी से आशीर्वाद दूँगा, और तभी तुम घर जाओगे।" अचानक, प्रार्थना सभा के दौरान, पुरोहिता पास आए और कहा: "ठीक है, घर जाओ, लेकिन जैसे ही तुम दरवाजे में कदम रखो, तुरंत कहना: 'मुझे एक गाय खरीदनी है।' और मैंने जवाब दिया, 'फादर, लेकिन दिन तो खतम हो चुका है; मैं अब गाय ज़रूर नहीं खरीदूँगा।' – 'तुम खरीदोगे! जैसे ही तुम अंदर कदम रखो, बस कहना, "मुझे गाय खरीदनी है।" और एक खरीद लेना। एक लाल होगी, एक धब्बेदार और एक सफेद।' लाल वाली ले लो – वही तुम्हारी गाय है। और दो दिन में, मुझे कुछ ताजा मलाई ला देना।"

मैं चल पड़ा, यह सोचते हुए: 'यह किस तरह का दृष्टांत है?' जब मैं घर पहुँचा तो पाया कि मेरा भाई और उसकी पत्नी हमसे मिलने आए थे। मैंने कहा: 'नमस्ते! और मैं एक गाय खरीदना चाहता हूँ।' मेरे भाई ने जवाब दिया: 'क्या समस्या है? तुम्हारे पास पैसे हैं, गाय आँगन में है। चलो, मेरे कुछ दोस्तों के पास बेचने के लिए तीन गायें हैं।' हम पहुँचे – वहाँ तीन गायें खड़ी थीं, ठीक वैसी ही जैसी पुजारी ने बताई थीं। मैंने लाल गाय को चुना और दो दिन बाद, पादरी जी के लिए कुछ ताजा दूध भेज दिया। मैं खुद नहीं जा सका, इसलिए मैंने एक पड़ोसी से कहा। उसने मना कर दिया: 'मैं किसी और की दान-दक्षिणा लेकर पादरी जी के पास कैसे जा सकती हूँ?' लेकिन फिर भी उसने वह दूध ले लिया। जैसे ही वह अंदर पहुँची, पादरी जी ने कहा: 'मुझे ओल्गा की मलाई दो!'

समय बीतता गया, और मेरे बच्चे बड़े हो गए। मेरी बेटी लडिया के विश्वविद्यालय में आवेदन करने का समय आ गया। हम पतिजी के पास गए: "पतिजी, कृपया लडिया को विश्वविद्यालय के लिए आशीर्वाद दें।" और उन्होंने कहा: "लडिचका, कहाँ जा रही हो?" "KAZGU के वधिसिंकाय में।" – "ओह," फादर ने कहा, "तुम्हें अल्माटी के सेब पसंद हैं, लेकिन मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ – इसके बजाय करागांडा के आलू खाओ; वे तुम्हारे लिए अच्छे हैं। क्या तुम लोगों का न्याय करना चाहती हो? क्या तुम मेरा भी न्याय करने जा रही हो? नहीं, नहीं। इस साल घर पर रहो, अपनी माँ के साथ सलाई करना सीखो; यह काम आएगा। और अगले साल, मेडिकल स्कूल में आवेदन करना; वहाँ एक नया संकाय खुल रहा है, और तुम्हें वहीं जाना है।" लेकिन मेरी बेटी ने उसी साल मेडिकल स्कूल में आवेदन करने का फैसला किया और उसका दाखिला नहीं हो पाया। तो उस साल उसने सलाई सीखी, और अगले साल वह बनिा किसी परेशानी के उसमें दाखिल हो गई।

फिर साशा की बारी थी विश्वविद्यालय में आवेदन करने की। मैंने साशा से पूछा, "तुम किस विश्वविद्यालय में जा रहे हो?" उसने कहा, "चूकलडिया को इतना आशीर्वाद मिला है, मैं कोई योजना नहीं बनाऊँगा। जहाँ पादरी मुझे जाने के लिए कहेंगे, मैं वहीं जाऊँगा।" और मेरे दूसरे बेटे, अनातोली ने, आठवीं कक्षा पूरी की और एक तकनीकी कॉलेज

में दाखला लेने के लिए आशीर्वाद लेने का फैसला किया। हम पापा के पास गए: "पापा, साशा को वशिवदियालय में आवेदन करना है।" पापा ने पूछा: "तो फरि, साशा, तुम कसि वशिवदियालय में जाना चाहते हो?" "पापा, आप जहाँ कहेंगे, मैं वहीं जाऊँगा।" "पॉलिटिकन्कि जाओ, सविलि इंजीनियरिंग संकाय में, और तुम वह इंजीनियर बनोगे जिसकी हमें जरूरत है। भगवान तुम्हें आशीर्वाद देंगे।" (अब यह बेटा शहर का मुख्य साइट मैनेजर है। उसकी भागीदारी से, करागंडा में परम पवतिर माता के जन्म को समर्पित एक नया चर्च बनाया जा रहा है।) और वह टोलीक से पूछता है: "तुम कहाँ जाना चाहते हो?" "मैं तकनीकी कॉलेज जाना चाहता हूँ।" "तकनीकी कॉलेज? तुम्हारी माँ तुम्हें पढ़ाती ही रही हैं, और तुमने अभी सरिफ आठवीं कक्षा ही पूरी की है और अब तुम तकनीकी कॉलेज जाना चाहते हो? तुम्हें मेरी आशीर्वाद नहीं मिलेगी। दसवीं कक्षा पूरी करो, फरि वापस आना।"

तो मेरे अनातोली ने क्या किया? "मम्मी," उसने कहा, "आखिर 'मेरे पति का आशीर्वाद' का क्या मतलब होता है?" और हमारे एक रशितेदार थे जो उस तकनीकी कॉलेज के प्रवेश पैनल में काम करते थे। "चलो," उसने कहा, "मेरे चाचा के पास चलते हैं; वह मेरी मदद करेंगे, मैं दाखला ले लूँगा और पढ़ाई करूँगा।" मैं मान गई: "चलो, अगर तुम चाहते हो।" उन्होंने अनातोली को परीक्षा का पेपर दिया, वह परीक्षा देने गया – उसे '2' मिला। "मम्मी," उसने वनिती की, "जाकर मेरे चाचा से कहो कि मुझे एक और परीक्षा का पेपर दे दें।" तो मैं चली गई। मैंने सोचा, 'इसे एक कोशिश तो करने दो, लड़के को थोड़ी मौज-मस्ती करने दो।' उसने फरि से परीक्षा दी – फरि से '2' नंबर मिला। तीसरी बार, मेरे चाचा ने भी उसके लिए सफिराशि की, लेकिन उसे फरि भी '2' ही मिला। तो यह रहा नतीजा: मेरी रज़ामंदी के बिना, उसके रशितेदार भी मदद नहीं कर सके। और इस तरह मेरा अनातोली व्यावसायिक कॉलेज में दाखला ले गया।

1962 में, उसे अपने कॉलेज के साथ मे दिनि की परेड में हसिसा लेना था। लेकिन उस साल मे दिनि होली वीक के दौरान आया। इसलिए, वह सुबह परेड के लिए नकिल गया; शाम तक, अनातोली अभी भी घर नहीं आया था। मैंने सोचा, "खैर, वह शायद मेरे भाई के पास गया होगा।" अगली सुबह, मैं चर्च जा रही थी तभी पादरी ने मुझे बुलाया और कहा: 'घर जाओ; तुम्हें घर पर ही रहना चाहिए। लो, ये अंडे लो,' – और उन्होंने मुझे कुछ फटे और चोटलि अंडे थमा दिए। 'क्या हो रहा है?' मैंने सोचा, और किसी तरह मुझे बहुत खुशी महसूस नहीं हो रही थी। मैं घर पहुँची। 'क्या अनातोली यहाँ आया था?' मैंने पूछा। "नहीं, वह नहीं आया।" शाम को मैं फरि से चर्च गई, और पादरी एक बार फरि मेरे पास आए और कहा: "घर जाओ, अभी तुरंत घर जाओ।" और उन्होंने मुझे फरि से कुछ कुचले और चकनाचूर अंडे दे दिए। और मदर अनास्तासिया ने भी मुझे कुछ अंडे दिए, जो कुचले हुए थे, और कहा: "बहुत जल्दी घर जाओ" – और मुझे भेज दिया। मैं चल दी। मैं कोना मुड़ी ही थी कि मेरी बेटी लडिया दौड़ती हुई मेरी ओर आई: 'मम्मी,' उसने कहा, 'हम मुसीबत में हैं! टोलीक को छुरा घोंपा गया है; वह अस्पताल में है, बेहोश है।' पता चला कि एक प्रदर्शन के दौरान कुछ गुंडों ने उसके पेट पर वार कर दिया था। उसकी सर्जरी हुई थी। अनातोली नौ दिनों तक बेहोश रहा, और फरि फादर सेबस्टियन और मदर अनास्तासिया ने उसके ठीक होने के लिए प्रार्थना की। वह मौत के कगार पर था, उसकी हालत नरिशोजनक लग रही थी। फरि भी किसी ने बुजुर्गों को कुछ नहीं बताया था; वे खुद जानते थे कि उसके साथ क्या हुआ था। अनातोली ने अस्पताल में आठ महीने बितिए, ठीक हो गया, और आज भी जीवित है।

मारिया फओदोरोव्ना और ओल्गा फओदोरोव्ना ऑरलोवास

मारिया फओदोरोव्ना

मेरे माता-पति बहुत धार्मिक लोग थे। जब 1931 में हमारे परिवार से संपत्ति छीन ली गई, तो पतिजी ने कहा: 'जो कुछ भी ईश्वर ने भेजा है। हमें इस प्याले से पीना ही होगा।' पतिजी को गरिफ्तार कर अलग रखा गया, और कई साल बीत गए जब तक हम फरि से नहीं मिल सके। जहाँ तक माँ और हम चार बच्चों का सवाल है, हमें कोम्पानेयस्क में एक बंजर टीले पर ले जाया गया जहाँ न पानी था और न ही रोटी। हमने ज़मीन में एक गड्ढा खोदा और उसमें रहे: प्योत्र, मैं, ओल्गा और अलेक्जेंड्रा। हमारी माँ गर्भवती थी, और उनका गर्भपात हो गया। माँ ने बहुत कष्ट सहें; हमारा गड्ढा खून से लथपथ था, खून हमारे कपड़ों पर सूख गया था, और उन्हें धोने के लिए कहीं कोई जगह नहीं थी – चारों ओर बस मैदान ही मैदान था। माँ ने वनिती की, 'बेटी, एक कंकड़ ढूँढ, इन कपड़ों को उस पर रख, उन पर थोड़ा पानी डाल, और अपने पैरों से कुचल दे।' मैं छोटी थी और मुझे अभी कपड़े धोना नहीं आता था।

फरि हमने ज़मीन में खोदकर घर बनाना शुरू किया; हम मट्टी खोदते, उसे पानी में मलाते, अपने पैरों से गूँथते और ईंटें बनाते। हमने बैरक बनाए – जिनमें न खड़कियाँ थीं, न दरवाज़े। बैरक के अंदर बंक थे, और लोग उन पर पड़ी हर चीज़ से ढककर लेटे रहते थे। सुबह वे उठते और लाशों को बाहर खींच लाते। वहाँ वे मृतकों के लिए नहीं रोते थे – इसके लिए समय नहीं था – लेकिन हमारी माँ बस प्रार्थना करती और अकाथसिट पढ़ती, जबकि हम उनके पास बैठे

रहते: 'मम्मी, हमें भूख लगी है! मम्मी, चलो खाते हैं!' – "एक मिनट रुको, मुझे बस अकाथसिट पढ़ना खत्म करने दो" – "मम्मी!" – "ठीक है, बस एक और पन्ना बाकी है," वह समय खींचते हुए कहती, "मैं अभी पढ़कर खत्म कर देती हूँ और भगवान हमारी मदद करेंगे।" वह पढ़ना खत्म करती, रोटी का एक टुकड़ा लेती और उसमें से एक छोटा सा टुकड़ा काट लेती। और हम अपनी उंगलियों से इशारा करते: "यह किसके लिए है?" – "यह पीट के लिए है।" – "और यह किसके लिए है?" – "यह मारिया के लिए है। यह ओल्या के लिए है। यह शूरा के लिए है" – बस ऐसे ही। हम बचे-खुचे टुकड़ों को इकट्ठा कर लेते थे, जबकि माँ हमेशा अपनी रघियात में से हमें कुछ देने की कोशिश करती थी। और हम बचे, कैसे? यह अवशिवसनीय है - वहाँ जीवति रहना असंभव था! मुझे बहुत जोर की सर्दी थी और मैं गठिया से बसितर पर पड़ी थी। मेरे पैरों पर घाव थे जो सड़ रहे थे। माँ वहाँ बैठकर रोती थीं। मक्खियाँ हमारे चारों ओर मँडराती थीं, और माँ मेरे पैरों को गॉज से ढक देती थीं।

और इस तरह, ईश्वर ने हमारी मदद की! हम सब बड़े हुए, हम सबने उच्च शिक्षा प्राप्त की। प्योत्र ने अकादमी से स्नातक किया; ओल्गा और अलेक्जेंड्रा डॉक्टर बनीं; मैं एक शक्ति बनी। ईश्वर ही थे जिनोंने हमारी माँ की प्रार्थनाओं के माध्यम से हमें बचाया; यह एक चमत्कार है कि हम जीवति रहे।

ओल्गा फ़्योदोरोव्ना (बाट्यूशका की देखभाल करने वाली डॉक्टर)

1949 में, मेरी बहन अलेक्जेंड्रा और मैं अल्मा-आटा मेडिकल इंस्टिट्यूट से स्नातक हो रहे थे। स्थायी पद पर नयुक्ती का समय आ गया था। अपने माता-पिता से सलाह-मशवरी करने के बाद, हमने कोचेताव में नयुक्ती स्वीकार करने का फैसला किया – हमारे भाई पीटर वहाँ अपने परिवार के साथ रहते थे, और हम सभी ने उनके साथ रहने का निर्णय लिया। लेकिन अचानक, पतिजी का एक तार आया। उसमें उन्होंने हमें केवल करांडागा के मैं एक पद के लिए आवेदन करने को कहा और कारण एक पत्र में समझाने को कहा। हमें यह पत्र कुछ ही समय बाद मिला। पतिजी ने लिखा कि, एक परिचित श्रद्धालु की सलाह पर, वह हमारे जाने के लिए आशीर्वाद लेने के लिए फादर सेबास्टियन से मिलने सेंट माइकल चर्च गए थे। पादरी ने पापा से हमारे जाने के उद्देश्य के बारे में वसितार से पूछा, ध्यान से सुना और कहा: "नहीं, फ़्योदो इवानोवचि, मैं आपके जाने का आशीर्वाद नहीं देता: बेटा तो बेटा होता है, बहू तो बहू होती है, और बेटियाँ तो बेटियाँ होती हैं। आज आपका बेटा वहीं रहता है, लेकिन कल वह किसी और जगह रहने चला जा सकता है।" (और वास्तव में, मेरा भाई और उसका परिवार जल्द ही कोचेताव से चले गए।) "अपनी बेटियों को केवल करांडागा में ही नौकरी के लिए आवेदन करने दो।" पापा ने पादरी से कहा कि वह सब कुछ पहले ही बेच चुके हैं और पूछा कि अब उन्हें क्या करना चाहिए। इस पर, पादरी ने जवाब दिया: "डरो मत, फ़्योदोर इवानोवचि, ईश्वर मदद करेंगे और सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

मेरी बहन और मैंने ठीक वैसा ही किया जैसा पादरी ने कहा था। करांडा पहुँचने पर, हम सीधे सेंट माइकल चर्च गए। पादरी ने हमें एक दमकती मुस्कान के साथ अभिवादन किया। जब हम अंदर आए, तो वह खड़की के पास खड़े थे। धूप में नहाए हुए, अपने हल्के रंग के वेस्टमेंट्स में, फादर सेवेस्टियन स्वयं प्रकाशमान प्रतीत हो रहे थे। उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद, हमें बर्ना किसी कठिनाई के क्पेत्रीय अस्पताल में काम मिला गया।

एक बार जब मैं करांडा में बस गया, तो मैंने काम के बाद शाम को सेंट माइकल चर्च जाना शुरू कर दिया। फादर सेबास्टियन हर सुबह और शाम मास का आयोजन करते थे। मुझे वास्तव में उनकी सेवा संचालित करने का तरीका और चर्च के गायकों का गायन बहुत पसंद आया। मैंने फादर को बारीकी से देखना शुरू कर दिया: मैं हमेशा सेवा के प्रति उनके ईश्वर-भयभीत, श्रद्धापूर्ण और मार्मिक दृष्टिकोण, और पैरशिवासियों के प्रति उनके महान धैर्य से प्रभावित होता था, जिनकी वह हर संभव तरीके से मदद करने का प्रयास करते थे।

फादर बहुत वनिम, सौम्य और दयालु थे। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो उन्हें एक बार देखने के बाद भी पूरे दिल से प्यार न करता हो। एक डॉक्टर के रूप में, मैंने देखा कि वह बहुत थके हुए और अस्वस्थ थे। प्रार्थना सभा के दौरान, उन्हें अक्सर खांसी होती थी और सांस लेने में कठिनाई होती थी। फादर से बातचीत में, मैंने उनके स्वास्थ्य के बारे में वसितार से पूछा और एक डॉक्टर के रूप में अपनी सेवाएं दीं। तब से, मैं लगातार उनकी देखभाल करने लगा। जब मैंने पहली बार चर्च जाना शुरू किया था, तब मुझे आध्यात्मिक जीवन, आध्यात्मिक मार्गदर्शन, या ईसाई धर्म के सार के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। जब मैंने पहली बार फादर सेवस्तोवन की आध्यात्मिक अंतरदृष्टि का अनुभव किया, तो मैंने इसे महज एक संयोग समझा कि मेरे विचार उनके विचारों से मेल खा रहे थे। लेकिन वास्तव में जो हुआ वह यह था। एक दिन, संध्या की प्रार्थना के दौरान, मैं वहाँ खड़ा यह सोच रहा था: 'यहाँ कतिना सुंदर है! मैं घर नहीं जाना चाहती। काश मैं यहीं रुककर अफ़सि इवानोव्ना के साथ रात बिता सकती, जो यहाँ चर्च के पास रहती हैं।' प्रार्थना सभा समाप्त हुई, और मैं घर जाने की तैयारी करने लगी। अचानक, फादर मेरे पास आए और कहा: "ओल्गा

फ्योदोरोव्ना, आप यहाँ रुककर अफ़सि इवानोव्ना के साथ चर्च में रात क्यों नहीं बतिती?" मैं बहुत खुश हुई और चलि़लाई: "फादर! मैं तो अभी-अभी यही सपना देख रही थी! है ना अद्भुत कि हमारे वचिर कैसे एक हो गए?" फादर मुस्कुराए, लेकिन कुछ नहीं बोले और अपनी कोठरी में चले गए। थोड़ी ही देर बाद, फादर ने मुझे पाप-स्वीकार करने और मसीह के पवतिर रहस्यों को प्राप्त करने का आशीर्वाद दे दिया। सुबह मैं चर्च गई और देखा कि बहुत सारे लोग पाप-स्वीकृति के लिए आना चाहते थे। मैं नरिश हो गई और मैंने सोचा कि शायद मैं पाप-स्वीकृति नहीं कर पाऊँगी, क्योंकि मुझे जल्द ही काम पर जाना था। अचानक पाप-स्वीकृति कक्ष का दरवाज़ा खुला, और फादर दरवाज़े में दिखाई दिए। उन्होंने मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाया और कहा, 'आओ, ओल्गा फ़ोदोरोव्ना, चलिए हम पाप-स्वीकृति के लिए चलते हैं।' मुझे नहीं पता था कि पाप-स्वीकृति कैसे करें या क्या कहें। मेरा मन पूरी तरह से उथल-पुथल में था, और मैं तरह-तरह के वचिरों से अभिभूत थी। और अचानक पादरी ने कहा, 'देखिए, ओल्गा फ़ोदोरोव्ना, मेरे दमिग में भी तरह-तरह के वचिर आते हैं।' और उसने मेरे सभी वचिरों को गनिना शुरू कर दिया—वे वचिर जो मुझे अभिभूत कर रहे थे और मुझे वशिष कष्ट दे रहे थे। मैंने कहा, 'फादर, मेरे भी ऐसे ही वचिर आते हैं। क्या यह पाप है?' उन्होंने जवाब दिया, 'हाँ, आपको उनसे बचना चाहिए और उन्हें दूर भगाना चाहिए, क्योंकि वे पापी हैं।'

एक अन्य अवसर पर, जब मैं चर्च में प्रार्थना कर रही थी, एक उप-डीकन मेरे पास आया और कहा, 'ओल्गा फ़ोदोरोव्ना, फादर आपको बुला रहे हैं।' मैं समारक चैपल में दौड़ी, यह सोचते हुए कि फादर अस्वस्थ हैं, जैसा कि अक्सर होता था। लेकिन वह पवतिर त्रिमूर्ति की प्रतमा के सामने एक छोटी सी कुर्सी पर बैठे थे, और अपनी गोद में कुछ पकड़े हुए थे। उनके चारों ओर बहुत सारे लोग थे, लेकिन मैं किसी तरह से भीड़ में से निकलकर आगे पहुँच गई और देखा कि उन्होंने अपनी गोद में एक छोटी प्लेट रखी थी, जिस पर शराब छड़िककर पवतिर वेफ़र रखे हुए थे। मैंने ऐसे वेफ़र पहली बार देखे थे। "तो बात यह है," मैंने सोचा, "वे खुद शराब से सनी रोटी खाते हैं, जबकि हमें साधारण वाली दी जाती है!" यह वचिर मेरे मन में बजिली की तरह कौंध गया। लेकिन फादर मेरी ओर मुड़े, पास खड़े लोगों को हटाया, और कहा: "ओल्गा फ़ोदोरोव्ना, यह पवतिर वेफ़र लो और इसे खाओ," – और उन्होंने मुझे शराब से सक्ति वेफ़र का एक टुकड़ा थमा दिया। फादर ने किसी और को और वेफ़र नहीं दिए। एक बार फिर, मैं इस बात से चकति रह गई कि मेरे सभी वचिर उनके सामने उजागर हो गए थे। मुझे शर्म और डर महसूस हुआ।

फादर की पवतिर अंतरदृष्टि की गवाही देने वाले अन्य उदाहरण भी कम आश्चर्यजनक नहीं हैं।

यह परम पवतिर त्रिमूर्ति का परव था। प्रार्थना सभा बहुत गंभीर थी; फादर आनंदति, जीवंत और शांतपूरण थे। गायन मंडली ने वशिष रूप से अच्छा गाया। जब, संस्कार के श्लोक के बाद, उन्होंने 'स्वेटलिन' गाना शुरू किया, तो मैं उस जगह शब्दों के मेल को समझ नहीं सका जहाँ उन्होंने गाया: 'प्रकाश और प्रकाश से, प्रकाश का दाता।' मुझे नहीं पता था कि कौन सा सही था: 'प्रकाश से प्रकाश, प्रकाश का दाता' या 'प्रकाश और प्रकाश, प्रकाश का दाता'। इससे मुझे परेशानी हुई और मैं नश्चिती रूप से जानना चाहता था, लेकिन पूछने का कोई उपयुक्त क्षण नहीं था। और इसलए, उत्सव के कुछ ही समय बाद, मैं शाम की प्रार्थना सभा में गया। पुजारी सेवा का संचालन नहीं कर रहे थे; वे अपनी कोठरी से सेवा सुन रहे थे। मैं उन्हें देखने अंदर गया और उनका आशीर्वाद माँगा। जब मैंने उनके सामने अपने हाथ फैलाए, तो उन्होंने अपनी हथेली उन पर रखी, मुस्कुराए, लेकिन मुझे आशीर्वाद देने के बजाय, उन्होंने कहा: "ओल्गा फ़ोदोरोव्ना, 'प्रकाश और प्रकाश, प्रकाश का दाता!'" मैं हैरान रह गई और मैंने कहा, "फादर, यह तो वही हसि़सा है जो मुझे समझ नहीं आया!" वह फिर मुस्कुराए और मुझे आशीर्वाद दिया। एक बार फिर, उनकी सूझबूझ ने मुझे चकति कर दिया।

32 साल की उम्र में, मैं महिलाओं की एक बीमारी से गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। मुझे लगा कि मुझे कैंसर है और मैं बहुत परेशान थी। मैं इस बात से भी परेशान थी क्योंकि अपनी बीमारी के कारण, मैं पवतिर रहस्यों (Holy Mysteries) को ग्रहण नहीं कर सकती थी, आइकॉन्स (icons) को चूम नहीं सकती थी, रोगियों का अभषिक (Anointing of the Sick) नहीं ले सकती थी, प्रॉस्फोरा (prosphora) और धन्य रोटी नहीं खा सकती थी, या मोमबत्तियाँ नहीं जला सकती थी।

एक बार, सेवा में शामिल होते समय, मैं वशिष रूप से दुखी महसूस कर रहा था और अपने हृदय में प्रभु की ओर मुड़ा: "प्रभु, एक कोढ़ी की तरह, मैं इतने लंबे समय से पवतिर वस्तुओं को छू नहीं पाया हूँ। मुझमें कैंसर ही होगा। क्या त्रासदी है!" – और मैं रोने लगा। उसी क्षण, उप-डीकन समारक चैपल से बाहर आया, मेरी ओर दौड़कर आया और कहा: "ओल्गा फ़ोदोरोव्ना, फादर आपको बुला रहे हैं।" मैं अपनी सभी बीमारियों को भूल गई और यह सोचकर कि शायद फादर की तबीयत ठीक नहीं है, जल्दी से फादर के पास चली गई। जब मैं अंदर आई, तो वह एक कुर्सी पर बैठे थे, उनका चेहरा प्रसन्न था, और मुस्कुराते हुए उन्होंने मुझसे कहा: "ओल्गा फ़ोदोरोव्ना, यह सब ठीक हो जाएगा; ऐसा कभी-कभी युवा लोगों के साथ भी होता है। आपको आइकॉन्स (धार्मिक चित्ति) को चूमना नहीं चाहिए, न ही आपको

प्राँस्फोरा खाना या पवतिर जल पीना चाहिए, लेकिन आप आशीर्वादति रोटी खा सकते हैं। आप मोमबत्तियाँ आगे बढ़ा सकते हैं, लेकिन आपको उन्हें आइकॉन्स के सामने नहीं रखना चाहिए," – और उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया, मुझे आशीर्वादति रोटी का आधा टुकड़ा देते हुए।

मैं उससे उत्साहित, प्रसन्न और ठीक होने की उम्मीद से भरी हुई लौटी। और आने वाले दिनों में, मैं वास्तव में पूरी तरह से ठीक हो गई।

जब मेरी माँ गंभीर रूप से बीमार थी, तो पादरी उन्हें संस्कार देने के लिए हमारे घर आते थे। अपनी एक यात्रा के दौरान, जब हम संस्कार ग्रहण करने के बाद क्रॉस के पास पहुँचे, तो पादरी ने मेरी बहन एकेटेरिना से कहा: "कतया, शादी मत करना।" – "क्यों?" – मेरी बहन ने पूछा। 'शादी मत करना, कातया, क्योंकि तুম बहुत, बहुत रोओगी,' पादरी ने कहा, जबकि उन्होंने उसके मंगेतर को कभी नहीं देखा था और एकेटेरिना ने अपने इरादों के बारे में उन्हें कुछ भी नहीं बताया था। जाते समय, पादरी ने मुझसे कहा कि वे एक साथ नहीं रहेंगे; वे अलग हो जाएँगे। लेकिन कातया ने नहीं सुनी, और शादी के कुछ ही समय बाद, पादरी की भविष्यवाणी सच हो गई।

मैं जानती थी कि फादर को अच्छा नहीं लगता था जब लोग उन पर विशेष ध्यान देते थे या उनके नाम के दिन उन्हें उपहार देते थे। मैं लंबे समय से उनके वेस्टमेंट्स (पवतिर वस्त्रों) के लिए कपड़े का एक टुकड़ा देना चाहती थी, लेकिन मैं इसका जिक्र करने से भी डरती थी। और इसलिए एक दिन, काम से घर जाते समय, मैं चर्च में चली गई। जब मैं फादर के सेल के पास से गुजर रही थी, तो मैंने खड़िकी से झाँका और देखा कि वह खड़िकी के पास खड़े थे, और अपनी उंगली से मुझे बुला रहे थे। मैं सेल में चली गई, और फादर ने दरवाजा खोला और कहा: "ओल्गा फ्योदोरोवना, आपको देखकर मुझे कतिनी खुशी हो रही है। अंदर आइए। मुझे वास्तव में इस तरह की सामग्री से बने वेस्टमेंट्स की जरूरत है," – और उन्होंने मुझे नीले-सफ़ेद रंग के कपड़े का एक टुकड़ा दिखाया। – "मेरे पास कपड़ा है, लेकिन वेस्टमेंट्स नहीं हैं। इस तरह के वेस्टमेंट्स ईश्वर की माता और प्रभु के पर्वों के लिए उपयोगी होंगे।" मुझे एहसास हुआ कि पिताजी ने आखिरकार मेरी लंबे समय से मन में रखी गुप्त इच्छाओं को स्वीकार कर लिया था और कहा, "पिताजी, तो कृपया मुझे इस तरह का कपड़ा खरीदने का आशीर्वाद दें।"

कई वर्षों से पिताजी के करीब रहने के कारण, हमने बार-बार उनकी वृद्ध आशीर्वाद की शक्त को देखा है। नमिनलखिति घटना पिताजी की आशीर्वाद की शक्ति की पुष्टि करने वाला एक उदाहरण है।

1960 के दशक की शुरुआत में, पशुधन नपिटाने का आदेश जारी किया गया था। हमने एक गाय रखी थी और अब हमें उसे बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। शनिवार को मेरे पिता चर्च गए। सेवा के बाद, वह पिताजी के पास गए, यह बताते हुए कि हम अब गाय को नहीं रख सकते और कल, रविवार को, हमें उसे बेचना होगा। पुरोहित ने उत्तर दिया: "बहुत अच्छा, फ्योडोर इवानोविच, मैं आपको अपना आशीर्वाद देता हूँ। कल लतिरजी में आना, और 'हमारा पिता' (प्रार्थना) के बाद, जाकर गाय बेच देना।" पिताजी ने कहा: "फादर, यह कैसे संभव है? तब तक बहुत देर हो जाएगी; ओल्ड टाउन तक का रास्ता बहुत लंबा है, और बाजार में कोई नहीं बचेगा।" पुरोहित ने जवाब दिया: "कोई बात नहीं, फ्योदोर इवानोविच, ईश्वर आपकी मदद करेगा; आप इसे बेच देंगे।" और ठीक वैसा ही हुआ। पिताजी सेंट माइकल चर्च से नए शहर (New Town) में अस्तबल के लिए रवाना हुए, फरि गाय को लेने के लिए घर गए, और उसके बाद ही पुराने शहर (Old Town) के बाजार में गए, जो लगभग दस किलोमीटर दूर था। पापा गाड़ी से गए, जसिमें गाय बँधी हुई थी। रास्ते में, उनकी मुलाकात बाजार से लौट रहे लोगों से हुई, जो उन पर हँसते हुए कहने लगे कि वह व्यर्थ में जा रहे हैं, क्योंकि बाजार में अब कोई नहीं बचा था। लेकिन पापा ने फरि भी बाजार तक जाना जारी रखा, और सोचा कि वहाँ पहुँचकर देखते हैं कि क्या होता है। जब वह बाजार पहुँचा, तो उसने देखा कि वहाँ वाकई में लगभग कोई भी नहीं बचा था, और जो लोग वहाँ थे, वे भी घर लौटने ही वाले थे। तभी एक आदमी मेरे पिताजी के पास आया और बोला, "अच्छा, पिताजी, क्या आप गाय बेचने ले जा रहे हैं?" मेरे पिताजी ने जवाब दिया: "हाँ, मैं उसे बेचना चाहता हूँ।" खरीदार ने अपनी कीमत बताई: "सीधे-सीधे बात करते हैं; अगर आप मान जाते हैं, तो सौदा पक्का।" थोड़ी मोल-भाव के बाद, वे एक कीमत पर सहमत हो गए, और इस तरह, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, मेरे पिताजी ने उस कीमत पर गाय को सफलतापूर्वक बेच दिया जसिकी उन्होंने उम्मीद की थी।

कैसे पिताजी ने मेरे नाम के दिन मुझे वनिमरता सखाई।

जुलाई के मध्य में एक दिन, मैं पादरी के सेल में अचानक गया। उस समय वह अपनी सेल सहायक मारिया ओब्राजत्सोवा के साथ एक कालीन देख रहे थे। "आह, ओल्गा फ्योदोरोवना," उन्होंने कहा, "आइए, आइए, आपका स्वागत है!" "पादरी जी, आप आखिर कर क्या रहे हैं?" मैंने पूछा। "अच्छा, हम तो बस इस कालीन को देख रहे थे, लेकिन इस पर क्रॉस बने हैं, इसलिए हम इसे अपने पैरों के नीचे नहीं बछा सकते।" – "मारिया," उन्होंने अपनी सेल सहायक की ओर मुड़कर कहा, "शायद हम इसे ओल्गा फ्योदोरोवना को उनके नाम दविस पर दे सकते हैं?" उसने

जवाब दिया, "हाँ, पतिताजी, यह एक अच्छा विचार है।" – "तुम्हारा नाम-दनि कुछ ही दनिों में है, है ना?" पतिताजी ने कहना जारी रखा, "क्या तुम मुझे अपने नाम-दनि पर बुलाओगी?" मेरा दिल एक पल के लिए रुक गया। मैं पतिताजी से जितना प्यार करती थी, उतनी ही उनसे डरती भी थी, और जब तक वे खुद से न आते, मैं उन्हें कभी अपने घर नहीं बुलाती थी। और, बेशक, मैंने कहा: "बलिकुल, पतिताजी, ज़रूर आइए।"

मेरे नाम के दनि से लगभग तीन दनि पहले, पतिताजी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया, मुझे कुछ सलाह दी, और मुझे एक अकाथसिट और एक बड़ी प्रोस्फोरा भेंट की। और इस प्रकार, ये सभी उपहार और मेरे नाम के दनि आने का पतिताजी का वादा पाकर, मैं काफी प्रसन्न महसूस कर रही थी।

संत ओल्गा, परेरतिों के समकक्ष, का पर्व का दनि आ गया। घर पर, हमने सब कुछ उलट-पुलट कर दिया। हमने सब कुछ धोया और साफ किया, और कई तरह के व्यंजन तैयार किए – डेयरी और फलों से बने। इस बीच, मैं चर्च में पवित्र Communion ग्रहण कर रही थी। लटिर्जी के बाद, सभी आशीर्वाद के लिए आगे आते हैं। मैं भी आगे बढ़ी। लेकिन ऐसा लगा कि पादरी ने मुझे देखा ही नहीं; वे मुड़ गए और दूसरों को आशीर्वाद देने लगे। मैं वहाँ उनके आशीर्वाद की प्रतीक्षा में खड़ी रही। फिर उन्होंने मुझे देखा: 'आह, प्रलोभन,' उन्होंने कहा, 'क्या यह तुम हो, ओल्गा फियोदोरोवना?' और आधा मुड़कर, उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया। (वे आमतौर पर लोगों को एक बड़ा क्रॉस बनाकर आशीर्वाद देते थे।) मेरा दिल धड़का: मैंने सोचा, 'क्या हुआ?' मेरा मूड तुरंत ही उदास हो गया, बलिकुल भी उत्सवी नहीं रहा। मैंने कहा, 'पादर, वे हमारा इंतज़ार कर रहे हैं; चलो घर वापस चलते हैं।' लेकिन उन्होंने जवाब दिया: 'वेरा, तैयार हो जाओ; मैं अब अपनी कोठरी में जाकर खाना खाऊँगा और आराम करूँगा।' मैं तब तक वहाँ रुकी जब तक पादरी ने खाना नहीं खा लिया, आराम नहीं कर लिया, जाग नहीं गए, और चर्च की कोठरी में नहीं आ गए। मैं उनके इंतज़ार में ऐसे बैठी थी मानो बजिली के कुर्सी पर बैठी हो। कोठरी में, उन्होंने किसी से काफी देर तक बात की, फिर पीटर को आवाज़ लगाई: "पीटर, गाड़ी तैयार करो; अब हम निकल रहे हैं।" "पादर," मैंने पूछा, "क्या हम उन्हें देखने जा रहे हैं?" और उन्होंने जवाब दिया: "ओह, क्या सवाल है – तुम्हें देखने को। नहीं, नहीं, नहीं, हम फूड प्रोसेसिंग प्लांट ओल्गा स्टेपानोवना से मिलने जा रहे हैं।" – "आह! पादर, लेकिन वे हमारा इंतज़ार कर रहे हैं!" लेकिन उन्होंने ऐसा अभिनय किया मानो उन्होंने सुना ही न हो। हम मेलकोम्बानाट के लिए निकल पड़े। वहाँ हमने एक स्मृतिसभा और एक प्रार्थना सभा की, वहाँ भोजन किया, फिर झुकोव्स के यहाँ गए, और पतिताजी ने कहा: "पेट्रो, चलो चलते हैं!" खैर, मैंने सोचा, हमारे यहाँ। देर आए दुरुस्त आए, हम फिर भी पहुँच जाएँगे। हम अपने घर पहुँचे, गेट पर रुके, और पादर ने कहा: "ओल्गा फियोदोरोवना, उतर जाइए।" – "पादर," मैंने कहा, "लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? घर पर वे मेरा अभिवादन कैसे करेंगे? मुझे क्या कहना है? तुम अंदर क्यों नहीं आ रहे हो?" उन्होंने कुछ नहीं कहा और चले गए। फिर भी, उन्होंने मुझसे अक्सर कहा था: "ओल्गा फियोदोरोवना, वनिमरता सबसे पहले आती है – आपके भविष्य के लिए।" वनिमरता सखाने का यह उनका तरीका था। और हमारी अगली मुलाकात में: 'ओल्गा फियोदोरोवना, कृपया न आने के लिए मुझे माफ कर दीजिए; किसी तरह मैं... मुझे याद भी नहीं कि क्यों... शायद मुझे जल्दी थी... या मैं अस्वस्थ महसूस कर रहा था... अब मुझे याद नहीं।' – 'ओह,' मैंने कहा, 'पादर, घर पर तो मुझे खूब डांटा गया!' ऐसे ही होता था।

जब मैं मखिइलोव्स्काया पॉलीक्लिनिक में एक जिला चिकित्सक के रूप में काम करती थी, तो मेरे कर्तव्यों में आपातकालीन कॉल का जवाब देना और अपने जिले में मरीजों से मिलना शामिल था। मैंने हर तरह की चीजें देखीं – सभ्य और असभ्य दोनों। एक बार, हर तरह की चीजें देखने के बाद, मैं अगले दनि कम्युनियन के लिए तैयारी करने के इरादे से चर्च गई। प्रार्थना करने के बाद, मैं घर जाने की वाली थी कि अचानक पादरी की कोठरी का दरवाज़ा खुला; पादरी बाहर आए और बोले: 'ओल्गा फियोदोरोवना, आइए और पाप-स्वीकृति करें।' मैं सन्न रह गई। पादरी ने आज मेरी पाप-स्वीकृति सुनने का फैसला क्यों किया? मैं कोठरी में गई; पादरी ने मुझे आशीर्वाद दिया और तुरंत कहना शुरू किया: 'ओल्गा फियोदोरोवना, आप अपने जिले में घूमती हैं, बीमारों का इलाज करती हैं। यह, बेशक, एक पुण्य कार्य है। लेकिन आप जीवन में तरह-तरह के दृश्यों की गवाह बनती हैं – कुछ सभ्य, कुछ अश्लील; कुछ आत्मा के लिए लाभकारी, कुछ नहीं। अश्लील चीजों को अपने भीतर समाने न दें।' ओह! मेरे कान जल उठे; आखिरकार, मैंने अभी-अभी वह सब कुछ देख ही लिया था। 'पादर,' मैंने कहा, 'मुझे माफ कर दीजिए।' उन्होंने मेरा पाप-स्वीकार सुना, और मैं चली गई। उस शाम उन्होंने किसी और का पाप-स्वीकार नहीं सुना; वह मेरे ही लिए रुके रहे, ताकि अगले दनि तक न तो मैं और न ही वह यह भूल पाएँ कि आत्मा के लिए क्या हानिकारक है।

पतिता अक्सर मुझे बीमारों और गरीबों को बांटने के लिए पैसे देते थे। मैं कहती, "पतिताजी, मैं यह कैसे करूँ?" – "चिंता मत करो, ओल्गा फियोदोरोवना। उदाहरण के लिए, अगर तुम अस्पताल में ड्यूटी पर हो, तो किसी मरीज के पास जाओ, उसके मेडिकल रिकॉर्ड देखो, उससे बातचीत करो, और अगर पता चले कि वह कोई मेहमान या गरीब है, तो चुपके से उसके तकिये के नीचे कुछ पैसे रख दो। और अगर, क्लिनिक में एक परामर्श के दौरान, आप देखें कि कोई

मरीज गरीब है, तो आप उन्हें एक पर्ची लिख सकते हैं, सब कुछ समझा सकते हैं, और दवा की लागत के आधार पर, जैसा आपको उचित लगे, पर्ची के साथ कुछ पैसे रख सकते हैं।" इस तरह फादर सभी का ध्यान रखते थे, और मैंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने मुझे करने का आशीर्वाद दिया था।

मैं पतिजाजी की प्रार्थनाओं से हुई एक चमत्कारी उपचार का उदाहरण दूंगी। 1960 में, पेलगिया मेलनकि इजेक्सक शहर से पतिजाजी से मिलने आई थीं। वह आधे साल से रोटी, दलिया, आलू या कोई और खाना नहीं खा पा रही थीं। वह केवल दूध और कच्चे अंडों पर ही जीवित थी। वह कमजोर हो गई थी और उसके लिए इधर-उधर चलना-फरिना बहुत मुश्किल हो गया था। जब पेलगिया फादर के सेल तक जाने की कोशिश करने लगी, तो उसे अंदर नहीं जाने दिया गया, क्योंकि उन्हें देखने के लिए बहुत सारे लोग आ रहे थे। उसने कतार में छूट पाने की अनुमति मांगी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अचानक दरवाजा खुला, फादर बाहर आए और कहा: "इस महिला को मेरे पास आने दो; वह बहुत बीमार है।" कोठरी में प्रवेश करते ही, पेलगिया फादर के सामने घुटनों के बल बैठ गई और बना एक शब्द बोले, फूट-फूट कर रो पड़ी। फादर ने उससे कहा: "मत रो, पेलगिया; यह सब ठीक हो जाएगा; तुम ठीक हो जाओगी।" उन्होंने उसे एक ताजा प्रॉसफोरा, एक गिलास पानी और एक बड़ा सेब दिया, और कहा, 'इसे खाओ।' उसने जवाब दिया कि वह आधे साल से रोटी नहीं खाई थी, उसका गला खराश रहा था, और वह कोई भी खाना पचा नहीं पा रही थी। फादर ने कहा, 'मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ। बपतस्मा गृह में जाओ, चौड़ी बेंच पर बैठो और इसे खा लो।' वह बपतस्मा गृह में गई, बेंच पर बैठ गई और उसने पुरोहित के उपहारों को आसानी से और बना किसी कठिनाई के खा लिया। उसके बाद, वह तुरंत सो गई और पूरे एक दिन तक सोती रही। पुरोहित उसे कई बार देखने आए, लेकिन उन्होंने किसी को भी उसे जगाने के लिए नहीं कहा। पेलगिया पूरी तरह से स्वस्थ होकर जागी। फादर ने कहा: "तुम्हारा काम कठिन है, लेकिन सब कुछ जल्द ही बदल जाएगा।" और वास्तव में, इजेक्सक लौटने के आधे महीने बाद, पेलगिया को उसके कहने के बिना ही, एक दूसरे, आसान काम पर स्थानांतरित कर दिया गया।

पी. आई. कोसनिोवा ने नमिनलखिति बात बताई। वह फादर के पास अपनी गुदा और कमर में दर्द की शिकायत लेकर आई। कैसर केंद्र में जांच के बाद, उनमें गुदा के कैसर का पता चला और उन्हें सर्जरी कराने की सलाह दी गई। ऑपरेशन से पहले, वह फादर से आशीर्वाद लेने, चर्च में मोमबत्तियाँ जलाने और एक प्रार्थना सभा आयोजित करने के लिए मिलने गईं। लेकिन फादर ने कहा: "इसमें जल्दबाजी मत करो; हो सकता है कि तुम ऑपरेशन टेबल पर ही मर जाओ। थोड़ा और जीओ—आखिरकार, तुम्हारे बच्चे हैं।" वह तीन बार फादर के पास गईं, लेकिन जवाब हमेशा वही था—ऑपरेशन मत कराओ। उसने उसे कुछ एलोवेरा खरीदने, उसका एक नुस्खा बनाकर पीने की सलाह दी। उसने यह भी सुझाव दिया कि वह उद्धारकर्ता, परमेश्वर की माता, अपने संरक्षक देवदूत और सभी संतों के आशीर्वाद से पानी की प्रार्थना सेवा का आयोजन करे। तीन महीने बाद, वह फॉलो-अप जांच के लिए कैसर केंद्र गईं। जांच में पता चला कि ट्यूमर लगभग पूरी तरह से गायब हो गया था। जल्द ही वह पूरी तरह से ठीक हो गईं।

उसने मुझे अपने बेटे, मखिइल के बारे में भी बताया। महा-उपवास के पहले दिन, मखिइल अपने दोस्त को वदिा करने गया था। उसकी माँ इसके खिलाफ थीं और अपने बेटे की अवज्ञा देखकर दुखी थीं। उसके व्यवहार से आहत होकर, उन्होंने सोचा: 'प्रभु, उसे दंड दो।' वह अपने बेटे के लौटने का लंबे समय तक इंतजार करती रहीं, लेकिन व्यर्थ। अंत में, आधी रात को, उसे एक फोन कॉल आया जिसमें बताया गया कि उसके बेटे की नचिली टांग में ओपन फ्रैक्चर है और वह अस्पताल में है। मखिइल ने अस्पताल में लगभग तीन महीने बिताए, लेकिन फ्रैक्चर ठीक नहीं हुआ। उसकी तीन सर्जरी हुईं, लेकिन हड्डी नहीं जुड़ी। चौथा ऑपरेशन करने का सुझाव दिया गया, लेकिन मखिइल ने अस्पताल से छुट्टी ले ली और प्लास्टर कास्ट में घर चला गया। वह एक साल से अधिक समय तक काम नहीं कर सका। उसकी माँ ने मखिइल को पवित्र कम्युनियन लेने का सुझाव दिया, लेकिन उसने मना कर दिया। तो उसकी माँ फादर सेवेस्टियन से मिलने गईं और उन्हें सब कुछ बता दिया। सुनने के बाद, फादर सेवेस्टियन ने उन्हें अपने बेटे को चर्च लाने का निर्देश दिया। उसे वहाँ ले जाने के लिए कुछ मनाना पड़ा। फादर सेवेस्टियन ने मखिइल को पवित्र Communion दी और उन्हें एक प्रार्थना सभा आयोजित करने का निर्देश दिया। प्रार्थना सभा के बाद, फादर सेवेस्टियन मखिइल के पास गए, जो एक कुर्सी पर बैठा था, और उसे अपनी बैसाखी पर खड़ा होने के लिए कहा। उन्होंने सामने और पीछे से उस पर क्रॉस का चनिह बनाया और कहा: "भगवान के साथ जाओ। ईश्वर तुम्हें आशीर्वाद देंगे। अब आप ऑपरेशन करवा सकते हैं, या आप न कराने का विकल्प चुन सकते हैं।" और वह उससे दूर चला गया। दो हफ्ते बाद, एक पड़ोसी जो डॉक्टर था, मशिा को यह तय करने के लिए जांच के लिए अस्पताल ले गया कि क्या उसे ऑपरेशन की जरूरत है। फॉलो-अप एक्स-रे में ठीक होने के स्पष्ट संकेत मिले - एक गांठ बन गई थी और हड्डी ठीक होने लगी थी। ऑपरेशन अनावश्यक साबित हुआ।

उसी महिला की पोती, तान्या, को एक कार ने टक्कर मार दी और उसकी टांग और श्रोणिकी हड्डियाँ टूट गई। यह घटना परम पवित्र ईश्वर की माता के स्वरुगारोहण की पूर्व संध्या पर हुई। हड्डियों के ठीक होने में बहुत समय लगा। उन्होंने इस बारे में अनास्तासिया की माँ को बताया, और उन्होंने पादरी को बताया। पादरी ने लड़की को प्रोस्फोरा का एक टुकड़ा दिया और उसे पवित्र कम्युनियन देने की पेशकश की, जो कर दी गई। पुरोहिता ने तान्या से पूछा कि क्या उसने क्रॉस पहना है... उन्होंने कहा, "वह अपने पापों के लिए पीड़ा सह रही है, लेकिन कोई बात नहीं, वह धीरे-धीरे ठीक हो जाएगी।" और ऐसा ही हुआ।

मारिया फ़योदोरोव्ना

मेरे पति एक अवशिवासी, एक कम्युनिस्ट थे, और वे अक्सर शराब पीते थे। जीवन भावनात्मक और आर्थिक रूप से दोनों ही तरह से कठिन था। जब होश में होते थे, तो मेरे पति बहुत दयालु थे, लेकिन जब नशे में होते थे, तो वे मेरे विश्वास के लिए मेरा उत्पीड़न करते थे और भयंकर लड़ाई करते थे। वे आइकन (पवित्र चित्रों) पर चलिंलाते थे: 'आह! ये छोटे-छोटे देवता! मैं उन्हें सब बाहर फेंक दूँगी!' और मेरी माँ कभी-कभी कहती थी: "तुमने उन्हें वहाँ नहीं रखा, इसलिए उन्हें बाहर फेंकना तुम्हारा काम नहीं है।" मेरे पतिजी ने मुझे 'अपरत्याशति आनंद' की प्रतमा दी; मैंने उसे अलमारी में, एक छपि हुए स्थान पर रख दिया, ताकि वह दिखाई न दे। वहीं मैं चोरी-छपि प्रार्थना करती थी।

एक दिन, पादरी ने मुझसे पूछा कि मैं कैसी हूँ। मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया और कहा, "मुझे लगता है कि मैं उससे अलग हो जाऊँगी।" लेकिन पादरी ने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा; कभी वह मुझे एक सेब दे देते, कभी बसिकुट। और इस तरह समय बीतता गया।

और फिर एक दिन मैं घर आई तो घर सन्नाटे में था। मैंने बैठक का दरवाज़ा खोला, और वहाँ मेरा पति खुला अलमारी के पास एक आइकन के सामने घुटने टेककर, आधा नशे में, प्रार्थना कर रहा था: 'हे अच्छे राजा, हे अच्छी माँ...' - लेकिन उसे आगे क्या कहना है, वह नहीं जानता था; वह बस उसी एक पंक्ति को दोहराता रहा। मैंने पूछा, 'तुम वहाँ घुटने क्यों टेक रहे हो?' और उसने जवाब दिया: "क्या तुम नहीं देख सकती कि मैं प्रार्थना कर रहा हूँ? मुझे पता है कि वहाँ एक आइकन है।" बस ऐसे ही, उस साधु की प्रार्थनाओं की बदौलत, वह डर के मारे काँप गया, और प्रार्थना करने लगा। लेकिन वह केवल शराब पीने के बाद ही प्रार्थना करता था; जब वह होश में होता, तो उसे बहुत संकोच होता था। उसके बाद, वह हंगामा करना बंद कर गया और आइकन को फेंक नहीं पाया। कुछ देर बाद, उसने अचानक कहा, 'मारिया, चलो शादी कर लेते हैं।' मैं हैरान रह गई; मुझे विश्वास नहीं हुआ, और मैंने कहा, 'लेकिन तुम लोगों को उनके धर्म के लिए सता रहे हो।' और उसने जवाब दिया, 'चलो शादी कर लेते हैं और हम एक बेहतर जीवन जिएंगे। अपने लिए एक ड्रेस सलि लो।'

और उसने सभी बच्चों को भी इस विचार के लिए राजी कर लिया। मैं पादरी के पास गई, उन्हें जो हुआ था वह बताया, और उन्होंने कहा, 'तो यह अच्छी बात है, ज़रूर आओ।'

फादर अलेक्जेंडर कर्विनोसोव ने हमारी शादी कराई, और मेरे पति बदलने लगे। उन्होंने देखा कि मैं बुधवार और शुक्रवार को मांस नहीं खाती थी, इसलिए वह मुझसे पहले काम से घर आकर रात के खाने के लिए कुछ लेंट का खाना बनाते थे। उसके बच्चे उससे पूछते, "पापा, आप लेंट का खाना क्यों बना रहे हैं?" और वह जवाब देता, "अच्छा, जाहिर है—हमारी माँ इसे नहीं खा रही हैं, तो हम भी उपवास रखेंगे।"

कुछ समय बीता, और मेरे पति को फ़्लू हो गया और उन्होंने कहा, 'हमारे परिवार में सभी की मौत अचानक होती है।' हमने उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया - उन्होंने फेफड़ों में एक धुंधलापन का पता लगाया जो कैंसर में बदल गया था। ऑपरेशन से पहले, वह घबराहट के साथ पाप-स्वीकार के लिए गए, उन्होंने रोगियों का अभिषेक प्राप्त किया, पवित्र Communion ली, ऑपरेशन करवाया, और चल बसे। उनकी मृत्यु के बाद, मैंने एक सपना देखा: मेरा पति घर आया, और मैंने उससे कहा, 'पेट्या, एक ड्रकि लो,' और उसे व्हिस्की का एक गिलास दिया। उसने उसे लिया, धुलाई के बेसिन के पास गया, उसे फेंक दिया और कहा, 'हम यहाँ शराब नहीं पीते।' इस तरह, एल्डर की प्रार्थनाओं के माध्यम से, प्रभु ने मेरे पति को मोक्ष की ओर ले गए।"

ओल्गा फ़योदोरोव्ना

फादर हमेशा हमें अपनी छुट्टियाँ इस तरह लेने का आशीर्वाद देते थे कि पहले दो सप्ताह ग्रेट लेंट (महान उपवास) के अंतमि दो सप्ताह के साथ और छुट्टियों के अंतमि दो सप्ताह ईस्टर के बाद के दो सप्ताह के साथ मेल खाते थे। और 1966 में, मैंने 1 अप्रैल से अपनी छुट्टियाँ लीं। 1 अप्रैल की रात, युलेचका ने मुझे चर्च से फोन किया:

"ओल्गा फ्योदोरोवना, फादर अस्वस्थ हैं। पेट्रो आपको लेने आ रहा है; तैयार हो जाइए।" मैंने दवाइयाँ इकट्ठी कीं और नकिल पड़ी। मैं फादर की मृत्यु के बाद तक घर वापस नहीं आई।

पतिजी अपने जीवति रहते हुए सभी के लिए प्रार्थना करते थे, और अपनी मृत्यु के बाद भी प्रार्थना करना और मदद करना जारी रखते हैं। इसे प्रमाणित करने के लिए, मैं दो सपनों का वर्णन करूँगी।

पतिजी की मृत्यु के बीसवें दिन, मैं मॉस्को में एक आधिकारिक दौरे पर थी। और इस प्रकार, मॉस्को समय के अनुसार सुबह 1.30 बजे (और यहाँ करागांडा में सुबह के 4.30 बज चुके थे, यानी पतिजी के नधिन का समय), वह मुझे सपने में दिखाई दिए - प्रसन्न, मुस्कुराते हुए, और कह रहे थे: "ओल्गा फ्योदोरोवना, प्रभु तुम्हें हर चीज़ के लिए बचाएँ, हर चीज़ के लिए," - और उन्होंने मेरी ओर हाथ हलिया। मैं कुछ कहना चाहती थी, लेकिन जागने से पहले कह नहीं पाई। मेरा दिल इतनी खुशी से भर गया, जैसे मैंने पतिजी को जीवति देख लिया हो।

जनवरी 1994 में, मैंने पतिजी को फरि से सपने में देखा। ऐसा लग रहा था जैसे मैं चर्च में हूँ; प्रार्थना सभा समाप्त हो चुकी थी, और सभी लोग जा रहे थे। कई लोग, जसिमैं मैं भी शामिल थी, पतिजी का आशीर्वाद लेने के लिए गेटहाउस की ओर बढ़े। वहाँ मैं फादर की नौकरानी, वेरा से मिली, और कहा: "वेरा, फादर से मिलने अंदर जाओ, जो करना है वह करो, और फरि पूछना कि मैं भी अंदर आ सकती हूँ।" वेरा ने कहा: "ठीक है, ओल्गा फ्योदोरोवना," और सेल में चली गई। कुछ देर बाद वह बाहर आई और बोली, "अंदर आइए, ओल्गा फ्योदोरोवना, फादर ने अनुमति दे दी है।" मैंने उसे धन्यवाद दिया और फादर से मिलने अंदर चली गई। वह अपनी कोठरी के सामने वाले कोने में, उद्धारकर्ता के आइकन के सामने, एक छोटी मेज़ पर झुके हुए बैठे थे। उन्होंने एक सुंदर नया कासोक (पादरी का चोगा) पहना हुआ था, जसिका कनिरा फर्श तक लटक रहा था, और एक नया ही कामेलाउक (हुड वाला पादरी का वस्त्र) भी पहना था। ऐसा लग रहा था मानो फादर कहीं से आए हों लेकिन अपने कपड़े नहीं बदले थे (वह आमतौर पर अपना कासोक और कामेलाउक तुरंत उतार देते थे)। वे गंभीर देख रहे थे। मैं फादर के पास गई, घुटने टेककर बोली, 'मुझे आशीर्वाद दीजिए, फादर।' उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया; मैंने उनका हाथ चूमा और महसूस किया कि वह गरम और नरम था, मानो जीवति हो। मैंने अपना चेहरा उनके हाथ से सटा लिया और कहा, 'फादर, मेरे प्रिय, आपको देखे हुए मुझे बहुत समय हो गया है; मैंने आपको बहुत याद किया है,' - और मुझे गले में एक गांठ महसूस हुई और मुझे एहसास हुआ कि मैं रो पड़ूँगी। लेकिन फादर ने सनेह से मुझसे कहा, 'अरे, वैसे भी, मैं तो हर दिन यहाँ होता हूँ।' मैंने सोचा: 'ऐसा कैसे हो सकता है? आखिरकार वह 'वहाँ' है' - और कहना शुरू किया: 'लेकिन पतिजी, आप...' - लेकिन पतिस्वर ने मुझे बीच में ही टोक दिया और कहा: 'हाँ, हाँ। मैं वहाँ और यहाँ, दोनों जगह हूँ, लेकिन मैं हर दिन यहाँ हूँ।' उन्होंने ये शब्द स्पष्ट और विश्वसनीय ढंग से कहे। और मैं जाग गया।

इस तरह, पतिजी ने मुझे और दूसरों को यह स्पष्ट कर दिया कि वह हमें नहीं छोड़ते, कि वह अपने झुंड पर बारीकी से नज़र रखते हैं, कि वह इस धरती पर हमारे साथ हैं, और हम मदद और मार्गदर्शन के लिए हमेशा प्रार्थना में उनकी ओर मुड़ सकते हैं।

राइसा इवानोवना कुज़्मचेवा

हमारे परिवार को 1931 में करसक क्षेत्र से नरिवासति कर दिया गया था। मेरी माँ और पतिजी, दो छोटे बच्चे और मेरी सास। उन्हें कोम्पानेयस्क, एक बंजर मैदान में ले जाया गया। जहाँ तक आँख देख सकती थी, क्षतिजित तक एक भी झाड़ी या पेड़ नहीं था। पहले, पुनर्वासियों ने अस्थायी झोपड़ियाँ बनाईं, फिर उन्होंने जमीन में खोदकर घर बनाए। स्वच्छता की स्थिति दयनीय थी: न तो कपड़े थे, न ही भोजन, और पूरे बस्ती के लिए सिर्फ एक ही कुआँ था, जसिसे वे टनि के डबिबे से पानी निकालते थे। लोग झुंड के झुंड मर रहे थे। मेरे माता-पिता ने अपने दो बच्चों और मेरी सास को दफनाया। उन्हें फटे-पुराने कपड़ों में लपेटकर एक सामूहिक कब्र में दफना दिया गया। मेरे माता-पिता बिल्कुल अकेले रह गए। यह बताना असंभव है कि उन्होंने क्या-क्या सहा। सबसे कठिन वर्ष 1931, 1932 और 1933 थे। उसके बाद, हालात आसान हो गए। उन्होंने खोदे गए घरों के पास सब्जी की क्यारियाँ लगाईं, और लोगों को राशन कार्ड पर रोटी मिलने लगी। मेरा जन्म 1935 में हुआ था, और मेरे भाई निकोलाई का जन्म 1938 में हुआ था। 1939 में, माँ ने फादर सेवेस्टियन के बारे में सुना; वह मेरे भाई को बोलशाया मखाइलोव्का ले गईं, और फादर सेवेस्टियन ने उसका बपतिसिमा दिया। फादर सेवेस्टियन खुद अभी भी बहुत कमजोर थे; उस समय उन्हें अभी-अभी डोलकि से रहित किया गया था। जब युद्ध शुरू हुआ, तब हमने मुश्किल से थोड़ी सी रोटी खाई थी। हमारे पिता की स्टालनिग्राद में मौत हो गई। जहाँ तक मेरी माँ का सवाल है (वह एक बहुत ही धार्मिक महिला थीं), जब उन्हें यह खबर मिली, तो वह बेशक बहुत रोई, और तुरंत ईश्वर से यह व्रत लिया कि वह फिर कभी मांस नहीं खाएंगी। और उन्होंने अपने बाकी जीवन में कभी मांस नहीं खाया।

युद्ध के वर्षों के दौरान, फादर हमसे मिलने को मजबूर करने आने लगे। वह सभी वधियाओं और अनाथों को अपने पास इकट्ठा करते और उनकी मदद करने की कोशिश करते, भले ही वह खुद बहुत गरीबी में रहते थे। उनके आने के दिन, माँ मुझे छत पर चढ़ने के लिए कहतीं और कहतीं कि देखो फादर रेलवे स्टेशन से हमारे घर तक कैसे पैदल चलकर आ रहे हैं। मुझे याद है कि वह कैसे चलता था - सफेद दाढ़ी, सफेद बाल, हल्के रंग का ओवरकोट, एक धूसर टोपी, और एक बैसाखी के सहारे चलता था। माँ वरिया और माँ गुरुशा उसके साथ होती थीं, और हर कोई आशीर्वाद पाने के लिए फादर की ओर दौड़ रहा था। लेकिन मैं सीधा माँ की ओर भागा, और माँ ने मुझे 15वीं बस्ती में यह बताने के लिए भेजा कि पतिजी आ गए हैं। जब भी वह आते, हमारे लिए यह एक उत्सव होता था।

हमारा परिवार किसी तरह गुजारा करके रहता था। दिन-रात, पैराफनि के दीये की रोशनी में, माँ मुझे और मेरे भाई को खिलाने के लिए अपनी सिलाई मशीन पर काम करती रहती थीं। पतिजी यह जानते थे। और 1942 से, उन्होंने मुझे स्कूल की छुट्टियों के दौरान नजिन्याया स्ट्रीट पर अपने घर रहने के लिए बुलाना शुरू कर दिया। शायद उन्होंने यह इसलिए किया था ताकि एक आधा-भूखे बच्चे को खाना खिला सकें और उस ईश्वर में मेरे विश्वास को मजबूत कर सकें जो मेरी माँ ने मुझमें जगाया था। वे मेरे बचपन के सबसे खुशहाल दिन थे। वहाँ जाने की रेल यात्रा के दौरान भी, आने वाली मुलाकात की प्रत्याशा में खुशी से मेरा दिल धड़कन छोड़ देता था। और जब मैं उस छोटे, साफ-सुथरे घर की दहलीज पर कदम रखता, जहाँ मटिटी के फर्श पर टारपोलिन और रंग-बरंगे बुने हुए गलीचे बछे होते थे, तो मुझे वह पृथ्वी पर सबसे अद्भुत जगह लगती थी, और उसके नविसी - साक्षात् देवदूत। मैं उन्हें आदर की दृष्टि से देखती थी। मदर गुरुशा, मदर वार्या, मदर फेक्ला - लंबे, साफ-सुथरे कपड़ों में, सफेद एप्पन से कसे हुए, सफेद दुपट्टे ओढ़े, वनिमर और मलिनसार। वे हमेशा नरमी से बोलती थीं, अपनी आवाज़ कभी ऊँची नहीं करती थीं। रसोई में एक सफेद, एकदम साफ चादर के नीचे पादरी का बसितर पड़ा था, जबकि कमरे में, एक-दूसरे से सटे हुए, तीन और बसितर थे जिन पर पादरी की पतनियाँ सोती थीं। कतिनी उदार आत्मा होगी उस व्यक्तिकी जिसने इतनी तंग जगह में रहते हुए एक अजनबी के बच्चे को रहने के लिए बुलाया, जबकि वह बच्चा सरिफ असुवधि और परेशानी ही लाता था! और, जाहरि है, मैं अकेली नहीं थी जसै पापा ने बुलाया था। घर में हमेशा लोग रहते थे, जिनमें बच्चे भी शामिल थे। कुछ चले जाते थे, और दूसरे आ जाते थे।

मुझे भरपेट खाना मिलता था और स्नानागार भी ले जाया जाता था। पादरी और मैं अक्सर जेलेंस्ट्रोय जाते थे। वहाँ पादरी का गर्मजोशी से स्वागत किया जाता था, और वह मुझे दिखाते हुए, स्नेह से मुस्कुराते हुए कहते थे: 'इस छोटी लड़की को देखो - वह तो पहले ही तीसरे साल में है!'

बचपन में फादर को जानने के बाद, मैं यह देखे बनि नहीं रह सकी कि वह दूसरे पादरियों से कतिना अलग थे। उस समय, डोलका से रहि हुए अन्य हिएरोमोंक्स हमारे इलाके में रहते थे: फादर कफि, फादर मकरयि, फादर पारफेनयि, फादर केसरीय और फादर पारमेन। वे सभी अच्छे पादरी थे, लेकिन उनमें से किसी ने भी फादर सेबेस्टियन जैसी श्रद्धा की भावना नहीं जगाई। उनसे कृपा की लहरें फूटती थीं, और हर कोई इसे महसूस कर सकता था। यहाँ तक कि फादर का रूप-रंग भी असाधारण था: एक गरमिमय, आध्यात्मिक चेहरा, तीखी काली आँखें, और एक बच्चे के बालों की तरह रेशमी बाल। फादर बहुत ही चतुर और वचिरशील थे; उन्होंने कभी किसी को अपमानित, नीचा नहीं दिखाया या किसी से बात करना बंद नहीं किया, और न ही उन्होंने कभी किसी व्यक्तिकी शारीरिक कमियों की ओर ध्यान आकर्षित किया। और फादर की उपस्थिति में, किसी के बारे में यह कहने का ख्याल भी किसी के मन में नहीं आता था कि वह बहरा, अंधा, लंगड़ा या इसी तरह का है। पतिजी के चारों ओर उच्च नैतिक चरित्र का एक आभासमंडल था; एक बार उनकी उपस्थिति में आ जाने के बाद, दुष्टता से काम करना या असभ्यता से बात करना असंभव था। उनका कोई विशेष चहेता नहीं था; वे सभी के साथ समान व्यवहार करते थे, और इससे लोग और भी करीब आ जाते थे। हर जगह, हमेशा और हर चीज में, पतिजी शांत और वनिमर रहते थे, और वे तो भले काम भी चुपचाप करने की कोशिश करते थे। कभी-कभी आप आशीर्वाद के लिए उनके पास जाते, और वे बहुत ही सूक्ष्म रूप से आपके हाथ में एक सकिका, जसै चार भागों में मोड़ा गया होता, रख देते। अक्सर, जब वे हमारे घर आ जाते, तो शाम को बसितर लगाते समय हमें चादर के नीचे पैसे मिलते थे। माँ गुरुशा ने उन्हें वहाँ पतिजी के कहने पर रखा होता था। जाहरि है, पतिजी यह दूसरों के प्रति अपनी संवेदनशीलता के कारण करते थे, ताकि किसी को शर्मिदा न करना पड़े या उन्हें सार्वजनिक रूप से धन्यवाद देने के लिए मजबूर न होना पड़े। पतिजी को जानने के 23 वर्षों में, मैंने उन्हें एक बार भी खुद की प्रशंसा करते या दूसरों के लिए खुद को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते नहीं सुना। वह आत्म-प्रशंसा और आत्म-संतोष से पूरी तरह रहति थे। इसके विपरीत, वह अक्सर कहते थे: 'मैं कम पढ़ा-लिखा आदमी हूँ; मैंने स्कूल में केवल चार साल पढ़ाई की है, और न तो मुझमें वाक्पटुता का वरदान है और न ही मेरी आवाज़ अच्छी है।' वह आमतौर पर अपने प्रवचन एक

कतिब से पढ़ते थे, और उसमें अपनी ओर से कुछ भी नहीं जोड़ते थे। और अपने आध्यात्मिक बच्चों के साथ मेज पर बैठते समय, वह कभी-कभी कोई कहानी सुनाते थे, लेकिन शांत और वनिम्रता से, बना खुद को दिखाए।

1951 में, पतिजी ने हमें मेलकोम्बानात में एक छोटा सा घर खरीद कर दिया। इस समय तक, पतिजी की कृपा से, कई श्रद्धालु पहले ही करागंडा के वभिन्न हिस्सों: माइकुडुक, तकिनोव्का, प्रशिखत्सिक और कोम्पानेयस्क से मेलकोम्बानात आ चुके थे। ज्यादातर ये परिवार थे - या, अधिक सटीक रूप से, परिवारों के अवशेष - जो 1930 के दशक की शुरुआत में झेली गई जबरन पुनर्वास की तरासदी से बच निकले थे। मेलकोम्बानाट के नविसी वे लोग थे जिनके दिल दुखों से थके हुए थे, जिनकी ज़िदगियाँ बखिर चुकी थीं, जिनमें वधिवा पत्नियाँ और अनाथ बच्चे शामिल थे। प्रत्येक की अपनी पीड़ा थी, अपने भावनात्मक घाव थे। ऐसे लोग थे जिनका स्वभाव कठिन था—मनमौजी, संदेहपूर्ण, आक्रामक, अलग-थलग रहने वाले। लेकिन फादर ने हर पीड़ित आत्मा तक पहुँचने का एक तरीका खोज लिया। वरिष्ठ के आसपास कई मठाधीश भी थे, जिनमें सताव के वर्षों के दौरान करागंडा में नरिवासति किया गया था या जो बाद में मध्य रूस से उनके पास आए थे। उन्होंने करागंडा चर्च की रीढ़ की हड्डी का गठन किया। उनमें अनूठे, प्रतभाशाली व्यक्तित्व, जो उच्च आध्यात्मिक भक्तिकी जीवन जीने वाले तपस्वी थे। कुल मिलाकर, यह एक मजबूत ईसाई समुदाय था, एक कज़ाख स्टेप 'स्केट', जसि ऑप्टिना के एल्डर ने नास्तिक साम्यवादी शासन के दौरान करांडागा शिविरों की पवतिर भूमि पर संगठित करने और पोषित करने में सफलता हासिल की थी।

मुझे याद है कि कैसे, 1954 में, मैंने पहली बार क्रसिमस की पूरी रात की प्रार्थना सभा सुनी थी। जसि घर में यह सेवा हो रही थी, उसमें प्रवेश करते ही, मैंने मदर वरिया, मदर गुरुशा, मदर पाशा और क्सेनया इवानोव्ना को पुजारी के कमरे के सामने वाले कोने में खड़ा देखा। काले उत्सव के गाउन पहने, सुंदर, भव्य और गरमापूरण, स्वरगदूतों जैसी आवाजों के साथ, उन्होंने सामंजस्यपूर्ण और श्रद्धापूर्वक गाया: 'ईश्वर हमारे साथ है; हे अन्यजातियों, यह समझो, और स्वयं को समर्पित करो, क्योंकि ईश्वर हमारे साथ है।' यह इतना सुंदर गायन था कि मैं मंत्रमुग्ध हो गया; मेरी रीढ़ की हड्डी में सहिरन दौड़ गई, और मेरी आत्मा आनंद और प्रकाश से भरकर आनंदित हुई। मैं वहाँ चुपचाप खड़ा रहा, दुनिया की हर चीज़ को भूल गया, और खुशी से चुपचाप रो पड़ा।

मुझे यह भी याद है कि कैसे, 1960 के दशक की शुरुआत में, मौड़ी गुरुवार की शाम को, बारह सुसमाचारों के पाठ के बाद, मेलकोम्बानाट के सभी कर्मचारी चर्च से बांध के पार जलती हुई मोमबत्तियाँ लेकर चले थे। रात शांत थी और हम ऐसे ही काफी देर तक चलते रहे, जबकि मोमबत्तियाँ स्थिर और तेज़ी से जल रही थीं। यह एक मार्मिक और भव्य दृश्य था। लेकिन इस जुलूस की सच्ची भव्यता लोगों की आध्यात्मिक एकता में निहित थी। यह एकता सभी मामलों और घटनाओं में स्पष्ट थी - चाहे वे बड़े हों या छोटे, सुखद हों या दुखद। इसलिए समुदाय के सदस्यों के अंतिम संस्कार में हमेशा बड़ी संख्या में लोग शामिल होते थे। किसी से पूछा या मनाया नहीं जाता था; हर कोई अपनी मर्जी से आता था, क्योंकि वे जानते थे कि यह सभी का पवतिर करतव्य था। मुझे याद है जब 1960 में क्जेनया इवानोव्ना डोलगोवा की मृत्यु हुई थी; उन्होंने उन्हें अपने कंधों पर उठाया और उनके घर से चर्च तक, लगभग सात किलोमीटर की दूरी तक, रास्ते भर गाते रहे।

मैं अपने बारे में क्या कहूँ? मैं अब 61 साल की हूँ। फादर के आशीर्वाद से, मैंने अपनी पूरी ज़िदगी एक नरस के रूप में काम किया है और चर्च के गायन मंडल में गाया है। और मेरे दिल में फादर सेवासयिन के प्रतिकृतज्वता की एक नरितर भावना है, जिनोंने इतनी पतिसुलभ और स्नेहपूर्ण तरीके से मेरे जीवन को ईश्वर और मेरे पड़ोसी के प्रति ईसाई प्रेम के मार्ग पर नरिदेशित किया।

तात्याना व्लादमिरोवना टॉरटनस्टेन

मुझे 1952 में जेल से रहित किया गया था। मुझे मास्को अपने घर लौटने की अनुमति नहीं थी। पहले, मैं कोचेताव में बसना चाहती थी। वहाँ का मौसम सुखद, स्वस्थ और जंगल था, लेकिन वहाँ मेरे कोई दोस्त नहीं थे। हालांकि, मेरी सबसे करीबी दोस्त, डॉ. आर. जी. एल., छह महीने पहले ही करागंडा में बस गई थी; हम कैप अस्पताल में आठ साल तक साथ काम कर चुके थे और पांच साल तक एक ही कमरे में रहे थे। हमने एक साथ बहुत कुछ सहा था। इसलिए मैं 31 अगस्त 1952 को उनसे मिलने के लिए करागंडा गया। मुझे यहाँ बसे हुए दूसरे दोस्त भी मिले। और इस तरह मैं कोयले से सनी, धूल-भरी, कोयले से भरी करांडागा में ही रह गया, जहाँ खदानों के कचरे के ढेरों पर जलती हुई बैंगनी गैस की बत्तियाँ थीं। अब मुझे कोकेचेव की साफ, चीड़ की खुशबू वाली हवा आकर्षित नहीं करती थी; मैं अपने परखे हुए और सच्चे दोस्तों की दोस्ताना गर्माहट और भावनात्मक निकटता को छोड़ना नहीं चाहता था, और मुझे एक ऐसा काम मिल गया जो मेरे अनुकूल था।

अक्टूबर के दूसरे भाग में, आर. जी. मलेरिया से गंभीर रूप से बीमार पड़ गई; उनका 40-41° का बुखार थोड़ी देर के लिए उतरता, और फिर उतनी ही गंभीर दूसरी लहर शुरू हो जाती। जब लहरों पर काबू पा लिया गया, तो उन्हें अचानक तीव्र साइकोसिस के कारण गंभीर भ्रम होने लगा।

वह मुझसे कुछ दूरी पर एक अलग इलाके में रहती थी। उसकी बेटी उससे नपिट नहीं पा रही थी, इसलिए एक एम्बुलेंस को बुलाया गया, और उस रात वह उसे 20 किलोमीटर दूर कोम्पानेयस्क में एक मनोरोग अस्पताल ले गई। जब हम उसकी बेटी के साथ वहां पहुंचे, तो हम पूरी तरह से स्तब्ध और हताश थे। वह अपने होश में नहीं थी; वह भयानक लग रही थी। वह एक जानवर की तरह थी: हमारे हाथों से लाया गया खाना छीन लेना, उसे जितनी तेजी से हो सके अपने मुँह में ठूँस लेना, और फिर और खाना पकड़ लेना। फिर वह चारों पैरों पर रेंगते हुए हमारे चारों ओर घूमने लगी। वार्ड के कर्मचारी उसे लेकर उसके वार्ड में चले गए।

उसकी बेटी फूट-फूट कर रो रही थी। मैं उसे अपने फ्लैट पर ले गया। हम पूरी तरह से टूटकर और थककर पहुंचे, और खुद को ही एक अजनबी लग रहे थे। मेरी मकान मालिकानि ने, यह सुनकर किकिया हुआ था, मुझसे कहा: "हौसला मत हारो। मेरी यह सलाह मानो: कल मखाइलोवका जाओ। वहाँ एक पादरी रहते हैं—एक भिक्षु—और वे बहुत असाधारण हैं। उनसे मदद माँगो; वे प्रार्थना करेंगे और तुम्हारे बीमार रश्तिदार की मदद करेंगे। वहाँ जाओ—हचिकचाओ मत और डरो मत।"

अगले ही दिन मैं मखाइलोवका गया। गुरुशा की माँ ने मेरे लिए दरवाजा खोला; पतिजी घर पर नहीं थे। मैंने उसे बताया कि मैं क्यों आया हूँ। वह मुझसे बहुत मलिनसार थी और बोली, 'हाँ, तुम्हें वाकई फादर से बात करनी चाहिए, उन्हें बताओ कि क्या हुआ है और मदद माँगो।' उसने मुझे वह पता दिया जहाँ वह सेवा करने गया था और कहा, 'उस घर के बाहर एक बेंच है। उस पर बैठो और वहीं इंतज़ार करो। जब आपको घर के अंदर से गाने की आवाज़ सुनाई दे, तो इसका मतलब है कि स्मृत-भोज समाप्त हो गया है, और फादर तुरंत बाहर आ जाएँगे। हो सकता है कि वह आपसे बात करने के लिए न रुकें—उन्हें सड़क पर रुकना पसंद नहीं है—लेकिन उनके बगल में-बगल में चलें और उन्हें अपनी बात बताएं। भले ही वह चल रहे होंगे, वह आपकी बात सुनेंगे।"

ठीक ऐसा ही हुआ। मैं बेचैनी से बेंच पर बैठ गया; फिर घर के अंदर से गायन शुरू हुआ, और जैसे ही उनका गायन खत्म हुआ, एक छोटा, बुजुर्ग आदमी, जिसकी दाढ़ी धूसर थी, जो एक लंबा काला कोट और एक काली टोपी पहने था, सीधे दरवाजे से बाहर आ गया। मेरी ओर देखे या मेरी तरफ़ नज़र घुमाए बिना, वह हल्के, तेज़ कदमों से सड़क पर चल पड़ा। मैं उसके बगल में चलता रहा और उसे अपनी परेशानियों के बारे में बताया। वह बिना अपनी चाल धीमी कएि, चुपचाप चलता रहा, लेकिन ध्यान से मेरी बात सुनता रहा। जब मैंने उनसे मदद माँगनी शुरू की, तो वे रुके, अपनी दयालु, असाधारण आँखों से मेरी ओर देखने लगे, उनकी नज़रें सीधे मेरे दिल में उतर गईं, और उन्होंने धीरे से, साधारण स्वर में कहा: 'वह ऑर्थोडॉक्स नहीं है, है ना? वह एक अवशिवासी है।' मैं हक्का-बक्का रह गया। 'हाँ,' मैंने कहा, 'वह एक लूथरन है। वह आस्था के खलिफ नहीं है, लेकिन वह इससे बहुत दूर है।' पुजारी पहले से ही उसी तेज़ रफ़्तार से चल रहे थे। "इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वह लूथरन है," पुजारी ने कहा। "ठीक है, मैं प्रार्थना करूँगा। दो-तीन दिनों में उससे मिलिए, और आप भी मन लगाकर प्रार्थना करना। खैर, अब मुझे इस घर के लिए निकलना होगा। अलविदा।"

तीन दिन बाद रविवार था, और सुबह-सुबह हम अस्पताल, कोम्पानेयस्क के लिए ट्रेन से चल दिए। आँगन में, एक नर्स हमसे मिली और मुस्कुराई। उसने कहा, "मेरे पास आपके लिए कुछ अच्छी खबर है, आपकी मरीज़ दो दिन पहले 'होश में आ गई'; उसे पहले ही स्वास्थलाभ कक्ष में स्थानांतरित कर दिया गया है—वहाँ वह इमारत, बाईं ओर से दूसरी—अंदर चले जाइए। उसे देखकर आपको बहुत खुशी होगी।"

हमें सीधे वार्ड में ले जाया गया। आर. जी. अपने बसितर पर बैठी थी, उन्होंने बाल संवारे हुए थे, वे साफ-सुथरी और सलीकेदार दखि रही थीं, उन्होंने एक नया ड्रेसिंग गाउन पहना हुआ था, उनके चेहरे पर वही हमेशा वाला भाव था, और वे चाय पी रही थीं। हमें देखकर वे बहुत खुश हुईं। उसने हमसे पूछा, "मैं यहाँ कैसे पहुँच गई? मेरे साथ क्या हुआ?" बेशक, हम बहुत खुश और हैरान थे—सरिफ़ दो दिनों में इतना बदलाव।

अगले दिन मैं काम नहीं कर सकी, और अपनी राउंड के तुरंत बाद मैं फादर को धन्यवाद देने अस्पताल से चली गई। घर पर, वह सड़क पर जतिने अलग थे, उससे बलिकुल अलग थे - स्नेही और मलिनसार। उन्होंने मुझे दोपहर के भोजन के लिए रुकने के लिए आमंत्रित किया, मुझे कहानियाँ सुनाई, उनका मनोबल ऊँचा था, और उन्होंने मुझसे हर तरह के सवाल पूछे।

मदर गुरुशा ने मुझे एक पता दिया जहाँ मैं फादर की रात की सेवाओं के लिए आने पर रह सकती थी। जल्द ही मैं फादर की देखभाल करने वाली डॉक्टर और उनकी आध्यात्मिक बेटी बन गई। मेरे जीवन ने एक बलिकुल अलग मोड़ ले लिया। मैं 'फादर की पत्नी' बन गई।

मैं एक बड़ी वपितृत्वा का सामना कर रही थी; एक बड़ी परीक्षा मेरे सामने आई, और यह पूरी तरह से मेरी ही गलती थी। मैं चर्च पहुँची; फादर सेवा कर रहे थे। मैं दाहनी ओर के कोरस लॉफ्ट के पीछे, सबसे दूर के कोने में गई, घुटने टेककर बहुत जोर-जोर से रोते हुए आँखें मूंदकर प्रार्थना करने लगी। अचानक, जैसे झटका लगा हो, मैंने अपना सरि उठाया और देखा कि फादर गायन मंडली के कोने में खड़े थे। या यूँ कहें कि मैंने उनकी आँखें देखीं। वे मुझे ध्यान से, गंभीर और चतिति होकर घूर रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि वे मेरे पास आए थे, मेरे मानसिक हालत को लेकर चतिति होकर, भले ही कोई भी मुझे उस कोने में नहीं देख सकता था। जब वह स्वयं प्रार्थना सभा का संचालन कर रहे होते, तो वे कभी चैन्सल पर नहीं आते थे। लेकिन अब वे मेरे लिए आए थे, मेरी मौन कहानी सुनने के लिए। मैंने उनकी आँखों में देखा और रो पड़ी, लेकिन अब दुख से नहीं, बल्कि 'प्रभु के प्रतिपवतिर प्रेम' से और इसलिए कि अपने आत्मा को पति के हाथों सौपना इतना आसान था। मेरा दुख दूर हो गया था; मेरी आत्मा आनंद से भर गई थी, इस एहसास से कि पादरी वहाँ थे और प्रभु सचमुच 'संतों के साथ वशिराम करते हैं'। पादरी पहले ही चले गए थे और वे वेदी से भजन-गायन का नेतृत्व कर रहे थे। वे यहाँ केवल एक पल के लिए आए थे। फरि भी मैं अपने घुटनों से उठ नहीं पा रही थी और चुपचाप रोती रही।

हैरिमोक फादर त्रिफोन टकिनोव्का गाँव में रहते थे। वह अक्सर फादर से मिलने आते थे और उनके गायन मंडली में गाते थे। चर्च के अभिषिक्त होने के बाद, फादर ने डीन की मदद से टकिनोव्का और फेदोरोव्का में प्रार्थना घरों का आयोजन किया, जिनकी सेवा फादर त्रिफोन ने फादर की आज्ञा से की। एक रविवार, प्रार्थना सभा के बाद, वह उसी दिन फेदोरोव्का जाने का आशीर्वाद लेने के लिए फादर के पास गए। फादर ने उन्हें ध्यान से देखा और उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा: "मैं आज खुद तुम्हें वहाँ भेजने की योजना बना रहा था। लेकिन तुम कार से नहीं जा सकते; सीधे जेलेंस्ट्रोय होते हुए पैदल जाओ।" उन्होंने यह सख्त लहजे में कहा। फादर त्रिफोन हैरान थे, क्योंकि जेलेंस्ट्रोय होते हुए रास्ता सबसे सीधा होने के बावजूद, पैदल यात्रा बहुत लंबी थी। लेकिन, बेशक, वह उस रास्ते पर चल पड़े जैसा कि फादर ने उन्हें आशीर्वाद देकर कहा था। रास्ता एक वृक्ष नर्सरी से होकर जाता था। जब फादर त्रिफोन उसे पार कर रहे थे, तो उन्हें रास्ते में एक भी व्यक्ति नहीं मिला। और अचानक, एक युवा, हट्टा-कट्टा आदमी अत्यधिक उत्तेजित अवस्था में कुछ घने झाड़ियों के पीछे से कूदकर बाहर आया, उसने फादर त्रिफोन की बांह पकड़ ली और उन्हें रास्ते से हटाकर जंगल में खींच ले गया। फादर त्रिफोन बहुत डरे हुए थे, लेकिन उन्हें आज्ञा माननी पड़ी और वे उसके पीछे झाड़ियों में तेजी से चले गए। "चलो, फादर, चलिए," वह आदमी चलते हुए कहता रहा, "मैं आपकी बहुत देर से प्रतीक्षा कर रहा हूँ; मैं पूरी तरह से थक गया हूँ।" "खैर," फादर त्रिफोन ने सोचा, "अब मेरी खैर नहीं।" जब वे जंगल के सबसे घने हसिसे में पहुँचे, तो उस आदमी ने फादर त्रिफोन का हाथ छोड़ दिया और कहा: "अच्छा, बैठिए, फादर, उस पेड़ की जड़ पर, मेरी बात सुनिए और मेरी तकदीर का फैसला कीजिए।" और उसने अपनी कहानी सुनानी शुरू की: "मैं अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता हूँ। वह जवान, सुंदर, बुद्धिमान और एक अच्छी गृहिणी है। हम आराम से, खुशी-खुशी एक साथ रहते हैं। हम बहुत चाहते हैं कि हमारे बच्चे हों, लेकिन हमारे कोई नहीं हैं। और फरि कल अचानक, मुझे एक नर्स से पता चला कि मेरी पत्नी ने पछिले हफ्ते गर्भपात करवा लिया था। मैं सारी रात जागता रहा, अपने ही विचारों में घुटता रहा – मेरी पत्नी घर पर नहीं थी; वह 24 घंटे की शफिट पर गई थी। खैर, मैंने सोचा, अगर उसने ऐसा किया है, तो इसका मतलब है कि बच्चा मेरा नहीं है, और वह मुझसे धोखा कर रही है। और अगर वह मेरा है, तो वह मुझसे प्यार नहीं करती और उसने मुझे छोड़ने का फैसला कर लिया है। तो वह इन सारे सालों से मुझसे झूठ बोल रही थी। और उस झूठ के लिए, और उस बच्चे को मारने के लिए – जसि बच्चे का हम बेसबरी से इंतजार कर रहे थे – मैंने तय कर लिया कि मैं उसे कभी माफ नहीं कर पाऊँगा। और मैंने तय कर लिया कि मुझे उसे मारना ही होगा। मुझे नहीं पता कि मैं सो गया था या सोचों में खो गया था, लेकिन मुझे एक बूढ़े आदमी का खयाल आया, जो कद में छोटा था लेकिन उसकी दाढ़ी बड़ी थी। और उसने मुझसे कहा: 'तुम यह सब क्या कर रहे हो? तुमने किसी से सलाह लिए बिना ही सब कुछ खुद तय कर लिया है। ऐसा करने का तरीका यह नहीं है। पहले सलाह लो। रास्ते में मल्लि पहले बूढ़े आदमी को सब कुछ बता दो। और ठीक वैसा ही करो जैसा वह तुमसे कहे; वरना, अपनी मौजूदा बेचैनी की हालत में, तुम कोई गलती कर सकते हो,' – और उसने यह बहुत सख्त लहजे में कहा।

मैं जागा, बसितर पर बैठ गया – वहाँ कोई नहीं था। फरि भी मैंने साफ-साफ एक आवाज़ सुनी थी। मैं बसितर से कूदा और अपनी पत्नी के अपनी शफिट से घर आने से पहले ही घर से बाहर भाग गया। मैं सड़क पर चल रहा था और सोच रहा था: 'मैं सड़क पर किसी से कैसे बात करूँगा, अपना दिल कैसे खोलूँगा? कौन मेरी सुनेगा और मेरी समस्या की तह तक जाएगा?' तो मैंने जेलेंस्ट्रोय जाने और किसी बूढ़े आदमी के आने का इंतजार करने का फैसला किया ताकि मैं उससे बात कर सकूँ। बस मुझे अपनी पत्नी के बारे में सच, पूरा सच, जैसा आप समझते हैं, बताओ। मुझे पता चल जाएगा

अगर तुम गोलमोल बातें कर रहे हो। जो भी तुम सोचते हो, वही ठीक-ठीक कहो, वरना तुम्हें भी इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

'आपका नाम क्या है?' फादर त्रिफोन ने पूछा। 'निकोलाई।'

'मैं आपके संरक्षक संत, संत निकोलस से प्रार्थना करूँगा। आखिर मैं एक भिक्षु हूँ। मैं प्रार्थना करूँगा कि चमत्कार करने वाले निकोलस हमें सच बताएँ।' और फादर त्रिफोन प्रार्थना करने लगे।

'तो फरि, कोल्या,' प्रार्थना के बाद उसने धीरे से कहा। 'तुम्हारी पत्नी पहले से ही पछता रही है। वह तुमसे प्यार करती है और तुम पर वफ़ादार है। वह अभी रो रही है, इस बात का अफ़सोस करते हुए कि वह कुछ समय और दुनिया की परवाह किए बिना आज़ाद रहना चाहती थी। वह तुम्हें बहुत मानती है।' शांत से घर जाओ, अपनी पत्नी को माफ़ कर दो। उससे सुलह कर लो और साथ में खुशहाल जीवन जियो।' वह आदमी ध्यान से सुन रहा था, और उसका चेहरा रोशनी से खलि उठा, जैसे उसका पागलपन उतर रहा हो। "तुम्हें जल्द ही एक बच्चा होगा। संत निकोलस ने मुझे यह सब बताया है; मैं अपनी ओर से नहीं बोल रहा हूँ।"

वह आदमी पूरे शरीर से काँपने लगा, फूट-फूट कर रो पड़ा और फादर त्रिफोन के पैरों पर गरि पड़ा, उनका धन्यवाद करते हुए और क्षमा याचना करने लगा।

'आखिरकार, अगर मैं अपनी पत्नी को मारने तक पहुँच गया होता, तो मैं तुम्हें भी मार सकता था! मैं तुम्हें गवाह होने के नाते डरता—मैं पागलपन की चपेट में था!' 'खैर, तो फरि जाओ, कोल्या, आराम से करो। शांत से जाओ। मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।' फादर त्रिफोन ने उस आदमी को वदिा किया और फ़्योदोरोवका की ओर बढ़ चले, यह महसूस करते हुए जैसे कि वे खुद में नहीं थे। उन्होंने सोचा, "यह कैसे हो सकता है, कि फादर ने मुझे जंगल से होकर जाने का आशीर्वाद दिया? वहाँ मेरा ऐसा खतरा इंतज़ार कर रहा था..." और जब वह फादर से मिला, तो उन्होंने मुसकुराकर उसका अभिवादन किया: "तो फरि, तुम अभी भी ज़िंदा हो?" – "हाँ, फादर, मैं अभी भी ज़िंदा हूँ, हालाँकि मैं मर भी सकता था," – फादर त्रिफोन यह देखकर दंग रह गए कि फादर को सब कुछ पता था। "फादर त्रिफोन, आप क्या कह रहे हैं? मैं तो पूरे समय प्रार्थना कर रही थी; आपको डर क्यों लगा? हमें दो आत्माओं को बचाना था, उन्हें ऐसे शैतानी जुनून से मुक्त करना था।" और फादर ने किसी को भी इसके बारे में किसी और को बताने से मना कर दिया। "जब तक मैं ज़िंदा हूँ, किसी से एक शब्द भी न कहना। लेकिन जब मैं मर जाऊँ – तब अपनी मर्ज़ी से करना।"

1955 में, एक वेदी सेविका, ससिटर मारिया को अपनी ऊपरी होंठ में दर्द होने लगा। बढ़ते ट्यूमर के कारण उनकी होंठ विकृत हो गई थी और नीली पड़ गई थी; ससिटर मारिया को एक सर्जन के पास ले जाया गया। उन्होंने कहा कि सर्जरी की तुरंत जरूरत है और उन्होंने उसे ऑन्कोलॉजी विभाग के लिए रेफर कर दिया। मदर मारिया ऑपरेशन के लिए उनकी आशीर्वाद लेने के लिए साधु के पास गई, लेकिन उन्होंने कहा: "ट्यूमर पहले से ही बड़ा है; वे होंठ काट देंगे, लेकिन यह कहीं और फरि से उभर सकता है।" "नहीं, ऑपरेशन की कोई जरूरत नहीं है। अपनी ऊपरी होंठ को स्मारक चैपल में पवित्र त्रिमूर्ति के आइकन से लगाओ। ईश्वर की इच्छा से, यह चला जाएगा।" एक महीने बाद, ससिटर मारिया को फरि से चर्च में देखा गया, जो पहले की तरह ही तेज़ और व्यस्त थी। किसी ने उनसे पूछा, "आपने अपनी ऊपरी होंठ का इलाज आखिर कैसे किया?" "मैंने इसे खुद ठीक नहीं किया; मैंने बस अपने होंठ पवित्र त्रिमूर्ति के आइकन से लगा लिए, ठीक वैसे ही जैसे फादर ने मुझे आशीर्वाद दिया था, और सूजन सिकुड़ने लगी और धीरे-धीरे पूरी तरह से गायब हो गई। ईश्वर की महिमा हो!"

यहाँ एक और इसी तरह का मामला है। बहन परास्केवा, जो मृतकों के लिए लगातार भजन-संग्रह पढ़ती थी, के सीने पर, गर्दन के ठीक नीचे बाईं ओर, एक नीला धब्बा हो गया, जो बढ़ने लगा और गहरा लाल हो गया। अस्पताल में, उन्हें तुरंत बताया गया कि उन्हें तुरंत सर्जरी करानी होगी, और उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि यह कैसर था। आँखों में आँसू लिए, पाशेनका चर्च गई। चर्च के द्वार पर, उसकी मुलाकात एक अन्य भक्त से हुई, जिसने उसे रोने के लिए नहीं कहा बल्कि पादरी के पास जाने की सलाह दी। पाशा ने आज्ञा मानी और चली गई। वह पादरी के कार्यालय से खलिखलाती हुई बाहर आई... "पादरी ने कहा: 'कैसर... कैसर... – बकवास। 'कहीं मत जाना, यह ठीक हो जाएगा' (पुरोहित ने कुछ शब्द देहाती अंदाज़ में उच्चारित किए)। और क्या हुआ? वह दाग सिकुड़ने लगा, फीका पड़ने लगा और बिना किसी नशान के गायब हो गया। और अब, 30 साल बाद, इस नन ने अपनी प्रतजिज्ञा ले रखी है और अभी भी जीवति है, हालाँकि अब वे अपनी जीवन के अंतिम पड़ाव में हैं।

सोफ़्या वासिलीयेव्ना नाम की एक नर्स हमारे अस्पताल के एक स्वास्थ्य केंद्र में काम करती थी। उसके पति ट्रस्ट के मुख्य लेखाकार थे। यह कल्पना करना मुश्किल है कि इस परिवार ने कतिनी पीड़ा झेली है। सत्रह साल पहले, उन्होंने अपने बारह साल के एकमात्र बेटे को दुखद रूप से खो दिया था। वह लड़का खड़की के पास फूलों में पानी देने के लिए बालकनी पर गया था; वह कुछ ठीक करना चाहता था, रेलिंग पर झुका और पांचवीं मंजलि से गरि गया।

उसके माता-पिता भोजन कक्ष में मेज पर बैठे थे; वह बालकनी से उनके साथ बात कर रहा था जब अचानक दरवाजे की घंटी बजी, और लड़के को मृत अवस्था में अंदर लाया गया।

फरि उन पर नई वपित्तियों की एक श्रृंखला आ पड़ी। 1937 में, उनके पति को गरिफ्तार कर लिया गया और दस साल की सजा सुनाई गई। सोफ्या वासलियेवना के लिए, यह एकांत, उत्पीड़न, बेरोजगारी और भूख के वर्षों की शुरुआत थी। लेकिन उन्होंने यह सब शांति से सहन किया और डटे रहे। अब वह सब बहुत पीछे छूट चुका था; वे एक बड़े घर में आराम से रहते थे, लेकिन... जैसे-जैसे वे बूढ़े होते गए, इस बच्चे रहित जोड़े को एक छोटे लड़के को गोद लेने की इच्छा होने लगी।

कुइबशिव शहर में एक बड़ा 'इन्फैंट होम' था, जहाँ सात वर्ष से कम आयु के अनाथों को इकट्ठा किया जाता था। उस दंपति ने वहाँ जाकर अपने लिए एक लड़का चुनने का फैसला किया। पादरी की एक आध्यात्मिक बेटी ने सोफ्या वासलियेवना से कहा कि अगर वे चाहते हैं कि यह बच्चा उन्हें खुशी दे, तो उन्हें पहले फादर सेवस्टियन से मिलकर उनका आशीर्वाद लेना चाहिए।

कुइबशिव के लिए टिकट पहले ही खरीदे जा चुके थे; उनकी प्रस्थान में बस एक दिन बचा था, इसलिए सोफ्या वासलियेवना और वृद्ध की आध्यात्मिक बेटी उनसे मिलने के लिए निकल पड़ीं। वहाँ पहुँचने पर, उन्हें पता चला कि फादर बीमार थे – वे बेसिटर पर लेटे थे और किसी भी आगंतुक से नहीं मिल रहे थे। अचानक, फादर ने अपनी कोठरी से फोन किया। उन्होंने पूछा कि कौन आया है और उन्हें अंदर आने को कहा। वे अंदर गए और उनके बेसिटर के पास घुटने टेक दिए। फादर ने ध्यान से सुना और तकिये से सरि उठाए बना कहा: "यह एक अच्छा इरादा है; आगे बढ़ो। आप एक बच्चा ले सकती हैं, लेकिन केवल एक लड़की। आपको लड़का नहीं लेना है।" और, सोफ्या वासलियेवना को आशीर्वाद देते हुए, उन्होंने दोहराया: 'मैं आपको लगभग तीन साल की लड़की लेने का आशीर्वाद देता हूँ।' वृद्ध को धन्यवाद देकर वे चले गए। सोफ्या वासलियेवना इस बात को लेकर चिंतित थी कि उनका पत एक लड़के के होने के अपने सपने को छोड़ने को कैसे स्वीकार करेगा।

कुछ दिनों बाद, वह दंपति कुइबशिव से लौटे, और अपने साथ एक तीन साल की लड़की को लाए। वह मलिनसार और स्नेही थी, और सबसे ज्यादा अपने पति से जुड़ी हुई थी, लेकिन वह बहुत बदसूरत थी। ऐसा नहीं था कि उसके चेहरे की बनावट असामान्य थी—नहीं, सब कुछ बिल्कुल सामान्य था—लेकिन कुल मिलाकर बच्ची बदसूरत थी। फरि भी, खुशहाल माता-पिता ने इस पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने खुशी-खुशी बताया कि उन्होंने उस बच्ची को कैसे चुना था।

जब उन्होंने 'बेबी होम' के कार्यालय में बच्चे को गोद लेने के कागजी कार्रवाई पूरी कर ली, तो उन्हें बताया गया: 'अब जाइए और अपनी पसंद का कोई भी चुन लीजिए। उन्हें थोड़ी देर में उनकी दोपहर की झपकी से जगा दिया जाएगा और उनके डायपर लगा दिए जाएंगे, ताकि आप उनके बीच में घूमकर अपनी पसंद कर सकें।' – "हम 'पॉटी' वाले कमरे की एक दीवार के पास भी नहीं पहुँच पाए थे," सोफ्या वासलियेवना कहती हैं, "कति भी कमरे के दूसरे छोर से एक छोटी लड़की दौड़ती हुई हमारी ओर आई, अपनी छोटी बाहें मेरे पत की टांग के चारों ओर लपेट लीं, अपना चेहरा उनके घुटने से सटा लिया और, पूरी तरह काँपते हुए, चिल्लाई: 'मेरे पापा आ गए!' मेरे पापा यहाँ हैं।' देखभाल करने वाली ने उसे खींचकर अलग किया, उसे उठाया और कहा, 'शर्मदा मत हो, एक नजर देखो और चुन लो।' – 'नहीं,' मेरे पत ने कहा, 'हम किसी और को नहीं चुनेंगे। उसने खुद हमें चुना है। कृपया इस छोटी लड़की को हमें गोद लेने की व्यवस्था करें।' और इस तरह वे उस साधारण दखिने वाली छोटी लड़की को घर ले आए और उसे इस बात के लिए प्यार करने लगे कि उसने खुद उन्हें 'पहचाना' था। घर खुशी से भर गया; लड़की खुशमजिज, बहुत आज्ञाकारी और मददगार होकर बड़ी हुई। वह अपने पति से बहुत प्यार करती थी। जब वह काम से घर आते, तो वह दौड़कर उनके जूते उतारती और बेडरूम से उनकी चप्पलें ले आती। अपनी माँ की मदद करने की कोशिश में, वह झाड़ू उठाकर फर्श झाड़ देती थी, भले ही वह अभी यह करना नहीं जानती थी। सोफ्या वासलियेवना ने कहा, "हमने उसे यह सब नहीं सिखाया है, वह यह सब खुद ही कर लेती है।"

बेशक, दंपति अपने बच्चे पर स्नेह और प्यार की बौछार करते थे, और उसने, जसि पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं हुआ था, अपने माता-पिता के स्नेह को वैसे ही पी लिया जैसे कोई फूल पानी सोखता है। चार साल बाद, लड़की ने स्कूल जाना शुरू किया और बहुत काबलि और मेहनती साबित हुई। वह सीधी खड़ी होने लगी और अधिक आकर्षक दखिने लगी; उसकी सादगी गायब हो गई थी। उसके आस-पास के लोग कहते, "सोफ्या वासलियेवना, आपकी बेटी और भी खूबसूरत होती जा रही है।" जसि पर वह जवाब देती, "वह तो हमेशा से ही सुंदर है।"

और यह रहा परिणाम: पुरोहिती का आशीर्वाद और उनका आज्ञापालन।

लेकिन पति की सलाह के खिलाफ जाने पर लोगों को कतिनी कठिनाइयों, पीड़ाओं और दुर्भाग्यों को सहना पड़ा? यह वशिष रूप से तब सच था जब शादी की बात आती थी। वे उनकी आशीर्वाद लेने आते, और वह स्पष्ट रूप से

कहते, 'तुम उससे शादी नहीं कर सकती।' लेकिन युवा ज़िद्दी होते थे: 'मैं उससे प्यार करती हूँ, या मैं उसे सुधार दूँगी।' और फरि मुसीबत आई - अत्यंत कठिनाइयों भरा जीवन। यद्वैवाहिक जीवन में कोई असहनीय स्थिति उत्पन्न हो जाती, तो फादर कभी भी यह ज़िद्दी नहीं करते थे कि उसे और बर्दाश्त किया जाए, बच्चों की खातिर भी नहीं। वे सब कुछ सुनते और कहते: "तो फरि, तुम उसे छोड़ सकती हो। अलग हो जाओ।"

कारागंदा में पतिाजी की पादरी सेवा की शुरुआत में ही, उनकी एक आध्यात्मिक बेटी, तानेच्का थी, जो एक संवेदनशील और दयालु दिल वाली, असाधारण रूप से बुद्धिमान और सुखद स्वभाव की लड़की थी। वह पतिाजी से बहुत जुड़ी हुई थी, और वह उसे बहुत प्यार करते थे। तानेच्का अल्माटी के एक युवा, सुंदर इंजीनियर से शादी करने वाली थी। पतिाजी ने अपनी सहमति नहीं दी। पहले तो उसने आज्ञा मानी, लेकिन फरि उसने एक बार फरि से उनकी सहमति मांगनी शुरू कर दी। तब उन्होंने इसे सख्त मना कर दिया। फादर ने उससे काफी देर तक बात की, उसे अपने मंगेतर को छोड़ने के लिए मनाने की कोशिश की। लेकिन अंत में उसने कहा, 'मैं उससे प्यार करती हूँ और मैं कुछ भी सहन कर लूँगी।' जब तानेच्का अपने मंगेतर के पास जा रही थी, तो फादर रो पड़े, उन्होंने उससे अपना मन बदलने की वनिती की, उसे विदा करने के लिए स्टेशन गए, और वहाँ उन्होंने उससे बस अल्मा-आटा जाने और फरि वापस आने की मनिनतें कीं। किसी को भी ऐसा कोई और मौका याद नहीं था जब पतिाजी इतने ज़िद्दी रहे हों। तानेच्का वापस नहीं आई। उसका जीवन बहुत दुखी रहा। उसने बहुत कष्ट सहे, उसे तपेदकि हो गई और ढाई साल बाद उसकी मृत्यु हो गई।

जब हम अनजान थे तो पतिाजी ने हमें कई विपत्तियों से बचाया, और जब हमें एहसास हुआ, तो हम उनकी दूरदर्शिता और उनकी प्रार्थनाओं की शक्ति से चकित रह गए। कभी-कभी वह हमसे किसी नरिणायक कार्रवाई की मांग करते थे, लेकिन ज़्यादातर सब कुछ एक नदी के बहाव की तरह, चुपचाप और शांति से हो जाता था। पतिाजी का मार्गदर्शन और मध्यस्थता शांत थे। कारागंदा में तीन बार मौत ने मेरे दरवाज़े पर दस्तक दी, लेकिन पतिाजी ने उसे मुझे ले जाने नहीं दिया और मेरे जीवन को लंबा कर दिया।

एक बार पतिाजी ने अपनी उस क्षमता से मुझे गहराई से प्रभावित किया कि वे किसी के विचारों में संबोधित करने पर सुन सकते थे।

एक बार, मैं और आर. जी. सराणी से कारागंगा वापस आ रहे थे। बस चेचन मूल के एक युवा व्यक्ति द्वारा चलाई जा रही थी। रास्ते में, एक दूसरी बस ने हमें ओवरटेक कर लिया, और उसके ड्राइवर—जो एक युवा रूसी लड़का भी था—ने कैब से अपना सरि बाहर निकाला और हँसते हुए चेचन से चिल्लाया: 'तुम एक बूढ़ी घोड़ी की तरह रेंग रहे हो।' चेचन आग-बबूला हो गया, उसने एक्सेलेरेटर पर ज़ोर से पैर रखा और चढ़ाने वाले को ओवरटेक करने के लिए तेज़ी पकड़ ली। दूसरे ड्राइवर ने भी तेज़ी पकड़ ली। हमारी बस सड़क की उबड़-खाबड़ पर इतनी ज़ोर से उछलती हुई तेज़ी से दौड़ने लगी कि बीच में खड़े लोगों के सरि छत से टकरा रहे थे। मेरे दिल में दहशत और डर समा गया। मोटरवे एक कटे हुए गेहूँ के खेत के किनारे-किनारे, इधर-उधर मुड़ती हुई जा रही थी। और, हमें यह देखकर भयभीत हो गए कि हमारा ड्राइवर, एक मोड़ को छोटा करने के लिए, मोटरवे से उतरकर बस को उबड़-खाबड़ खेत में चला रहा था। बस उबड़-खाबड़ रास्तों पर उछल रही है, एक तरफ से दूसरी तरफ झूल रही है; ऐसा लगता है कि पहिये किसी भी पल उतर जाएंगे, और बस पलट जाएगी, जिससे हमारी हड्डियाँ टूट जाएँगी। बच्चे रो रहे हैं; हर कोई कंडक्टर से ड्राइवर को रोकने की मनिनतें कर रहा है, जबकि वह खुद, चादर की तरह पीली पड़कर, चिल्ला रही है: "जब वह खुद इतनी उन्मत्त हो चुका है, तो अब उसे कौन रोक सकता है?!" यह महसूस करते हुए कि हम आपदा की कगार पर थे, मैंने प्रार्थना करना शुरू कर दिया, मन ही मन पतिा से पुकारते हुए: "पतिाजी! फादर सेबास्टियन! हमें बचा लो! हमारी मदद करो!" मैंने खड़िकी से बाहर देखा और देखा कि पहली बस मोटरवे पर रुक गई थी; सभी यात्री उतर रहे थे और उसके चारों ओर भीड़ लगा रहे थे। क्या हो रहा था? बस का एक पहिया उतर गया था। हमारे ड्राइवर ने गतिधीमी की, मोटरवे पर आ गया और बना एक शब्द कहे, ड्राइवर की कैब से बाहर देखे बना ही पहली बस के पास से गुज़र गया।

अगले दिन उत्सव के लिए रात भर की प्रार्थना सभा थी। मैं मखिइलोवका जल्दी पहुँच गया और एक तरफ इंतज़ार करने लगा कि पादरी चर्च जाएँ। मैं उन्हें यह बताना चाहता था कि हम एक दिन पहले कितने डरे हुए थे, लेकिन उन्होंने खुद मुझसे पूछा: 'क्या कल तुमने मुझे पुकारा था: "पादरी जी, हमें बचाएँ और हमारी मदद करें!?"' – "हाँ, फादर, वह मैं ही था।" – "ठीक है, तो जब तुम मुझे पुकारोगे, तो तुम्हें हमेशा यह कहना चाहिए: कौन बुला रहा है, और किससे बचाना है; वरना मेरे लिए मुश्किल हो जाता है। मैं सुनता हूँ: 'बचाओ!' लेकिन किसको? किससे? खैर, क्या तुम सुरक्षित पहुँच गए?" मैं बस दंग रह गया: "सुरक्षित, फादर।"

पतिाजी हर समय चमत्कार करते हैं; बस हम उन्हें हमेशा नहीं देखते या समझते नहीं हैं। और कभी-कभी, जब पतिाजी से किसी बात पर सीधा सवाल पूछा जाता है, तो वे कहते हैं: 'मुझे कैसे पता चले? मैं कोई नबी नहीं हूँ; मुझे यह नहीं पता।' यही पूरा जवाब होता था। कभी-कभी तो वह भौहें भी चढ़ा लेते थे। 1956 में, मुझे दिल की एक गंभीर बीमारी हो गई।

मैं घर पर लेटा था, लेकिन मेरी तबीयत ठीक होने में देरी हो रही थी। अचानक, मेरा बुखार बहुत बढ़ गया। बड़ी मुश्कलि से, ड्रपि पर, मुझे अस्पताल ले जाया गया। मेरी हालत बेहद गंभीर थी; मेरा बुखार 40° था। पता चला कि मुझे टाइफ़स बुखार था। इस बीमारी से मेरा दिल संभल पाएगा, इसकी लगभग कोई उम्मीद नहीं थी। स्थिति बहुत ही भयानक थी। मेरा होश खराब था; मैं अपनी हालत के बारे में कुछ भी नहीं कह पा रहा था। लेकिन फादर को खुद पता चल गया कि मैं मुश्कलि में था और उन्होंने फादर अलेक्जेंडर और ससिटर अनास्तासिया को मेरे पास भेजा। मैं आइसोलेशन वार्ड में अकेली लेटी थी। जब मैंने उन्हें दोनों को अपने बगल में खड़ा देखा, तो मेरा दमिाग साफ़ हो गया। मैंने नर्स से कहा कि मेरे वार्ड में कोई और न आए। फादर अलेक्जेंडर ने मेरा पाप-स्वीकार सुना और मुझे पवित्र कम्युनियन दिया। पवित्र सहभाग प्राप्त करने के बाद, मैंने फादर का वह पत्र पढ़ा जो वे अपने साथ लाए थे। यह छोटा था, लेकिन इसने मुझे शक्ति और आशा दी: 'मसीह हमारे बीच हैं! अतिसम्मानति और प्रिय तात्याना व्लादमीरोवना! आपकी गंभीर बीमारी आपको मृत्यु की ओर नहीं, बल्कि प्रेमेश्वर की महिमा की ओर ले जा रही है। आपको अभी भी बहुत काम करना है। अब हम आपकी देखभाल करेंगे। हायरॉमक एस. फोमनि।' कम्युनियन के बाद, फादर अलेक्जेंडर और ससिटर अनास्तासिया मेरे वार्ड में मेरे साथ काफी देर तक बैठे रहे। उन्होंने प्रार्थना की और सुसमाचार पढ़ा। मैं सब कुछ स्पष्ट रूप से समझ गई थी। रात तक, मेरा बुखार उतर गया था, और अगले दिन तक यह लगभग सामान्य हो गया था।

सितंबर 1958 में, परिस्थितियों के कारण मुझे छुट्टियों पर आपातकालीन रूप से मॉस्को की यात्रा करनी पड़ी। उस समय टिकट मलिना मुश्कलि था। मुझे स्टेशन जाकर कतार में लगना पड़ा और पूरी रात वहीं बैठना पड़ा, क्योंकि वे हर दो घंटे में सूची में शामिल लोगों की हाजिरी लगाते थे। यह सड़क पर बंटाई गई एक यातनादायक, नींद रहित रात थी। सुबह तक मैं एक कंपार्टमेंट वाली बोगी के लिए एक अच्छी टिकट हासिल करने में कामयाब हो गया था। अगले दिन मैं पादरी से मिलने गया। उन्होंने मुस्कुराकर मेरा अभिवादन किया: 'टिकट मलि गई? बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। चलो यात्रियों के लिए प्रार्थना करें। और आपकी टिकट कसि दिन के लिए है?'

"बुधवार को, फादर।" उन्होंने ऊपर देखा और दूर तक नहियारने लगे। अचानक उन्होंने भौंहे चढ़ाई, अपनी नज़रें मुझ पर टिकाई और सख्त लहजे में कहा: "जल्दी करने की कोई ज़रूरत नहीं है। बुधवार को नकिलने के लिए अभी भी बहुत जल्दी है।" – "कैसे जल्दी है, फादर? कैसे जल्दी है? मेरी छुट्टियाँ शुरू हो रही हैं, मुझे समय पर वापस पहुँचना है—यह टिकट पाने के लिए मैंने कतिनी जददोजहद की है!" पादरी ने और भी गहराई से भौंहे चढ़ाई: "तुम्हें यह टिकट बेचनी होगी। सेवा के बाद सीधे स्टेशन जाओ और इसे वापस कर दो।" – "लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता, फादर; मुझे इसे टालना नहीं चाहिए।"

"मैं तुम्हें यह टिकट वापस करने का आदेश देता हूँ! इसे आज ही वापस करो, सुना तुमने?" – और पादरी, गुस्से में आकर, मुझ पर पैर पटकने लगे। मुझे होश आया: "मुझे माफ़ करें, फादर, मुझे माफ़ करें, मुझे आशीर्वाद दें; मैं अभी जाकर इसे जमा कर देता हूँ।" – "हाँ, अभी जाओ और वहाँ से मेरे पास वापस आओ; तुम सेवा के लिए समय पर वापस आ भी पाओगे," – पादरी ने मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा। पादरी ने मुझसे पहले कभी इतना सख्त व्यवहार नहीं किया था।

टिकट जमा करके, मैं चर्च वापस आ गया। मुझे शांत और प्रसन्न महसूस हो रहा था कि मैंने पापा की आज्ञा मानी थी। अब वह क्या कहेंगे?

फादर मुझे मिलने के लिए खुश और प्रसन्न होकर बाहर आए: "क्या तुमने इसे वापस कर दिया? यह अच्छी बात है। अब तुम कब जाने की योजना बना रहे हो?" – "जाना? लेकिन मैंने तो टिकट वापस कर दिया है।" – "तो फरि, कल जाओ और एक नया टिकट ले आओ। तुम अब घर जाते समय स्टेशन पर रुककर कतार में लग सकते हो। तुम्हें पूरी रात इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा; घर जाओ और कुछ देर सो जाओ। फरि सुबह आकर अपना टिकट ले लेना।" मैं बस इतना ही कह सका: "ठीक है।" मैं स्टेशन गया और सोचा: "फादर हमेशा मेरे साथ बहुत दयालु रहे हैं; अब वे मुझ पर इतने सख्त क्यों हो रहे हैं?"

स्टेशन पर पहले से ही एक आदमी था जिसके पास एक सूची थी; पंजीकरण अभी-अभी शुरू हुआ था, और मैं कतार में सातवें नंबर पर था। मैंने उस आदमी से कहा कि मैं तो एक रात पहले ही झेल चुका हूँ, और उसने कहा: "मैं कहीं नहीं जा रहा; घर जाओ, और मैं तुम्हारा नाम हाजिरी-पट्टे पर लिख लूंगा।" कल सुबह आठ बजे तक वापस आ जाना।" और उसने सूची से मेरे नाम पर नशान लगा दिया।

अगली सुबह मैं पहुँचा, कतार में लग गया और अपना टिकट ले लिया।

रवाना होने से पहले, एक प्रार्थना सभा आयोजित की गई; पुरोहिता ने मुझे प्रोस्फोरा का एक बड़ा टुकड़ा दिया, मेरा आशीर्वाद किया, और मैं चल दिया।

जैसे ही हमारी ट्रेन वोल्गा के पास पहुँची और चापाएव्सक स्टेशन पर रुकी, मैंने देखा कसिभी यात्री अपने डब्बों से बाहर नकिल रहे थे और गलियारे की खड़कियों से अपने चेहरे सटा रहे थे। मैं भी बाहर नकिला। "क्या हो रहा है?" मैंने पूछा। " " एक यात्री ने मुझे खड़की तक जाने दिया। पड़ोसी पटरियों पर मैंने यात्री डब्बों को एक-दूसरे पर चढ़ा हुआ देखा। उन्होंने अगली पटरियों को भी जाम कर दिया था। कुछ डब्बे एक तरह के ढेर में सीधे खड़े थे। हर कोई डर से कांप रहा था। वे सवाल लेकर कंडक्टर के पास दौड़े। उसने समझाया: "एक एक्सप्रेस ट्रेन, ठीक हमारी तरह – जो बुधवार को करागान्दा से नकिली थी – दुर्घटनाग्रस्त हो गई है – उसने पूरी रफ्तार से मालगाड़ी के पछिले हिस्से में टक्कर मारी, और, खैर, डब्बे एक-दूसरे पर चढ़ने लगे। यहाँ कतिना भयानक दृश्य था!" कुइबिशेव से एम्बुलेंस डब्बे लाए जा रहे थे। लेकिन इन डब्बों को हटाने में कुछ समय लगेगा; इनके साथ बहुत सारा काम करना बाकी है। मालगाड़ियाँ चापाएव्सक के रास्ते नहीं जाती; उनका मार्ग बदला जा रहा है।"

मैं अपने डब्बे में गया, दीवार की तरफ मुँह करके बेंच पर लेट गया और रोने लगा: "पापा, पापा! मेरे प्यारे पापा!"

1959 में, मैं हमेशा के लिए मॉस्को चली गई। पतिजी ने मुझे जाने दिया, बस इतना कहा: "अधिक बार मिलने आना।" मैं अपनी छुट्टियों में पतिजी से मिलने जाया करती थी। पतिजी ने कहा कि ऐसा बहुत कम होता था। 1965 में, मुझे बताया गया कि पतिजी की तबीयत काफी खराब हो गई है। मैंने उन्हें एक पत्र लिखा जिसमें कहा कि मैं उनके साथ अधिक समय बिताना चाहूँगा और उनकी आशीर्वाद माँगी। जवाब में, मुझे एक तार मिला: "पतिजी ने अनुमति दे दी है; आओ, हम इंतजार कर रहे हैं।" मैंने 1965 की शरद ऋतु में अपनी नौकरी छोड़ दी और करागंडा की यात्रा की। पहले तो, पतिजी मुझे ठीक वैसे ही लगे जैसे वे 1963 में मेरी उनसे पछिली मुलाकात पर थे। मुझे उनकी हालत जानलेवा नहीं लग रही थी; मैंने सोचा कि पतिजी ठीक हो जाएंगे और सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा। कभी-कभी ऐसा लगता था कि वे ठीक हो रहे हैं, कि वे जल्द ही फरि से सभी के लिए उपलब्ध होंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

पापा के नधिन के दसवें दिन, मैं मॉस्को में घर के लिए नकिल पड़ा। मॉस्को में, मैं काज़ानस्की स्टेशन से कोम्सोमोलस्काया स्क्वायर तक पैदल गया। सब कुछ मेरे बचपन का जाना-पहचाना था, फरि भी किसी तरह दूर-दूर लगता था। मैं इसकी आदत कैसे डाल सकता था? मैं मख़ाइलोवका से इतना दूर, जो मेरे दिल के इतने करीब था, कैसे रह सकता था?

मेरा दिल दर्द और पछतावे से भर गया था। मुझे पतिजी की कही बात याद आई: 'क्या तुम यहाँ और पाँच साल नहीं रह सकते?' – 'पतिजी, आप क्या बात कर रहे हैं? पाँच साल?' उन्हें इस बात से नाराज़गी थी कि मॉस्को आ जाने के बाद मैं हर साल उनसे मिलने नहीं आता था। काश मैं उन वर्षों को पीछे मोड़ पाता!

प्रोटोडीकन वासिली डेनेज़कनि

1937 में, मेरी बड़ी बहन और मुझे अनुच्छेद 58 के तहत शर्म शविरि में दस साल की सज़ा सुनाई गई। हमने यह सज़ा कारलाग में काटी। 1943 में, उन्नीसवें डोलसिंकी सेक्शन में, ईस्टर के समय, मैंने पहली बार फादर सेबास्टियन के बारे में सुना। उस समय, हमें करागंडा से प्रॉस्फोरा एक नोट के साथ भेजा गया था: "इसे बिना किसी हचिकचाहट के खाओ। इसे ऑप्टिना पुस्तनि के हायरॉमंक फादर सेवेस्टियन ने पवतिर किया था।" ईस्टर के दिन प्रॉस्फोरा से अपना उपवास खोलकर हमें बहुत प्रसन्नता हुई। लेकिन उस समय हमें फादर सेवेस्टियन से व्यक्तिगत रूप से मिलने और उनसे वह आध्यात्मिक पोषण प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं मिला, जिसकी हमें बहुत ज़रूरत थी।

इसके बाद लंबे इंतज़ार के कई साल बीते। 1947 में, मुझे शविरि से रहिा कर दिया गया और उस्पेंस्की खदान में नरिवासन के लिए भेज दिया गया। मेरी बहन को भी रहिा कर दिया गया। हम यह अनुमति प्राप्त करने में सफल रहे कि मेरी बहन उस्पेंस्की खदान पर मेरे साथ अपना नरिवासन का समय बतिए। 1951 में, हमारी सबसे छोटी बहन, ओल्गा, हमारे देश से हमारे पास आ गई। उसके लिए ग्रामीण इलाकों में अकेले रहना मुश्किल था। हमारे परिचितों ने ओल्गा को करगंद में फादर सेवेस्टियन से मिलने जाने की सलाह दी। वह गई, और फादर सेवेस्टियन ने उसे करगंद में रहने और मेलकोम्बाट में काम करने का आशीर्वाद दिया। उस समय से, अपनी बहन के साथ पत्र-व्यवहार के माध्यम से, हम भी फादर सेवेस्टियन के करीब आ गए।

फादर न केवल करागंडा में, बल्कि रूस के विभिन्न हिस्सों में भी जाने जाते थे। जसिने भी फादर से भेंट की, उनका आशीर्वाद प्राप्त किया, और उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शन और सांत्वना का अनुभव किया, वह उनकी स्नेहपूर्ण यादें संजोए रखता था। प्रोटोप्रेज़बिटर जैकब, हमारे एक परिचित, जनिके साथ मैंने कारलाग में अपनी सज़ा काटी थी, ने बाद में हमें व्लादमिर के डायोसीस से लिखा: "आप लिखते हैं कि आपकी बहन ओल्गा को मेलकोम्बानाट में काम मलि गया है, जहाँ मैं भी '45 और '47 में जाता था, और जहाँ फादर सेवेस्टियन अक्सर आते थे; उन्हें देखना और उनसे बात करना मेरे लिए वास्तव में एक आनंद की बात थी।" और एक अन्य पत्र में उन्होंने लिखा: "एक नई आज्ञा

मैं तुम्हें देता हूँ, कतिम एक दूसरे से प्रेम करो।" प्रेम – यही सच्चा चमत्कार है। फादर सेबास्टियन का महत्व इसलिये है क्योंकि उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से, प्रेम की शिक्षा के एक सच्चे प्रेरित के रूप में, हमारे अपने जीवन की पुष्टि की है।" और इसके बाद नमिनलखिति श्लोक आया:

संदेह, धोखे और अपवृत्तिता के दानों में,
जब पागल दुनिया खून में नहाई होती है,
वे विभिन्न जनजातियों के लोगों के बीच भाईचारे का प्रचार करते हैं,
और उनके शब्द सुसमाचार के प्रेम से परिपूर्ण हैं।
व्यर्थ और निरर्थक बहसों में नहीं पड़ते,
वह जाता है, सूली पर चढ़ाए गए मसीह का एक शिष्य,
जो टूटे, दुखी और दुर्बल हैं, सभी के लिए,
जो सभी क्रूस के बोझ तले लड़खड़ा रहे हैं।
और, अपनी आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मा की गहराइयों में झाँकते हुए,
वह दुखी लोगों के साथ शोक मनाता है और बीमारों की सहायता के लिए तत्पर रहता है।
वह हमारे सामने एक तपस्वी, एक नबी के रूप में प्रकट होता है,
इस अंधेरी रात में एक प्रकाशस्तंभ की तरह चमकते हुए।

इस पत्र ने मुझमें फादर से मलिन की और भी तीव्र इच्छा जगाई। और 1953 में, होली वीक के दौरान, खदान की दुर्घटना में लगी मेरी सरि की चोट की जाँच करवाने के लिए काम से एक सप्ताह की छुट्टी मलिन पर—मैंने बड़ी जल्दी से अपना सामान बाँधा और पहली ट्रेन से करागंदा के लिए निकल पड़ा। वहाँ पहुँचने पर, मुझे नजिन्याया स्ट्रीट पर घर नंबर 59 मिला। यह पवित्र गुरुवार था। पादरी घर पर नहीं थे, लेकिन वे जल्द ही आ गए, उनके पीछे बपतस्मा के लिए लाया गया एक बच्चा भी था। मैंने चर्च की सेवाएँ इतनी याद की थीं कि मैंने पादरी से बपतस्मा में शामिल होने की अनुमति माँगने की हिम्मत की। पादरी मान गए। बपतस्मा के बाद, वह आराम करने के लिए लेट गया, जबकि पादरी की पत्नियाँ भोजन तैयार करने लगीं। उन्होंने मुझे दमितिरी ऑफ रोस्टोव की *लाइव्स ऑफ द सेंट्स* दी और मुझसे उसे जोर से पढ़ने के लिए कहा। जैसे कोई लंबी बीमारी से उबर रहा शरीर उत्सुकता से भोजन ग्रहण करता है और उसे आत्मसात करता है, वैसे ही मैं, जो आध्यात्मिक पोषण के लिए भूखा था, उत्साह के साथ कतिब पढ़ने लगा।

जल्द ही फादर कमरे से बाहर आए, उन्होंने एक प्रार्थना की, और हम भोजन के लिए बैठ गए। मैंने फादर के साथ बातचीत शुरू की और उन्हें हमारे परिचिति, प्रोटोडीकन का जिक्र किया, जिनसे हम पत्र व्यवहार करते थे, और वहीं मेज़ पर मैंने उनकी चिट्ठियों की बातें याद से सुना दीं। नन इन पंक्तियों से बहुत प्रभावित हुई, और उन्होंने मुझसे इन्हें लिखने के लिए कहा। मैंने पादरी की ओर देखा और कहा, "अगर पादरी जी आशीर्वाद दें तो मैं उन्हें खुशी-खुशी लिख दूंगा।" पादरी जी एक पल के लिए रुके और मुस्कुरा कर बोले, "इसके लिए तुम्हें जेल हो जाएगी।" पादरी जी अपने लिए महिमा नहीं चाहते थे, और बाद में हमें यह बात एक से अधिक मौकों पर साबित हुई।

दोपहर के भोजन के बाद, हमने सेवा – बारह सुसमाचारों के पाठ – के लिए तैयारी शुरू की। पादरी ने कहा कि मैं उनके साथ चलूँ और हम जापाडनाया स्ट्रीट पर स्थिति प्रार्थना गृह की ओर चल पड़े। वहाँ हम एक छोटे कमरे में गए जहाँ तीन महिलाएँ बैठी थीं। उनमें से एक, मदर अनास्तासिया, एक बसितर पर लेटी कराह रही थीं। पादरी ने पूछा, 'क्या बात है, मदर?' 'मुझे सरिदर है, फादर।' 'लेकिन आप चूलहे के पास क्यों लेट गईं? यहाँ बहुत गर्मी है।' फिर पादरी पवित्र कक्ष में गए और सेवा के लिए आवश्यक सभी चीजें इकट्ठा करने लगे। प्रार्थना स्थल में सेवा करने की अनुमति नहीं थी, इसलिए उस दिन सेवा पोल्या मोर्डोव्का के घर पर आयोजित की गई थी। भजन गाने वाले वहाँ पहुँचे, और तीन-कमरे का मकान भक्तों से खचाखच भर गया था। मैं भजन गाने वालों के पास खड़ा होकर प्रार्थना कर रहा था, और आनंद से अभिभूत होकर, मैं कभी-कभी खुद से पूछता था: 'क्या मैं सपना देख रहा हूँ?'

कफ़न के दफ़न की सेवा के अगले दिन, मैं पादरी के पास पाप-स्वीकृति के लिए गई। मैं बचपन से ही पाप-स्वीकृति के लिए जाती आ रही थी, और यहाँ मुझे लगा कि पादरी की पाप-स्वीकृति खास थी; यह दुख से ज्यादा प्रेम से भरी हुई थी। जब मैंने पछिले कुछ वर्षों में अपनी आत्मा में जमा हो गई सारी बातें कह दीं, तो फादर ने मुझ पर एपिट्राचेलयिन ओढ़ाया और पाप-मोचन की प्रार्थना पढ़ी; मेरी आँखों से अपने आप आँसू बहने लगे। मुझे अपनी आत्मा में इतनी राहत महसूस हुई, जैसे मैं फिर से जन्म लिया हो।

महान शनिवार की शाम को, मैं और मेरी बहन ओल्गा प्रार्थना स्थल गए। वहाँ एक बड़ी भीड़ जमा हो गई थी - हर कोई ईस्टर केक और ईस्टर ब्रेड का आशीर्वाद करवाने के लिए लाया था। हम पादरी का इंतजार कर रहे थे; वह मखिइलोवका में घर-घर जाकर ईस्टर ब्रेड का आशीर्वाद दे रहा था। लोग बेचैन थे, क्योंकि पुलिसि आ गई थी और

कहा था: "पुजारी घर-घर क्यों जा रहा है? उसे प्रार्थना घर में ही सेवा आयोजित करनी चाहिए।" जल्द ही पुजारी आ गया; उसे बताया गया कि पुलिस वहाँ आ चुकी थी और उसने उसे प्रार्थना घर में ही सेवा आयोजित करने का आदेश दिया था। पुजारी भी घबरा गया और पूछा: "क्या उन्होंने लिखित अनुमति दी?" – "नहीं।" "खैर, इसका मतलब है कि हम प्रार्थना सभा नहीं कर सकते; घर जाओ। जहाँ तक आटे की चक्की के मजदूरों की बात है, उन्हें नज़िन्याया स्ट्रीट पर छोटे-छोटे समूहों में हमारे पास आने दो; मैं वहाँ उनके ईस्टर केक का आशीर्वाद दूँगा।" हम अंदर गए, पादरी ने ईस्टर केक का आशीर्वाद दिया, और आटे की चक्की के मजदूर बाँध के पार सीधे घर के लिए निकल पड़े, और रास्ते भर ईस्टर के भजन गाते रहे। सुबह दो बजे आटे की चक्की पर पहुँचकर, मेरी बहन, अन्य श्रद्धालुओं और मैंने ईस्टर मैटनिस गाए, दोपहर की प्रार्थना पढ़ी, अपना उपवास तोड़ा, और सुबह, थोड़ी देर आराम करने के बाद, एक समूह के रूप में इकट्ठा हुए और पुनर्जीवित प्रभु की महिमा करते हुए आटे की चक्की के चारों ओर घूमे। शाम को हम मखाइलोवका गए, जहाँ पुरोहित ने अपने घर पर वेस्पर्स और मैटनिस का अनुष्ठान किया। प्रार्थना सभा के बाद, उन्होंने घोषणा की कि दिव्य लिटर्जी अगले दिन 8 स्ट्रानोवस्काया स्ट्रीट पर आयोजित की जाएगी। सुबह, प्रार्थना सभा एक गंभीर और प्रार्थनामय माहौल में हुई, इस तथ्य के बावजूद कि विशाल घर में बड़ी संख्या में उपासकों के लिए बहुत भीड़भाड़ थी। प्रार्थना सभा के बाद, सभी सामूहिक भोजन के लिए इकट्ठा हुए, जहाँ मुझे माँ अनास्तासिया विशेष रूप से अच्छी तरह याद है। वह बहुत प्रसन्न थी, लगातार मुझे ईस्टर के व्यंजन परोस रही थी, और मेरी आत्मा उनकी खुशी से आनंदित हुई।

ईस्टर के तीसरे और चौथे दिन, सेवा उसी जगह, स्ट्रानोवस्की लेन पर आयोजित की गई थी। इतनी कठिन परिस्थितियों में कई वर्षों तक दिन-प्रतिदिन सेवा करने के लिए कतिनी सहनशक्तिकी आवश्यकता रही होगी!

मेरी छुट्टियाँ खत्म हो रही थीं; घर लौटने का समय आ गया था। पतिजी का आशीर्वाद लेकर और अपनी छोटी बहन से विदा लेकर, मैं सुरक्षित रूप से उत्प्रेस्की खान पर लौट आया, जहाँ मेरी बड़ी बहन मेरा इंतजार कर रही थी। मुझे नहीं पता था कि उस आध्यात्मिक सांतवना के लिए ईश्वर का धन्यवाद कैसे करूँ जो उन्होंने मुझे भेजी थी, विशेषकर फादर से मेरी मुलाकात के लिए। जिसने आध्यात्मिक पोषण का स्वाद चखा है, वह लंबे समय तक अपनी आत्मा में ईश्वर की कृपा के सुखद प्रभाव को महसूस करेगा और इस कीमती आध्यात्मिक मोती को प्राप्त करने के लिए बार-बार प्रयास करेगा।

1954 में, हमें एक बड़ी परीक्षा से गुजरना पड़ा। माँस्को से अधिकारी खान पर आए और उन्होंने घोषणा की कि हमें स्थायी रूप से बसने की शपथ के तहत वहीं रहना होगा, और बिना अनुमति के जाने पर लंबी जेल की सजा दी जाएगी। यह हमारे लिए एक बड़ा झटका था – आखिरकार, हमने दो-तीन साल में करागंडा जाने की बहुत उम्मीद की थी। हमारे पास एक ही सांतवना बची थी – पतिजी के पास जाकर अपना दुख उन्हें बताना। और 1955 के क्रसिमस पर, अधिकारियों से अनुमति मिलने के बाद, मैं तीन दिनों के लिए करागंडा गया। पतिजी ने ध्यान से मेरी बात सुनी और थोड़ी देर रुककर कहा: "डरो मत। यह सब धीरे-धीरे बीत जाएगा, और तुम करागंडा में रहने आओगे।" ऐसा लगा जैसे मेरे कंधों से एक बड़ा बोझ उतर गया हो।

उसी साल, काम से छुट्टी की एक और अवधि मिलने पर, मैं फिर से पतिजी से मिलने गया। उन्होंने मुझे अपनी बहन के साथ मेटलर्जिकल कॉम्बाइन में रहने का आशीर्वाद दिया, जिसके साथ तीन अन्य युवतियाँ भी रह रही थीं। मेरी बहन को पतिजी पर बहुत विश्वास था और वह उनके प्रति समर्पित थी। उसने मुझे मेलकोम्बानाट में पतिजी के दौरो, उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शन और उन्होंने इतने सारे लोगों को जो भौतिक सहायता प्रदान की, उसके बारे में बहुत कुछ बताया। "एक वसंत में," उसने बताया, "हमारे पास आलू खत्म हो गए थे। हम वहाँ बैठे थे, इस बारे में बात कर रहे थे कि हमें कम से कम कुछ आलू खरीदने के लिए बाजार जाना चाहिए। फिर हमने खड़िकी से बाहर देखा – एक स्लेज पर आलू का एक बोरा हमारे लिए लाया जा रहा था, और फादर अपनी बैसाखी से पीछे से मदद कर रहे थे।" तो ओल्गा और मैं बातें कर रहे थे, और उसने कहा: "जब मैं अपने आध्यात्मिक बच्चों के लिए फादर द्वारा आयोजित अंतिम संस्कार सेवाओं में शामिल होती हूँ, तो मैं चाहती हूँ कि फादर मेरा अंतिम संस्कार भी करें। मुझे ऐसा लगता है कि जिन लोगों के लिए वह अंतिम संस्कार की प्रार्थना करते हैं और जिनके लिए वह प्रार्थना करते हैं, उनकी आत्माएँ धन्य होती हैं।" उसने यही कहा, और प्रभु ने उसकी इच्छा पूरी कर दी। इसके तुरंत बाद, हमारी ओल्गा को लिवर कैंसर का पता चला। मेरी बहन ने अपनी बीमारी के दौरान असाधारण धैर्य दिखाया। उन्होंने अस्पताल में भरती होने से इनकार कर दिया और कोई दवा नहीं ली, और खुद को पूरी तरह से ईश्वर की इच्छा के हवाले कर दिया। फादर अक्सर उनसे मिलने आते थे। ओल्गा के नधिन से लगभग तीन सप्ताह पहले, उनकी बड़ी बहन ने एक सपना देखा: ऐसा लगा जैसे वह ओल्गा के कमरे में थी, और ओल्गा ने उनसे कहा: "देखो, फादर ने मेरे लिए क्या तैयार किया है।" उन्होंने अलमारी खोली, और वहाँ सुनहरी रोशनी से चमकते कपड़े थे और उनके जैसे ही एक सुनहरा ताज था। यह सपना देखने के बाद,

उसकी बड़ी बहन अगले ही दनि करागंडा की यात्रा कर पति को इस बारे में बताया। उन्होंने कहा, 'यह मैंने उसके लिए नहीं तैयार किया था, बल्कि प्रभु ने किया था, जिन्होंने उसके धैर्य के सम्मान में मठ के वस्त्र तैयार करने का आशीर्वाद मुझे दिया था।' और उन्होंने ओल्गा का मठीय मुंडन संस्कार किया। जब ओल्गा की मृत्यु हुई, तो पति ने उसका अंतिम संस्कार किया। यह 1 अप्रैल 1956 को था। अंतिम संस्कार से उसपेस्की खान पर लौटते हुए, मैंने उदास होकर सोचा: 'मैं फिर से करांडागा कब आऊंगा? मैं चर्च में प्रार्थना कब करूंगा, फादर से कब मलूंगा, और उन सभी से जिन्हें मेरा दिल चाहता है?' लेकिन ईश्वर की इच्छा कुछ और ही थी। दो सप्ताह बाद, माँस्को से एक विशेष पार्सल आया, जिसकी सामग्री इस प्रकार थी: '10 अप्रैल 1956 को, यूएसएसआर के महाधिवक्ता के आदेश से, आपका नरिवासन रद्द कर दिया गया है। एक पूर्ण अधिकारों वाले नागरिक के रूप में, आप पूरे सोवियत संघ में यात्रा करने के लिए स्वतंत्र हैं।' मुझे यह खुशी खुद अनुभव करनी थी और दूसरों की खुशी में शामिल होना था, क्योंकि मैं एक डाक कर्मचारी था। रूस के हर कोने में परिवार और दोस्तों को तार भेजे गए; प्रस्थान के कारण अंतिम वेतन नपिटान के लिए आवेदन आने लगे, और प्रक्रिया में कोई देरी नहीं हुई। मैंने भी अपना इस्तीफा दे दिया। डाकघर के प्रबंधक ने मुझे दोस्ताना ढंग से हाथ मलिया और मेरे आवेदन पर हस्ताक्षर कर दिए। करागंडा जाने का हमारा लंबे समय से संजोया हुआ सपना सच हो गया था। अपने मामूली सामान को जल्दी से इकट्ठा करके और उसे कार में लादकर, मैं और मेरी बड़ी बहन ओल्गा के फ्लैट में रहने के लिए मेल्कोम्बानात पहुँचे। यह ब्राइट वीक के दौरान एक बुधवार का दिन था। अगले दिन ओल्गा की मृत्यु को चालीस दिन पूरे हो गए थे। पादरी और मेल्कोम्बानात के सभी लोग उसके घर इकट्ठा हुए।

ईस्टर के दिन बीत गए, उसके बाद राडोनटिसा आई, और मुझे नौकरी का फैसला करना था। पादरी ने मुझे चर्च में स्टोरकीपर के रूप में काम करने का आशीर्वाद दिया। उस समय चर्च का चौकीदार पावेल अलेक्जेंड्रोविक कोवालेन्को था, और वह मुझसे खुश था, क्योंकि मैंने मुझे सौंपी गई ज़िम्मेदारियों को सफलतापूर्वक पूरा किया। लेकिन ऐसे भी समय थे जब, अज्ञानता के कारण, मैं पुरोहिती के आशीर्वाद के विरुद्ध गया। उदाहरण के लिए, एक पतझड़ में, सेंट जॉन द थयिलोजियन के पर्व के आसपास, चर्च के चौकीदार ने मुझे डुबोवका गाँव भेजा, जहाँ हमारे कर्मचारी उस घर की मरम्मत कर रहे थे जिसमें पुरोहिती आमतौर पर प्रार्थना सभा करते थे। मैंने देखा कि कारीगरी का काम समाप्त होने वाला था, और जब मजदूरों ने मुझसे पूछा कि उन्हें कितने बजे तक काम करना है, तो मैंने, यह सोचकर कि वे पाँच बजे तक काम पूरा कर लेंगे, उन्हें पाँच बजे तक काम करने के लिए कहा। और उन्होंने ठीक वैसा ही किया। और जब हम माइकलॉव्का में पूरी रात की प्रार्थना सभा के लिए पहुँचे, जो पाँच बजे ही शुरू हुई थी, तो आधी प्रार्थना सभा पहले ही खत्म हो चुकी थी। चूँकि पतिजी सेंट जॉन द थयिलोजियन का विशेष रूप से बहुत सम्मान करते थे, इसलिए उन्होंने मुझे पास बुलाया और मुझे कड़ी फटकार लगाई। मैंने माफी माँगी, लेकिन यह घटना लंबे समय तक मेरी याद में रही।

पुरोहिती अपने संप्रदाय के लोगों को दूसरे क्षेत्रों में छुट्टियाँ मनाने, रश्तेदारों या परिचितों से मिलने जाने का आशीर्वाद देना पसंद नहीं करता था, और वह अक्सर कहता था: 'मैं पच्चीस साल से कहीं नहीं गया हूँ और जाने की कोई इच्छा भी नहीं है। पवित्र पतिओं का कहना है: 'जैसे तुम मठ छोड़ोगे, वैसे ही लौटोगे।' यात्रा करते समय और छुट्टियों में, तरह-तरह के लोगों के साथ घुल-मिलकर, आप वह सारी आध्यात्मिक शक्ति बिखेर देते हैं जिसे आपने लंबी अवधि में बड़ी मेहनत से इकट्ठा किया है।' एक पारशियन ने बताया: 'युद्ध खत्म होने के कुछ साल बाद, मेरे रश्तेदार मुझे आने और उनसे मिलने के लिए आमंत्रित करने लगे। मैं पादरी के पास आशीर्वाद लेने गया, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए आशीर्वाद नहीं दिया: 'तुम्हारे पास एक गाय है; सरकारी फार्म पर जाओ और उसके लिए सर्दियों का पर्याप्त चारा कमाओ।' मैं घर गया और अपने परिवार को बताया कि पादरी ने मुझे उनके पास जाने का आशीर्वाद नहीं दिया। उन्होंने आपत्ति जिताना शुरू कर दिया – यह कहते हुए कि मैंने उसे ठीक से समझाया नहीं है, और वे खुद जाकर पादरी से वनिती करेंगे। मेरी पत्नी और बेटा गई, और उनसे वनिती करने लगीं – आखिरकार, हम इतने सालों से एक-दूसरे को नहीं देखे थे – और उन्होंने उसे मना लिया; पादरी ने अपना आशीर्वाद दे दिया। मैं नकिल पड़ा, अपने रश्तेदारों से मिला, और मुलाकातों के दौरान कुछ शराब पी गई, जिसकी आदत मुझे अब नहीं रह गई थी। मैं पतझड़ तक घर लौट आया, लेकिन मवेशियों के पास चारा नहीं बचा था। लेकिन सबसे बुरी बात यह थी कि मेरी पुरानी बीमारी फिर से भड़क उठी।' इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पादरी की पहली बात से ही उनकी बात सुनी जानी चाहिए।

फादर ने हर उस व्यक्ति की देखभाल की जो मदद के लिए उनके पास आता था। इसी तरह उन्हें पता चला कि ऑप्टिना पुस्तानि से उनका परिचित एक लकवाग्रस्त पादरी ओडेसा में बहुत बुरे हालात में रह रहा था और वह फादर से उसे करागंडा ले जाने के लिए कह रहा था। और फादर ने मना नहीं किया। उस पुजारी को वहाँ लाया गया और एक अलग कुटिया में बसाया गया, जहाँ उसकी अच्छी देखभाल की गई और उसे अक्सर सेवाओं के लिए चर्च ले जाया जाता

था। पुजारी ने आँखों में आँसू लिए फादर का धन्यवाद किया, और दो साल बाद उसने अपने नधिन के लिए उचित तैयारी करने के बाद देहांत कर लिया।

लेकिन कभी-कभी फादर को उन लोगों के कारण दुख होता था, जिनकी उन्होंने मदद की थी। उदाहरण के लिए, 1950 के दशक की शुरुआत में, हरिमोंक एंथनी फादर के पास आए, और फादर ने उनका स्वागत किया और उनके साथ सेवा करने का आशीर्वाद दिया। इस हरिमोंक का कद-काठी प्रभावशाली और आवाज सुरीली थी। उन्होंने फादर के कई अनुयायियों का दिल जीत लिया, जसिमें उनके सबसे करीबी लोग भी शामिल थे। फादर एंथनी ने फादर निकोलाई को कर्मचारियों की सूची से हटाने का विचार किया ताकि वह स्वयं अपने पैरिश का प्रभार संभाल सकें। इस उद्देश्य के लिए, वह महामहिम मेट्रोपॉलिटन निकोलाई से मिलने अल्मा-आता की यात्रा पर गए। फादर निकोलाई ने सेक्सटन और लेखा परीक्षा समिति के सदस्य पावेल कुज़मचि को अपने साथ ले जाने का आशीर्वाद दिया।

"जब हम महामहिम निकोलस के स्वागत कक्ष में प्रवेश किए," पावेल कुज़मचि ने बाद में बताया, "तो फादर एंथनी ने कहना शुरू किया कि फादर सेबेस्टियन बूढ़े और कमजोर हो गए थे, और मदर गुरुशा ही पैरिश में सब कुछ चला रही थी।" "बहुत अच्छा," महाधर्माध्यक्ष ने कहा, "हम फादर सेबेस्टियन को वेतन सूची से हटा देंगे, और उनकी जगह आपको नियुक्त करेंगे।" जब मैंने ये शब्द सुने, तो मेरे चेहरे पर आँसू आ गए; मैं महाधर्माध्यक्ष के पैरों में गरि पड़ा और उनसे वनिती करने लगा, कि कृपया फादर को वेतन सूची से न हटाएँ: "आखिरकार, वह इतने सारे लोगों का समर्थन करते हैं, जिनमें बीमार और लकवाग्रस्त लोग भी शामिल हैं, जैसे कि हायरमोंक पारमेन, जिन्हें डोलकि से रहिा किया गया था और जिन्हें फादर ने अपनी देखभाल में भी ले लिया है। उनकी मदद के बिना वे मर जाएंगे।" इस प्रकार मैंने आँसू भरी आँखों से महाधर्माध्यक्ष से वनिती की। उनकी कृपा को एहसास हुआ कि फादर एंथनी ने उन्हें गुमराह किया था; वे अपनी कुर्सी से उठे, मेरे पास आए और मुझे घुटनों से उठाते हुए कहा: "भाई, इस तरह मत रोओ। हम फादर सेबेस्टियन को उनके पद पर ही रहने देंगे; उन्हें वैसे ही सेवा करने दो जैसे उन्होंने पहले की है। शांत हो जाओ।" इस प्रकार पावेल कुज़मचि ने फादर सेबेस्टियन का बचाव किया।

1957 में, पेट्रोपावलोवस्क और कोस्तानाय धर्मप्रांत की स्थापना हुई, जसिमें करागंदा शामिल था। बशिप जोसेफ (चेरनोव), जिन्हें कारागार से रहिा किया गया था, को इस धर्मप्रांत का प्रमुख नियुक्त किया गया। वे हमसे अक्सर मिलने आने लगे। कारागंदा में तीन पैरिश थे – नंबर 2 खदान पर, टकिनोवका में और मखिाइलोवका में। हमारी पैरिश अपनी प्रार्थना की भावना के कारण महाधर्माध्यक्ष को प्रिय हो गई थी, और जब भी वह कारागंदा के अन्य चर्चों में सेवाएं आयोजित करते थे, तो वह हमेशा फादर के पास रात बताने आते थे और अक्सर उनसे बात करते थे।

1958 में, हमारे चर्च वार्डन, पावेल अलेक्जेंड्रोवचि कोवालेनको, को पुरोहिा नियुक्त किया गया। फादर ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और मुझे चर्च वार्डन का पद प्रस्तावित किया। और, चाहे मैंने प्रशासनिक और निर्माण संबंधी मामलों में अपने अनुभव की कमी का हवाला देते हुए मना करने की कतिनी भी कोशिश की, मुझे आज्ञाकारिता के कारण यह पद स्वीकार करना पड़ा और इस क्षेत्र में बीस साल तक काम करना पड़ा।

फादर ने आर्चमैड्राइट के पद पर पदोन्नति को गहरी वनिमृता से स्वीकार किया। एक बार, सेवा के बाद, अपने हाथों में माइट्रे (शीर्ष-पट्टा) को पकड़े हुए, उन्होंने कहा: 'यह रहा माइट्रे। क्या आपको लगता है कि यह हमें बचाएगा? केवल विश्वास में किए गए अच्छे कर्म ही हमें बचाएंगे।' फादर ने सुसमाचार के शब्दों को सचमुच जिया: 'तुम में जो कोई पहला होना चाहे, उसे सभी का सेवक बनना चाहिए।' उन्होंने अपने मठवासी जीवन की शांति का त्याग कर दिया और अक्सर धन्यवाद के बजाय फटकारें सुनीं। पादरी वर्ग और मठवासी समुदाय के कुछ सदस्य, वृद्ध की सेवा के सार को समझने में असफल रहते हुए, उनसे कहते थे: 'देखो, फादर सेबेस्टियन हमेशा लडकियों के साथ घूमते रहते हैं।' ऐसे मामलों में, फादर ने कभी अपना पक्ष नहीं समझाया या बहाने नहीं बनाए। उन्होंने ईसाई आत्माओं को बचाना अपना पवित्र कर्तव्य माना। अपने पादरी के दिल में उन्होंने नस्वार्थ ईसाई प्रेम को बसाया था। उन्होंने उन लोगों के लिए और पूरे संसार के लिए, जो जीवन के सागर की लहरों से उछाले जा रहे थे, ईश्वर से भक्तपूर्वक प्रार्थना की, जिन्हें प्रभु ने उन्हें सौंपा था। फादर जीवित लोगों के लिए प्रार्थना करते थे और विशेष रूप से दविंगत लोगों के लिए प्रार्थना करना पसंद करते थे। उनका नधिन इस प्रेम का प्रमाण था। वे जीवित लोगों के साथ ईस्टर मनाते थे और, राडोनट्सा पर, दविंगत लोगों के साथ ईस्टर की खुशी साझा करने के लिए स्वरगीय लोक में चले गए।

इन पंक्तियों के लेखक ने कई मौकों पर वरिष्ठ के पतिसुलभ स्नेह और उनकी प्रार्थनाओं की शक्त का प्रत्यक्ष अनुभव किया है, और अपनी स्मृति में जो कुछ भी बचा है, उसे सरल कथात्मक रूप में लिख दिया है, ताकि उनके शब्द और कर्म, जो हमारे लिए इतने प्रिय हैं, वस्मृति के गर्भ में न चले जाएँ।

आर्चप्रीस्ट यूस्टैथिस प्रोकोपचुक, चर्च ऑफ द नेटीवटी ऑफ द मोस्ट होली मदर ऑफ गॉड, करागंडा

मैं बचपन से ही आध्यात्मिक पतित्व और आध्यात्मिक पतिओं के बारे में जानता था। मैं यूक्रेन में एक धार्मिक परिवार में पैदा हुआ था। हमारे परिवार में पादरी और भिक्षु थे, और इसलिए आध्यात्मिक वषियों—जिसमें आध्यात्मिक पतित्व भी शामिल था—पर चर्चाएँ हमारे घर में अक्सर होती थीं। और इन बातचीतों के बीच, मेरे हृदय में एक इच्छा जड़ पकड़ने लगी: अपने जीवन में एक आध्यात्मिक वरिष्ठ को खोजने की। लेकिन जैसा कि प्रभु की इच्छा थी, मेरी मर्जी के खिलाफ, 1945 में मुझे खानों में काम करने के लिए करागंडा ले जाया गया। यात्रा के दौरान मैंने सोचा कि इस सुनसान मैदान में केवल अधरमी लोग ही रह सकते हैं। लेकिन ऐसा हुआ कि ठेका मजदूरों के अलावा, खानों में काम करने वाले कई विशेष बसाहती भी थे, जिनमें से अधिकांश शरद्वालु लोग थे। और उन्हीं से मैंने सुना कि यहाँ, इस मैदान में, बोलशाया मखाइलोव्का गाँव में, एक वृद्ध व्यक्ति, फादर सेबेस्टियन, रहते थे। यह सुनकर, मैंने उन्हें खोजने का मन बना लिया। चूँकि बोलशाया मखाइलोव्का करीब खान से दस किलोमीटर दूर है, और उस समय एकमात्र परिवहन घोड़ा-गाड़ी ही थी, मैं—जसिके पास अपना कोई घोड़ा नहीं था—किसी तरह एक साइकिल जुटाकर मखाइलोव्का के लिए निकल पड़ा। वहाँ मैंने नज़िन्याया स्ट्रीट पाया, नंबर से पादरी के घर का पता लगाया, अपनी साइकिल से उतरा, दरवाज़े पर रूका... और डर से भर गया: मैं, एक ऐसा पापी, साधु की कोठरी में कैसे प्रवेश कर सकता था? मैं घुटनों पर बैठ गया और रोने लगा... लेकिन अंततः हिम्मत जुटाकर, मैंने अंदर जाने का फैसला किया। मैंने दरवाज़ा खटखटाया; साधु की पत्नी ने दरवाज़ा खोला, मुझे कमरे में आने दिया और बैठने के लिए कहा। साधु घर पर नहीं थे, लेकिन जब वे आए, तो मैं उनका आशीर्वाद लेने के लिए खड़ा हो गया। हालाँकि, साधु मेरे पास से गुजरकर अंगीठी के पास गए, उन्होंने क्रॉस का चहिन बनाया, तीन बार झुके, मेरे पास आए और मुझे आशीर्वाद दिया। मैंने उसकी ओर देखा और सोचा: 'यहाँ, प्रभु ने मुझे बुजुर्ग के पास लाया है।' यह 1948 की बात है। मेरे नज़ी जीवन के बारे में फादर से मेरा एक सवाल था। मैं एक युवती से मिला था और उससे शादी करना चाहता था। फादर ने मेरी बात सुनी और मुझे आशीर्वाद दिया कि मैं उससे मिलकर उनके पास आऊँ। हम पहुँचे, फादर ने हमारी शादी कराई, हमें कुछ मार्गदर्शन दिया, और उस समय से हम नियमिति रूप से उनसे मिलने जाने लगे; हम 'फादर के बच्चे' बन गए। और बातचीत में, फादर कभी-कभी मुझे बुलाते थे: 'फादर यूस्टैथिस!' मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया; मैंने सोचा कि 'फादर' का मतलब बस परिवार के मुखिया से है। लेकिन अलेक्जेंडर की माँ ने कहा, 'तुम शायद पादरी बन जाओगे, क्योंकि फादर तुम्हें फादर यूस्टैथिस कहते हैं।' और मुझे सेमनरी में जाकर पढ़ाई करने की इच्छा होने लगी। मैंने फादर को इसके बारे में बताया; उन्होंने अपनी सहमति दी, और मैंने तैयारी शुरू कर दी। लेकिन मैं फिर भी खुद को वहाँ जाने के लिए तैयार नहीं कर पा रहा था। एक साल बीता, फिर दूसरा... और जैसे ही मैंने यह तय किया था कि मैं आखिरकार नहीं जाऊँगा, एक दिन, जब मैं घर पर कुछ निर्माण कार्य कर रहा था, तो अचानक मेरे मन में एक विचार जबरदस्त ताकत के साथ आया: 'मैं सेमनरी जा रहा हूँ।' मैंने तुरंत सब कुछ छोड़ दिया, एक बेंच पर बैठ गया और फिर से सोचा: 'मुझे जाना ही होगा।' मैं उठा, अपनी पत्नी के पास गया और दृढ़ता से उससे कहा: 'मैं पढ़ने जा रहा हूँ।' और बस, इतना ही था। पादरी ने मुझे आशीर्वाद दिया, मैं चल पड़ा, दाखिला लिया और अपनी पढ़ाई शुरू कर दी।

जब मैं अपनी पढ़ाई खत्म कर रहा था, तो मुझे रूस में रहने और सेवा करने के प्रस्ताव मिले। मैंने इस बारे में फादर को लिखा, और उन्होंने जवाब दिया: "उसे लिखो और कहो कि वह यहाँ आ जाए।" और इस तरह मैं करागंडा लौट आया। मेरा अभिषेक होना था, और फादर ने मुझसे इस बारे में बात की, यह जोड़ते हुए कि किसी को अपना पूरा जीवन ईश्वर और चर्च को समर्पित करना चाहिए। हालाँकि, उन्होंने जोर नहीं दिया। उनके शब्द थे: 'तुम जो भी निर्णय लो, ठीक है।' और एक बार फिर मैं हचिकचाया, एक बार फिर मैंने इसे टाल दिया। मैं एक पादरी बनना चाहता था, लेकिन मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकता कि मैंने पवित्र पद क्यों नहीं अपनाया; शायद, ईश्वर की इच्छा से, जो हुआ वह होना ही था। लेकिन मुझे अपने परिवार का पेट पालना था, इसलिए मैं खदानों में काम पर वापस चला गया, और अपने खाली समय में मैं फादर के चर्च जाता और गायन मंडली में गाता था। चर्च की नन मुझसे कहती थी: 'एक पादरी का आशीर्वाद यूँ ही नहीं मटि जाता।' तुम्हें फिर भी पादरी ही बनना था।' हालाँकि, मुझे यह कहना होगा कि मुझे खनिक के रूप में अपना काम भी बहुत पसंद था; मुझे सबसे अच्छा कामगार माना जाता था और मैं ऐसे कठिन कार्य करता था जहाँ, जीवित रहना भी मुश्किल था। और मेरा काम मुझे इतना खींच ले गया कि मैं चर्च कम और कम जाने लगा, जबकि फादर कमजोर होते जा रहे थे।

और इस तरह एक दिन मैं अपनी पाली में जाने के लिए सुबह पाँच बजे उठा, सड़क पर निकला – बाहर गर्मी थी, लेकिन आसमान में बादल छाए हुए थे और हलकी बूदाबांदी हो रही थी। मैंने ऊपर आसमान की ओर देखा और अचानक सोचा: 'फादर मर गए हैं।' – मुझे तुरंत लगा कि जैसे कुछ टूट गया हो। मैं कमरे में गया और अपने परिवार से कहा, 'पापा

नहीं रहे।" उन्होंने कहा, "क्या? कैसे? तुम्हें कैसे पता?" और तभी एक पड़ोसी ने खड़की पर दस्तक दी; उसे फोन पर बताया गया था: "पापा नहीं रहे।"

मैं खान पर गया, काम से छुट्टी ली, और मखाइलोवका के लिए नकिल पड़ा।

एक दिन बाद हमने पादरी को दफनाया। और जब मैं कबरस्तान से लौट रहा था, तो मैंने फैसला किया कि चूँकि पादरी की मृत्यु हो गई थी, इसलिए मेरे पास जो कुछ भी था, वह सब खत्म हो गया था। मेरी आकांक्षाएँ, सेमनरी में मेरी पढ़ाई - सब व्यर्थ हो गया था। पादरी की मृत्यु हो गई थी - सब कुछ खत्म हो गया था, और मैं भी खो गया था। और इस तरह मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि मुझे किसी चीज़ से खुशी नहीं मिलती: न तो मेरे परिवार से, न मेरे काम से, और न ही खुद जीवन से। मैं उस मुकाम पर पहुँच गया जहाँ मैंने फैसला किया कि मैं भी बेबस होकर खो गया हूँ, कि इस दुनिया में अब मेरे लिए कोई जगह नहीं बची है, और न ही अगली दुनिया में होगी। मेरे लिए केवल नरक ही बचा था - और बस इतना ही। पतिताजी के अंतिम संस्कार के बाद मैं इस नषिकर्ष पर पहुँचा था, और मैंने इस बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहा। मैंने सोचा कि अब कोई मेरी मदद नहीं कर सकता, और मैंने किसी की ओर मदद के लिए नहीं देखा। और अंतिम संस्कार के ठीक पहली रात, एक सपने में, मैंने देखा - एक बगीचा! लेकिन शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता कि वह कैसा बगीचा था! उसका कोई अंत नहीं था और न ही कोई सीमा दिखाई दे रही थी। और वहाँ पेड़ खड़े थे, ऊँचे, बहुत ऊँचे पेड़, और उनसे भी आगे, और भी ऊँचाई पर, मैं वशाल सुनहरे गुंबद और चमकते सुनहरे क्रॉस देख सकता था। मैं हैरानी से देखता रहा: क्या चर्च थे! क्या गरिजाघर थे! और बगीचे में, इस मठ में, कोई सूरज नहीं था, फरि भी प्रकाश फैल रहा था। और मैं इस बगीचे के बिल्कुल किनारे पर पहुँच गया। मैंने आगे देखा और फादर को आते हुए देखा। काले रंग की चोगा पहने, एक छोटी टोपी पहने, हाथ में लाठी लिए हुए - ठीक वैसे ही जैसे वह हमेशा चलते थे। फरि भी वह स्वयं तेजस्वी लग रहे थे, और जवान दिख रहे थे; उनके भीतर एक शक्त का अनुभव किया जा सकता था। और एक भिक्षु उनका साथ दे रहा था। और ऐसा लगा जैसे किसी ने मुझसे कहा हो: 'यह भिक्षु फादर को उनका स्वर्गीय निवास दिखा रहा है।' मैं उनका आशीर्वाद लेने के लिए आगे बढ़ा; फादर ने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा: 'तुम, यूस्टैथियस, मेरे पास आओ!' उन्होंने यह दो बार कहा; मैंने उनके हाथ को चूमा - वह हमेशा की तरह गरम था।

और इस सपने, इस दृष्टि, पतिता के शब्दों और उनके आशीर्वाद ने मुझे पूर्ण निराशा में डूबने से बचाया।

फरि भी, मैं पतिताजी के चर्च जाना बंद कर दिया। मेरे सहकर्मियों ने मुझे खान संख्या 2 के चर्च में उनके साथ गाने के लिए आमंत्रित किया, और मैं वहाँ जाने लगा।

दस साल बीत चुके थे। मैं अभी भी गायन मंडली में गा रहा था और खदान में काम कर रहा था। 1976 में, एक कार्यस्थल पर हमें नमिनलखिति कार्य करना था: छह मीटर लंबी सुरंग की छत से लटके स्थानीय वेंटिलेशन पंखे को हटाना। सुरक्षा की दृष्टि से, पंखे के नीचे लकड़ी की बीमों से बने रैक रखे गए थे; ये गरिने पर इसे पकड़ लेते। मैंने काम शुरू कर दिया। पहले, मैंने पंखे से बजिली के सभी पुरजों को अलग कर दिया, जिससे वह अपने हैंगरों से लटका रह गया। अब, उसे हैंगरों से हटाने के लिए, मुझे उसे हैंगरों से जोड़ने वाले पनी को मारकर बाहर निकालना था। फरि पंखा लकड़ी की मचान पर गरिता। मैंने शेल्वगि का निरीक्षण किया और नमिनलखिति योजना बनाई: मैं बगल के प्लेटफॉर्म पर खड़ा होऊँगा, पनी पर वार करूँगा, पंखा शेल्वगि पर गरि जाएगा, और अगर शेल्वगि उसका वजन नहीं उठा पाई और ढह गई (और उसका वजन 300 किलो था), तो मैं बगल के प्लेटफॉर्म पर सुरक्षित रहूँगा। और फरि मैंने यह काम शुरू किया: मैंने पनी पर वार किया; वह थोड़ा सा हल गया और एक पल के लिए अटक गया। मैंने फरि से वार किया; पंखा शेल्वगि पर गरि गया, और शेल्वगि ने उसका वजन संभाल लिया। लेकिन मेरे नीचे सब कुछ टूट रहा था, और मैं नीचे गरि रहा था। और जब मेरे नीचे सब कुछ ढह गया, तो उस पल मेरे मन में पहला ख्याल आया: 'यह सब बड़बड़िया की अवज्ञा करने का नतीजा है!' और मैं छह मीटर की ऊँचाई से पीठ के बल कीचड़ में, दलदल में गरि पड़ा। मेरा हेलमेट, अपने हेडलैम्प के साथ, एक तरफ उड़ गया, और रोशनी ने उस जगह को इतनी साफ़-साफ़ रोशन कर दिया कि मैं शेल्वगि यूनिट के किनारे के टूटकर अलग होने और पंखे को बीम से, एक स्लाइड की तरह, सीधे मेरी ओर लुढ़कते हुए देख सका। और जब मैंने यह देखा, तो मेरे दमिग में एक और ख्याल कौंधा: 'अपने बाएँ तरफ लुढ़क जाओ!' यह सब एक क्षण के हिससे में हो गया। कैसे न कैसे, किसी चमत्कार से, मैं अपनी बगल के बल लुढ़क गया, और पंखा मेरी बगल से तेजी से निकल गया, और बस मेरे कूल्हे को हल्का सा छू गया। डर गए हुए मजदूर मेरी ओर भागे; मैंने खड़ा होने की कोशिश की, लेकिन मेरे पैर मेरा कहना नहीं मान रहे थे। एक एम्बुलेंस सुरंग में आई; उन्होंने मुझे सतह पर ले जाकर अस्पताल पहुँचाया।

और अस्पताल में बंटाई अपनी पहली ही रात को, मैंने एक और अद्भुत सपना देखा: मैं अस्पताल में था, लेकिन यह अस्पताल ज़मीन पर नहीं, बल्कहिवा में था। वहाँ बहुत शांति और उजाला था, लेकिन रोशनी किसी तरह की अलौकिक थी। मैं वहाँ लेटा हुआ था, और दूसरे मरीज़ भी वहाँ लेटे हुए थे, और मैंने फादर अलेक्जेंडर क्रविनोसोव

को—जो तब तक गुजर चुके थे—हवा में से होते हुए चलते हुए देखा। वह एक खुली खड़की से अस्पताल के वार्ड में दाखल हुए, मेरे पास आए और मुझे बर्फ जैसे सफेद लनिन और दो सफेद प्रॉस्फोरा थमा दिए। और मैं जाग गया। मुझे आनंद का अनुभव हुआ, और उस सपने के बाद मेरा हौसला बढ़ गया।

मैंने अस्पताल में तीन महीने बताए। जब मुझे छुट्टी मिली, तो मैं पहले ही बगैर बैसाखी के चलने में सक्षम था। मैंने खुद से कहा: 'जो होगा देखा जाएगा!' और अपनी बैसाखी के सहारे धीरे-धीरे सेंट माइकल चर्च की ओर चल पड़ा। चलते-चलते मैंने सोचा: 'अगर वे मुझे गायन मंडली में स्वीकार कर लेते हैं, तो मैं गाऊंगा। और अगर वे ऐसा नहीं करते, तो भी मैं यहाँ आऊंगा, ठीक बाकी सभी पारशियन की तरह।' जब तक मैं चर्च पहुँचा, वे पहले से ही 'चेरुबिक भजन' गा रहे थे। मैं अंदर गया, और आँसू बहने लगे। मैंने खुद को क्रॉस किया, झुका, और चुपचाप पादरी से कहा: 'फादर, अपने भटकते बेटे को माफ कर दीजिए!' तभी, गायक मंडली के सदस्यों ने मुझे देख लिया और मुझे गायकों के मंच पर बुलाया। और वहाँ ऊपर, प्रार्थना सभा के बाद, मदर अनास्तासिया ने मुझसे कहा: "वे तुम्हें पादरी का पद देंगे; ध्यान रखना कतिम मना मत करना। यह तुम्हारी आखिरी पेशकश होगी।" उस समय, मैंने पूरी दृढ़ता से जवाब दिया: "मदर, मैं तैयार हूँ।"

लेकिन समय बीतता गया; मैं इंतज़ार करता रहा, पर मुझे कोई प्रस्ताव नहीं मिला; इसके बजाय दूसरों को पुरोहिता बनाया गया। पहले एक व्यक्ति को नज़रअंदाज़ किया गया, फिर दूसरे को। मदर अनास्तासिया का नधिन हो चुका था, फिर भी मुझे नज़रअंदाज़ किया जाता रहा, और मैं चुप रहा।

और एक बार फिर मैंने एक सपना देखा: पूजा-वधिविचल रही थी। फादर सेबास्टियन पूजा कर रहे थे, लेकिन उन्होंने बशिप के परधान पहने हुए थे - साकोस, ओमोफोरीयोन और माइटर, जो सभी सोने के आभूषणों से जड़े और इतनी सुंदरता वाले थे जतिनी मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी थी। मैं गायन मंडप पर खड़ी थी, प्रभु भोज ग्रहण करने की तैयारी कर रही थी। और चर्च में केवल बच्चे ही थे। फादर सेबास्टियन कलजि के साथ एम्बो पर आए; बच्चों ने उन्हें घेरा और कम्युनियन ग्रहण करने का इंतज़ार करने लगे। मैं कोयर लॉफ्ट से नीचे आया और बच्चों के कम्युनियन ग्रहण करने का इंतज़ार करने लगा। अचानक, बच्चे मुझे रास्ता देने के लिए हट गए: 'अंदर आओ!' मैं अंदर गया, फादर सेबास्टियन के पास पहुँचा, और उन्होंने मुझे पवित्र कम्युनियन के दो कण दिए। और, कम्युनियन ग्रहण करने के बाद, मैं जाग गया।

और उसी वर्ष, ऑर्थोडॉक्सी की वजिय के सप्ताह के दौरान, मुझे डीकन का पद दिया गया, और अगले दिन पादरी का पद दिया गया।

तो, तीस वर्षों तक, जैसे कयिह एक ही दिन हो, मैंने खदानों में काम किया, और पछिले अठारह वर्षों से मैं वृद्ध सेबेस्टियन द्वारा स्थापित और निर्मित, ईश्वर की माता के जन्म के चर्च में एक पुरोहिता के रूप में सेवा कर रहा हूँ।

और मुझे विश्वास है कि प्रभु, मेरे बचपन में ही मेरे हृदय की इच्छा - एक वृद्ध को खोजने की - को सुनकर, और आज तक, मुझ पर दया करते हुए और मुझे अनुशासित करते हुए, मेरी आत्मा को वृद्ध की प्रार्थना की सुरक्षा में रखते हैं।

एलेना अलेक्जेंड्रोवना अगाफोनोवा

मैं 1960 में अल्मा-आटा से करागांडा पहुँची। मैं बीस साल की थी। मेरे आने के दिन, फादर सेबास्टियन मखाइलोव्का में नहीं थे; वे मेलकोम्बाट गए हुए थे। मदर अनास्तासिया ने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया, मुझे बोर्स्ट खलाया और फादर से मिलने के लिए मुझे मेलकोम्बाट ले गईं। हम चार मंजलिा प्रीफैब्रिकेटेड फ्लैट ब्लॉक के पास बस स्टॉप पर खड़े थे, और माता अनास्तासिया ने मुझसे कहा: "लेना, इस तरह के घर की भूतल पर रहना कतिना अच्छा है!" उस समय, मैंने माता अनास्तासिया की बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन अब मैं ठीक ऐसे ही एक घर की भूतल पर रहती हूँ।

जब हम मेलकोम्बानाट पहुँचे, तो फादर ने अभी-अभी प्रार्थना खतम की थी और घर से बाहर आ गए। उनके ड्राइवर पेट्या उनके पीछे बाहर आए। फादर ने मुझे बहुत स्नेह से देखा, मुझे आशीर्वाद दिया, और मदर अनास्तासिया ने पेट्या से कहा: "पेट्या, लेना को उठाओ और उसे कार तक ले जाओ!" उन्होंने जवाब दिया: "मदर, लेकिन देखिए वह कतिनी बड़ी हो गई है!"

फादर सेवस्तोव का बहुत समय पहले नधिन हो गया था, और मदर अनास्तासिया का भी नधिन हो चुका है, लेकिन हेगूमनि पीटर अभी भी जीवित हैं, और उनकी प्रार्थनाएँ मेरे लिए बहुत बड़ी सहारा हैं।

फादर सेबास्टियन ने मुझे माता अग्निया के साथ रहने का आशीर्वाद दिया; फिर मेरी माँ मुझसे मिलने आई, और फादर ने हमारे लिए एक छोटा सा घर खरीद लिया। और मैं पापा के नधिन तक करागांडा में रही। पापा के साथ

बताया गया वह समय मेरे जीवन का सबसे खुशहाल समय था। उस समय मुझे न तो कोई चिंता थी और न ही कोई बेचैनी, और पापा की प्रार्थनाओं की बदौलत, मेरी सभी समस्याएं बहुत आसानी से हल हो जाती थीं।

मकिखैलोव्का में, फादर के साथ कई युवतियाँ रहती थीं, जिनमें नन भी शामिल थीं, और बड़ों की प्रार्थनाओं ने हमें इतना एकजुट कर दिया कि हम सभी एक ही परिवार की तरह रहते थे। उदाहरण के लिए, फादर पाप-स्वीकृति सुनते थे, और हम सब वहाँ साँसें रोककर खड़े रहते थे। फादर किसी को मार्गदर्शन का एक शब्द कहते, कुछ कहते, या पाप-मोचन की प्रार्थना का पाठ करते, और उस क्षण ऐसा लगता था मानो वहाँ सरिफ एक ही व्यक्ति खड़ा हो, और सरिफ एक ही व्यक्ति पाप-स्वीकृति कर रहा हो। फादर की देखभाल से, सब कुछ प्रेम के एक ही बंधन में बँधा हुआ था। और फादर इस बंधन को बहुत संजोते थे और अक्सर हमसे कहते थे: "लड़कियों, जितना चाहो खाओ, पियो और सोओ, बस और शांति से जियो।" फादर लोगों के जीवन की कठिनाइयों को देखते थे और अपने ध्यान और अपनी आत्मा की गर्माहट से उन्हें कम करने की कोशिश करते थे। लेकिन अगर कोई व्यक्ति उनसे किसी छपि हुए इरादे से या अपने दिल में कुछ भी बुरा रखकर मलिता, तो फादर बहुत सख्त हो जाते थे। एक बार, प्रार्थना सभा के बाद, पूजा स्थल से बाहर आकर चर्च में चलते हुए, फादर अचानक एक ऐसी महिला के बगल में रुक गए जैसी हम नहीं जानते थे और, बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से, लगभग चिल्ला उठे: 'मैं क्या जानूँ?! हँ?! मुझे पता है कि आज कौन सा दिन है, तारीख क्या है, और बस इतना ही मुझे पता है!' यह इतना सख्त लहजे में कहा गया कि हम सब दंग रह गए। बाद में पता चला कि यह महिला फादर की आज़माने आई थी।

लेकिन मुझे फरि भी अलमाटी की याद आती थी। हम मेज पर बैठे होते, और मैं अलमाटी के बारे में सोचने लगती, और पतिजाजी कहते: "लेनुशका, क्या तुमहें अलमाटी की याद आती है?" और वे मुझे छुट्टियों में अलमाटी जाने का आशीर्वाद देते। मैं जाने की तैयारी करती, और वह मुझे बहुत सारा पैसा देता और कहता: 'लो, इसे ले लो, लेनुशका; इसे छोटे सक्किों में बदलकर सेंट निकोलस कैथेड्रल की सीढ़ियों के दोनों ओर बैठे भखारियों को बाँट दो।' उन्हें बता देना कि अलमाटी में उन्होंने मुझे याद किया और मेरी प्रार्थना करना।" और पतिजाजी मुझे अलमाटी में अपने परिचितों को बांटने के लिए बहुत सारा ब्रेड देते थे। और माताजी अनास्तासिया अलमाटी में ब्रेड भेजती थीं। और एक बार माता अग्निया ने बशिप जोसेफ के लिए एक पत्र भेजा, और जब मैं बशिप से मिलने गई और हमने उनसे फादर सेवस्तोवन के बारे में बात की, तो बशिप ने कहा: "उससे प्यार करो, उस पर दया करो, उसे अपनी बाहों में उठाओ।" और जल्द ही उन्होंने फादर के लिए एक कुरसी बनाई और उन्हें अपनी बाहों में उठाना शुरू कर दिया।

एक दिन, पतिजाजी के नधिन से कुछ समय पहले, लड़कियों का एक बड़ा समूह उनकी कोठरी में इकट्ठा हुआ, और पतिजाजी ने हमसे अनंतकाल के बारे में बात की: शाश्वत जीवन और संतों के अनंत आनंद के बारे में। उन्होंने उनसे संतों के अवशेषों के बारे में एक सवाल पूछा: प्रभु शरीरों को कैसे महिमामय बनाते हैं? और फादरियों ने हमसे बात की, हमें सब कुछ बताया, और बातचीत के अंत में उन्होंने चारों ओर देखा, मुस्कुराया और बहुत धीरे से कहा: "तीस साल में, मेरा शरीर धरती से उठाया जाएगा।"

1968 की गर्मियों में, चीन गणराज्य ने सेमीपालाट्सिक क्षेत्र में झोलानोशकोल झील के आसपास सोवियत सीमा को पार करने का प्रयास किया। चीन ने कजाकस्तान के क्षेत्र के एक हिस्से पर दावा किया। उस समय मैं अलमा-आटा में रह रहा था। उस दौरान, शहर पर एक बेचैनी का माहौल था; शहरवासियों के चेहरे गंभीर थे, और हर कोई चिंतित था। विश्वासी सुबह-सुबह सेंट निकोलस कैथेड्रल की ओर भागे। और इस प्रकार, लटिर्जी के बाद, फादर पावेल मलिवानोव [संन्यास जीवन में, हायरोमंक आइज़ैक († 1991)], जो सेंट निकोलस कैथेड्रल के एक पुरोहित थे, एम्बो पर आए और प्रार्थना कर रहे सभी लोगों से बोले: "भाइयो और बहनो! आओ हम प्रभु से प्रार्थना करें, आओ हम स्वर्ग की रानी और परमेश्वर के सभी पवित्र सेवकों से नविदन करें, कि प्रभु हम पर दया करें और इस विपत्ति को हमसे दूर कर दें।" फादर पावेल और प्रार्थना कर रहे सभी लोग घुटनों के बल झुक गए। फादर पावेल ने आँसुओं से भरी आँखों से प्रार्थनाएँ पढ़ीं, और सभी ने प्रार्थना की और रोए। फरि सभी ने क्रॉस को चूमा; फादर पावेल ने उन सभी को आशीर्वाद दिया, और वे चुपचाप तिर-बतिर होने लगे।

उस रात मुझे एक सपना आया: सेंट निकोलस कैथेड्रल में प्रार्थना सभा समाप्त हो चुकी थी, और हर कोई चुपचाप बाहर जा रहा था। मैं गरिजाघर के ऊँचे बरामदे से उतरने वाला आखिरी व्यक्ति था; मैं क्रॉस का चहिन बनाने के लिए मुड़ा, और जैसे ही मैंने ऐसा करने के लिए अपना हाथ उठाया, मैंने फादर सेबास्टियन को चर्च से बाहर बरामदे पर आते और सीढ़ियों के ऊपर रुकते देखा। उन्होंने सफेद कैनवास का कासक पहना हुआ था, और उनके सरि पर कोई आवरण नहीं था। फादर सेबास्टियन से एक रोशनी चमक रही थी; उनकी आँखें आसमान की ओर थीं, उनके गालों पर आँसू बह रहे थे, और उनकी प्रार्थना के शब्द ये थे: 'प्रभु, उन्हें क्षमा कर! प्रभु, उन पर दया कर!' मैं फादर सेबास्टियन की प्रार्थनामयी आवाज़ बहुत स्पष्ट रूप से सुन सकता था। और फरि मैं जाग गया। सुबह के तीन बजे थे।

मुझे तुरंत याद आया कि कैसे, मुझे अल्माटी भेजते समय, पादरी ने मुझे रोटी और पैसे दिए थे ताकि अल्माटी में लोग उन्हें पहचान सकें।

आर्चप्रीस्ट वैलेरी ज़खारोव, अल्माटी में सेंट निकोलस कैथेड्रल के रेक्टर

1970 के दशक में, अल्माटी और कज़ाखस्तान के मेट्रोपॉलिटन जोसेफ (चेर्नोव) ने अपने एक उपदेश में नमिनलखिति कहा था: "हम, अल्माटी के लोग, तयान शान पहाड़ों की तलहटी में रहते हैं। एक ओर, हम भाग्यशाली हैं कि इन पहाड़ों की सुंदरता आँखों को आनंद देती है; लेकिन दूसरी ओर, ये पहाड़ भूकंप और भूस्खलन के खतरे को भी समेटे हुए हैं। लेकिन अल्मा-आता कभी भूस्खलन से बहा नहीं जाएगा और न ही भूकंप से नष्ट होगा, क्योंकि हमारे पास मेट्रोपॉलिटन निकोलस [अल्मा-आता और कज़ाखस्तान के मेट्रोपॉलिटन निकोलस (मोगिलेव्स्की), 1874-1955] के रूप में अद्भुत मध्यस्थ हैं। शिविरों और नरिवासन में दस वर्ष बताने के बाद, उन्होंने 1945 से 1955 तक अल्माटी और कज़ाखस्तान के डायोसीस का नेतृत्व किया। उन्हें सेंट्रल सटिं कबरस्तान में दफनाया गया है। और स्कीमा-आर्चमिंड्राइट सेवासयिन।" उनकी प्रेमादर जोसेफ ने ये शब्द कहे, और मुझे यह स्पष्ट रूप से याद है।

वोल्कोलामस्क और यूरीएव के मेट्रोपॉलिटन पटिरिमि की संस्मृतियों से

1966 में, मुझे पवतिर भूमि की यात्रा करने वाले एक तीर्थयात्री समूह में शामिल किया गया था। हमारे समूह का नेतृत्व उस समय के बाह्य चर्च संबंध विभाग के अध्यक्ष, लेननिग्राद और लाडोगा के दविगत मेट्रोपॉलिटन निको_{ДИМ} कर रहे थे। इस यात्रा के बहुत महत्वपूर्ण होने की उम्मीद थी - हमें यरूशलेम में हमारे आध्यात्मिक मशिन से संबंधित कई मुद्दों को हल करना था।

हमारे प्रस्थान की पूर्व संध्या पर, अप्रैल की शुरुआत में, मैंने कारागंदा में आर्चमिंड्राइट सेवासयिन को फोन किया, और यात्रा के लिए उनकी पवतिर प्रार्थनाओं और आशीर्वाद की मांग की। लेकिन, मुझे आश्चर्य हुआ, जब वृद्ध ने मुझे यात्रा रद्द करने की सलाह दी। 'ऐसा ही होना चाहिए; आप बाद में समझ जाएंगे,' उन्होंने उस समय फोन पर मुझसे कहा। उनका जवाब सुनकर मैं स्तब्ध रह गया; मैं पूरी तरह से हक्का-बक्का और हैरान था: एक ओर, मैं हमेशा से वृद्ध की आशीर्वाद में विश्वास करता था और उसका पालन करता था, लेकिन दूसरी ओर, मैंने अपने आप से सोचा, मैं मेट्रोपॉलिटन को अपनी मनाही का क्या कारण बताऊंगा?

यह नरिणय पूरी तरह से अचानक आया। जाने से ठीक पहले, सचमुच एक रात पहले, मुझे तेज बुखार हो गया - मेरा तापमान चालीस डिग्री तक बढ़ गया। यह स्पष्ट था कि मैं जा नहीं पाऊंगा। मैंने उनकी उत्कृष्टता निको_{ДИМ} को फोन किया और उन्हें बताया कि क्या हुआ था। ऐसा लगता है कि उस समय मेट्रोपॉलिटन इस बात से बहुत परेशान थे कि मेरी यात्रा नहीं हो पा रही थी। हमने फोन पर बात की, अपने मामलों पर चर्चा की, और उन्होंने मेरे शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

कुछ दिनों बीत गए और अचानक करगंद से फोन आया - यह फादर सेबास्टियन थे - जो मुझसे तुरंत उनके पास आने के लिए कह रहे थे। तब मुझे कतिनी हैरानी हुई: एल्डर ने सचमुच मुझे पवतिर भूमि की इतनी महत्वपूर्ण यात्रा से 'रोका' था, और अब अचानक: 'तुरंत आ जाओ।' लेकिन मैं फादर सेबास्टियन के आशीर्वाद को पूरा करने के लिए जल्दी में था; इसके अलावा, मैं पहले से ही बहुत बेहतर महसूस कर रहा था।

शनिवार, 16 अप्रैल को, मैं करागंडा पहुँचा और सीधे हवाई अड्डे से एल्डर से मिलने गया। - वह बहुत अस्वस्थ दिख रहे थे। वह पूरी तरह से कमजोर थे। - मुझे नहीं लगता कि मैंने उन्हें कभी ऐसे देखा था, तब भी नहीं जब वह बीमार थे... उन्होंने मुझसे उन्हें स्कीमा में टोंसुर करने के लिए कहा... तैयारी तुरंत शुरू हो गई; अब इसे टालना संभव नहीं था - एल्डर बहुत कमजोर थे।

ईश्वर का धन्यवाद, सब कुछ बहुत अच्छी तरह से हो गया: अपनी थकान और कमजोरी के बावजूद, फादर सेबास्टियन अपनी पूरी होश-हवास में थे, और हम उसी समय उन्हें महान दैवीय आदेश में मुंडन संस्कार दे सके।

मैं सचमुच उनके जीवन के अंतिम क्षणों तक उनके साथ रहा। उसी रात, स्कीमा में उनके मुंडन के बाद, उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई; उन्होंने अपने पापों का प्रायश्चित्त किया और पवतिर कम्युनियन ग्रहण की। उन्होंने आत्मा और शरीर दोनों की थकान की शिकायत की।

19 अप्रैल को, एल्डर का नधिन हो गया...

परम पावन पैटरआर्क अलेक्सी प्रथम ने करागंडा में मेरे नाम एक संवेदना संदेश भेजा, जिसमें उन्होंने फादर सेबास्टियन के नधिन पर अपनी संवेदना व्यक्त की और मुझे एल्डर के अंतिम संस्कार का संचालन करने का आशीर्वाद दिया।

21 अप्रैल को, चर्च के पुरोहितों की सहायता से, मैंने एक स्मारक सेवा का आयोजन किया और फरि शहर के सेंट माइकल कब्रस्तान में फादर सेबेस्टियन का अंतिम संस्कार किया।

प्रभु और हमारे ईश्वर, यीशु मसीह, यह अनुग्रह करें कि उनके सेवक, स्कीमा-आर्कमिंडराइट सेबेस्टियन की आत्मा को वहीं विश्राम मिले जहाँ धर्मी विश्राम करते हैं, और वे उन्हें धर्मी लोगों में गनित, और हम पर दया करें, क्योंकि वे भले हैं और मानवता के प्रेमी हैं। अमीन।

आर्चप्रीस्ट अलेक्जेंडर कसिलेव, करागंडा में सर्वपवतिर परमेश्वर माता के जन्म के चर्च के रेक्टर

मैं पंद्रह साल का था जब, 1956 में, हमारे पतिजी के आशीर्वाद से, हम तम्बोव क्षेत्र से करागंडा आए। मैंने स्कूल पूरा कर लिया था और अपने माता-पिता के साथ रह रहा था। पवतिर करूस के उत्थान के परव पर, फादर ने मुझे पवतिरस्थान में सेवा करने का आशीर्वाद दिया और मेरे स्टचैरियन को भी आशीर्वाद दिया। और उस समय से, परव के दिनों में, मैंने पवतिरस्थान में सहायता करना शुरू कर दिया।

मेरे लिए सेना में शामिल होने का समय आ गया था। जसि दिनी पहली चकितिसा परीक्षा के लिए बुलावा आया, पति मेल्कोम्बानात आए, जहाँ हम रह रहे थे। मैं पतिजी के पास गया उनकी आशीर्वाद लेने के लिए कि मैं मेडिकल जांच पर जाऊँ, और उन्होंने तुरंत ये भविष्यवाणी भरे शब्द कहे: "ईश्वर की इच्छा से, वे तुम्हें नहीं लेंगे, शूरा।" और वास्तव में, जब मैं सामान्य चकितिसक के पास गया और उन्होंने मेरा रक्तचाप मापा, तो वह उच्च नकिला। डॉक्टर ने मुझे आगे की जांच के लिए भेजा, और मुझे एक महीने, फरि एक साल, फरि दो साल के लिए टाल दिया गया। उसके बाद, मैं हर साल चकितिसा जांच से गुजरता था, लेकिन मेरा रक्तचाप ऊँचा ही रहता था। और कुछ साल बाद, मुझे सैन्य सेवा कार्ड जारी कर दिया गया। इस तरह, मैं अंततः सेना में शामिल नहीं हो पाया। लेकिन पहले शब्द पादरी के ही थे: 'ईश्वर ने चाहा तो, वे तुम्हें नहीं लेंगे।'

पहले चार साल, हमारा परिवार एक छोटे से दो-कमरे के खोह में रहा, और 1961 में, पतिजी की कृपा से, हमने एक बड़ा घर खरीदा। और जब पतिजी उसे पवतिर करने आए, तो वे हमारे साथ रात रुक गए। मुझे कहना होगा कि जब भी फादर मेल्कोम्बाट आते, लोग तुरंत इकट्ठा हो जाते थे—चाहे साठ या उससे भी ज्यादा। किसी को बुलाने की जरूरत नहीं होती थी; हर कोई अपना काम छोड़कर फादर के साथ प्रार्थना करने और भोजन साझा करने आ जाता था। अगर कोई नाम-दिनी या कोई और पारिवारिक उत्सव होता, तो वह सबके लिए उत्सव बन जाता था। और इस तरह, पतिजी ने हमारे घर को आशीर्वाद दिया था; भीड़ पहले ही ततिर-बतिर हो चुकी थी, और हम उनके साथ शाम की चाय पर बैठे थे जब पतिजी ने कहा: "शूरा, तुम्हें सचमुच खड़िकियों पर जाली लगवानी चाहिए।" मैंने जवाब दिया: "पतिजी, यहाँ करने के लिए और भी बहुत सी चीजें हैं," – और मैंने उनकी बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि घर के आसपास करने के लिए बहुत काम था। और ऐसा ही हुआ। लगभग दो महीने बाद, शाम को, कुछ गुंडों ने दादाजी के कमरे की खड़िकी में ईंट फेंक दी; वह दादाजी के सरि के पास से नकिलकर कोने में जा गरी। तभी मुझे याद आया कि हमें खड़िकियों पर जालियाँ लगवानी थीं, और मेरे चाचा और मैंने जल्दी से उस आशीर्वाद को पूरा किया।

पादरी कभी बेकार में नहीं बोलते थे; वे जो कुछ भी कहते, उसे आशीर्वाद मानकर पूरा करना पड़ता था।

मेरे दादाजी के साथ ऐसा एक और वाक्या हुआ था। वह काफी बूढ़े थे, उन्हें डमिया था, और कभी-कभी वह सुबह-सुबह उठकर, चुपचाप दरवाजा खोलकर भाग जाते थे। तब मैं अपनी साइकिल लेकर मेल्कोम्बानाट के आसपास उन्हें ढूँढने निकल पड़ता था। और पतझड़ के अंत में एक दिनी, जब बर्फ पहले ही गरी चुकी थी, मेरे दादा जी घर से चले गए। हम सारी शाम उन्हें ढूँढते रहे और सुबह पादरी के पास गए: "फादर, दादा जी लापता हो गए हैं; हमें उनका कोई पता नहीं चल रहा है।" – "कोई बात नहीं, ईश्वर ने चाहा तो वे वापस आ जाएँगे," – पादरी ने कहा। दादाजी दो हफ्ते तक लापता रहे। हमने उन्हें हर जगह खोजा: अस्पतालों में, शवगृहों में, हमने पुलिसि में उनकी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई; अब हम समझ नहीं पा रहे थे कि क्या सोचें। हम पादरी के पास गए: "फादर, क्या उन्हें मार दिया गया होगा?" पादरी भी सहमत से देखे: "शायद उन्हें मार दिया गया होगा।" – "या शायद उनके साथ कुछ और हुआ है?" – "शायद वह भी हो सकता है।" लेकिन बुजुर्ग के पहले शब्द थे: "ईश्वर ने चाहा तो, वह मलि जाएगा।" और दो हफ्ते बाद, एक पड़ोसी दादाजी को घर ले आया – वह उसे एक बस स्टॉप पर मलि था। और आज भी, यह रहस्य बना हुआ है कि दादाजी उन दो हफ्तों में कहाँ थे।

यहाँ एक और बहुत दिलचस्प कहानी है। करागंडा में एक साल आलू की फसल खराब हो गई थी, और पतझड़ में पादरी ने अपने संप्रदाय के लोगों को प्रतपिपरिवार एक या दो बोरी आलू दिए। उनमें से, उन्होंने हमारे चाचा को भी एक बोरी आलू दिए, जिनके परिवार में तीन लोग थे। सर्दी बीत गई, और ईस्टर से ठीक पहले, मेरे चाचा घर आए और अपनी पत्नी से कहा: "शूरा, पादरी के आशीर्वाद की बदौलत हमारे पड़ोसियों के आलू खत्म नहीं हो रहे हैं। उन्हें एक

बोरी दी गई थी; पूरा परिवार उन्हें खा रहा है, और आलू खतम नहीं हो रहे हैं।" – "लेकनि तू और मैं," उसकी पत्नी ने कहा, "हमने भी तो आलू नहीं खरीदे थे; हमने उन्हें पूरी सरदरियाँ पकाया, और देखो, हमारे पास अभी भी कुछ बचे हैं।" यह एक बड़ा चमत्कार था। यह बहुत ही चुपचाप हुआ, फरि भी पादरी के आशीर्वाद से जो दिया गया था, वह कम नहीं हुआ।

मैं सेमनिरी कैसे गया।

मेरा पादरी बनने का कोई इरादा नहीं था, और फादर ने मुझसे इस बारे में कभी बात नहीं की। उनकी अनुमति से, मैंने अपनी व्यावसायिक प्रशिक्षण पूरा किया, एक बढ़ई के रूप में योग्यता प्राप्त की, एक फरनीचर फैक्ट्री में काम किया और अपने खाली समय में चर्च में मदद की। पापा की मृत्यु के दो महीने बाद, जब फादर अलेक्जेंडर क्रविनोसोव रेक्टर बने, तो उन्होंने मुझे बुलाया और पूछा: "साशा, क्या तुम सेमनिरी में पढ़ने जाना चाहोगे?" इस सवाल ने मुझे चौंका दिया; मैंने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था और मैंने फादर अलेक्जेंडर को कोई पक्का जवाब नहीं दिया, बस कहा: "मैं मम्मी से बात करके बताऊँगा।"

उस शाम, माँ और मैंने अपनी शाम की प्रार्थना की; मेरे बसितर के ऊपर फादर की एक तस्वीर लटकी हुई थी, और मैंने उनसे प्रार्थना की कि मुझे किसी तरह बताएं कि मुझे क्या करना है। मैं सोने चली गई और मुझे एक अजीब सपना आया: ऐसा लगा जैसे फादर, फादर पीटर के घर में थे और कहीं जाने के लिए तैयार हो रहे थे। मैं उससे यह पूछने के लिए आगे बढ़ना चाहती थी कि मुझे क्या करना चाहिए, लेकिन एक महिला ने अपने ही सवाल से मुझसे पहले ही पूछ लिया। उस महिला ने उनसे बात की, फरि चली गई, लेकिन किसी कारणवश मैं फादर के पास नहीं गई; इस बीच, उन्होंने गेट खोला, बाहर निकले और वेसेन्नजि लेन के कनारे-कनारे उन माताओं के घर की ओर चल दिए। वे उनके गेट तक पहुँचे, उसे खोला और गायब हो गए। मैं फादर पीटर के घर लौट आई, और वहाँ मदर अनास्तासिया बैठी थी; तो मैंने उनसे अपना सवाल पूछा: "मदर, फादर अलेक्जेंडर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं थयोलॉजिकल सेमनिरी में पढ़ने जाना चाहूँगी।" मदर ने मेरी आँखों में ध्यान से देखा और कहा: "और तुम क्या चाहती हो—यहाँ खुश रहना, और वहाँ भी?"

और जब मुझे यह सपना आया – यह सुबह के चार बजे का समय था – तो मैंने घर में सभी को जगाया और उन्हें इसके बारे में बताया; इसने मुझ पर इतना गहरा प्रभाव डाला था।

अगली सुबह मैं मखाइलोवका गई और मैंने मदर अनास्तासिया को सब कुछ जैसा हुआ वैसा ही बता दिया, और उन्होंने बदले में जवाब दिया: "अच्छा, तो सुनो," – ऐसे देहाती लहजे में – "मदर अग्निया के पास जाओ," – और मुझे एक दूसरी बुजुर्ग नन के पास भेज दिया। उसने मेरी बात सुनी और कहा: 'नहीं, सच में, मुझे कुछ नहीं पता; यह तो माता अनास्तासिया को तय करना है।' देखिए, यही महान लोगों का वनिमर स्वभाव होता है, जब वे चीजों को अपने से दूर कर देते हैं। और दविंगत फादर के साथ भी ऐसा ही था। हम अक्सर उन्हें चर्च से उनकी कोठरी तक वदिा करते थे, और रास्ते में कोई पूछता: 'फादर, मेरी बेटा बीमार है, या मेरा पता बीमार है।' – 'आप डॉक्टर के पास क्यों नहीं जाती,' वह कहते, 'वहाँ ओल्गा फओदोरोवना हैं, वह आपको सलाह देंगी।' वे खुद प्रार्थना करते और मदद की पेशकश करते, लेकिन वे, मानो, मामला किसी और को सौंप देते थे। ठीक इसी तरह, ये वृद्ध नन लोगों को एक-दूसरे के पास, जैसे फुटबॉल की तरह, भेजती थीं। मैं मदर अनास्तासिया के पास वापस गई: 'मदर,' मैंने कहा, 'मदर अग्निया ने मुझे फरि से आपके पास भेजा है।' – "ठीक है," वह कहती हैं, " (और उसी क्षण, फादर इन्नोकेन्टी (प्रोस्वरिननि), जो उस समय भी थयोलॉजिकल अकादमी में एक छात्र थे, संयोग से वहाँ आकर फादर की कब्र पर आए थे), "तुम वहाँ जाओ, फादर की कब्र पर जाओ, पासा फेंको और एक प्रार्थना करो।" इसे तुम रख दो, और उसे लेने दो।"

और सुबह-सुबह, भोर से पहले, हम कब्र पर गए, चुपचाप प्रार्थना की, अपनी चढ़ावा चढ़ाई, और फादर इन्नोकेन्टी (जो उस समय अभी भी अनातोली इवानोवचि थे) ने लॉटरी निकाली – और सेमनिरी जाने का ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त किया। और इस तरह मैं सेमनिरी पहुँचा। और एक बार जब मैं पहले से ही एक छात्र था, तो मैंने उस सपने की व्याख्या की; वास्तव में, जब मैं पतिजी के साथ था, तो मैंने किसी और चीज के बारे में नहीं सोचा; मैं संतुष्ट था। जैसा कि रूपांतरण के दिने प्रेरितों ने कहा था: 'हमारे लिए यहाँ होना अच्छा है: हम तीन झोपड़ियाँ बनाएँ, एक तरे लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलिया के लिए; हमें और कुछ नहीं चाहिए, क्योंकि तैरे साथ होना हमारे लिए काफी है।' तो यह मेरे लिए भी अच्छा था, और मैंने किसी भी बात पर दोबारा विचार नहीं किया। मैं इसे शब्दों में कैसे बयां करूँ – यह कुछ ऐसा है जैसे आपको बस अनुभव करना होगा। अंदर से बस अच्छा लग रहा था, और आप दिल से कह नहीं सकते कि वह क्या करे... और मैंने पतिजी से कुछ नहीं पूछा, इसलिए उन्होंने भी मुझसे कुछ नहीं कहा। और जब मैं पहले से ही थयोलॉजिकल सेमनिरी में एक छात्र था, तो लाव्रा में कई उत्सव, विभिन्न मंच थे, और एक परषिद थी – पैट्रिआर्क पमैन का चुनाव – मैं परषिद के लिए एक विशेष दूत के रूप में सीधे इसमें शामिल था। लेकिन मुझे वह आध्यात्मिक माहौल, वह आध्यात्मिक अनुग्रह, कह सकते हैं, वह आत्मिक शांति महसूस नहीं हो रही थी जो मुझे एक युवा के रूप

में पतिजी की उपस्थिति में महसूस होती थी। ऐसा लगता था कि बिशपों की भीड़, और सब कुछ इतना गंभीर और उत्सवपूर्ण होने के कारण, यह सब नसिंसंदेह अच्छा था, लेकिन यह अलग था... वह स्थिरता, वह मन की शांतजिो मैंने पति की उपस्थिति में महसूस की थी, अब वहाँ नहीं थी।

हमारे चर्च में कुछ परंपराएँ हैं जिनमें पति ने ऑप्टिनि से वरिसत में मली एक प्रथा का पालन करते हुए यहाँ शुरू किया था। उदाहरण के लिए, रूस भर में त्रिमूर्ति रविवार पर पुरोहिती हरे वस्त्रों में सेवा का आयोजन करते हैं, जबकि हमारे चर्च में वस्त्र सफेद होते हैं। पादरियों ने समझाया कि इस परव पर हरे वस्त्र प्रकृति की भरपूर हरियाली का प्रतीक हैं, जबकि सफेद वस्त्र पवित्र आत्मा का प्रतीक हैं। दूसरे शब्दों में, परव के आध्यात्मिक पहलू पर जोर दिया गया था। फरि, परम पवित्र ईश्वर माता के जन्म के संरक्षक परव पर, हम नीले वस्त्र नहीं पहनते, बल्कि इस परव की भव्यता के अनुरूप सुनहरे वस्त्र पहनते हैं। यह भी फादर का आशीर्वाद था। "हे परमेश्वर की कुंवारी माता, आपकी जन्मतथि पूरे ब्रह्मांड को यह घोषणा करने के लिए एक आनंद है: क्योंकि आपसे धार्मिकता का सूर्य, मसीह हमारे ईश्वर, प्रकट हुए हैं...", अर्थात्, यहाँ हमारे उद्धार की शुरुआत प्रकट होती है; यह दिनि प्रकाश की माता को दुनिया में लाता है। ठीक इसी तरह फादर ने इस परव को धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझा था।

मुझे दविंगत मेट्रोपॉलिटन जोसेफ का दौरा करने आना याद है, उनके साथ उस समय उनके सचिव रहे फादर स्टीफन टेओडोरोविच थे। तो फादर स्टीफन ने, यह देखकर कि पीले वेस्टमंट्स तैयार किए जा रहे थे, आपत्ति जताई: "आप वहाँ क्या तैयार कर रहे हैं? क्यों? यह परमेश्वर की माता का परव है; उनकी उत्कृष्टता नीले वेस्टमंट्स पहनते हैं, फरि भी आप पीले वेस्टमंट्स तैयार कर रहे हैं?" और उन्होंने यह बात उनकी उत्कृष्टता को बताई, लेकिन उन्होंने कोई आपत्ति नहीं जताई। - 'जैसा कि परंपरा है,' उन्होंने कहा, 'वैसा ही हो।' उनकी उत्कृष्टता ने नीले वस्त्रों में उत्सव मनाया, जबकि बाकी सभी ने सुनहरे वस्त्र पहने थे। वेदी और पूरी चर्च दोनों को सोने से सजाया गया था।

प्रभु का स्वर्गारोहण मानव जाति के उद्धार के लिए ईश्वर की योजना के चरमोत्कर्ष को चिह्नित करता है। स्वर्गारोहण के दिनि, हम हमेशा चर्च के प्रांगण में एक मेज लगाते हैं, और जो भी शामिल होना चाहता है—पाँच सौ तक के पैरिशवासी—उन्हें भोजन साझा करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। और फादर के नदिन की वर्षगाँठ पर, हम आरोहण दिवस पर, चर्च के आँगन में हमेशा एक मेज लगाई जाती है, और जो भी शामिल होना चाहता है - पाँच सौ तक पल्लीवासी - भोजन में भाग लेते हैं। और हमारे पति की स्मृति के दिनि, हम हमेशा एक स्मारक सेवा, दविंगतों के लिए एक धर्मवधि और उनके कब्र पर एक स्मारक सेवा का आयोजन करते हैं। इस दिनि भी, सभी के लिए भोजन का प्रबंध होता है। और जैसे हमारे फादर हमेशा सभी की मदद करते थे - पैसे देते थे और जो कुछ भी उनके पास था, वह सब बाँट देते थे - वैसे ही हम अब अपने फादर की स्मृति दिवस पर किसी न किसी को कुछ न कुछ देने की कोशिश करते हैं। जैसे हमारे फादर ने हमारे प्रतिदान का अभ्यास किया, वैसे ही हम भी अपनी क्षमतानुसार वही करने की कोशिश करते हैं।

फरि, रविवार को उपवास-रहति अवधियों के दौरान, हर कोई सोने या पीले वस्त्र पहनता है; यहाँ, हम गहरे बरगंडी रंग के वस्त्र पहनते हैं। लाल नहीं, जैसा कि ईस्टर पर होता है, बल्कि गहरा बरगंडी। यह भी पतिजी का आशीर्वाद है। जबकि मास्को में लेंट के दौरान रविवार को बैंगनी या सोने के वस्त्र पहने जाते हैं, यहाँ हम हमेशा हरे रंग के वस्त्र पहनते हैं।

हमारे गायक मंडली में, हम ऑप्टिनि की धुन में गाया करते थे। लेकिन पुराने गायक अब बहुत कम बचे हैं, और पुराने गायन का बहुत कम अंश ही बचा है; हालाँकि, हम जो बचा है उसे संरक्षित करने की कोशिश करते हैं।

अन्य रीति-रिवाज भी हैं। उदाहरण के लिए, शनिवार को पूरी रात की प्रार्थना के दौरान, सुसमाचार ग्रेट डॉक्सोलांजी तक एम्बो के सामने रहता है, और केवल 'और अब: हे परमेश्वर की धन्य कन्या माता, तुम धन्य हो...' पर हम सुसमाचार को पवित्र स्थल में लाते हैं।

पुरोहिती शाम को स्मॉल कॉम्प्लाइन्स पढ़ते थे, और सुबह, लटिर्जी से पहले, सुबह की प्रार्थनाएँ और दो अकैथिस्ट पढ़े जाते थे। इसी तरह, एक परव से पहले और बाद के दिनों में, हम स्मॉल कॉम्प्लाइन्स में ट्रायोडियन पढ़ते हैं; 'धन्य हैं...' पर, हम हमेशा शहीदों के कैनेन की छठी ओड से पढ़ते हैं। पुरोहिती ने धार्मिक अनुष्ठानों को अनुष्ठान संबंधी नयिमें के अनुसार संपन्न करने का प्रयास किया।

हमारे पैरिश के प्रयासों के कारण, एक नए तीन-वेदी वाले कैथेड्रल का निर्माण अब पूरा हो गया है। इसका मुख्य चैपल, पवित्र वेडेनस्काया ऑप्टिनि हरमटिज की तरह, परम पवित्र थोडोकोस के मंदिर में प्रवेश के सम्मान में समर्पित है; दाहिनी ओर की चैपल का नाम सम्मान में रखा गया है करगंद के पूजनीय सेबेस्टियन के नाम पर, और बाई ओर का नाम संत कोस्मास और डेमियन, जो नःशुल्क चिकित्सक और चमत्कार करने वाले थे, के सम्मान में रखा गया है, जिनमें एल्डर के ओरेल क्षेत्र के मूल स्थान में स्थिति वेदी समर्पित की गई थी।

हमारा कैथेड्रल शास्त्रीय सदिधांतों के अनुसार बनाया गया था, और इसका आधार नूह की नाव के आकार जैसा है। इसमें कुल 1,200 लोगों की क्षमता है, इसकी ऊंचाई पंद्रह मीटर तक है, और गुंबद का सबसे ऊंचा बिंदु तीस मीटर है [1994 में मनिस्क में पूर्व यूएसएसआर के क्षेत्र में बनने वाली चर्चों के डिजाइनों के लिए आयोजित एक प्रतियोगिता में, करaganda में चर्च ऑफ द होली प्रेजेंटेशन का डिजाइन पहले स्थान पर रहा।]।

कैथेड्रल की नींव का पत्थर 14 जुलाई 1991 को, संत कोस्मास और डेमियन द अनमरसेनरीज के पर्व के दिन रखा गया था, और ठीक चार साल बाद, जुलाई 1995 में, मॉस्को और सर्व रूस के पैट्रिआर्क, परम पावन अलेक्सी द्वितीय की कजाकस्तान यात्रा के दौरान (यह रूसी चर्च के पूरे इतिहास में कजाकस्तान की धरती पर किसी रूसी पैट्रिआर्क की पहली यात्रा थी), पहले से ही निर्मिति कैथेड्रल-महल की दीवारों के पास के चौक में, परम पावन ने कारलाग के अनगिनत पीड़ितों के लिए एक स्मारक सेवा का आयोजन किया; और सेवा के बाद, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, वे दूरस्थ मखाइलोव्सकोये कब्रिस्तान में बड़ों की कब्र—जो सभी के लिए प्रिय थी—तक गाड़ी से गए, जो असीम कजाख स्टेप की आध्यात्मिक गहराइयों के केंद्र बिंदु के रूप में थी।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि, ईश्वर की इच्छा से, सभी क्षेत्रों के प्रतिनिधि और आध्यात्मिक पदानुक्रम के सभी स्तरों के लोग वर्षों के कब्र पर एकत्रित हुए। पतिमहाराज, बशिप, पुरोहित, क्षेत्रीय और शहर के प्रशासन के प्रमुख, पतिमहाराज के आध्यात्मिक बच्चे, और करागंडा के पूरे ऑर्थोडॉक्स समुदाय ने पतिमहाराज के—जो कुछ लोगों के लिए प्रिय और अवसिम्रणीय थे, लेकिन दूसरों के लिए लगभग अज्ञात थे—आत्मा की शांति के लिए प्रभु के सहिसन पर एक प्रार्थना अर्पित की। एक दयालु हृदय वाले स्वर्गीय मध्यस्थ के रूप में, मानव जाति के लिए शोक मनाने और प्रार्थना करने वाले के रूप में, एल्डर ने उन सभी को एक साथ इकट्ठा किया।

एल्डर सेवस्तियन की स्मृतियाँ, उनकी शक्ति, उनके आध्यात्मिक बच्चों द्वारा दर्ज की गईं

प्रार्थना पर

फादर ने प्रार्थना के बारे में कहा: "कोई भी कहीं भी, किसी भी समय प्रार्थना कर सकता है: खड़े होकर, बैठकर, लेटे हुए, काम करते हुए, यात्रा करते हुए। केवल चर्च में बात करना ही पाप है।"

वे सेवा के दौरान चर्च में बोलने वालों को, विशेषकर मठाधीशों को, कड़ाई से फटकारते थे। कभी-कभी वे वेस्टमेंट्स पहने हुए ही मंदिर से बाहर निकलकर उन्हें फटकारते थे।

वे लोगों को बार-बार याद दिलाते थे कि जब बस, हवाई जहाज, कार आदि में चढ़ते समय, किसी की ओर देखे बिना चुपचाप क्रॉस करना चाहिए, भले ही दूसरे हँस रहे हों। एक, दो या तीन श्रद्धालुओं के लिए, अन्य लोग भी आने वाली आपदा से बच सकते हैं। इसका एक उदाहरण इस प्रकार था: एक शाम सेवा के बाद, एक दूर के गाँव की कई महिलाएँ बस से घर लौटने वाली थीं। पुरोहित ने उन्हें आशीर्वाद देते समय पवित्र त्रिमूर्ति की प्रतमि के सामने लंबी प्रार्थना की, और सभी ने इसे देखा। और क्या हुआ? रास्ते में, जब बस एक झूलते हुए पुल से उतर रही थी, तो ड्राइवर ने सड़क पर आगे कुछ काला देखा और इतनी जोर से ब्रेक मारी कि बस पुल से नीचे जमीन पर पलट गई, और फरि वापस सीधी हो गई। यह सब इतनी तेजी से हुआ कि यात्रियों के यह समझने का भी समय नहीं था कि क्या हो रहा है या उनके साथ क्या हुआ है। एक युवती और कंडक्टर को मामूली चोटें आने के अलावा, सभी सुरक्षित और जीवित थे।

फादर के साथ रहने वाली बहनों ने एक से अधिक मौकों पर देखा था कि कैसे फादर अचानक पवित्र कोने पर आकर चुपचाप प्रार्थना करना शुरू कर देते थे। यह इस बात का संकेत था कि कहीं दूर से मदद के लिए एक प्रार्थना उन्हें प्राप्त हुई थी। यह बाद में स्पष्ट हो गया। उदाहरण के लिए, करागंडा से चार हजार किलोमीटर दूर, तम्बोव शहर में, काम से देर से घर जा रही एक युवती का एक आदमी पीछा कर रहा था, और उसने पुकारा: 'फादर, मुझे बचाइए!' और उसे दयालु लोगों ने बचा लिया।

क्रॉस के चहिन के बारे में, फादर ने टपिपणी की: "क्रॉस का चहिन सही ढंग से, ईश्वर के भय और विश्वास के साथ बनाया जाना चाहिए, न कि केवल हाथ लहराकर। और फरि झुकना चाहिए; तभी इसमें शक्ति होती है।"

नम्रता, अहंकार और विश्वास पर

फादर अक्सर हमें एक-दूसरे के अपराधों को क्षमा करने और रंजित न रखने की याद दिलाते थे, यह कहते हुए: "ईश्वर घमंडी लोगों का वरिध करते हैं, लेकिन नम्र लोगों पर अनुग्रह करते हैं।" और घमंडी लोगों के बारे में: "एक जंगली घोड़ा गहरी खाई में गिर जाता है।" और ऐसे अवसर भी थे जब, घमंड, अवज्ञा या दंभ के कारण, लोग पाप में गिर गए और प्रलोभन का सामना किया।

पुरोहिती की चर्च में गाने वाली गायिकाओं में से एक, जिसका नाम अलेक्जेंड्रा था, ने अचानक अपनी मजबूत और सुन्दर आवाज़ को तीव्रता और स्पष्टता से 'टूटते हुए' महसूस किया। और वह घमंडी हो गई – वह अहंकारी हो गई, अपनी आवाज़ के बारे में डींगें हाँकने लगी और दूसरों को छोटा समझने लगी। हमारी माताएँ, और विशेष रूप से माँ वरवरा ने, उसे प्यार से डाँटा, लेकिन शूरा ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। एक ईस्टर की रात, फादर सेबास्टियन ने उसे, दूसरों के साथ, चैपल में ईस्टर मैटर्निस सेवा में गाने के लिए भेजा, क्योंकि चर्च में पूरी मंडली के लिए जगह नहीं थी और सेवा आँगन में चैपल में भी आयोजित की जा रही थी। लेकिन शूरा ने जाने से साफ़ इनकार कर दिया। उसके इनकार से सभी हैरान थे और उन्होंने उसे फादर की आज्ञा मानने की सलाह दी। लेकिन शूरा ने नहीं सुना। तब फादर ने बहुत सख्त लहजे में कहा: "शूरा, घमंड मत करो; ईश्वर तुम्हारी आवाज़ छीन लेंगे और तुम अब गा नहीं पाओगी!" फादर की बात बिल्कुल सच साबित हुई। कुछ ही समय बाद वह बीमार पड़ गई, उसे अस्पताल में भरती कराया गया, और जब वह लौटी, तो वह अब गा नहीं सकती थी - उसकी आवाज़ चली गई थी। पादरी और उसके आस-पास के सभी लोग शूरा के लिए बहुत दुखी थे, लेकिन उसकी सेहत और उसकी आवाज़ कभी वापस नहीं आई।

लेकिन साधारण, वनिमर लोगों के लिए, पुरोहिती की प्रार्थनाओं के माध्यम से, प्रभु ने चमत्कार किए। एक युवती बचपन से आँखों की एक बीमारी से पीड़ित थी (उसकी आँखें सूज गई थीं और पूरी तरह से बंदी हुई लग रही थीं)। डॉक्टरों ने उसका इलाज करने से इनकार कर दिया। तब वह फादर के पास गई, जिन्होंने ईश्वर की दुखित माता की प्रतीति के सामने जल का आशीर्वाद देकर एक प्रार्थना सभा का आयोजन किया, और उन्हें पवित्र जल से अपनी आँखें धोने का निर्देश दिया। और, सभी की खुशी के लिए, सूजन गायब हो गई, उनकी आँखें खुल गईं, और वह पहले की तरह देख सकती थीं।

जो लोग वनिमरता और विश्वास के साथ आते थे कपिता की प्रार्थनाओं के माध्यम से ईश्वर उनके मामलों में उनकी मदद करेंगे, वह उन्हें अधिक सहजता से स्वीकार करते और उनके लिए लाभकारी शब्द कहते। लेकिन जो लोग ईश्वर के भय और विश्वास के बिना, केवल जज्बासा या बेमतलब की बातों के लिए आते थे, वह उन्हें बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करते थे, और सख्त लहजे में कहते: "मैं कुछ नहीं जानता; मैं भी बाकी सब की तरह एक पापी, बीमार और अनपढ़ आदमी हूँ। क्या मैं कोई भविष्यवक्ता हूँ, या क्या?" अगर लोग पास के किसी दूसरे इलाके के होते तो वह कहते, "तुम्हारे अपने पादरी हैं।"

एक बार, लोगों के चरित्र पर चर्चा करते हुए, फादर ने कहा—और इशारा भी किया: "इन लोगों को छेड़ना नहीं चाहिए; अपने अहंकार के कारण, वे न तो कोई टपिपणी और न ही कोई फटकार बर्दाश्त करेंगे। लेकिन दूसरों को, उनकी वनिमरता के कारण, छेड़ा जा सकता है।"

कभी-कभी वह सभी के सामने किसी को धीरे से फटकार लगाते थे (कभी-कभी तो किसी ऐसे व्यक्ति को भी जो दोषी नहीं था, लेकिन वनिमर और धैर्यवान था), ताकि उन लोगों को होश में लाया जा सके जिनसे उनकी बुराइयों और कमियों के बारे में सीधे बात नहीं की जा सकती थी। वे स्वयं ऐसे लोगों को फटकारते या नंदा नहीं करते थे, और न ही उन्होंने दूसरों को ऐसा करने का निर्देश दिया, बल्कि वे प्रतीक्षा करते, धैर्य रखते और प्रार्थना करते थे, जब तक कि वह व्यक्ति स्वयं अपनी गलती का एहसास नहीं कर लेता और पश्चाताप के साथ ईश्वर और अपने आध्यात्मिक पिता की ओर न लौट आता।

वे आत्मा में मजबूत लोगों को सभी के सामने नम्र करते थे, जिससे वे घमंड और आध्यात्मिक अहंकार से मुक्त हो जाएँ (जिसकी उपस्थिति में अच्छे कर्म भी आत्मा को कोई लाभ नहीं पहुँचाते, और व्यक्ति स्वयं अनंतकाल के लिए खो सकता है)। जो लोग इसे समझते थे, वे ऐसी शुद्धि पर प्रसन्न होते थे और तुरंत क्षमा और अपने सुधार के लिए प्रार्थनाओं का अनुरोध करते थे।

ऐसे अवसर भी थे जब फादर बुजुर्गों से छोटे लोगों से क्षमा मांगते थे; वह अन्याय के शिकारियों को वनिमर बनाते थे, जबकि अपराध करने वालों का बचाव करते थे। इसमें आध्यात्मिक बुद्धिमानी निहित थी। और अनुभवी लोग समझ गए और उन्हें कोई आपत्ति नहीं हुई।

पिता इस बात को महत्व देते थे जब कोई व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी कमियों, कमजोरियों और बुराइयों को महसूस करने लगता था। और, स्वयं पर भरोसा न करके, ईश्वर से मदद, उनसे मुक्ति और दया के लिए प्रार्थना करता था। और, पश्चाताप करने पर, उस व्यक्ति को ईश्वर से वह मिलता था जिसकी उसने प्रार्थना की थी, और वह उसे वनिमरता और कृतज्ञता के साथ स्वीकार करता था।

जब कोई उनके पास किसी पड़ोसी के बारे में शिकायत लेकर आता था, खासकर ईर्ष्या या जलन के कारण, तो फरि सब कुछ खत्म हो जाता था। वह ऐसा मुकदमा और वनिमरता का पाठ सखाते थे, और ऐसी आध्यात्मिक दवा देते

थे कि आप प्रसन्न नहीं होते थे, और फिर कभी शिकायत करने की इच्छा नहीं रखते थे। पतिजी हर किसी में ऐसी शिकायतों को जड़ से खत्म करने की कोशिश करते थे, मानो यह कोई आध्यात्मिक बीमारी हो।

वे कभी-कभी बदनाम करने वालों और पीठ पीछे बुराई करने वालों से बहुत बुद्धिमानी से नपिटते थे: वे उनकी बुराई की गई थी, उन्हें बदनाम करने वाले की उम्मीद से भी अधिक कड़ी सजा देते थे, जिससे बाद वाले में शर्म की भावना पैदा होती थी और वह अपने पड़ोसी की बुराई करना छोड़ देता था।

हालाँकि, जब भी कोई पड़ोसी के प्रति गुप्त क्रोध लेकर पतिजी के पास आता था, जो पतिजी से सुरक्षा की चाह में खुद को सही ठहराना और अपने पड़ोसी पर आरोप लगाना चाहता था, तो पतिजी सुरक्षा देने के बजाय, सभी के सामने उसे डाँटते और उसके घमंडी विचारों और कर्मों के लिए उसे नम्र करते थे।

अपराध या गलतफहमी की स्थिति में, उन्होंने उन्हें एक-दूसरे से क्षमा मांगने और रंजित न रखने की शिक्षा दी, खासकर पवित्र Communion प्राप्त करने से पहले। और वह दो भाइयों - टाइटस और इवाग्रयिस का प्रसिद्ध उदाहरण देते थे।

कभी-कभी वह यह इंगित करते थे कि घमंड (सभी पापों की जड़) किसमें और किस रूप में प्रकट होता है: कुछ लोगों में यह उनके चलने-फरने में, दूसरों में उनकी आवाज़ में, जबकि कुछ अन्य में आध्यात्मिक घमंड छिपा रहता था - जो किसी व्यक्ति के लिए सबसे खतरनाक और हानिकारक चीज है, और जिससे पहचानकर अपने आध्यात्मिक पति के सामने प्रकट करना चाहिए। केवल प्रभु ही, आध्यात्मिक पति की प्रार्थनाओं के माध्यम से, मानव आत्मा के सभी छिपे हुए कोनों को उसकी सभी उलझनों और मोड़ों सहित प्रकट करेंगे, और उसमें छिपे हुए सभी साँप निकल आएँगे, जो स्वयं और दूसरों के लिए आश्चर्य और भय का कारण बनेगा।

"प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपना अलग तरीका होता है। जो बात एक के भले के लिए कही जाए, वह दूसरे के लिए हानिकारक हो सकती है।" वे अक्सर कहते थे: "एक-दूसरे की कमजोरियों और खामियों को सहन करो - इसी में मुक्ति है। आग को आग से नहीं, बल्कि पानी से बुझाया जाता है। और बुराई पर प्रेम की विजय होती है।"

जब दो जवान महिलाएँ, या दो बुजुर्ग लेकनि अमीर महिलाएँ, बिना आशीर्वाद के एक साथ रहने लगती थीं, तो फादर कभी-कभी कहते थे: "एक बुजुर्ग, अमीर महिला के लिए यह बेहतर होगा कि वह एक छोटी लड़की या विधवा को अपने यहाँ रखे जो काम करे और उसकी देखभाल करे, उसकी आज्ञा माने, और सब अच्छा सीखे।" वे साथ रहने वाले युवाओं को बिल्कुल भी आशीर्वाद नहीं देते थे। और जो लोग साथ रहते थे, वे एक-दूसरे से नहीं मिलते थे, क्योंकि कोई भी दूसरे के आगे नहीं झुकता था, और वे कुछ भी अच्छा नहीं सीखते थे। लेकनि उन्होंने अकेले रहने वाले किसी को भी आशीर्वाद नहीं दिया, खासकर अहंकारी और जड़िदी लोगों को। उन्होंने इस तरह के जीवन जीने के खतरे की ओर इशारा किया। उन्होंने एक चमकते हुए कील का उदाहरण दिया जो दहलीज पर पैरों से घिस जाती है। दूसरी, जंग लगी, कहीं किसी कोने में पड़ी रहती है और कोई उसे छूता नहीं है। और उन्होंने यह कहावत जोड़ी: "जो एक साथ रहते हैं, वे एक-दूसरे से घिसते हैं - और सभी का उद्धार होगा।"

गरव, अहंकार और आत्मविश्वास के विषय पर, उन्होंने ऑप्टिनि संतों की एक दृष्टांत कथा का उल्लेख किया: "एक गर्मियों के गर्म दिनों में, एक भूंग उड़ता हुआ जा रहा था, चहचहाता हुआ: 'मेरे खेत, मेरे घास के मैदान, मेरे जंगल...'।" लेकनि फिर हवा चली, बारिश हुई, और भूंग एक पत्ते के नीचे समिट गया, दयनीय स्वर में कराहते हुए: 'मुझे धक्का मत देना!'

मानसिक रूप से बीमार एक महिला ने सभी के सामने फादर का अपमान किया, उन पर और उनके अनुयायियों पर गाली-गलौज की, और उन लोगों पर भी जो उसकी देखभाल कर रहे थे। लेकनि फादर ने शांति से जवाब दिया: 'और तुम मुझे कैसा समझती थीं? मैं बिल्कुल वैसा ही हूँ। खैर, जाओ और मुझसे बेहतर कोई ढूँढो!'

वे अक्सर इस प्रश्न का उत्तर देते थे, 'हमें कैसे जीना चाहिए?' ऑप्टिनि के संत एम्ब्रोज़ के शब्दों से: 'जीना दुख करना नहीं है, किसी को आँकना नहीं है, किसी को परेशान करना नहीं है, और सभी का सम्मान करना है।'

जो आपस में झगड़ते थे, उनसे वह कभी-कभी उन्हीं ऑप्टिनि के बुजुर्गों का हवाला देते हुए कहते थे: 'एक-दूसरे से घिसो, और सब बच जाएँगे।' धैर्य और कड़ी मेहनत सब पर विजय प्राप्त करेगी। परिवार के भीतर या व्यक्तियों के बीच होने वाले झगड़ों और गलतफहमियों के बारे में, वह उन्हें "दुश्मन की थूक" कहते थे। जब झगड़ने वाले सुलह कर लेते थे, तो उन्हें खुद एहसास होता था कि वास्तव में ऐसा ही था।

बीमारी पर

बीमारी की शिकायत करने वालों से, वह कभी-कभी कहते थे: 'एक जाएगी, दूसरी आएगी।' 'हमें कष्ट सहना होगा; अन्यथा, हमारा उद्धार नहीं होगा। बीमारियाँ स्वर्ग से उपहार हैं!'

बुजुर्गों और बीमारों को, तथा उन लोगों को सांत्वना देने के लिए जो ईश्वर के चर्च में नहीं जा पाने के कारण शोक मना रहे थे, वह कहते थे: "मैं आपको मन ही मन चुपचाप प्रार्थना करने का आशीर्वाद देता हूँ: 'हे प्रभु, दया करें, हे ईश्वर, मुझे पापी पर दया करें।' प्रभु आपकी सुनेंगे। अपनी बीमारियों को बना शिकायत के सहन करें। बीमारियाँ आत्मा को पापों से शुद्ध करती हैं।"

बुजुर्गों को, वह कभी-कभी भवषियवक्ता दाऊद के शब्दों के साथ जवाब देते थे: 'साठ वर्ष, या यदि कोई मजबूत हो तो अस्सी वर्ष; फरि भी उनकी मेहनत और बीमारियाँ बहुत हैं।' युवा बीमार पड़ते हैं, लेकिन बुजुर्ग इससे कैसे बच सकते हैं, जब शरीर, कपड़ों की तरह, समय के साथ घसि गया हो।

अन्य लोग सोचते हैं कि वे शराब पीकर और मांस खाकर अपने स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं और अपना जीवन लंबा कर सकते हैं। पुजारी कभी-कभी कहते थे: "नहीं, मांस केवल स्वस्थ हृदय और पेट के लिए ही फायदेमंद है; अन्यथा, यह केवल हानिकारक है। वनस्पति-आधारित भोजन बीमार शरीर द्वारा आसानी से पच जाता है और इसलिए फायदेमंद होता है।" और वह खुद को एक उदाहरण के रूप में देते थे: अपनी कई बीमारियों के बावजूद, वह मांस नहीं खाते थे, फरि भी वह एक लंबी उम्र तक जीवित रहे। और फरि वह कहते थे: "मनुष्य केवल भोजन से जीवित नहीं रहता।"

फादर ने हमें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए कहा। कड़ी ठंड में, उन्होंने हमें ऐसे कपड़े और जूते पहनने की सलाह दी जो अधिक गर्म हों, भले ही वे फैशनेबल न हों। "अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो; यह ईश्वर का एक उपहार है। अपने स्वास्थ्य का दुरुपयोग करना ईश्वर के सामने एक पाप है।"

कुछ युवाओं को, उनके खराब स्वास्थ्य को देखते हुए, फादर दसवीं कक्षा के बाद अपनी पढ़ाई जारी रखने का आशीर्वाद नहीं देते थे। "आप अपनी पढ़ाई तो पूरी कर लेंगे, लेकिन अपना स्वास्थ्य खो देंगे। और स्वास्थ्य के बिना, आप किस तरह के काम करने वाले होंगे? साथ ही, आध्यात्मिक सुनसानपन भी है - आपकी आत्मा ईश्वर की अंतिम चिगारी भी खो देगी!"

सर्दियों में, विशेष रूप से मसीह के जन्म के पर्व के आसपास, वह अपने अनुयायियों और उनके घरों को नमी से बचाने के लिए घरों को चूना-पानी से सफेद करने का आशीर्वाद नहीं देते थे। बस थोड़ी-सी सफाई करें - और बस। वह कभी-कभी कहते थे: "हमारे मठ में, हम परसिर को केवल ईस्टर पर ही चूना-पानी से सफेद करते और साफ करते थे।"

वे स्वास्थ्य रिसॉर्ट या छुट्टियों के घरों की यात्रा करने की सलाह नहीं देते थे: "उस पैसे से, वहीं रहो, घर पर ही अपना इलाज करो, आराम करो, और ईश्वर के चर्च में अधिक बार जाओ।" और वे यह भी कहते थे: "बीमारी के समय ईश्वर का धन्यवाद करो!" और जो लोग बीमारी की शिकायत करते थे, उनसे वे कभी-कभी कहते थे: "और कैसे उम्मीद करते हो कि तुम बच जाओगे? कोई दूसरा रास्ता नहीं है।" "न ही कोई दोनों राज्यों का वारसि होता है। जो कोई देह के लिए यहाँ रहता है, अपनी आत्मा को भूलकर अपनी ही सुख-शांति की तलाश में रहता है, वह स्वर्ग के राज्य से वंचित हो जाता है।"

ऐसे कई उदाहरण थे जब लोग किसी बीमारी की शिकायत लेकर फादर के पास आते थे। एक को वह कहते: 'मैं भी बीमार हूँ। मुझे भी दर्द हो रहा है।' और वह जोड़ते: 'यह बीत जाएगा!' और सब कुछ बीत जाता; व्यक्ति ठीक हो जाता। दूसरे को वह यही कहते, लेकिन 'यह बीत जाएगा' शब्द जोड़े बिना। इसका मतलब था कि यह बीतेगा नहीं।

जब भी किसी को सरिदर्द होता था, तो पतिता उन्हें 'संत जॉन द बैपटिस्ट का सरि कलम कए जाने' की प्रतमा के सामने रखे दीपक से थोड़ा तेल लेकर अपने सरि पर लगाने और संत जॉन द बैपटिस्ट से प्रार्थना करने की सलाह देते थे।

ऐसे भी मौके आते थे जब किसी की वनिती पर, 'फादर, कृपया मेरे लिए प्रार्थना करें, मेरे दाँत दर्द कर रहे हैं,' वह उत्तर देते थे: 'अपने पड़ोसियों से झगड़ा मत करो, शांति से रहो, और तुम्हारे दाँत दर्द नहीं करेंगे!'

मानसिक या भावनात्मक रूप से बीमार, या भूत-प्रेत बाधित कुछ लोगों के बारे में बात करते हुए, फादर कहते थे: 'उनमें से कुछ ठीक हो जाएँगे, कुछ को समय-समय पर अस्पताल में भरती कराया जाएगा, और कुछ अपनी मृत्यु तक इसी स्थिति में रहेंगे।' वे कुछ भूतग्रस्त लोगों को सांत्वना देते थे, उन्हें ईश्वर की मदद से धैर्य रखने के लिए प्रेरित करते हुए कहते थे: '...और तुम शहीदों की तरह हो जाओगे; तुम बिना किसी कष्ट के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करोगे।'

ऐसा होता था कि कोई बीमार पड़ जाता, घर पर लेटा रहता और सोचता: 'काश पतिताजी किसी को मेरे लिए बस एक बसिकुट ही भेज दें! तो मैं तुरंत बेहतर महसूस करूँगा।' और क्या होता? जल्द ही कोई पतिताजी की ओर से एक छोटा सा उपहार लेकर आता, जिससे बीमार व्यक्ति को बहुत खुशी होती। और वह तुरंत बेहतर महसूस करने लगता।

वह कभी-कभी कहते थे: "कुछ लोग क्यों पीड़ित होते हैं, बीमार पड़ते हैं, और लगभग अपने पूरे जीवन भर दुख, चोट आदि सहते हैं? अपने माता-पिता और पूर्वजों के पापों के कारण। इन पीड़ितों को उनके माता-पिता और पूर्वजों के पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए जीवित बलिदान के रूप में अर्पित किया जाता है।"

बीमारों की देखभाल और करुणा पर

फादर ने हमसे आग्रह किया कि हम पीड़ितों और बीमारों, विशेष रूप से अस्पताल में भरती लोगों को न भूलें, और उनके प्रति संवेदनशील और दयालु बनें – क्योंकि हम खुद भी एक दिन उनकी स्थिति में आ सकते हैं। उन्होंने कई युवतियों को अस्पतालों में काम करने का आशीर्वाद दिया। "सबसे कठोर हृदय भी, जब ऐसे पीड़ितों को देखता है, तो नरम हो सकता है और अपने पड़ोसी के प्रति सहानुभूति और करुणा से भर सकता है। आत्मा का मोक्ष इसी पर निर्भर करता है।"

जहाँ तक अमीरों से ईर्ष्या करने वालों का सवाल है, वह अक्सर उन्हें अपने दौरे पर साथ ले जाता था ताकि वे बच्चों वाली सबसे गरीब वधिवारों से मिल सकें, जो खोदकर बनाए गए घरों में रहती थीं। और वह कहता था: "देखो लोग कैसे रहते हैं! फिर भी तुम सुंदर घरों और धन-संपत्ति में रहने वालों को देखना पसंद करते हो, और ऐसी चीजों से ईर्ष्या करते हो जो कोई मोक्ष नहीं देती। मोक्ष तो यहीं है! यहीं पर करुणा और पुण्य कर्म का पाठशाला है! ईर्ष्या को जड़ से मटाने के लिए, व्यक्ति को उन लोगों को देखना चाहिए जो उससे भी बदतर जीवन जीते हैं; तब आत्मा में शांति होगी, न कभी रम। और आप ईर्ष्या करना बंद कर देंगे।"

अनलग्नता के लाभों के बारे में बात करते हुए, फादर ने अपने एक परिचित पादरी का उदाहरण दिया, जिसने अपनी मृत्यु पर कुछ भी पीछे नहीं छोड़ा: न तो पैसा और न ही संपत्ति। "कतिना अच्छा है! जब कुछ भी अतिरिक्त नहीं होता तो मरना कतिना आसान होता है! और स्वर्ग के राज्य में शरण का स्थान होगा।"

चूंकि फादर स्वयं बीमारों और गरीबों के प्रति दयालु और करुणामय थे, उन्होंने दूसरों को भी ऐसा ही करने की शिक्षा दी: "यहीं में हमारी मुक्ति निहित है।" "यदि आप स्वयं अपने पड़ोसियों पर दया नहीं दिखाते हैं और, इससे भी बुरी बात, माफ नहीं करते हैं, तो आप अपने लिए प्रभु से दया और क्षमा कैसे मांगेंगे?"

लेकिन फादर बिना कारण के दान नहीं देते थे, और न ही उन्होंने दूसरों को बिना वजह चेतावनी दी। वह विशेष रूप से शराबी लोगों से दूर रहते थे। वह कंजूसपन या अनावश्यक भव्यता को पसंद नहीं करते थे। "हर चीज में संतुलन बनाए रखें।"

ऐसे मामले भी थे जहाँ बीमार रक्षितदारों की देखभाल करने वाले लोग उनसे तंग आ जाते थे, उनके साथ बुरा व्यवहार करते थे और उन्हें रुला देते थे। और भले ही वे फादर से बहुत दूर रहते हों, वह अपने आत्मा में इसे महसूस कर लेते थे और अचानक उस परिवार के घर आ पहुँचते थे। वे बीमारों और अन्याय की शिकारियों को सांत्वना देते, सभी के बीच सुलह कराते, और प्रार्थना करते कि प्रभु बीमारों और उनकी देखभाल करने वालों दोनों को उनके आत्माओं के उद्धार के लिए धैर्य और प्रेम प्रदान करें।

पवित्र सहभाग और उपवास पर

जो लोग पवित्र सहभाग ग्रहण करने से पहले, बिना उनकी अनुमति के, अपनी मर्जी से उपवास करते थे (यानी, एक, दो या तीन दिनों तक भोजन से परहेज करते थे), उन्हें वह कड़ी फटकार लगाते थे। वह ऐसे लोगों को पवित्र सहभाग ग्रहण करने की भी अनुमति नहीं देते थे। लेकिन कमजोर और अस्वस्थ लोगों के लिए, वह उन्हें संस्कार से एक रात पहले एक कप गर्म पानी पीने और रोटी का एक छोटा टुकड़ा खाने का आशीर्वाद भी देते थे, ताकि वे सुबह तक कमजोर न हो जाएं या उन्हें अस्वस्थ महसूस न हो।

जिन लोगों का पेट या फेफड़े कमजोर या बीमार थे, उन्हें उन्होंने पवित्र रहस्यों को प्राप्त करने के बाद उपवास करते हुए, एक उपाय के रूप में दूध या दूध वाली चाय पीने की अनुमति दी। लेकिन बाद में, उन्हें पादरी को पाप-स्वीकार में यह बताना था कि उन्होंने यह बीमारी और कमजोरी के कारण अनुमति दी थी, और ईश्वर से क्षमा मांगनी थी।

फादर उन वृद्ध ननों को सख्ती से याद दिलाते थे, जिन्होंने सांसारिक दुनिया में रहते हुए, मठ के नियम का उल्लंघन करते हुए भोजन में मांस खाया था (जबकि उस उम्र में, लेंट के दौरान खाए जाने वाले भोजन को भी संयम से खाया जाना चाहिए)। ने, हालांकि, एक निश्चित उम्र तक युवाओं को मांस खाने से नहीं रोका, और फिर धीरे-धीरे उन्हें इससे दूर किया। फादर हर चीज में संयम को महत्व देते थे।

वे अक्सर कहते थे: "यदि आप बिना किसी अच्छे कारण के उपवास करने में वफिल रहते हैं, तो एक समय आगा जब आप बीमार पड़ेंगे। तब आप अपनी इच्छा से उपवास नहीं करेंगे। प्रभु आपके पापों की सजा के रूप में ऐसा होने देंगे।"

उन्होंने उन लोगों के बारे में अफसोस जताया जो शायद ही कभी चर्च आते थे, और जो दुर्लभ रूप से या बिल्कुल भी पवित्र सहभागिता प्राप्त नहीं करते थे (वर्षिषकर बुजुर्ग)। उदाहरण के तौर पर, उन्होंने चर्च के पास रहने वालों की ओर इशारा किया: "वे पूरी सेवा के दौरान एक बेंच पर बैठेंगे, लेकिन वे चर्च के अंदर नहीं आएंगे, भले ही वे खुद को ईसाई कहते हैं! हालाँकि, अन्य लोग, जो चर्च से कई किलोमीटर दूर रहते हैं, त्योहारों के दिनों में चर्च आने और अपनी आत्माओं के उद्धार के लिए प्रार्थना करने का समय निकाल लेते हैं।" उन्होंने इस बात पर भी दुख व्यक्त किया कि चर्च में बहुत कम पुरुष आते हैं: "यहाँ लगभग केवल महिलाएँ ही हैं; पुरुष कहाँ हैं?" कभी-कभी कोई कहता: "इस साल चर्च में ज्यादा लोग हैं!" जसि पर वह जवाब देते: "वे यहाँ के नहीं, बल्कि आगंतुक हैं। जहाँ तक हमारे नए शहर की बात है, जैसे पहले कोई नहीं जाता था, वैसे ही अब भी कोई नहीं जाता, कुछ महिलाओं को छोड़कर।"

कभी-कभी लेंट के दौरान, कोई कहता, "आज बहुत से लोगों ने कम्यूनियन ग्रहण की।" और वह जवाब देते, "बहुत से लोग कम्यूनियन ग्रहण कर रहे हैं, लेकिन बहुत कम लोग हैं जिन्होंने वास्तव में इसे ग्रहण किया है।"

"किसी को उन लोगों पर गर्व नहीं करना चाहिए जो नियमिति रूप से पवित्र कम्यूनियन प्राप्त करते हैं, और न ही उन लोगों के लिए नरिाश होना चाहिए जो परिस्थितियों के कारण ऐसा करने में असमर्थ हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि किसी व्यक्ति को अपनी आत्मा के उद्धार के लिए पवित्र कम्यूनियन प्राप्त करने का अवसर केवल मृत्यु के क्षण में ही मिलता है।"

वे अक्सर कहते थे: "महत्त्वपूर्ण आरंभ नहीं, न ही मध्य, बल्कि अंत है।" और उन्होंने ऐसे कई शकिषाप्रद उदाहरण दिए जिनमें लोग अपनी आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत में उत्साहपूर्वक प्रार्थना, उपवास आदि अपना लेते थे—यहाँ तक कि बिना आशीर्वाद के भी—लेकिन बाद में अपना उत्साह खोकर इस मार्ग को छोड़ देते थे। हालाँकि, अन्य लोग संयम, स्थिरता और धैर्य के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं, और सभी से आगे निकल जाते हैं। पुरोहित हर चीज में संयम को महत्त्व देते थे और कहते थे: "सभी पवित्र पतिाओं ने राजसी मार्ग पर चलना ही चुना।" 'जो कोई भी बिल्कुल शुरुआत से ही धीरे-धीरे आगे बढ़ता है, पहला कदम दो या तीन छलांगों में नहीं लगाता, बल्कि बिना जल्दबाजी के एक-एक करके अंत तक स्थिरता से बढ़ता है, वह उद्धार पाएगा।"

"संयम, आत्म-नियंत्रण, वविक, समयबद्धता और कर्मकिता सभी के लिए और हर चीज में फायदेमंद हैं।" ऐसे अवसर भी थे जब, अज्ञानता के कारण, कुछ नए आगंतुक बिना पाप-स्वीकृति किराए पवित्र प्याले के पास आ जाते थे। फादर तुरंत सख्त लहजे में पूछते, "क्या आपने पाप-स्वीकृति किराई है?" और उन्हें कम्यूनियन ग्रहण करने की अनुमति नहीं देते थे। और सेवा के बाद, वह उस व्यक्ति को पूरी तरह से अवगत कराता कि पवित्र रहस्यों को प्राप्त करने के लिए कैसे तैयारी करनी चाहिए। वह वर्षिष रूप से उन लोगों के साथ सख्त था, जो बिना किसी वैध कारण के, सेवा में देर से आते थे और अच्छे स्वास्थ्य में होने के बावजूद, बिना उचित तैयारी के, उनसे पाप-स्वीकृति किरवाने और उन्हें कम्यूनियन देने की मांग करते थे। 'केवल बीमार ही कम्यूनियन प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन आप स्वस्थ हैं और आपके कई पापों का हिसाब देना है। क्या आप वास्तव में अपने लिए समय नहीं निकाल सकते, पश्चाताप के माध्यम से खुद को शुद्ध करने के लिए, समय पर चर्च पहुँचने के लिए, धार्मिक अनुष्ठानों के निर्देशों और सेवा को सुनने के लिए, और, पाप-स्वीकृति के बाद, ईश्वर के भय के साथ कलश के पास जाने के लिए।" और वह ऐसे लोगों को कम्यूनियन प्राप्त करने की अनुमति नहीं देते थे। वे जोड़ते: "पवित्र रहस्यों के प्याले के पास जाना, एक कटोरी सूप या एक कप चाय के लिए मेज के पास जाने जैसा नहीं है।"

वे उन मरीजों या उनके रश्तिदारों से बहुत नाराज होते थे जो पवित्र रहस्यों का प्रशासन कराने के लिए एक पादरी को तब बुलाते थे जब मरीज अपनी जीभ भी हिला नहीं सकता था और उसकी होश भी खो चुकी होती थी। कुछ मामलों में दोषी रश्तिदार थे; दूसरों में, अवशिवासी मरीज खुद ही वरिध करते हुए कहते: 'क्या तुम मुझे दफनाना चाहते हो?' लोगों में यह अंधवशिवास था कि पवित्र संस्कार प्राप्त करने के बाद वह मर जाएगा।

एक मामला ऐसा था जहाँ एक पूरी तरह से बसितर पर पड़े युवक का अभिषि क किया जा रहा था। और उसे ऐसा लगा (जैसा उसने खुद बताया) कि जैसे ही अभिषि पूरा हो जाएगा, उसकी पत्नी और बच्चे उससे विदा लेने आएँगे, मानो वह मर ही रहा हो। लेकिन ईश्वर की कृपा से, अभिषि और पवित्र सहभागिता प्राप्त करने के बाद, वह ठीक होने लगा, पूरी तरह से ठीक हो गया, काम पर वापस चला गया, और चर्च जाने लगा।

फादर सेबास्टियन उन लोगों से नाखुश थे जो अंतमि संस्कार ग्रहण करने से इनकार करते थे क्योंकि उनका मानना था कि यह केवल मरने वालों को ही दिया जाता है। दूसरों में यह अंधवशिवास था कि अंतमि संस्कार ग्रहण करने

के बाद जमीन पर नहीं चलना चाहिए, जिस पर फादर सेबास्टियन नाराज़गी से जवाब देते थे: 'तो अगर तुम्हें चलना नहीं है, तो उड़ जाओ।' और फादर युवा लोगों को अभिषेक संस्कार ग्रहण करने का आशीर्वाद देते थे, क्योंकि लगभग हर कोई आध्यात्मिक और शारीरिक कष्टों से पीड़ित होता है, और जो लोग इसे विश्वास के साथ ग्रहण करते हैं, उन्हें चंगाई, शक्ति और भूले हुए पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

उत्सव के दिनों और संतों की आराधना पर

फादर अक्सर हमें दुख, बीमारी और प्रलोभन के समय, अपनी प्रार्थनाओं में सभी ईश्वर के पवित्र संतों को याद करने और उनकी स्मृतिका सम्मान करने के लिए प्रेरित करते थे। इसी तरह, हमें अपने जन्मदिन के बजाय, अपने संरक्षक देवदूत के दिन का सम्मान करना चाहिए, जिनका नाम हमने धारण किया है।

फादर उन लोगों से नाखुश थे जो अपने नाम दविस के बजाय अपना जन्मदिन मनाते थे। उन्होंने हेरोद का उदाहरण दिया, जिसने अपने जन्मदिन के एक भोज के दौरान, सेंट जॉन द बैप्टिस्ट का सरि कलम करने का आदेश दिया था।

पादरी इस बात से बहुत दुखी थे कि लोगों ने परमेश्वर की माता के चमत्कारी प्रतमाओं के पर्वों को परम पवित्र थियोटोकोस के जन्म के बारहवें महान पर्व से अधिक सम्मान दिया, जिस पर चर्च में बहुत कम लोग थे।

ईश्वर की माता के जन्म का सम्मान करने के लिए, इस पर्व के सम्मान में वेदी का अभिषेक किया गया था; परणामस्वरूप, बशिप इस पर्व के लिए आते थे और एक बड़ा उत्सव होता था।

इसके अलावा, अपनी सेवा के वर्षों के दौरान, पुरोहित ने पल्लीवासियों में संत जॉन द थियोलोजियन के महत्व और महानता की समझ पैदा की और उन्हें उनकी स्मृति के दिन चर्च आने का तरीका सिखाया। वह अक्सर कहते थे: "आखिरकार, आपके परिवारों में आपस में कोई शांति या प्रेम नहीं है। और उनकी, प्रेम के प्रेरित, संत जॉन द थियोलोजियन, को छोड़कर और कौन आपकी मदद करेगा? 'बच्चों, एक दूसरे से प्रेम करो!'"

वे अक्सर उनसे वनिती करते और उन्हें बहुत सख्त चेतावनी देते थे कि वे ईश्वर के दंड से बचने के लिए पर्व के दिनों में बाज़ार, दुकानों या कहीं और न जाएँ। उन्होंने उन्हें उत्सवपूर्ण चर्च सेवाओं को संजोना सिखाया और उन्हें किसी भी सांसारिक या आत्मा के लिए हानिकारक चीज़ के लिए न बदलने की शिक्षा दी। "केवल चर्च में ही एक व्यक्तिकी आत्मा का नवीनीकरण होता है और उसे अपने दुखों और बीमारियों से राहत मिलती है।"

वे इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि बारह महान त्योहारों पर चर्च में सब कुछ गंभीर और उत्सवपूर्ण हो, और लोग अवसर के अनुसार कपड़े पहनें—यदि नए कपड़े नहीं, तो कम से कम हल्के रंग के कपड़े तो पहनें ही। वे यह भी सुनिश्चित करते थे कि त्योहार के दिन उपयुक्त भोजन हो। लेंट के दौरान, या सप्ताह के दिनों में, वह बिना किसी अच्छे कारण के हल्के रंग के कपड़े पहनने वालों को फटकार लगाते थे। वह हर बात पर ध्यान देते थे - आध्यात्मिक मामलों और सांसारिक, रोजमर्रा की चिंताओं दोनों पर।

वह यह भी सुनिश्चित करते थे कि मोमबत्तियाँ शुद्ध मोम से बनी हों, विशेषकर वेदी पर। "मोमबत्तियों की सुगंधित खुशबू पर ईश्वर की कृपा बरसती है," फादर कहते थे, और वह मेहनती मधुमक्खी का बहुत सम्मान करते थे। वह अक्सर हमें, आलसी और लापरवाह लोगों को, उसका उदाहरण देते थे: "यह कतिना लाभ पहुँचाती है - ईश्वर को मोम, और मनुष्य को औषधीय शहद।" और जो बच्चे अपने माता-पिता, विशेषकर अपनी माँ का सम्मान नहीं करते थे, उनके लिए वह यह उदाहरण देते थे कि कैसे मधुमक्खियाँ अपनी रानी की रक्षा करती हैं: वे उसकी देखभाल करती हैं, और अगर वह बीमार पड़ जाती है, तो वे उसके चारों ओर मंडराती हैं और उसे बेहतर महसूस कराने के लिए अपने पंख फड़फड़ाती हैं।

पादरी अक्सर इस बात पर जोर देते थे कि चर्च के लिए सबसे अच्छी चीज़ें खरीदी जानी चाहिए, जबकि घटिया चीज़ें अपने लिए छोड़ दी जानी चाहिए। लेकिन हमारे यहाँ इसका उल्टा है: 'अच्छी चीज़ें अपने लिए, और घटिया चीज़ें चर्च के लिए।' और हमें पूरी लगन और अपनी पूरी क्षमता से काम करना चाहिए।

आइकन पर

फादर किसी भी परिस्थिति में पारशिदीयों से विकृत आइकन स्वीकार करने का आशीर्वाद नहीं देते थे (यानी, वे जो कैनन के विपरीत, लापरवाही से, या विकृत चेहरों के साथ चित्रित किए गए हों)। और यदि प्राचीन आइकन दान में मिलते, लेकिन कहीं-कहीं से क्षतग्रस्त होते, तो वह उन्हें मरम्मत करवाते और फिर आइकन उन लोगों को दे देते जिन्हें उनकी आवश्यकता होती थी। वे प्राचीन आइकन का बहुत सम्मान करते थे। जब किसी को प्रार्थना की यादगार

के रूप में कोई आइकन देते थे, तो वे कभी-कभी कहते थे: 'लेकिन यह एक प्राचीन आइकन है, जसिं वर्णकों से चित्रित किया गया है।' वे आइकन को चमकीले कागज के फूलों से सजाने की अनुमति नहीं देते थे।

प्रार्थना सभा से लौटने पर, फादर अक्सर लोगों के घरों में आइकन (चित्रों) को जसिं उपेक्षा की स्थिति में रखा जाता था, उस पर शोक व्यक्त करते थे। अगर एक या दो आइकन होते भी, तो वे कालखि से सने और धूल-मिट्टी से ढके होते थे, जनिहें किसी गंदे परदे के पीछे किसी दूर के कोने में इस तरह लटका दिया जाता था कि कोई उन्हें देख न सके। फरि भी, उनके और उनके बच्चों की तस्वीरें लगभग सबसे पवित्र स्थानों पर लटकाई गई थीं।

चर्च में नयिमों पर

सेवा के बाद, पुरोहिती यह नरिदेश देते थे कि कमरे में हवा आने-जाने के लिए दरवाजे और वेंट तुरंत खोल दिए जाएँ। देखभाल करने वालों और ड्यूटी पर मौजूद लोगों के लिए एक समय-सारणी भी बनाई गई थी, जसिमें यह बताया गया था कि सेवा के बाद दरवाजे कतिने घंटे खुले रहने चाहिए और सेवा से कतिनी देर पहले उन्हें खोलना है (मौसम और साल के समय को ध्यान में रखते हुए)। वह सफाई करने वालों से सफाई करते समय धूल न उड़ाने और प्रतमिओं तथा सोने की परत को धूल और कालखि से बचाने के लिए कहता था। वह सभी सेवा कर्मचारियों पर कड़ी नज़र रखता था और देखता था कि हर कोई कैसे काम करता है: कुछ पूरी लगन से, तो कुछ आलस्य और लापरवाही से। रात में, अपनी कोठरी की छोटी सी खड़िकी से, वह पहरेदारों पर नज़र रखता था और कभी-कभी कहता था: 'वह पहरेदार सारी रात आँगन में घूम रहा था; मैंने उसे खड़िकी से देखा।' और किसी दूसरे के बारे में वह कहता: 'लेकिन यह वाला सारी रात अपनी बूथ से बाहर नहीं निकला, जसिका मतलब है कि वह ड्यूटी पर होने के बजाय सो रहा था।' और वह ऐसे लोगों को नौकरी पर बनाए रखने की अनुमति नहीं देता था। इसी तरह, वह चर्च और कबरसितान में होने वाली हर चीज़—चाहे अच्छी हो या बुरी—और जो सुधार की ज़रूरत हो, उस पर पैनी नज़र रखता था। अगर कोई ई, ईश्वर के भय के बिना, हाथ-पैर पटकते हुए, दूसरों को धक्का-मुक्की करते हुए चर्च से तेज़ी से गुज़रता, या कबरसितान या सड़क पर भी ऐसा ही व्यवहार करता, तो वह सभी के शकिषा के लिए, सभी के सामने उसे डाँटता था। यह वशिष रूप से उन लोगों के लिए सच था जो धन्य लोगों की नकल करते हुए दौड़ने, पैर पटकने या शोर मचाने की अनुमति देते थे। फादर ने इसे सख्ती से मना किया था। किसी व्यक्ती के चलने-फरिने और बाहरी हरकतों से, वह उनके चरतिर और उनकी आत्मा की आंतरकि स्थतिको पहचान सकते थे। "एक को शांत और शांत से चलना चाहिए, लंबे कदम उठाए बिना या अपने पैर पटके बिना, वशिष रूप से चर्च में, भले ही वह जल्दबाजी में हो। आखरिकार, दुनिया हम पर नज़र रख रही है और हमें एक उदाहरण के रूप में ले रही है।" चेरूबकि भजन से लेकर दैवीय अनुष्ठान के अंत तक, चर्च में कोई भी हलचल वर्जति थी (जसिमें मोमबत्तियों की बकिरी, प्रार्थना अनुरोधों का रकिऑर्डगि, आदि शामिल है); फादर ने हमें प्रार्थना सेवा के अंत तक चर्च में रहने की शकिषा दी, यही कारण है कि उन्होंने हमें प्रार्थना सेवा के बाद ही क्रूस की पूजा करने की अनुमति दी। वे अक्सर दोहराते थे: "हम सभी बूढ़े, कमजोर, नाजुक, बीमार, धीमी गति से चलने वाले हैं और सब कुछ धीरे-धीरे करते हैं। इसीलिए प्रार्थना सभा में इतना समय लगता है। लेकिन जहाँ युवा पुजारी होते हैं—मजबूत और सुदृढ़—वहाँ सब कुछ जल्दी हो जाता है और प्रार्थना सभा जल्दी समाप्त हो जाती है।" (अफ़सोस, हमारे नरिश होने के लिए, हमने अब यह खुद देखा है।)

गाने पर

उन्हें प्रार्थनापूर्ण और भावपूर्ण सामूहकि गायन बहुत पसंद था। "चलिलाना ईश्वर को प्रसन्न नहीं करता, पैर पटकना तो दूर की बात है। ईश्वर बहरे नहीं हैं; वह सब कुछ सुनते हैं और हमारे वचिरों को जानते हैं।"

फादर गायकों के पढ़ने और गाने पर बहुत बारीकी से नज़र रखते थे, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे ईश्वर के भय से, श्रद्धापूर्वक और प्रार्थनापूर्वक पढ़ें और गाएं। वह चलिलाने को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, खासकर जब कोई एक व्यक्ती बाकी सभी की आवाज़ को दबा देता हो। वह गायकों की कड़ी मेहनत और धैर्य को महत्व देते थे, उन्हें बहुत मान-सम्मान देते थे और जतिना हो सके, उन पर उतना ही ध्यान देते थे। त्योहारों के दनिों में, वह उन्हें चाय पिलाते और उपहार बाँटते थे। फादर को वशिष रूप से रूमाल या हैंडkerchiefs बाँटना बहुत पसंद था। कभी-कभी वह सब कुछ बाँट देते थे, यहाँ तक कि उनके पास कुछ भी नहीं बचता था। फरि वह किसी को और रूमाल बाँटने के लिए पैसे देते थे।

वस्त्रों पर

उन्हें उन ननों से आपत्त थी जो मठ के परधान को दखावटी ढंग से पहनना पसंद करती थीं, या धर्मनरिपेक्ष वधिवाओं और युवतियों से जो काले कपड़े पहनती थीं। वे कहते थे: "नीले या धूसर रंग के साधारण कपड़े पहनना सबसे अच्छा है। काला रंग आपको बचा नहीं पाएगा, और न ही लाल रंग आपका बंटाधार करेगा।" उन्होंने युवाओं को रंग-बरिंगे कपड़े पहनने की सलाह दी ताकि वे काम पर संदेह न जगाएं या उनके बारे में गलत तरीके से बदनामी न हो।

उन्होंने यह भी कहा: 'युवाओं को अपनी दखावट पर बहुत अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए। उन्हें अपनी दखावट को लेकर बहुत खास नहीं होना चाहिए: उन्हें बार-बार स्नान करने की आवश्यकता नहीं है, न ही स्वाद के साथ कपड़े पहनने की, बल्कि अधिक अनौपचारिक रूप से, अपनी आत्मा या वविक को परेशान किए बिना, ताकि वे दूसरों के लिए ठोकर का कारण न बनें। अपना मोक्ष खोजो और दूसरों के रास्ते में बाधा न डालो। जहाँ तक बुजुर्गों का सवाल है, उन्हें स्वच्छ और सुसज्जित रहना चाहिए, ताकि लोग उनकी अवहेलना न करें या उनसे मुंह न मोड़ें।"

अनाथों पर

वे अनाथों के साथ बहुत सहानुभूति और करुणा से पेश आते थे। जब वे उनसे मिलते, तो वे पहले उन्हें खलिते, सांत्वना देते, सरि से पैर तक जांचते – यह देखते कि उन्होंने क्या पहना है और उनके पैरों में क्या जूते हैं – उनसे हर बात पूछते, और शब्दों, कर्मों और प्रार्थना से उनकी मदद करते। वे उनकी देखभाल इस तरह करते मानो वे उनके अपने बेटे या बेटि हों।

बच्चों के पालन-पोषण पर

कभी-कभी फादर वविह के बंधन और वैवाहिक कर्तव्यों के बारे में बात करते थे: एक पति या पत्नी या उनके बच्चों को बीमारी होने की स्थिति में वफादारी, विश्वास और धैर्य के बारे में। वह कृतघ्न बच्चों को डांटते थे, उन्हें उनके माता-पिता की कुरबानियों की याद दिलाते थे: उनकी कड़ी मेहनत, प्यार, जब बच्चा बीमार होता था तो पालने के पास बतिई गई नींदशैन रातें, और अपने बच्चों के जीवन और स्वास्थ्य के लिए उनका डर। "प्रभु ऐसे बच्चों से खुशी छीन लेंगे," फादर कहते थे। "अपने पति और माता का सम्मान करो, और तुम इस धरती पर लंबा जीवन जियोगे।" उन्होंने उन बच्चों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जो अपने माता-पिता के जीवित रहते हुए उनका सम्मान करते थे और उनकी मृत्यु के बाद उनके लिए प्रार्थना करते थे।

उन्होंने बार-बार उन माता-पिता को चेतावनी दी जो लगभग जन्म से ही अपने बच्चों को हठी और स्वार्थी बनना सखा रहे थे: "अब बच्चे माता-पिता का अनुसरण नहीं करते, बल्कि माता-पिता ही अपने बच्चों का अनुसरण करते हैं।" और कोई एक लड़के को अपनी दादी या माँ का हाथ खींचते हुए देख सकता था: 'चलो घर चलते हैं या सड़क पर।' बस चर्च से दूर जाने के लिए। और माता-पिता आज्ञा मानकर चले जाते थे।

एक-दो बार से अधिक, पादरी ने माता-पिता को उनके बच्चों के प्रति अत्यधिक पक्षपात और लगाव के लिए फटकारा, और इस बात के लिए कि वे ईश्वर के बजाय लगभग उनके सामने प्रार्थना करने के लिए तैयार रहते थे। "साधारण, नरिक्षर किसान खुद भी जो कुछ भी उन्हें मलि जाता है और जैसे भी मलि जाता है, उसी से कपड़े पहनते और जूते-चप्पल पहनते हैं, और भूखे रहते हैं ताकि वे अपने बच्चों को शहरी बुद्धजीवियों के बराबर कपड़े, जूते-चप्पल और शक्ति दे सकें। और एक बार जब बच्चे शक्ति हो जाते हैं, तो वे अपने माता-पिता की नरिक्षरता और फटे-पुराने कपड़ों पर तुच्छ दृष्टि डालने लगते हैं; उन्हें उन पर शर्म तक आने लगती है।"

मेट्रोपॉलिटन जोसेफ (चेरनोव) ने माता-पिता से आग्रह किया कि वे अपने बच्चों को जन्म से ही जीवित प्राणियों को न मारने की शिक्षा दें, शुरुआत तलिचट्टों, कीड़ों, पक्षियों, बलिलियों और कुत्तों से करें। अंततः यह करूरता मनुष्यों तक भी फैल जाएगी, और स्वयं माता-पिता भी इससे बचे नहीं रहेंगे। "उन्हें ईश्वर की हर रचना से प्रेम करना और उन पर दया करना सखाएँ, न कि उन्हें नुकसान पहुँचाना। इसमें पौधे भी शामिल हैं।" लेकिन कुछ उत्साही माताएँ थीं जिन्होंने मेट्रोपॉलिटन जोसेफ के उपदेश का मजाक उड़ाया: "ये किस तरह के तलिचट्टे और कीड़े-मकोड़े हैं?" वे इसका मतलब समझना भी नहीं चाहती थीं, अपने बच्चों को कुछ उपयोगी सखाना तो दूर की बात है। (शायद उनमें से कुछ को बाद में समझ आ गई, जब उनका कोई बेटा या पोता, जो जीवन से नरिश होकर बड़ा हुआ था, ने उन्हें उनकी अपनी परवरशि का सबक सखाया।)

आज्जाकारति पर

ऐसे अवसर भी थे जब आगंतुक, काम और घर पर परेशानी से बचने की इच्छा से, जल्द से जल्द जाने की जल्दी में रहते थे। लेकिन उनकी इच्छा के विपरीत, फादर उन्हें एक या दो दिन के लिए रोक लेते थे। जो आज्जा मानकर रुके, वे सुरक्षित लौटते थे, और उनके लिए घर और काम दोनों जगह सब कुछ ठीक रहता था; जबकि जो आज्जा न मानकर चले जाते थे, उन्हें रास्ते में, घर पर या काम पर दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता था। और वे पति की आज्जा न मानने पर पश्चाताप करते थे।

त्योहारों के मौसम में, वह किसी की भी यात्रा के लिए आशीर्वाद नहीं देते थे, और जो अपनी मर्जी से निकलते थे, वे भी दुख और दुर्भाग्य से नहीं बच पाते थे।

पतिजी मनमानी करने वालों को पसंद नहीं करते थे, और उनके मामलों का परिणाम दुखद होता था। एक बड़ी उम्र की युवती ने बर्ना आशीर्वाद के शादी करने का फैसला किया। दूसरों ने पति को इस बारे में बताया, और उन्होंने जवाब दिया: 'ऐसा पति कैसा? एक नकिम्मा!' और उन्होंने उससे वनिती की कविह उससे शादी न करे: 'अगर तुमने ऐसा किया, तो तुम बहुत दुखी रहोगी!' और बाद में बिल्कुल वैसा ही हुआ।

पहले तो, पतिजी, वह सबके सामने कहते थे: 'जो कोई भी अपने माता-पिता, अपने साथियों, अपने बड़ों और यहाँ तक कि अपने से छोटे लोगों की बात सुनना नहीं सीखता, वह जब बड़ा होगा तो किसी की नहीं सुनेगा, और कोई भी कभी उसकी नहीं सुनेगा।'

अंत्येष्टि सेवाओं पर

पति उन लोगों पर शोक व्यक्त करते थे जो किसी प्रियजन को खोने के बाद नरिशा और यहाँ तक कि उन्माद में डूब जाते थे, मृतक की ताबूत के पास शोर मचाते और विलाप करते थे। पति कहते थे कि ये अवशिवासी थे। 'वशिवासहीन व्यक्तियों के लिए अपने परिवार और धन-संपत्तिको पीछे छोड़कर मरना कठिन होता है; और अवशिवासी रश्तिदारों के लिए किसी ऐसे प्रियजन को खोना कठिन होता है जिसमें उन्होंने अपनी सारी सांसारिक खुशियाँ लगा रखी थीं। प्रभु उनकी आशा को चूर-चूर कर देते हैं, फिर भी वे ईश्वर की इच्छा को नहीं समझते। वशिवासियों में, हालांकि रश्तिदार मृतक के लिए रोते हैं, वे संयम के साथ ऐसा करते हैं, और हालांकि वे शोक मनाते हैं, वे मध्यमता से ऐसा करते हैं। सब कुछ प्रार्थना और ईश्वर की मदद में आशा से नियंत्रित होता है। एक वशिवासी शांतपूरवक मरता है, जैसे कि सो रहा हो, और मृत्यु के बाद, संरक्षक देवदूत का अंतिम चुंबन उसके चेहरे पर अंकित हो जाता है।'

एक अवशिवासी या आकस्मिक रूप से मृत व्यक्तियों के अंतिम संस्कार के बाद, वह कभी-कभी खुद को रोक नहीं पाते थे और कहते थे: 'ऐसे अंतिम संस्कार करना कतिना कठिन है!' (वह उन लोगों के लिए अंतिम संस्कार करते थे जो बर्ना पश्चाताप के या केवल अपने प्रियजनों को सांत्वना देने के उद्देश्य से मसीह के पवित्र रहस्यों को प्राप्त किए बर्ना मर गए थे।) और जो लोग अवशिवासियों के शवों पर (उनके रश्तिदारों के सांत्वना के लिए) भजन संहिता पढ़ते थे, उनसे भी वह यही कहते थे: 'उन पर भजन संहिता पढ़ना कतिना कठिन है!'

यदि फादर किसी ऐसे वृद्ध व्यक्तियों के लिए अंतिम संस्कार कर रहे होते थे जिसने एक धार्मिक जीवन जिया था, तो वे कभी-कभी सेवा के बाद कहते थे: 'एक पका हुआ अनाज का दाना शाश्वत अन्नभंडार में डूब गया है!' और वे किसी और के बारे में कुछ अलग कहते थे। वे मृतक की आत्मा के भाग्य को जानते थे।

वह विशेष रूप से उन मृत शिशुओं के लिए दुखी होते थे, जिनके लिए न तो व्यक्तित्व रूप से और न ही अनुपस्थिति में किसी ने अंतिम संस्कार किया था। 'वे उन्हें बपतिस्मा के लिए तो लाएंगे ही, लेकिन उनके लिए अंतिम संस्कार का आयोजन होना - यह बहुत दुर्लभ है। और क्या उनमें से बहुत से नहीं मरते?'

कभी-कभी मंत्रोच्चारण करने वालों में से कोई एक, फादर के प्रति सहानुभूति जताते हुए, मृतक के अंतिम संस्कार को अगले दिन तक के लिए टालने का सुझाव देता था, लेकिन फादर सख्त लहजे में जवाब देते थे: 'क्या तुम्हें पता है कि वह वहाँ कैसा है? इसे टाला तो जा सकता है, लेकिन तुम खुद मर सकते हो, और आत्मा बर्ना दफनाए रह जाएगी।'

वह अक्सर लोगों से आग्रह करते थे कि वे स्मृतिसभाओं में शराब न पिलाएँ, वोदका तो दूर की बात है। 'लेंट (प्रायश्चित्त का समय) के दौरान, दविगत लोगों को लेंट के भोजन से याद करें; सामान्य दिनों में भी इसे सरल रखें, केवल कुछ व्यंजनों के साथ। दविगत लोगों को इसकी आवश्यकता नहीं है।' जहाँ तक गरीबों का सवाल है, वह उन्हें तीन या चार लोगों को कुछ गर्म भोजन कराने का आशीर्वाद देते थे, और बस इतना ही।'

एक शोकाकुल महिला से, जिसने अपने इकलौते बेटे को खो दिया था, जब उसने कहा, 'यह बहुत दुख की बात है; वह एक अच्छा, आज्जाकारी लड़का था, सभी के प्रति दियालु और आस्थावान व्यक्ति था,' तो पादरी ने जवाब दिया:

यह ठीक ही है — आपको जीवन भर उसकी प्यारी यादें रहेंगी। अगर वह ज़िंदा रहता, तो एक-दो साल में वह अपने दोस्तों के साथ शराब पीकर मर जाता, और उसकी आत्मा हमेशा के लिए खो जाती।"

"और खनकि, काश वे गाली-गलौज न करते और ईश्वर का भय रखते, तो वे शहीदों की तरह होते, मौत का सामना करते हुए काम करने के लिए भूमंगित जाते। कौन जाने कविह वहां से जीवति बाहर नकिलेगा या नहीं?"

पति की स्वीकारोक्ति पर

ऐसा होता था कि कोई आदमी भारी मन लेकर पादरी के पास जाता था, किसी से रंजशि रखता था, और उसके वचिर हथौड़े की तरह उस पर पड़ते थे: पादरी से यह कहो, वह कहो। लेकिन जैसे ही वह पादरी को देखता और उनका आशीर्वाद प्राप्त करता - सब कुछ धुँ की तरह गायब हो जाता, उदासी भी और वचिर भी। उनकी कोमल, गर्मजोशी भरी दृष्टि आत्मा और हृदय को गर्माहट देती है। मनुष्य हल्का और आनंदति महसूस करता है - कहने के लिए कुछ भी नहीं होता, और शकियत करने के लिए कोई नहीं होता - हर कोई अच्छा हो जाता है। ऐसा लगता है जैसे एक काले बादल के पीछे से सूरज नकिलता हो, जो सभी को, पापी और धर्मी दोनों को, समान रूप से गर्माहट और प्रकाश देता है। और इन करिणों की रोशनी में, व्यक्ति को एहसास होता है कि वह स्वयं दूसरों से भी बदतर है।

जब भी लोग दर्शनों की बात करते, तो वह केवल एक ही उत्तर देते: 'लेकिन मुझे कुछ भी नहीं दिखाई देता!' और वह पवतिर पतिओं के शब्दों का हवाला देते, कि जो स्वर्गदूतों को देखता है वह महान नहीं है, बल्कि जो अपने पापों को देखता है, वही महान है।

बकवास पर

उन्हें यह बर्दाश्त नहीं होता था जब कोई बनिा किसी उद्देश्य या लाभ के लंबी-चौड़ी बातें करता, और, ईश्वर न करे, दूसरों की नदिा करने के इरादे से। वह तुरंत अपनी असहमतव्यक्त करते और उस व्यक्तिको होश में लाते। वह स्वयं ज्यादातर चुपचाप सुनते और अंत में, सब कुछ का जवाब सरिफ एक या दो शब्दों में देते।

वे लोगों को बकबक करने के लिए डाँटते थे, और उससे भी ज्यादा बेमतलब की बातें करने पर: "मैं जानता हूँ कि आप लंबा भाषण देने में सक्षम हैं," वह कभी-कभी सभी के उपकार के लिए किसी से कहता, "लेकिन मेरे दाँत नहीं हैं और मेरा गला दर्द करता है, इसलिए मेरे लिए बोलना मुश्कलि है।" लंबा-चौड़ा बोलने और बेमतलब की बातों के बाद, एक ऐसा भारी अवशेष रह जाता है, मानो किसी ने आत्मा पर रेत डाल दी हो, यहाँ तक कि आत्मा-रक्षक वारतालापों के बाद भी।

पतिजी यह भी कहते थे: "जो लोग बहुत बातें करना, बेकार की बकवास करना और मज़ाक करना पसंद करते हैं—ऐसे लोगों से, उनके जीवन के अंत में, भगवान उनकी वाणी छीन लेते हैं।" (जो वास्तव में, कुछ मामलों में देखा भी गया था।)

हँसी और लापरवाह व्यवहार पर

पति हँसी और शोर-शराबे वाले व्यवहार को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, खासकर यदि कोई दूसरे को धक्का दे या खींचे, और न ही वे मज़ाक, उपहास और इसी तरह की चीज़ों को बर्दाश्त कर सकते थे। उन्होंने उद्धारकर्ता का उदाहरण दिया, जो कभी नहीं हँसे बल्कि रोए, जैसा कि उनके शिष्यों ने देखा था। न ही किसी ने कभी परमेश्वर की माता को हँसते हुए देखा है।

वह उन लोगों को पसंद नहीं करते थे जो मज़ाक में भी झूठ बोलते थे। "हमेशा सच बोलो और सरिफ सच बोलो, और हँसना नहीं। हँसी-ठठोली और लापरवाही में ही व्यभिचार की शुरुआत होती है।"

ईश्वर की सहायता और आध्यात्मिक पतन पर

वे कभी-कभी कहते थे: "मृत्यु के क्षण तक, भटकने से डरो और अपनी ताकत पर भरोसा मत करो, बल्कि केवल ईश्वर की मदद पर भरोसा करो, और नम्रता से प्रार्थना में उनका आह्वान करो।"

एक वशिष युवती के पतन (जो उनके नकिटतम आध्यात्मिक शिष्यों में से नहीं थी) के संबंध में, उन्होंने अन्य लोगों को एक कठोर चेतावनी दी: "एक उपेक्षति, सड़ता हुआ घाव, जो शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों चकित्सकों से छिपा हो, उसका इलाज करना और उसे ठीक करना कठिन होता है। प्रलोभन की शुरुआत में ही, जब मैं मदद कर सकता था, तुमने उसे छिपा दिया और मुझे कुछ नहीं बताया। और जब तुम गहरे संकट में होते हो—तब ही तुम रोते और वनिती करते हो: 'पतिजी, मुझे बचा लीजिए!' लेकिन मैं तुम्हें कैसे बचा सकता हूँ जब बहुत देर हो चुकी होती है!" और

उन्होंने जोड़ा: 'सभी कामवासनाओं में सबसे उग्र कामवासना है। यह किसी व्यक्तिको उसकी बसितर पर या यहाँ तक कि मृत्युशय्या पर भी सता सकती है, विशेष रूप से उन लोगों को जिनोंने अपनी सांसारिक जीवन को वृद्धावस्था तक अनुशासनहीनता में जिया है। यह वासना हड्डियों में गहरी जमी है; यह सभी वासनाओं में सबसे नरिलज्ज है। कोई भी स्वयं इससे छुटकारा नहीं पा सकता। केवल प्रभु ही आपको तब बचा सकते हैं जब आप आँसुओं और पश्चात्तापी हृदय के साथ उनकी ओर मुड़ते हैं। मृत्यु तक इस संघर्ष को याद रखना चाहिए। जिस क्षण कोई भी थोड़ी सी भी लापरवाही बरतता है, प्रार्थना की उपेक्षा करता है, या ईश्वर का भय खो देता है, तो यह तुरंत ही महसूस होने लगेगा। केवल अविराम प्रार्थना, ईश्वर का भय, मृत्यु का स्मरण, और अंतमि न्याय, नरक और स्वर्ग का स्मरण ही इसे दूर भगा सकता है।"

कभी-कभी, जब कोई अपनी कमियों और कमजोरियों के बारे में उनसे शिकायत करता था, तो वे कहते थे: 'कतिबे पढ़ो; तुम्हें वहाँ सब कुछ मलि जाएगा!' और वे कुछ लोगों को संतों के जीवन पढ़ने का, और दूसरों को पवित्र पतिओं की रचनाएँ पढ़ने का आशीर्वाद देते थे - जो भी प्रत्येक व्यक्तिके लिए लाभदायक होता।

"अपने उद्धार के मामले में, पवित्र पतिओं और पवित्र शहीदों की मदद लेना न भूलें। उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, प्रभु हमें हमारे जुनून से मुक्त करते हैं। लेकिन कोई यह न सोचे कि वे अपनी ताकत से उनसे छुटकारा पा सकते हैं। वासनाओं के वरिद्ध संघर्ष में मृत्यु के क्षण तक स्वयं पर भरोसा न करें। केवल प्रभु के पास ही उन लोगों को मुक्त करने की शक्ति है जो उनसे मदद मांगते हैं। और मृत्यु के क्षण तक शांति न खोजें।"

कुछ लोगों ने जब लोगों, राक्षसों, वासनाओं आदिसे परेशान होने की शिकायत की, तो पति ने कई बार उत्तर दिया: "शांति तब मलि सकती है जब वे गाएँ: 'संतों के साथ उसे विश्राम प्रदान करें...' लेकिन तब तक, मृत्यु के क्षण तक शांति की खोज मत करो। मनुष्य शांति के लिए नहीं, बल्कि भविष्य के जीवन के लिए परश्रम करने और सहन करने के लिए जन्म लेता है। (विश्राम)। यहाँ हम यात्री, परदेशी, अतिथि हैं। और यात्रियों को एक अजनबी भूमि में, अजनबी मामलों के बीच कोई विश्राम नहीं मलिता। वे कदम-दर-कदम आगे बढ़ते जाते हैं, ताकि वे अपने स्वदेश— अर्थात् परमेश्वर का घर, स्वर्ग का राज्य—में अधिक जल्दी पहुँच सकें। और यदि यहाँ, इस सांसारिक दुखों की घाटी में, इस सुखों की दुनिया में, कोई अपनी चाल धीमी कर ले, तो संध्या (अर्थात् अपने दिनों का साया) अनदेखे में ही आ जाएगी, और मृत्यु आत्मा को तैयार न पाकर, अच्छे कर्मों के बनि पाएगी, और उन्हें करने का समय शेष नहीं रहेगा। मृत्यु अवश्यम्भावी है! कोई धनी व्यक्ति अपनी संपत्ति से, धन का कोई परेमी अपनी दौलत से, कोई शक्तिशाली व्यक्ति अपनी ताकत से, कोई राजा, न ही कोई योद्धा अपनी मौत को खरीद नहीं सकता, और उनमें से कोई भी अपने साथ वह कुछ भी नहीं ले जा सकता जो उसने अर्जित किया है। एक आदमी नंगा पैदा होता है, और नंगा ही चला जाता है। केवल आस्था, पुण्य कर्म और दान ही उसके साथ अगले जीवन में जाते हैं, और उसकी मदद करने के लिए कोई नहीं होगा: न तो दोस्त और न ही रश्तेदार।"

नदि पर

पतिजी ने बनि पहले उनका आशीर्वाद लिए, अन्य पुरोहितों (चाहे अपने हों या दूसरों के) की नदि करने या उन्हें तुच्छ समझने पर सख्त मनाही की थी। वह स्वयं भी ऐसे लोगों पर आशीर्वाद नहीं देते थे। "मुझे कैसे पता कि वह किस तरह का व्यक्ति है? हो सकता है कि वह हम सभी से बेहतर हो, फिर भी हम उसे दोषी ठहरा देंगे। हमें उसकी आत्मा की स्थितिकी कैसे पता चलेगा?" "बाहरी दिखावे और कर्मों के आधार पर नरिणय लेना एक गलती करने का जोखिम उठाना है, जो एक गंभीर पाप है।"

"तुम मेरे पुरोहितों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हो जैसे वे केवल लड़के हों? मैं तुम्हें झुकने पर मजबूर कर दूँगा!" — ऐसा वह उन लोगों से कहता था जो वास्तव में पुरोहितों (चाहे वे युवा हों या वृद्ध) को अपने से नीच या अपने बराबर समझते थे।

वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था जब किसी की प्रशंसा, आलोचना या नदि की जाती थी। वह सबसे नीच और कमजोर लोगों में भी अच्छी खूबियाँ ढूँढ लेता था, जबकि जिनकी प्रशंसा की जाती थी उनमें वह नकारात्मक गुण पाता था; इस प्रकार वह अहंकार को वनिम्र बनाता और खोखली महिमा का अंत कर देता था।

उन्होंने एक बार कुछ 'दूरदर्शी' व्यक्तियों से कहा: 'मैं भी लोगों की कमियाँ देखता हूँ, लेकिन मैं चुप रहता हूँ; मैं उन्हें उजागर नहीं करता। लोगों के लिए चुपचाप प्रार्थना करना बेहतर है, ताकि वे अपनी कमियों को खुद समझ सकें, बजाय इसके कि उन्हें बेधड़क उजागर कर दिया जाए, जिससे कुछ लोगों का हौसला टूट सकता है और वे नरिशा में पड़ सकते हैं।'

कभी-कभी फादर कहते थे: 'दूसरों को सखाना घंटीघर से पत्थर फेंकने जैसा है। लेकिन स्वयं उसका अभ्यास करना घंटीघर तक पत्थर खींचने जैसा है।'

संयम पर

वे सभी को मतिव्ययी और संयम का अभ्यास करना भी सखाते थे, खासकर खराब फसल के वर्षों में। एक गरीब वधिया ने डींग मारी कि उसने घर पर भुने हुए आलू खाए थे। जिस पर फादर ने टपिपणी की: "लेकिन ऐसे लोग भी हैं जिनके पास सूप के लिए आलू भी नहीं हैं, और फिर भी तुम दावत कर रही थीं, जबकि किसी ने तुम्हें वे मसीह के लिए दिए थे।"

कभी-कभी दोपहर के भोजन पर चाय के साथ मीठे बन परोसे जाते थे, और मक्खन भी रखा होता था। फादर, आपत्तनि करते हुए भी, मक्खन को हाथ नहीं लगाते थे। यह देखकर लोगों को एहसास हुआ कि मक्खन एक विलासिता और अनुशासनहीनता का प्रतीक था।

कभी-कभी मेज़बान पादरी को अकेले ही मेज़ पर बैठने के लिए आमंत्रित करते थे। वह तब तक नहीं बैठते थे जब तक कि मौजूद सभी लोगों को बैठने के लिए आमंत्रित नहीं कर दिया जाता; तभी वह उनके साथ बैठते थे। वे लोगों का देर से सोने और देर से उठने के पक्ष में नहीं थे। "देर से सोने और साढ़े पाँच बजे से पहले उठने से बेहतर है। मनुष्य को व्यवस्था और नियमितता की आदत डालनी चाहिए।"

फादर उन लोगों को पसंद नहीं करते थे जो अपनी ज़रूरत से ज्यादा जमा करते थे, और न ही वे उन लोगों की प्रशंसा करते थे जो बर्ना सोचे-समझे अपनी आखिरी चीज़ें भी उड़ा देते थे और अपनी ज़रूरतों से वंचित हो जाते थे। "एक को सुनहरे मध्य मार्ग का पालन करना चाहिए; चरमपंथ विनाशकारी होते हैं। सुनहरा मध्य मार्ग सभी सांसारिक मामलों पर, और सबसे बढ़कर द्रव्य और आध्यात्मिक मामलों पर लागू होता है। जिस कोई भी बहुत जल्दी आगे बढ़ता है, उसे रोका जाना चाहिए। और जिससे लापरवाही या कमजोरी के कारण बहुत पीछे छूट जाता है और जो अपनी आत्मा के मोक्ष की परवाह नहीं करता, उसे अपनी नींद से जागने में मदद करनी चाहिए, ताकि वह बीच वालों के साथ कदम से कदम मिलाकर चले, न तो बहुत आगे बढ़े और न ही बहुत पीछे छूट जाए।"

पुरोहित कहेंगे: "हमारे पापों और वासनाओं के लिए शराब, न तो महिलाएँ, न ही पैसा, न ही धन दोषी हैं, जैसा कि कुछ लोग खुद को सही ठहराने की कोशिश करते हैं, बल्कि हमारी अपनी अनुशासनहीनता दोषी है। शराबी शराब को दोष देते हैं; वेश्याएँ या व्यभिचारी पुरुषों या महिलाओं को दोष देते हैं; लालची लोग पैसे को दोष देते हैं; अमीर धन को दोष देते हैं; और इसी तरह। इससे यह नष्टि नकिलता है कि यदि शराब, महिलाएँ, पैसा या धन-संपत्ति नहीं होती, तो पापी पाप नहीं करते। ईश्वर ने सभी चीज़ों को बड़ी बुद्धिमत्ता और सुंदरता से व्यवस्थित किया है। लेकिन बुराई चीज़ों के अनुचित उपयोग और संचालन से उत्पन्न होती है।"

उन्होंने एक से अधिक अवसरों पर यह भी कहा: "बुराई को अपने भीतर खोजो, न कि दूसरों में या उन चीज़ों में जिनमें तुमने ठीक से संभालने में असफल रहे हो। ठीक वैसे ही जैसे एक बच्चा आग या तलवार को संभालता है: वह खुद को जला लेता है, वह खुद को काट लेता है।"

मेरे बारे में

एक बार जब पूछा गया, "आप सब यहाँ क्यों इकट्ठा हुए हैं?", तो एक महिला ने सरलता से उत्तर दिया, "आपको देखने के लिए।" पुजारी ने कहा, "अगर आप मुझे देख रही हैं, तो आपकी आँखें ज़रूर कमजोर होंगी।"

वह अक्सर चर्च परिषद को याद दिलाता और महाधर्माध्यक्ष को लिखता कि वह सक्रिय मंत्रालय से सेवानिवृत्त होना चाहता है (एकांत में रहना चाहता है), कहते हुए: "जब मेरी अपनी छत टपक रही हो, तो दूसरों की छतें ठीक करना काफी है।" लेकिन जवाब हमेशा एक ही होता था: "मृत्यु तक सेवा करो।"

जब उन्हें महसूस हुआ कि उनका अंत नजिक है, तो वे अक्सर उन्हें पुरोहित और नेतृत्व के पदों पर ऐसे लोगों को नियुक्त करने की याद दिलाते थे, जो कमजोर और नाजुक होने के बावजूद 'हम में से एक' थे। फिर सब कुछ अपरिवर्तित रहता, ठीक वैसे ही जैसे फादर के समय था।

मुख्य पर्व के दिनों में, वह गायन मंडली के सदस्यों को मठाई खिलाते थे। और स्मरणोत्सव सेवा के बाद, वह व्यक्तिगत रूप से उपस्थित सभी लोगों को यह कहते हुए बाँटते थे: 'मेरे साथ ऐसा ही है; खुद ले लीजिए—मेरा कोई परिवार नहीं है।'

"मुझे यह सब क्यों इकट्ठा करना चाहिए? मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।" लेकिन लोग आँसू भरी आँखों से उनसे वनिती करते कि वे उनसे कम से कम कुछ तो स्वीकार कर लें। और फादर कुछ लोगों से वह ले लेते, उस पर

आशीर्वाद देते, और उन्हें वापस कर देते। दूसरों से वह उसे ले लेते और तुरंत किसी और को दे देते। और तीसरे समूह से वह उनकी नाराज़गी के बावजूद कुछ भी नहीं लेते थे। और अगर वे कुछ पीछे छोड़ जाते, तो वह उसे लंबे समय तक बना छुए छोड़ देते, और फिर किसी ज़रूरतमंद को दे देते।

वह स्वेच्छा और प्रेमपूर्वक सभी को प्रॉस्फोरा बाँटते थे, विशेषकर उन लोगों को जो दूर-दराज से आए होते थे। पवतिर सप्ताह के दौरान, सेवा के बाद, वह चर्च या स्मारक चैपल में बैठते थे; उनके बगल में ईस्टर अंडों की एक टोकरी रखी जाती थी, और अपना आशीर्वाद देते हुए, वह प्रत्येक व्यक्ति को एक ईस्टर अंडा देते थे, जिससे सभी को आनंद और सांतवना मिलती थी।

संन्यासी जीवन और संसार पर

उन्होंने एक बार कहा था: "हम संन्यासियों और दुनिया के बीच एक गहरी खाई है। दुनिया हमारी ज़िंदगी को कभी नहीं समझ पाएगी, और न ही हम उनकी। अगर भिक्षुओं को पहले से पता होता कि सिंकीरुण लेकनि उद्धार करने वाले मार्ग पर उनकी प्रतीक्षा में कतिनी परीक्षाएँ और दुख हैं, तो कोई भी मठ में प्रवेश नहीं करता। और अगर दुनिया को उन लोगों के लिए भविष्य में मिलने वाले आशीर्वादों का पता होता जो मठीय संन्यास ग्रहण कर चुके हैं, तो हर कोई मठ में प्रवेश कर जाता।"

"मठों को क्यों बंद कर दिया गया? क्योंकि संन्यासी ट्रोइका में घूमने और ऊनी कोट पहनने लगे थे। जबकि पहले, संन्यासी कैनवास के कस्सोक और मोटे लनिन के चोगा पहनते थे, और लगन से मेहनत करते थे। और वे सच्चे संन्यासी थे। कुलीन वर्ग की एक एब्बेस, अपनी ही ननयियों में से नहीं, बल्कि अपने नरिदयी व्यवहार और क्रूरता से नए प्रवेशियों को शीघ्रता से स्वर्ग के राज्य में पहुँचा देती थीं। गरीब ननयियाँ पत्तागोभी पर अपना उपवास खोलती थीं, जबकि एब्बेस, अपने उच्च अधिकारियों को खुश करने के लिए, उन्हें सब कुछ दे देती थीं, फिर भी अपनी ही ननयियों को आवश्यक वस्तुओं से वंचित रखती थीं।"

वह अक्सर ये शब्द दोहराते थे: 'एक दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था और उसे पूरा नहीं करता था, उसे उस दास की तुलना में अधिक कठोरता से पीटा जाएगा जो अपने स्वामी की इच्छा नहीं जानता था।' और कुछ से उन्होंने सीधे कहा: 'तुम सब कुछ जानते हो, फिर भी तुमने (या उसने) ईश्वर को दुनिया के लिए छोड़ दिया है।' "दुनिया सोने का वादा करती है, लेकनि कीचड़ देती है।" "अवविहति व्यक्ति परमेश्वर की परवाह करता है, जबकि विविहति व्यक्ति अपनी पत्नी की परवाह करता है।" "जसिने खुद को विवाह के बंधनों में नहीं बाँधा है, वह हमेशा स्वतंत्र है। उसकी एकमात्र चिंता उसकी आत्मा का उद्धार है। जीवन का उद्देश्य पवतिरता है; इसका अंत स्वर्ग का राज्य है।"

जब फादर युवा थे और उनकी सेहत बेहतर थी, तो वे वाहन का उपयोग करने से इनकार कर देते थे, यह कहते हुए: "मैं एक भिक्षु हूँ; मुझे चलना चाहिए, सवारी नहीं करनी चाहिए।" और वे लंबी दूरी तक पैदल चलते थे, उदाहरण के लिए, फेदोरोव्का, मेलकोम्बाट, जेल्लेरेस्ट, करिज़ावोद, आदि गांवों तक। और वह कभी-कभी कहते थे: "मैं झरने से अच्छा पानी लाने के लिए एक केतली लेकर जेलनरेस्ट के बाहरी इलाके तक पैदल जाना पसंद करता था। और रास्ते में मैं गाया करता था: 'उसने हम पर अपनी दृष्टि डाली है!'..."

दो युवतियों ने नवोदितों से पतिजी से उनके बारे में बात करने के लिए कहा। जसि पर पतिजी ने एक पल के लिए सोचने के बाद जवाब दिया: 'तुम नहीं जानती कि क्या करना है... अगर आप उनका स्वागत करेंगे, तो वे आपसे और भी अधिक जुड़ जाएँगी; और अगर आप ऐसा नहीं करेंगे, तो वे नाराज़ हो जाएँगी।' इन शब्दों के साथ, फादर ने उन युवा पुरुषों को—जो बाद में पादरी बने—यह स्पष्ट कर दिया कि युवा महिलाओं का पादरियों के प्रति, और पादरियों का युवा महिलाओं के प्रति, अत्यधिक लगाव सुरक्षित नहीं है। लेकनि असभ्यता भी सुरक्षित नहीं है। एक बार फिर, प्रशंसनीय सुवर्ण मध्यम मार्ग। "जो कोई भी ईश्वर की मदद से इसे प्राप्त करने में सफल होता है, वह कई प्रलोभनों से बचेगा।"

एक अवसर पर, एक घर में चाय पीते समय, लड़कियाँ एक कमरे में बैठी थीं और महिलाएँ दूसरे कमरे में (कभी-कभी ऐसा होता था कि लड़कियों के सुधार के लिए, उन्हें एक बात कहनी होती थी, और महिलाओं को कुछ और)। अचानक, महिलाओं में से एक उस कमरे में आ गई जहाँ, जहाँ फादर भी बैठे थे। उन्होंने उसे सख्त नज़रों से देखा और कहा: "आखिरकार, यहाँ तो सिर्फ युवतियाँ बैठी हैं, जबकि महिलाएँ दूसरे कमरे में हैं; तो जाओ और उनके साथ बैठो।" वह नाराज़, आँसुओं से और अपमानित महसूस करते हुए चली गई, जसि पर फादर ने कहा: "नाराज़ क्यों हो रही हो? मैंने तो बस सच कहा है: चूँकि तुम एक महिला हो, तुम्हें महिलाओं के साथ बैठना चाहिए। मैंने यह नहीं कहा कि विह एक पुरुष है, तो फिर नाराज़ क्यों हो रही हो?"

एक बार, एक मेज पर जहाँ महिलाएँ और युवतियाँ दोनों बैठी थीं, वहाँ की एक महिला ने टपिपणी की कफ़ादर ने महिलाओं की तुलना में युवतियों के प्रति अधिक करुणा दिखाई। इस पर उन्होंने, बिना किसी लाग-लपेट के, सीधे उससे कहा: "और तुम कतिनी बार शादी कर चुकी हो? तुमने हर तरह की सुख-सुविधा देखी है, लेकिन युवतियों को – कुछ भी नहीं! वे तो बस पादरी का सूप चम्मच-चम्मच करके खत्म करने में ही खुश हैं, जो उनके लिए एक बड़ी सातवना है।"

वह अक्सर उन्हें अपने विचारों और अपने हृदय की पवित्रता का ध्यान रखने की याद दिलाते थे, और 'पवित्र मूर्खों' की नकल न करने के लिए कहते थे; वह कहते थे: "सदाचार और हृदय की पवित्रता के बिना संयम आपको बचा नहीं सकता।" "बाहरी दिखावा बेकार है यदाभीतर गंदगी हो, और वासनाओं पर वज्रिय न मली हो।" "उद्धारकर्ता ने जॉन द थयिलोजियन से प्रेम क्यों किया, यदाउनकी पवित्रता, ब्रह्मचर्य, प्रेम, निष्ठा, कोमलता और आज्ञाकारिता के लिए नहीं! सभी शिष्यों ने क्रूस पर यीशु मसीह को छोड़ दिया; केवल जॉन द थयिलोजियन ही नडिर होकर क्रूस के पास खड़े रहे।" और एक से अधिक बार, फादर यह भी कहते थे: "प्रेम सभी गुणों से ऊपर है।" "ईश्वर प्रेम है," "प्रेम के बिना, भले ही आप अपना शरीर बलिदान के लिए जलाने के लिए अर्पित कर दें - यह सब कुछ नहीं होगा।" "जहाँ प्रेम है, वहाँ ईश्वर है।" "जहाँ ईश्वर है, वहाँ शांति, सामंजस्य और प्रसन्नता है। जहाँ प्रेम नहीं है, वहाँ वरिधाभास, संघर्ष, कलह, विश्वासघात और बदनामी है।" "प्रेम धैर्यवान है; प्रेम सब कुछ सहन करता है; प्रेम को कोई बुराई याद नहीं रहती; वह क्रोधित नहीं होता; वह बुरा नहीं मानता; वह अपना हित नहीं चाहता। प्रेम दूसरों का, यहाँ तक कि शत्रुओं का भी, भला चाहता है।" उदाहरण के रूप में, फादर जॉन द थयिलोजियन का उदाहरण देते थे, जिन्होंने प्रेम के द्वारा अपने शिष्य को डाकुओं के गरीब से वापस चर्च की गोद में लाया था।

वे अक्सर जॉन द थयिलोजियन के शब्दों को दोहराना पसंद करते थे: "बच्चो, एक दूसरे से प्रेम करो!" इन शब्दों के साथ, उन्होंने हमें ईश्वर और पड़ोसी के प्रति प्रेम की याद दलाई, जिसके बिना न तो परश्रम, न प्रार्थना, और न ही उपवास का कोई लाभ है।

शेमा-आर्कमैड्राइट सेबस्टियन के प्रवचनों से

पश्चातापी पापी पर एक उपदेश

"हे पापी, अपने जुनून और पापी आदतों को त्याग दो; स्वर्ग तुम्हें ननियानवे धरमी लोगों से भी अधिक बुलाता है! स्वर्ग में स्वर्गदूत एक ही पश्चाताप करने वाले पापी पर आनंद मनाते हैं। स्वर्ग आपकी मुक्ति चाहता है। बस पश्चाताप करो, प्रभु की ओर लौटो, और पाप से दूर हो जाओ। आपके लिए, प्रभु स्वयं जानवरों के बीच एक खलहान में पैदा हुए और उन्होंने दुख उठाया: उन्हें कान पर मारा गया, उन पर थूक उड़ाया गया, कांटों का मुकुट पहनाया गया, और उनकी ही सृष्टि के हाथों उन्हें सूली पर चढ़ाया गया। उन्होंने दुख उठाया और मृत्यु को प्राप्त हुए, ताकि बाद में उन्हें महिमा मिल सके और वे स्वर्गारोहण कर सकें। और हे मनुष्य, तुम्हें किस बात पर गर्व है—तुम्हारे अपने पास ऐसा क्या है जो अनंतकाल के योग्य हो? तुम अपने साथ धन नहीं ले जा सकते; सम्मान, महिमा और स्वास्थ्य, सब अस्थायी हैं। आओ, आने वाले जीवन के लिए धनी बनें, और अपनी संपत्ति विहाँ भखिरियों, गरीबों और बीमारों के माध्यम से इकट्ठा करें। आप स्वर्ग के नागरिक हैं; तो फिर, पृथ्वी से इतना गहरा लगाव क्यों!? आप स्वर्ग के राज्य के वारिस हैं, आपके पास एक अमर आत्मा है, जिससे एकमात्र पुत्र ने स्वयं क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा मोचन किया।"

31 जनवरी 1960

पालक देवदूत के मार्गदर्शन पर

"रक्षक देवदूत उस व्यक्ति के साथ रहता है जिसका हृदय नरिमल और अंतरात्मा स्वच्छ हो। अपने हृदय और अंतरात्मा की सुनकर, आप हमेशा उसकी आवाज़ सुनेंगे जो आपको सत्य की ओर मार्गदर्शन करती है। जो कोई भी आध्यात्मिक भूख—अपने आत्मा की आध्यात्मिक संवेदनशीलता—महसूस करता है, वह ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति अपनी शारीरिक भूख को शांत करने के लिए भोजन की तलाश करता है, वैसे ही अपने आत्मा को परमेश्वर के वचन के पोषण से तृप्त करने का प्रयास करेगा। जिन लोगों में आध्यात्मिक संवेदनशीलता दबी हुई है, जो वासनाओं से अंधे हो गए हैं, वे शारीरिक भूख के अलावा कोई और भूख महसूस नहीं करते। दूसरा, हालाँकि, शारीरिक भूख को भूलकर, आध्यात्मिक भूख को शांत करने का प्रयास करता है। जुनून विचारों के क्रमिक सुझाव, सहमति और कर्मों के माध्यम से आत्मा को अंधा कर देता है: 1) कष्ट, 2) बीमारी, 3) आत्मा की मृत्यु। जहाँ एक ही जुनून हावी हो जाता है, वहाँ

पवतिर आत्मा और रक्षक देवदूत पीछे हट जाते हैं, और उस व्यक्तिकी आत्मा मर जाती है। हे प्रभु, हमें इन सभी चीजों से बचाओ! हे पवतिर रक्षक स्वर्गदूतों, हमारे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करो!"
तथि अज्जात। महादूत माइकल का पर्व।

अपने पड़ोसियों के लिए प्रेम पर एक वचन

"कोई भी उस सृष्टिकिरता और संपूर्ण ब्रह्मांड के रचयिता, जो कुछ भी दृश्यमान और अदृश्य है, और हे मनुष्य, तुम्हारा भी रचयिता, उससे कैसे प्रेम न करे। प्रभु ने मनुष्य को बनाया और उसमें जीवन-दायी आत्मा फूँकी; उसने उसे स्वतंत्र इच्छा और तरक-शक्ति दी; उसने उसे एक ऐसा हृदय दिया जो परमेश्वर के उपहारों में आनंद ले सकता है। सृष्टिकिरता से प्रेम न करना बल्कि प्राणी से प्रेम करना, जीवन से नहीं बल्कि मृत्यु से प्रेम करना है; यह स्वयं से घृणा करना और अपना शत्रु होना है। अपने पड़ोसी से स्वयं के समान प्रेम न करना, सृष्टिकिरता को अपने विरुद्ध करना है। इंसान को सृष्टिकिरता से अपनी पूरी आत्मा, अपनी पूरी शक्ति और अपने पूरे मन से प्रेम करना चाहिए: ईश्वर और उन आशीर्वादों पर मनन, विचार और चिंतन करना चाहिए जो वह हम पर प्रदान करते हैं। क्योंकि वह हमारे सभी विचारों, इच्छाओं और इरादों को देखता है जो उसकी ओर और हमारे पड़ोसी की ओर हैं, जिससे हम उसके मोक्ष के लिए प्रेम करते हैं, न कि अपने स्वार्थ के लिए।"
तथिहीन।

गेटहाउस में शाम को फादर सेबास्टियन का एक संदेश

"मैंने ईश्वर की माता को 'अप्रत्याशति आनंद' नामक अकथसिंट पढ़ा, और लंबी बातचीत की। 'यहाँ, मुझे आर्कमिंड्राइट नयिकुत हुए तीन-चार साल हो गए हैं, फरि भी मैंने वनिमरता और धैर्य प्राप्त नहीं किया है। मैं अधीर, आलसी, लापरवाह और बहुत बोलने वाला हूँ। फरि भी, मनुष्य को संकीर्ण मार्ग पर चलना चाहिए; स्वर्ग के दो राज्य नहीं हैं। मनुष्य को बपतिसिमा में मली अपनी क्रूस को जीवन के अंत तक बना किसी शकियत के उठाना चाहिए, और ईश्वर द्वारा भेदे गए सभी दुखों को सहना चाहिए। प्रभु स्वयं ने सहन किया: उनका जन्म एक खलहिन में हुआ, वे गरीबी और गुमनामी में पले-बढ़े, और फरि आम लोगों को ज्ञान देते हुए उपदेश देने और चमत्कार करने निकले। फरि भी यहूदियों ने ईश्वर के कारण उन्हें सूली पर चढ़ा दिया। और सभी प्रेरितों ने शहीद की मृत्यु पाई, और सभी प्रारंभिक ईसाइयों ने अपना रक्त बहाया, फरि भी हम थोड़ी सी भी कठिनाई सहने या उठाने को तैयार नहीं हैं।

हे प्रभु, दया करें! हे सबसे प्यारे यीशु, हमें क्षमा करें... हमें हर चीज के लिए हमेशा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए।"

26 जून 1960

प्रेम के प्रेरति, जॉन द थियोलोजियन की स्मृति

"आरंभ में वचन था... सभी में सबसे पवतिर, सबसे सम्माननीय और सबसे कोमल होने के कारण, उद्धारकर्ता ने अपनी माता का भरोसा उन पर किया। धन्य है आप, गरज के पुत्र, जो एक गरुड़ की तरह सभी से ऊपर उड़ते हैं, और अपनी शक्ति से गरजते हैं।"

25 मई 1960

महान तपस्या की शुरुआत

"हे जीवन दाता, मेरे लिए पश्चाताप के द्वार खोलें..." अपनी पापी होने की गहरी चेतना और अनुभूति के साथ, कर वसूलने वाले ने पश्चाताप किया। फरीसी के विपरीत, उसने घमंड और अहंकार से ईश्वर को संबोधित नहीं किया। एक पश्चात्तापी हृदय के साथ, स्वर्ग की ओर देखने की हमिमत न करते हुए, अपनी छाती पीटते हुए, कर वसूलने वाले ने प्रभु से पुकारा: "हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया करें।" सच्चे पश्चात्तापी ऐसे ही होते हैं। पश्चात्ताप करो और अपने पुराने पापों पर वापस न लौटो, बल्कि एक नवीनीकृत आत्मा में एक नया जीवन शुरू करो।"

7 फरवरी 1960

आर्कमिंड्राइट सेवासियन का एक संदेश

"...ईश्वर के सामने चलना, उन्हें अपने हृदयों में धारण करना। क्योंकि वह उन शुद्ध हृदयों में प्रवेश करते हैं जो गर्व, व्यभिचार, अशुद्धि और अन्य दुर्गुणों तथा पापों से मुक्त होते हैं। हे प्रभु, हमारे हृदयों को थाम लो और उन्हें

शुद्ध करो! प्रभु हमारे हृदयों में तब अवतरति होंगे जब हम नम्रता, धैर्य, पवत्रिता, ब्रह्मचर्य, वनिम्रता, पुण्य कर्म, अपने पड़ोसियों—और सबसे बढ़कर, ईश्वर के प्रति—प्रेम, आज्ञाकारिता, प्रार्थना, और अपनी आध्यात्मिक तथा शारीरिक इंदरियों एवं वचारों के संयम के द्वारा उनके लिए मार्ग खोलेंगे। हम अतृप्त, भावनाओं और वचारों की अशुद्धता, दुःख और बीमारियों के सामने अधीरता, बड़बड़ाहट, कृतघ्नता, और बुराई का बदला बुराई से चुकाने के द्वारा उसकी राह में बाधा डालते हैं।"

तर्था अज्ञात।

आर्चमैड्राइट सेबेस्टियन का नाम दविस

फादर सेबासियन स्वयं सेवा का आयोजन कर रहे हैं। ईश्वर ने उनके नाजुक स्वास्थ्य को मजबूत कर दिया है। ससिटर मारिया ने उनकी इच्छा के विरुद्ध, उन्हें अपना पेट्रोल क्रॉस (छाती पर पहना जाने वाला क्रॉस) समतल करने के लिए कहा। और उन्होंने, उनकी हठधर्मिता और अवज्ञा के लिए, तुरंत हमारे भाई को नम्र किया। उन्होंने अपने वेषटन पहने और, सेवा के दौरान, फेलोनियन पर बैठे (जैसे वे आमतौर पर ऐसे मामलों में उठाते हैं) और उसे मरोड़ दिया, जिससे वह पहले से भी बदतर दिखने लगा। आपके लिए इसमें एक सीख है। दैवीय लटिर्जी पहले से कहीं अधिक गंभीर थी, और प्रार्थना सेवा भी। और बाद में, नाम दविस पर पुरोहिता को बधाई दी गई, साथ ही बहुत-बहुत धन्यवाद और शुभकामनाएं भी दी गईं। लेकिन जन्मदनि का लड़का, हमेशा की तरह, जतिना अधिक उसका सम्मान किया जाता है, उतना ही वह स्वयं को वनिम्र बनाता है और स्वयं को तुच्छ समझता है। वह तो अनावश्यक बातों और बकवास से भी आहत हो जाता है: "मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए (न तो उपहार, न प्रशंसा, न ही धन्यवाद); जो मुझे खुशी देता है वह है आपके बीच शांति, प्रेम और सद्भाव..."

31 दिसंबर 1959

समरीया की स्त्री के वषिय में

प्रभु परमेश्वर स्वयं आत्मा का सच्चा सुख, सच्चा सांत्वना, सच्ची भलाई हैं जिसे उद्धारकर्ता ने सामरी स्त्री को प्रदान किया। हालाँकि, अन्य लोग मोटे शरीर के इंदरिय सुखों, धन, महिमा और सांसारिक शक्ति में आनंद की तलाश करते हैं। बचपन की इच्छाएँ और प्रयास एक लड़के को हास्यास्पद लगते हैं; जो एक लड़का चाहता था वह एक युवक को हास्यास्पद लगता है; जो एक युवक इतनी लगन से चाहता था वह एक परपिक्व व्यक्ति को हास्यास्पद लगता है; और जो एक परपिक्व व्यक्ति चाहता था वह एक बूढ़े व्यक्ति को हास्यास्पद लगता है... हम अनंत इच्छाओं को पूरा करके अपनी इंदरियों को भरते हैं, फिर भी हम अपनी आत्मा को खाली कर देते हैं। हमारे इंदरियाँ भरी हुई हैं, हमारी आत्मा खाली है। "महान है हमारा प्रभु, और महान है उसकी शक्ति; उसकी बुद्धि अनंत है।"

31 मई 1959

प्रभु का स्वर्गारोहण

"एक समय पृथ्वी के लिए अयोग्य, अब स्वर्ग में पूजा के योग्य। हमने अब जो प्राप्त किया है, उसमें हमने जो खोया है वह उससे कम है। ईश्वर ने हमारे सभी पूर्व दुखों को हमारे लाभ में बदल दिया है। आइए हम अपना समय पवत्रिता में व्यतीत करें और अपना जीवन शुद्धता में जिएँ, ताकि हम स्वर्ग में आने वाले युग में जीवन का वारस बनने के योग्य माने जाएँ। यीशु, जनिहोंने आरोहण किया, हमारी आत्माओं और हमारे वचारों को अंधकार, व्यर्थता, उदासी और पृथ्वी, शरीर, संसार तथा इसकी क्षणिक सुख-सुविधाओं से ऊपर उठाकर, शाश्वतता और प्रभु यीशु मसीह द्वारा तैयार की गई भविष्य की आशीषों की ओर ले जाएँ, जनिहोंने हमें अपने लहू से छुड़ाया।"

तर्था अज्ञात।

पहले बुलाए गए संत एंड्रयू प्रेरति का पर्व दविस

"वह कीव के पहाड़ों पर सबसे पहले क्रूस स्थापित करने वाले थे और उन्होंने घोषणा की कि यह स्थान और यह पूरी भूमि एक दिन ऑर्थोडॉक्स धर्म में फल-फूलेंगे। और अपने सूली पर चढ़ाए जाने के लिए तैयार की गई सूली को नहिरते हुए, वह क्रूस के द्वारा स्वर्ग के राज्य में मसीह के साथ एक होने की आशा में आत्मा में आनंदित और प्रसन्न हुआ। इसी प्रकार हमें भी आने वाले आशीर्वादों में आध्यात्मिक आनंद और प्रसन्नता प्राप्त करनी चाहिए।"

"पवतिर प्रेम सभी पूरणता का सार है। ऐसा प्रेम ईश्वर की माता में था, 'एक स्वर्गीय आश्चर्य, एक स्वर्गीय पवतिरता।"

"मेरी आत्मा का वधू-वर सभी से अधिक ईर्ष्यालु है; यद्यपि मैं उसके साथ किसी और चीज से प्रेम करती हूँ, तो मैं उससे प्रेम नहीं करती" (पेटेरकिऑन से)। "क्रूस पर, उद्धारकर्ता ने पुकारा: 'मुझे प्यास लगी है!'... उसे हमारे उद्धार की प्यास थी..."

13 दिसंबर 1958

पालक स्वर्गदूतों पर

"प्रत्येक व्यक्तिको उनके बपतिसिमा के क्षण पर एक संरक्षक देवदूत दिया जाता है। किसी को अपने संरक्षक देवदूत के साथ आत्मा के मलिन को कैसे बनाए रखना चाहिए? वह किसी की अंतरात्मा और हृदय के माध्यम से काम करता है। जब कोई व्यक्ति अपनी आत्मा के उद्धार की परवाह करता है, अपनी अंतरात्मा की रक्षा करता है, और सभी पापों से बचता है, तो वे अपने संरक्षक देवदूत की उपस्थितिको महसूस करते हैं। रक्षक देवदूत ऐसे व्यक्तिको मार्गदर्शन करता है, उसे सभी अच्छी चीजों की ओर ले जाता है, उसे अच्छे विचार भेजता है, और उसे बुराई से आगाह करता है। हम अपने रक्षक देवदूत को उस दिन देखेंगे जिस दिन हम इस जीवन से विदा लेंगे। लेकिन हमारी पुनर्मलिन कैसी होगी, यह हम और हमारे कर्मों पर निर्भर करता है। क्या रक्षक देवदूत प्रसन्न होंगे, या वे हमारे लापरवाह जीवन से दुखी होंगे? वे उन लोगों से दूर हो जाएँगे जिन्होंने न तो उन्हें और न ही अपनी आत्मा को पहचाना है; वे उन लोगों से दूर हो जाएँगे जिन्होंने अपने वविक के विपरीत काम किया है, जिन्होंने एक के बाद एक पाप किया है, बुराई में डूब गए हैं, अपने वविक को दबा दिया है और अपने दिलों को कठोर कर लिया है। जब रक्षक देवदूत पीछे हटता है, तो अंधकार की आत्मा—शैतान—आगूजा जाता है और मनुष्य को अपना दास बना लेता है। और इस प्रकार मनुष्य की आत्मा खो जाती है। रक्षक देवदूत, पीछे हट जाने के बाद, उस आत्मा के लिए रोता है।

इसलिए आइए हम अपने रक्षक स्वर्गदूत पर ध्यान दें; आइए हम उनसे सभी अच्छे कार्यों में सहायता और हर पाप से मुक्तिके लिए प्रार्थना करें। आइए हम उनसे अनुरोध करें कि वे हमें नरितर प्रभु की ओर ले जाएँ, और आइए हम अपने कर्मों से उन्हें लज्जित न करें।"

21 नवंबर 1958

"छह दिन तक प्रभु ने ब्रह्मांड की रचना की, और सातवें दिन उन्होंने विश्राम किया। और उन्होंने मानव जातिको आज्ञा दी कि वे छह दिन परश्रम करें, और सातवें दिन विश्राम करें और परमेश्वर को समय समर्पित करें, उनके नाम की महिमा के लिए, और अपने आत्माओं के उद्धार के लिए। परन्तु मानव जातिको शत्रु, ईर्ष्या के कारण, हम में इस आज्ञा का पालन न करने की इच्छा उत्पन्न करता है। उद्धारकर्ता मसीह के आने से पहले भी, जब प्रभु ने हारून के द्वारा फरौन से लोगों को बलदान चढ़ाने के लिए तीन दिनों के परव के लिए जंगल में जाने देने को कहा, तो फरौन ने इसके बजाय लोगों पर श्रम और नगिरानी थोप दी। और ताकि हम अपनी ही आत्मा के मरुस्थल में न जाएँ, फरौन (या दुष्ट) कहता है: 'अपने कामकाज में लगे रहो, अपने मामलों में लगे रहो, अपने मालिको को खुश करो, या अपने बच्चों के लिए रोटी और कपड़े का प्रबंध करो। 'तुम्हें किस तरह के भोज की जरूरत है?' हम अपने कामों के लिए ईश्वर से समय चुराते हैं, और ईश्वर हमें शाप देता है और सफलता से वंचित कर देता है। लेकिन जब आप अपने मामलों को ईश्वर की व्यवस्था के हवाले कर देते हैं, तो वह उन्हें भलाई के लिए और प्रचुरता में व्यवस्थित करेगा, और उन्हें एक अनुकूल नषिकर्ष पर पहुंचाएगा। और हम न केवल छह दिन साधारण परश्रम करते हैं, बल्कि सातवें दिन हम चर्च जाकर बलदान चढ़ाने और परमेश्वर की आशीर्वादों के लिए धन्यवाद देने के बजाय अपना समय लापरवाही, आलस्य और मद्यपान में बर्ताते हैं।"

१४ जनवरी १९५९

रविवार

"हृदय पत्थर से भी कठोर है, हथौड़े की अंकुस से भी कठोर। एक दुष्ट अंतरात्मा, कामुक और इंद्रिय पापों की पापी आदत से कटु हुई आत्मा, और पश्चाताप की कमी। वह लाश देखकर हँसता है, दूसरों की बातों और तानों पर कोई ध्यान नहीं देता, और अपने अंतरात्मा से कटु हृदय में शोक करते हुए दुख भोगता है। इंसानी दिल को तोड़ने से तो हथौड़े से एक अँडलि को तोड़ना आसान है। परियजनों की मृत्यु, दूसरों की नसीहतें, अंतमि न्याय, नरक, बीमारी और दुख पर चर्च की शक्ति—ये सब दिल पर पड़ने वाले हथौड़े हैं। लेकिन दिल नहीं झुकता; वह बुराई में कठोर हो गया है। शराब के नशे में धुत व्यक्तिकी तरह, मन हर उस चीज के खिलाफ पागल हो गया है जो अच्छी और मानवीय है। हे

प्रभु, हमें मांस के हृदय प्रदान करें; इन पत्थर के हृदयों को हटा दें, ताकि हम हथौड़े की चोट को महसूस कर सकें! 'उन्होंने मेरा अपमान किया और मुझे मारा, फिर भी मुझे चोट नहीं लगी।' 'वेदी, वेदी,' नबी पुकारता है—न राजा को, न ही लोगों को, जिनके हृदय वेदी के पत्थर से भी कठोर हैं।"

8 दिसंबर 1958

धन्य है वह जो परमेश्वर की इच्छा करता है, न कि अपनी, जो शरीर को भाती है। हे प्रभु, मैं अपनी पूरी आत्मा और पूरे हृदय से आपकी इच्छा के प्रति समर्पित हूँ। आप मुझसे जैसा चाहें, वैसा करें। जो अपनी इच्छा करता है, वह दास के भय और सांसारिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति से बंधा होता है। जिसने परमेश्वर का भय नहीं प्राप्त किया है, वह परमेश्वर की इच्छा नहीं कर सकता"...

9 सितंबर 1958

संत जॉन द बैपटिस्ट का सरि कलम किया जाना

जॉन बपतिस्मादाता अपने समय से पहले धर्म और सत्य के लिए एक शहीद के रूप में मारे गए। जब लोग सत्य के लिए मरते हैं तो सत्य की वजिह होती है। अन्यथा, हर कोई सोचेगा कि कानून तोड़कर जीना जायज़ है। अगर धर्म और सत्य न होते, तो पृथ्वी पर जीवन नहीं होता। हर कोई अपनी अव्यवस्था में नष्ट हो जाता। हम सभी को सत्य और धार्मिकता के अनुसार जीना चाहिए, और इस तरह दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित करना चाहिए। सत्य, पवित्रता, प्रेम और ब्रह्मचर्य प्रभु को बहुत प्रसन्न करते हैं। पवित्र शहीदों ने सत्य और धार्मिकता के लिए यातनाएँ सहन कीं, और झूठ और अन्याय को शर्मिदा किया।"

11 सितंबर 1958

समय पर एक वचन

"दुनिया में किसी भी चीज़ से अधिक कीमती क्या है? समय! और हम क्या हैं जो बर्बाद हो रहे हैं और व्यर्थ में खो देते हैं? समय! हम किस चीज़ को सबसे कम महत्व देते हैं और सबसे अधिक उपेक्षा करते हैं? समय! यदि हम समय खो देते हैं, तो हम खुद को खो देते हैं! हम सब कुछ खो देंगे! जब हम सबसे तुच्छ वस्तु भी खो देते हैं, तो हम उसे खोजते हैं। फिर भी जब हम समय खो देते हैं, तो हमें इसका एहसास भी नहीं होता। समय प्रभु द्वारा आत्मा के उद्धार और शाश्वत जीवन की प्राप्ति के लिए सही ढंग से उपयोग करने हेतु दिया गया है। समय को ठीक वैसे ही आवंटित किया जाना चाहिए जैसे एक अच्छा प्रबंधक हर सिकके को आवंटित करता है - प्रत्येक को उसके उचित उद्देश्य के लिए। प्रत्येक का अपने हाथों में एक उद्देश्य है। तो आइए हम अपने समय का उपयोग उपयोगी कार्यों के लिए करें, न कि व्यर्थ मनोरंजन, फजूल की बातों, दावतों या धूमधाम के लिए। प्रभु हमसे हमारे अपने मनोरथों के लिए समय चुराने का हिसाब लेंगे, बजाय इसके कि हम इसे ईश्वर या आत्मा के लिए उपयोग करें।"

8 सितंबर 1958

महादूत माइकल का पर्व

"स्वर्ग में या पृथ्वी पर कोई समानता नहीं है, और न ही हो सकती है। समानता केवल एक पवित्र त्रिमूर्ति में ही मौजूद है। महादूत माइकल ने नम्रता, धैर्य और साहस के द्वारा लूसिफर को हराया। महादूत गब्रियल ईश्वर के रहस्यों और चमत्कारों के सूचक हैं। और सभी के अपने-अपने कर्तव्य हैं।"

21 नवंबर 1958

रविवार

"यायरुस की बेटी मर गई, और प्रभु ने उसे मरे हुएों में से जलाया। इसी प्रकार एक व्यक्ति अपनी आत्मा में मरता है: पापी विचारों, पाप करने की इच्छा, और पाप करने के द्वारा। तब अनुग्रह चला जाता है, और आत्मा मर जाती है। यह हमारी आत्मा की उपेक्षा है। जब बीमारी अभी-अभी शुरू हुई हो और आसानी से ठीक हो जाए, तब हम डॉक्टर के पास नहीं जाते। और न ही तब जब हम बीमार हों। लेकिन जब बेटी (आत्मा) पहले ही मर चुकी थी, तब हम प्रभु, आत्माओं और शरीरों के चकित्सक, के पास गए: 'मेरी बेटी मर गई है।' 'वह मरी नहीं है, सो रही है,' प्रभु ने कहा।

हमें अपने युवा दानों से ही, जब हम जीवन के उत्कर्ष पर हों, अच्छे स्वास्थ्य, पवित्रता और उत्साही आत्मा के साथ प्रभु को अपना बलिदान अर्पित करना चाहिए, न कि तब जब हमने शैतान की सेवा करके यह सब कुछ खो दिया हो।

प्रभु कहते हैं, 'दनि (जीवन) रहते काम करो', क्योंकि रात आएगी—अर्थात् वृद्धावस्था और मृत्यु—और तब बहुत देर हो जाएगी। इस प्रकार मूर्ख कुँवारियों के पास तेल नहीं था, क्योंकि जब वर आया तो रात हो चुकी थी, और तेल खरीदने के लिए कहीं कोई नहीं था। उन्होंने दनि को लापरवाही और उपेक्षा में बताया, और उनके दीपक खाली रह गए, और उनके लिए दुल्हन के कक्ष का दरवाजा बंद हो गया। इसी प्रकार हम प्रभु के लिए वह नहीं लाएँगे जो लंगड़ा, टेढ़ा, अंधा या सड़ा हुआ हो, बल्कि वह जो स्वस्थ, शुद्ध और नरिदोष हो। जैसा कि भविष्यवक्ता कहते हैं: उसने भूमि जोती, खेत में बीज बोया, उसकी खेती की, उसमें से खरपतवार निकाले, और उसे पानी दिया; लेकिन जब वह फल इकट्ठा करने आया, तो उसे कुछ भी नहीं मिला। खेत में इधर-उधर एक-दो बाली, बेल पर इधर-उधर अंगूर के कुछ गुच्छे। प्रभु के शत्रु आए, सब कुछ चुरा ले गए और उसे उठा ले गए। इसी प्रकार एक व्यक्ति को अपनी आत्मा के खेत में परिश्रम करना चाहिए, व्यर्थ नहीं, बल्कि अपने ऊपर निगरानी रखते हुए, कहीं ऐसा न हो कि शत्रु—संसार, शैतान, देह और मृत्यु—आकर उसे लूट लें। संसार आता है और अपना हिससा ले जाता है, धन, विलासिता और महत्वाकांक्षा से लुभाता है। शैतान आता है और इन सबसे आखिरी चीजों को भी छीन ले जाता है: पवित्रता, ब्रह्मचर्य, नरिदोषता, और ईश्वर का भय। वृद्धावस्था और मृत्यु आती हैं; एक व्यक्ति अपने ही खेत से कुछ काटकर लेना चाहता है, फरि भी उसे कुछ नहीं मिलता। पाप भरे जीवन के बीच केवल कहीं-कहीं कोई अच्छा काम करने का इरादा ही था। और मनुष्य पछताता है कि उसने आने वाले जीवन के लिए पुण्य कमाए बिना अपना जीवन जिया। और मृत्यु आ चुकी है, और अब पश्चाताप, आँसुओं और प्रार्थना के लिए कोई समय नहीं है। अचानक मृत्यु विशेष रूप से खतरनाक होती है। और इसलिए किसी को पश्चाताप और पुण्य अर्जति करने को बुढ़ापे तक के लिए टालना नहीं चाहिए, जब न तो शारीरिक और न ही आध्यात्मिक शक्ति बची होगी। एक के दुश्मन सब कुछ चुरा लेंगे, जबकि एक के पास कुछ भी नहीं बचेगा; दीपक खाली हैं। ईश्वर के लिए प्रेम से प्रार्थना करें और सभी कार्यों की शुरुआत प्रार्थना से करें। क्योंकि प्रार्थना के बिना, केवल व्यर्थ के कार्य ही होते हैं। प्रार्थना में, ईश्वर की इच्छा और उसके आज्ञाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना करें, न कि उस चीज के लिए जिसकी हम स्वयं इच्छा करते हैं। ईश्वर से अवशिष्ट प्रेम करना चाहिए और अवशिष्ट प्रार्थना करनी चाहिए। सच्चे मन से प्रेम करें और विश्वास के साथ प्रार्थना करें, और प्रभु अपनी दया से आपको नहीं छोड़ेंगे। 'मैं किस पर दृष्टि डालूँ, यद्विदय से कोमल और वनिम्र पर नहीं?' स्वयं को वनिम्र बनाएं, सर्वसृष्टि के सर्षटा, प्रभु के सामने अपनी तुच्छता को पहचानें। 'अगर वह मुझसे प्यार नहीं करता, तो मैं भी उससे प्यार नहीं करूँगा' – ये शैतान के शब्द हैं। अगर वह आपसे प्यार न करे, तो उसके घृणा को प्रेम से जीतें। घृणा के जुनून को सच्चे प्रेम और ईश्वर के भय से जीतें।

"मनुष्य मुख देखकर पहचानता है, परन्तु यहोवा मन देखकर पहचानता है।" "परमेश्वर शक्ति के द्वारा मन से, और प्रेरणा के द्वारा हृदय से बात करता है।"

11 नवंबर 1958

ईस्टर रविवार

ईश्वर से हृदय की पवित्रता और पापों की क्षमा माँगो, जो तुमने किया है उस पर पश्चाताप में डूब जाओ और स्वयं को सबसे नीच समझो। और प्रभु स्वयं तुम्हारे पास आएँगे, और तुम अपने हृदय में ऐसी आनंद की अनुभूति करोगे जैसी संसार नहीं जानता। काम लोगों के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर के लिए और ईश्वर के अनुसार करो, जनिहें तुमसे प्रेम करना चाहिए लेकिन जनिसे तुम्हें दूर रहना चाहिए। 'ईश्वर को खोजो, और तुम्हारी आत्मा जीवित रहेगी।' हमें एक नरिमल अंतरात्मा बनाए रखनी चाहिए और एक शुद्ध हृदय प्राप्त करना चाहिए। और इससे, हमारे कर्म और कार्य मसीह की आज्ञाओं के अनुरूप होने चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वे हमसे कहें: 'और फरि भी वे खुद को ईसाई कहते हैं, और फरि भी वे प्रार्थना करते हैं, लेकिन वे क्या करते हैं?' हमें पवित्रता और एक नरिदोष वविक बनाए रखना चाहिए, ताकि शत्रु को हमसे थोड़े से भी लाभ न हो, और ताकि हमारा वविक हमारे जीवन के लिए हमें दोष न दे; तब हमारे हृदयों में शांति और आनंद होगा।"

तथिहीन।

"हे पवित्र आत्मा, हमें अपनी गोद में वैसे ही लीजिए जैसे एक माँ करती है। आओ और हमारे भीतर वास करो, और हमारे हृदयों में अपना घर बसा लो। हमारे मन, हृदय और आत्मा को अशुद्ध वचारों, भावनाओं और इच्छाओं से शुद्ध करो, हर उस चीज से जो हमें कलंकित करती है। हे प्रभु, अपनी कृपा से हमारी सहायता करें; इसके बिना हम स्वयं को बचा या संरक्षित नहीं कर सकते। परम पवित्र त्रिमूर्ति, हमारे ईश्वर, आपको महिमा हो! 'मेरे डगमगाते हृदय को अपने आज्ञाओं की चट्टान पर स्थिर कर दें।'

तथिहीन।

करगान्डा की वृद्ध महिलाएँ

स्कीमा-नन अग्निया

स्कीमनुन अग्निया (अलेक्जेंड्रा वासिलीवना स्टारोदुबत्सेवा) का जन्म 15 अप्रैल 1884 को हुआ था। वह अंधी पैदा हुई थी, और उसके माता-पिता उसे वोरोनज़, सेंट मटिरोफन के अवशेषों पर ले गए। उनके अवशेषों पर, लड़की ठीक हो गई – उसने अपनी दृष्टि वापस पा ली।

उनके माता-पिता का नधिन जल्दी हो गया। पहले उनके पिता का नधिन हुआ, और जब अलेक्जेंड्रा चौदह साल की थी, तब उनकी माँ का नधिन हो गया। अलेक्जेंड्रा अपनी बड़ी बहन और छोटे भाई के साथ रह गई। उसकी बहन ने अपने भाई के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी ली, जबकि अलेक्जेंड्रा ने माध्यमिक विद्यालय छोड़ दिया और अपने रश्तेदारों से उसे ज़नामेनो-सुखोट्सिक कन्वेंट ले जाने की वनिती की, जो प्रतिष्ठित आइकन चित्रकला स्कूल का घर था। वह इकसठ वर्ष तक इस कन्वेंट में रही, अग्निया नाम से रासोफोर के रूप में दीक्षा प्राप्त की, और आइकन चित्रकला की कला में प्रशिक्षण लिया।

अग्निया की माँ, एल्डर वरसोनोफी की आध्यात्मिक बेटी थीं और हर साल, जब उन्हें छुट्टी मिलती थी, तो वह ऑप्टिना पुस्तानि में उनसे मिलने जाती थीं। उन्होंने फादर वरसोनोफी का एक चित्र बनाया, जैसा बाद में ट्रेट्याकोव गैलरी द्वारा अनुरोध किया गया। अपनी मृत्यु से ठीक पहले, फादर वरसोनोफी ने उन्हें यह चित्र दिया, जैसा वह स्वयं बहुत सम्मान देते थे। यह हमेशा करागांडा में मदर अग्निया की कोठरी में लटका रहता था। वह कहा करती थी: "मैंने यह चित्र नहीं बनाया; फादर वरसोनोफी ने मेरे हाथ से इसे बनाया है।"

माँ ऑप्टिना पुस्तानि से फादर सेबेस्टियन को अच्छी तरह जानती थीं और मठ बंद होने तक हर साल उन्हें देखती थीं। उन्होंने कहा कि अपनी युवावस्था में फादर सेबेस्टियन बहुत सुंदर थे, उनका चेहरा विशेष रूप से दमकता था; वे आंगंतुकों के प्रति मिलिनसार और दयालु थे और सभी की मदद करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करते थे। वरिष्ठ वरसोनोफी उन्हें 'धन्य' कहते थे। वरिष्ठ जोसेफ उन्हें बहुत प्यार करते थे और कहते थे, 'उनकी आत्मा कोमल है।'

एक बार, नमिनलखिति घटना घटी। माता अग्निया संतजनों से मिलने आईं और छोटी झोपड़ी के स्वागत कक्ष में खड़ी थीं। नवसखिया स्टीफन उनके पास आया और अपने हाथ से उनके हाथ को हल्के से छू लिया। माता अग्निया तब नवसखिया की इस आत्मीयता को देखकर मन ही मन नाराज़ हो गईं। फरि भी, जीवन ने दिखाया कि भावी एल्डर ने पहले ही उसमें अपने आध्यात्मिक बच्चे को पहचान लिया था और उसका हाथ पवतिर आइकन से चर्चों को सजाने के लिए बहुत परशिरम करेगा।

नवंबर 1919 में, बोलशेविकों द्वारा ज़नामेनो-सुखोट्सिकी मठ को भंग कर दिया गया, और माता अग्निया वोरोनज़ क्षेत्र के नोवोखोपेरस्क शहर में बस गईं। इस अवधि के दौरान, माता अग्निया ने अपनी डायरी में लिखा:

"हे प्रभु, जो कुछ भी हो रहा है उसे सहन करने में मेरी मदद करो; मुझे शक्ति और धैर्य प्रदान करो। अब मुझे अकेले एक अजनबी देश में रहते हुए, गंभीर मामलों को स्वयं हल करने के लिए बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है।

18 फरवरी 1929।"

मदर अग्निया को बहुत दुख, कठिनाइयों और अपमान सहना पड़ा। लेकिन उन्होंने इसके बारे में कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

1952 में, फादर सेबेस्टियन ने उन्हें प्रार्थना घर के लिए आइकन चित्रित करने के लिए करागांडा बुलाया। और 4 जनवरी 1952 को, एक्सप्रेस ट्रेन संख्या 32 मदर अग्निया को करागांडा लाई। उनके लिए करागांडा में बसना मुश्किल था; पहले तो उनका इरादा नोवोखोपेरस्क लौटने का था, लेकिन पादरी की प्रार्थनाओं से वह वहीं ठहर गईं। शुरुआत में, वह चर्च के द्वारपाल के लॉज में रहती थीं, जहाँ वह आइकन चित्रित करती थीं। उन्होंने जो पहला आइकन चित्रित किया वह आइकनोस्टेस के लिए सुसमाचार के साथ उद्धारकर्ता का आइकन था, जैसा एथोस आइकन 'द क्विक टू हियर' के समान आकार में बनाया गया था। जब मदर अग्निया यह आइकन बना रही थीं, तो फादर सेबास्टियन अक्सर आकर उनके बगल में खड़े हो जाते थे। और जब प्रतिमा लगभग पूरी होने वाली थी, तो एक समय पर फादर सेबास्टियन ने कहा: 'बस, बहुत है, एक और स्ट्रोक नहीं।' उन्होंने अन्य प्रतिमाएँ भी चित्रित की हैं: पवतिर त्रिमूर्ति, प्रभु का स्वर्गारोहण, मसिह की ओर पलायन, मसीह का पुनरुत्थान और कई अन्य, जो पूरी चर्च को सुशोभित करती हैं। उनके आइकन करागांडा में आर्कएन्जेल माइकल के चर्च को भी सुशोभित करते हैं, साथ ही श्चुचनिस्क, बोरोवस्क गांव, ओसाकारोव्का और अन्य कस्बों और गांवों के चर्चों को भी। अल्माटी में, उन्होंने बशिप जोसेफ के

लए कई प्रतमाएँ चतिरति कीं, जसिमें सेंट जॉन ऑफ़ टोबॉल्स्क की एक प्रतमा भी शामिल है। 1956 में, मदर अग्निया को परम पावन पैटरआर्क अलेक्सी के आशीर्वाद से एक नन के रूप में दीक्षा दी गई।

मदर अग्निया न केवल एक प्रतभाशाली कलाकार थीं, बल्कि एक बुद्धिमान साध्वी भी थीं। उनमें दूरदर्शिता का वरदान था, जसिसे उन्होंने दूसरों से छपा कर रखा था; और जो लोग उनसे सवाल लेकर आते थे, उनसे वह कभी-कभी कहती थीं: "तो फरि? मैं एक बूढ़ी औरत हूँ, मुझे कुछ नहीं पता; मैं चूल्हे के पास बैठती हूँ और कहीं नहीं जाती।" फरि भी वह खुद सब कुछ जानती थीं और सब कुछ देखती थीं।

राइसा नकोलेवना अनीसमोवा, चेलेबनिस्क

सितंबर 1966 में, हम वरखोटुर्ये के संत समियिन की स्मृतिसिभा में भाग लेने के लिए चेलेबनिस्क से वरखोटुर्ये की यात्रा पर गए। वरखोटुरी चर्च के पादरी, फादर अलेक्सी ने हमसे पूछा: "क्या आप करागंडा गए हैं? वहाँ फादर सेबास्टियन हैं, और उनकी प्रार्थनाओं की ही बदौलत मैं आज भी जीवति हूँ। आपको जाकर उन्हें देखना ही होगा।"

हमारे लिए तैयारी करने में बहुत समय लग गया; हम यात्रा को टालते रहे, और अगस्त 1967 में, 'डोरमशिन' के पर्व से ठीक पहले, हम पाँचों कारागंडा पहुँचे, जहाँ हमें पता चला कि फादर की मृत्यु एक साल से भी पहले हो चुकी थी। सेंट माइकल चर्च में, मदर अनास्तासिया हमसे मर्ली और अपनी नवोदति, अन्ना सडिरोव्ना को हमें मदर अग्निया के पास ले जाने का नरिदेश दिया। हम उसके घर पहुँचे, और माता एक छोटे से चलने वाले फ्रेम के सहारे आँगन में आई, जसिका उपयोग वह इधर-उधर आने-जाने के लिए करती थीं। उन्होंने इतनी तीखी नज़रों से हमें देखा कि मैंने सोचा: "अब वह मेरे सभी पाप देख लेंगी!" – और मैं दूसरों के पीछे हट गया। माता ने कहा: "कल आना। पवतिर भोज ग्रहण करो और फरि आओ।"

अगले दिन, पवतिर सहभाग ग्रहण करने के बाद, हम माताजी से मिलने गए। हमें उनकी शिष्य, मारिया से पता चला कि माताजी ने हमारी खातिर दोपहर का खाना बनाने में पूरी रात बतियाई थी। माताजी ने हमें मेज पर बठाया और परोसना शुरू किया। पत्तागोभी का सूप, दलिया, तरबूज, खरबूज, अंगूर और चाय – ऐसा कुछ भी नहीं था जो उन्होंने हमारे लिए अलग रखकर तैयार न किया हो। वह हमें खिलाती रहीं, और हम खाते रहे; हमारा पेट तो पहले ही भर चुका था, फरि भी हम खाते रहे। इस बीच, वह अपनी कोठरी के दरवाज़े पर खड़ी होकर हम में से हर एक को देखती रहीं। फरि उन्होंने कुछ पत्रिकाएँ और कतिबें नकालीं, उन्हें सही पन्नों पर खोला, और हम में से हर एक को पढ़ने के लिए कुछ दिया। और जब हमने पढ़ना खत्म कर लिया, तो उन्होंने हमें उपहार देना शुरू कर दिया: एक को एक स्कार्फ, दूसरी को ड्रेस के लिए कपड़े का एक टुकड़ा। हमने मना कर दिया: 'नहीं, सच में, हमारे पास जो कुछ भी चाहिए वह सब है' – आखिर, हमने सोचा, हमें मदर से चीजें क्यों लेनी चाहिए? लेकिन मारिया, उनकी शिष्य, ने कहा: 'इन्हें ले लो, क्योंकि मदर ने इन्हें आशीर्वाद दिया है।'

हमें उन्हें पत्र लिखने का आशीर्वाद मिला, और मैंने लिखा: "माँ, मुझे आपका दोपहर का भोजन कतिना याद आता है – वह बहुत स्वादपिष्ट था!" उन्होंने जवाब दिया: "फरि से हमारे साथ दोपहर का भोजन करने आओ।" और हर साल छुट्टियों के दौरान हम करागंडा में माँ से मिलने जाते थे।

माँ की ओर मुझे उनकी दयालुता और कोमलता ने आकर्षित किया। मैं जवान थी, आध्यात्मिक जीवन से अभी-अभी परिचित हो रही थी, और मुझे कभी-कभी श्रद्धालुओं में करूर और असभ्य लोगों का सामना करना पड़ता था। लेकिन माँ ने अपनी दयालुता से तुरंत ही हमें अपना बना लिया। समय के साथ, मुझे एहसास हुआ कि यह दयालुता पवतिर आत्मा में उनके उत्कृष्ट जीवन का फल थी।

माँ ने मेरा आध्यात्मिक रूप से पोषण किया; उन्होंने मुझे सिखाया: "क्रूस के बनिा, क्रूस के चहिन के बनिा कुछ भी नहीं किया जा सकता; हर चीज़ को पिता, पुत्र और पवतिर आत्मा के नाम पर धन्य कहा जाना चाहिए... पूरी धरती राक्षसों के जाल में उलझी हुई है; मनुष्य को लगातार प्रार्थना करनी चाहिए," – और वह इसी तरह बात करती थीं। लेकिन उस समय, प्रार्थना और क्रूस का मेरे लिए कोई खास मतलब नहीं था, और मैं यह समझ ही नहीं पा रहा था कि हमारे चारों ओर किस तरह के राक्षस थे?

हम शाम की ट्रेन से करागंडा से चेलेबासिस्क के लिए रवाना हुए। उस दिन हमने पवतिर Communion ग्रहण की; लोगों ने हमें वरिदा किया और ट्रेन में चढ़ने में हमारी मदद की। हमारे टिकट दूसरे दर्जे की बर्थ के लिए थे। हमने अपना बसितर लिया और अपनी बर्थ पर आ गए।

मैं सो रही थी, लेकिन मुझे तसेलनोग्राड का घोषणा सुनाई दे रहा था। एक बहुत बड़ी भीड़ ट्रेन में चढ़ आई; गटार वाले युवा लोग आए और हमारे डिब्बे की बगल वाली सीटों पर बैठ गए। और मैं देखता हूँ – उनके साथ बहुत सारे छोटे-छोटे शैतान आ रहे हैं, बहुत छोटे, अपने पंजों से बर्थों से चपिके हुए, उनकी पूँछें मुड़ी हुई हैं, उनके सरि घूम रहे हैं,

कूदने के लिए कोई जगह ढूँढ़ रहे हैं। और फर्श पर तो बहुत सारे हैं - पैर रखने तक की जगह नहीं है! मैं यह सब अपने सपने में देख रहा हूँ: मैं अपनी आँखें खोलना चाहता हूँ लेकिन नहीं खोल पाता। मैं डर के मारे सकिड़ गया: "भगवान न करे," मैंने सोचा, "कैसे हम पर कूदें!" एक छोटा शैतान शेलफ से अलग हो गया, मेरी तरफ आया और मेरे पैरों की ओर रेंगने लगा। मैंने अपने पैर ऊपर खींच लिए और उस पर ईश्वर का नाम लिया: "पति, पुत्र और पवतिर आत्मा के नाम पर," - मेरी माँ ने मुझे बताया था कि उन्हें भगाने के लिए क्रॉस का चनिह बनाना चाहिए। और इस डर के मारे कि राक्षस मेरी ओर रेंग रहे थे, मैं जागा, अपनी आँखें खोलीं और मुझे अभी भी वे राक्षस दिखाई दे रहे थे। और फिर, जैसे मेरे ऊपर से कोई पर्दा हटा दिया गया हो, राक्षस गायब हो गए, लेकिन मैंने देखा कि बहुत से लोग गाड़ी में घुस आए थे; वास्तव में, बहुत सारे थे, और गटार वाले युवा लोग बगल की सीटों पर बैठे थे।

मैं सुबह तक वहीं लेटी रही, यह डरते हुए कि अपनी टाँगें फैलाऊँ। सुबह, मेरे साथी यात्री उठ गए और नाश्ते की तैयारी कर रहे थे, लेकिन मुझे फर्श पर कदम रखने से डर लग रहा था - आखिरकार, वहाँ नीचे बहुत सारे राक्षस थे! लड़कियों ने पूछा कि मुझे क्या हुआ है। और मैं बस रो पड़ी, यह कहते हुए कि किम्यूनियन लेने के बाद मैंने राक्षसों को देखा था। लेकिन हमारे साथ एक धर्मनषिष्ठ महिला थीं, और उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि यह दर्शन मेरे संदेह के कारण हुआ था, और यह कि मेरी माँ की प्रार्थनाओं के माध्यम से प्रभु ने मुझे यह प्रकट किया था कि कैसे पृथ्वी जालों में उलझी हुई है और कतिनी पति आत्माएँ हमारे चारों ओर हैं।

माँ ने मुझमें विश्वास, वनिमरता और धैर्य भर दिया। लेकिन वह हमेशा सीधे तौर पर बात नहीं करती थीं। यह आमतौर पर ऐसा होता था। अगर आप उनसे कुछ पूछते, तो वह कहतीं, 'मुझे नहीं पता।' और फिर वह सब कुछ अपनी नवोदति के माध्यम से प्रकट कर देतीं, जो आध्यात्मिक थीं और माँ को समझती थीं। वह मुझसे कहतीं, 'राइसा निकोलेवना (माँ सभी को, युवाओं सहित, उनके पहले नाम और पतिनाम से संबोधित करती थीं), जाओ और लेट जाओ, आराम करो, आराम करो।' मैं अपने कमरे में चली जाती, लेट जाती, और वे बातचीत शुरू कर देतीं। और उस बातचीत के माध्यम से, मुझे अपने सभी विचारों और उलझनों के जवाब मलि जाते थे। या वे मुझे पति सेवस्तोवियन की कब्र पर जाने का आशीर्वाद देतीं। मैं जाकर वहाँ प्रार्थना करती। और कब्र पर मैंने जो भी माँगा, माँ धीरे-धीरे उसका जवाब दे देतीं, जैसे कि संयोग से ही।

उस समय, मुझे आज्ञाकारिता या एक आध्यात्मिक पति के आशीर्वाद के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

एक दिन, माँ ने मारिया से कहा: "मुझे कुछ दूध खरीदना है।" और मैंने सोचा: "ओह, माँ को दूध चाहिए! मैं उनके लिए दूध खरीदने जाऊँगी; मैं माँ के लिए एक अच्छा काम करूँगी।" मैंने इसके लिए आशीर्वाद माँगने के बारे में नहीं सोचा, बल्कि गुप्त रूप से अच्छा काम करने का फैसला किया। मैं दुकान पर गई - दूध नहीं था। मैं मुख्य दुकान पर गई - वहाँ भी नहीं था। मैं शहर के आधे हिस्से में घूम गया, लेकिन मुझे दूध नहीं मिला और मैं खाली हाथ वापस आ गया। मारिया, जो अभी सीख रही थी, ने पूछा: 'तुम कहाँ गए थे?' - 'मैं माँ के लिए दूध ढूँढ़ रहा था।' - 'तुम्हारी हमीमत कैसे हुई,' उसने कहा, 'बिना आशीर्वाद के चले जाने की? तुम्हें आशीर्वाद लेना ही चाहिए।' मैं माताजी के पास गई: 'कृपया मुझे दूध के लिए दुकान पर जाने का आशीर्वाद दें।' उन्होंने कहा, "भगवान आपके साथ हों," और मुझे कुछ पैसे दिए। मैं दुकान पर गई, और उन्होंने अभी-अभी डेयरी उत्पाद उतारे थे। और मैंने आखिरी कोपेक तक, ठीक उतनी ही मात्रा में सामान खरीदा जतिना माताजी ने मुझे दिया था। उन्हें ठीक-ठीक पता था कि मुझे कतिने पैसे चाहिए होंगे।

मेरे साथ हुई एक और घटना यह है। 21 सितंबर को, 'द साइन' (The Sign) नामक ईश्वर माता की प्रतमा के पर्व के दिन, मुझे बताया गया कि यह जनामेनो-सुखोट्सिकी कॉन्वेंट का संरक्षक पर्व था, जहाँ मेरी माँ ने कई साल बिताए थे और अपनी संन्यासी शपथ ली थी। इस अवसर पर, मैंने फूलों का एक गुलदस्ता खरीदा, उसे अपनी माँ के पास ले गई और उन्हें बधाई दी। मेरी माँ ने नवसखिया से कहा: 'मारिया, इन्हें ले लो और फूलों को सजा दो।' मारिया ने उन्हें लिया और 'द क्विक टू हियर' (The Quick to Hear) की बड़ी प्रतमा के पास पवतिर कोने में रख दिया। मैं मदर के कमरे से निकल आई और मन ही मन सोचने लगी, 'खैर, करगंद से आए किसी भी व्यक्ति ने मदर को बधाई नहीं दी, लेकिन मैंने दी!' मैंने मदर को चिल्लाते हुए सुना, 'Many! ये फूल हटा ले! इन्हें हटाकर चूल्हे पर रख दे!' - और उन्होंने यह बहुत सख्त लहजे में कहा। और मैं कोरिडोर में निकल आई और फूट-फूट कर रो पड़ी! मैंने अपने अहंकार और घमंड के लिए खुद को बहुत कोसा! और जब मैं भरपूर रोकर शांत हो गई, तो मैंने मदर को प्यार से कहते सुना: 'मारिया, फूल यहाँ लाओ।' इस तरह मदर ने मुझे डांटा और नम्र बनाया।

मैं दस साल तक माँ से मलिन जाती रही। आखिरी बार मैं उनसे 1975 की पतझड़ में मलिन गई थी। उनकी उम्र बयासी साल थी। वह बहुत बीमार थीं, उन्हें सूजन (oedema) की बीमारी थी। समय-समय पर, उनके पेट में छेद करके पानी निकाला जाता था। बहुत से लोग माँ से मलिन आते थे; कई दूसरे शहरों से, खासकर चेलोबास्कि से, आते थे और

महीनों तक उनके साथ रहते थे। शाम को, जब आखिरी मेहमान चला जाता था, तो माँ नवसखिया से कहती थी: 'मारिया, मेरे पैर उठा दे; मैं सोने जा रही हूँ।' फरि भी वह अब उन्हें खुद बसितर पर नहीं उठा सकती थी।

एक बार बहुत सारे आगंतुक आए, और माँ ने हमें अपनी कोठरी के फर्श पर सुला दिया। रात में मैं एक जोरदार खटखटाहट से जाग गई, और मैं बहुत डर गई। मैंने माँ के बसितर की ओर देखा, और वह वहाँ बैठी थी, अपने हाथों में एक लाठी पकड़े हुए और उसे फर्श पर पटक रही थी। सुबह मैंने पूछा, "माँ, क्या आप सोई नहीं थी? मुझे खटखटाने की आवाज़ सुनाई दी।" उन्होंने कहा, "अच्छा, बहुत से लोग आते हैं; वे सभी अपनी कहानियाँ बताते हैं, लेकिन वे अपने राक्षसों को पीछे छोड़ जाते हैं, और मुझे उनसे लड़ना और लड़ना पड़ता है।"

एक सुबह, माँ ने मारिया को बुलाया और उससे कहा, 'बाहर जाओ; आँगन में एक महिला खड़ी है। उससे कह दो कि मैं भवषियवाणी नहीं करती, लेकिन लोगों के लिए प्रार्थना करती हूँ।' वह महिला बाद में एक वशिवासी बन गई और अब उसे इस बात का बहुत पछतावा है कि वह माँ से उनके जीवित रहते हुए नहीं मिल सकी।

माँ घर में कभी कोई जानवर नहीं रखती थी, लेकिन अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्होंने कुछ बल्लियाँ पाल लीं। वह उन्हें अपनी ही कप से खाना खिलाती थी, उन्हें सहलाती थी, और बल्लियाँ उनके प्रति आज्ञाकारी और असाधारण रूप से बुद्धिमान थीं। जब उन्होंने उन्हें पाल लिया, तो कई लोगों ने सोचना शुरू कर दिया कि माँ अपने बुढ़ापे में अपना होश खो बैठी थी। लेकिन ऐसा नहीं था। मदर अग्न्या एक बुद्धिमान वृद्ध महिला थी; बल्लियों के माध्यम से वह अक्सर मानव पापों को उजागर करती थी। एक बार, सेरगवि पोसाद से दो धर्मशास्त्री छुट्टियों पर करागांडा आए। उनके आगमन से पहले, मदर ने मारिया से कहा: 'बल्लियों को कोठरी में ले आओ।' मारिया दो बल्लियाँ ले आई, और वे मेज पर आकर लेट गईं। मदर ने कहा: "उन्हें एक नए तौलिये से ढक दो।" मारिया ने उन्हें ढक दिया, और वे वहीं लेटे रहे। सेमिनारियन आए और, खुद को क्राँस करने के बाद, मदर के सेल में प्रवेश किया। उनमें से एक मेज के पास गया और बोला: "क्या अपमान है – मेज पर बल्लियाँ!" और वह उन्हें नीचे फेंकने ही वाला था। लेकिन दूसरे ने उसे रोक दिया: "उन्हें मत छूना, वे हमारे पापों को उजागर कर रही हैं और हमारी वनिम्रता की परीक्षा ले रही हैं।" और जब सेमिनारियन माताजी के साथ थे, तो बल्लियाँ नम्रता से मेज पर पड़ी रहीं, लेकिन जब वे चले गए, तो बल्लियाँ उठकर सेल से चली गईं।

माँ के घर में घटनाएँ घटित हो रही थीं, जो पहली नज़र में बेतरतीब लग सकती थीं, लेकिन वास्तव में उनका एक विशेष अर्थ था। जॉर्जी नाम का एक युवक चेल्याबस्कि से माँ से मिलने आया था। सर्दी का मौसम था। वह उनकी कोठरी में गया, अपनी खरगोश की खाल की टोपी उतारी और बसितर पर रख दी। अचानक माँ की बल्लि टोपी के पास आई, उसे बसितर पर लुढ़काने लगी और फिर उसे फर्श पर गिरा दिया। सेल की परिचारिका ने टोपी उठाई और बल्लि को डाँटा। मदर सुपीरियर के सेल से, जॉर्जी चर्च गया, उसने नार्थेक्स में कोट हुक पर अपना कोट और टोपी टाँग दी, और जब वह सेवा से निकलते समय कपड़े पहनना चाहता था, तो उसे हुक पर सिर्फ अपना कोट मिला; टोपी चोरी हो गई थी।"

डोलका से तात्याना नाम की एक बीस साल की लड़की माँ से मिलने आई। करागांडा के लोग यह कहानी—कि कैसे माँ ने तान्या को स्वर्ग के राज्य का मार्ग दिखाया—अलग-अलग तरीकों से सुनाते हैं। कुछ कहते हैं कि तान्या का एक मंगेतर था जो एक नाविक था, जिससे वह मिल रही थी और जिससे शादी करने की योजना बना रही थी, जबकि अन्य का दावा है कि माँ ने, तात्याना के विचारों को उसके जाने-पहचाने युवकों से भटकाने के लिए, उसे एक ऐसे मंगेतर का वर्णन किया जो उस समय दूर एक जहाज पर कप्तान के रूप में सेवा कर रहा था, और जो उसे, अपनी दुल्हन को, अपने जहाज की प्रमुख के रूप में एक यात्रा पर ले जाएगा। और उन्होंने उसे एक जपमाला दी। उसकी माँ ने इस मंगेतर की सुंदरता का वर्णन किया, जिसकी छवि जैसा कि उसने बताया था, हमारे प्रभु यीशु मसीह स्वयं के समान थी।

वैसे भी, एक साल के भीतर, माँ ने 'शादी' की तारीख 2 अगस्त तय कर दी थी। पतिजी ने तात्याना के लिए एक सुंदर घूँघट खरीदा, लेकिन माँ ने उसे जूते या शादी का जोड़ा खरीदने का आशीर्वाद नहीं दिया, यह कहते हुए: 'अभी समय नहीं आया है।' फिर, जुलाई के अंत में, उसकी माँ ने तात्याना से तुरंत घूँघट के साथ लगाने के लिए एक मोम का हार खरीदने को कहा – "समय नज़दीक आ रहा है; अब इसे और ढाला नहीं जा सकता" – और उसे "शादी की रस्म के लिए" तीन मोमबत्तियाँ दीं। तात्याना हैरान थी: "मेरी माँ ने मुझे शादी की रस्म के लिए तीन मोमबत्तियाँ क्यों दीं? वह मुझे किस लिए तैयार कर रही है? मुझे नहीं लगता कि वह मुझे शादी के लिए तैयार कर रही है; मुझे बस नहीं पता कि किस लिए।"

2 अगस्त को, जब सड़क पर दुर्घटना हुई, एक नवागंतुक मारिया चर्च जाने की तैयारी कर रही थी। मदर सुपीरियर ने उसे पुकारा, "Manya! Manya!" "तान्या की आत्मा ऊपर जा रही है! जल्दी से चर्च भागो और उन्हें कहो कि वे नव-नधिन हुई, हत्या की गई तान्या की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करें!"

और ऐसा ही हुआ। तातयिना एक बस में यात्रा कर रही थी, जसिने कोयले से लदे ट्रेलर वाली एक टपिर लॉरी को ओवरटेक किया। ओवरटेक करते समय, ट्रेलर लॉरी से अलग हो गया और बस से टकरा गया। सभी यात्री बच गए; केवल तातयिना की मौत हो गई।

उन्हें मोम के फूलमाला के साथ सफेद घूँघट में दफनाया गया, और ताबूत के तीन ओर तातयिना की शादी की मोमबत्तियाँ जल रही थीं।

हेगुमेन नकोलाई (कारपोव), श्चुचसिक

मैं पहली बार 1973 में मदर अग्निया से मिली। उस समय, मैं पूरी तरह से एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति था, बल्कि कुल भी धार्मिक नहीं, और मैं उनसे झगड़ने गया था (यह मेरे नज़ी जीवन से संबंधित था)। और ऐसा हुआ कि, मदर अग्निया के साथ मेरी बातचीत के माध्यम से, मेरे जीवन में सब कुछ बदल गया और मेरी आत्मा को शांति मिली। वह नब्बे के करीब की एक वृद्ध महिला थी, लेकिन उनकी आँखें कतिनी शुद्ध, स्पष्ट और नीली थीं। कोई सोच सकता है: एक दादी, जसिने कभी स्कूल न जाना हो और चौदह साल की उम्र से कॉन्वेंट में रही हो, वह क्या जान सकती है? और कॉन्वेंट के बाद के जीवन के बारे में उसके पास कहने के लिए क्या हो सकता है? और फरि भी, मेरे सभी सवालों के जवाब उन्होंने ऐसे दिए कि एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी वैसा जवाब नहीं दे सकता था।

मैं वहाँ पहुँची (यह सेना में शामिल होने से पहले की बात है); उन्होंने मुझसे बात की, मुझे चाय दी और चर्च भेज दिया: 'चर्च जाओ, प्रार्थना करो।' मुझे कैसे प्रार्थना करनी चाहिए? खैर, जब हम बच्चे थे तो माँ हमें चर्च ले जाती थीं और हमें पवित्र कम्युनियन देती थीं, लेकिन तब से मैंने चर्च में कभी प्रार्थना नहीं की थी। मैं चर्च में गई, और वहाँ बहुत सारे लोग नहीं थे; बूढ़ी महिलाएँ मुझे घूर रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे हर कोई मुझे घूर रहा हो – आखिर मैं प्रार्थना कैसे करूँ? तो मैं एक स्तंभ के पीछे खड़ी हो गई और जतिनी हो सके उतनी अच्छी तरह से प्रार्थना की। प्रार्थना करने के बाद, मैं मटुशका से मिलने गई। उन्होंने मुझे चाय दी, कुछ जलपान कराया, और मुझे अपने अतीत के बारे में बताया – कविह कैसे रहती थी, वह कॉन्वेंट में कैसे आई थी – और कहा: "मेरा एक परिचित था जो एक कुलीन व्यक्ति था, एक बहुत ही कुलीन व्यक्ति, लेकिन जब भी वह चर्च आता था, उसे ऐसा लगता था जैसे सब उसकी ही ओर देख रहे हों। वह एक स्तंभ के पीछे खड़ा हो जाता और बस वहीं खड़ा रहता।" पहले तो मुझे समझ नहीं आया, इसलिए मैंने पूछा, 'उस आदमी का उपनाम क्या था?' – मुझे लगा कविह किसी ऐतिहासिक शख्सियत का जिक्र कर रही हैं जसि मैं पहचानता था। लेकिन उन्होंने मेरा जवाब नहीं दिया और अपनी कहानी सुनाती रहीं। बाद में मुझे एहसास हुआ – वह मेरे बारे में ही बात कर रही थीं।

मदर सुपीरियर चाहती थीं कि मैं बशिप जोसेफ से मिलने अल्माटी जाऊँ। उन्होंने कहा, "हमारे पास एक अद्भुत बशिप हैं।" मदर सुपीरियर उन्हें बहुत पसंद करती थीं, और वह उन्हें बहुत मान-सम्मान देते थे; जब भी वह करागांडा आते, तो हमेशा उनसे मिलने आते थे। लेकिन मैं अपनी माँ के प्रति बहुत अधिक विश्वास और सनेह महसूस करने लगी थी, और मैं उनसे कहती थी: "मेरे लिए इतना ही काफी है कि मैं आपको जानती हूँ; मुझे वास्तव में किसी और की जरूरत नहीं है।" और जब तक मैं सेना में शामिल नहीं हुई, मैं बशिप से कभी नहीं मिल सकी।

मैंने सेना में केवल एक वर्ष तक सेवा की, और जैसे ही मैं सेना से मुक्त हुआ, मैंने सेमिनरी में दाखिला लेने के लिए जागोरस्क जाने का निर्णय लिया। पासपोर्ट मिलने से पहले ही, मैं सीधे करागांडा अपनी माँ से पढ़ाई के लिए आशीर्वाद मांगने चली गई। उस समय, बशिप जोसेफ की एक मतिर, यूस्टोलिया इवानोव्ना लेशचेवा, जो अल्माटी से आई थी, उनके साथ ठहरी हुई थीं। और मेरी माँ ने उन्हें पकड़ लिया: "वह अल्मा-आटा जा रही है, तो तुम उसके साथ उनकी प्रसादी मिलने जाओ। चलो, चलो!" और कहीं जाने की कोई जगह नहीं थी, क्योंकि मेरी माँ मुझे वहाँ भेज रही थीं, इसलिए मैं चली गई।

उनकी उत्कृष्टता ने मेरा बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया। मैंने अपने सामने एक साधारण से कसाक और ऊनी जम्पर पहने एक वृद्ध व्यक्ति को देखा। मैं इस मेट्रोपॉलिटन की तुलना दूसरे मेट्रोपॉलिटन से नहीं कर सकता था, क्योंकि मैंने पहले कभी किसी को नहीं देखा था। मेरी नज़र उनकी उत्कृष्टता की चौकस नज़रों से मिली; वह तुरंत यह समझना चाहते थे कि उन्हें देखने कौन आया है। मैं पहले ही उनके बारे में बहुत कुछ सुन चुका था, इसलिए मैंने भी इस बुजुर्ग व्यक्ति को ध्यान से देखा, जनिहें मेरी माँ इतनी श्रद्धा से देखती थीं। वह थोड़े बेचैन थे (बाद में मुझे इसका कारण पता चला - महामहिम के सेल सहायक उन्हें छोड़ने वाले थे)। उनकी प्रसादी ने मुझसे तरह-तरह के सवाल पूछे और कुछ देर रुकने का निमित्त दिया। जब मैं जा रहा था, तो उन्होंने पूछा, 'शायद आप फरि से मुझसे मिलने आएँगे?' मैंने जवाब दिया, 'जैसा प्रभु की इच्छा होगी, शायद मैं फरि कभी आऊँगा।'

मैं चलेयाबसिक लौटा, अपना पासपोर्ट लिया और कारागंडा वापस गया, वहाँ से सीधे माँस्को जाने का इरादा लेकर। मैं वहाँ पहुँचा ही था (सुबह के दस बजे थे) कि वैया वेरेतेनकोवा अंदर आई और मुझे अजीब नज़रों से देखने लगी। वह मेरे आने से ठीक पहले मेरी माँ से मिलने गई थी, फरि किसी काम के सलिसलि में बशिप को फोन करने के लिए टेलीफोन एक्सचेंज गई थी, और उन्होंने पूछा: "वह बंदा कहाँ है जो मेरी माँ के यहाँ ठहरा है? - उन्होंने इसे थोड़े अजीब तरीके से कहा - 'वह कहाँ है?' उसे मेरे पास आने को कहो; मुझे सच में उसकी ज़रूरत है।" और वैया ने कहा: 'वह यहाँ नहीं है; वह बहुत पहले ही उराल चला गया। मैं अभी अपनी माँ के घर से आई हूँ; वह वहाँ नहीं है।' - 'हाँ, वह वहाँ है, वह वहाँ है। और मेरी माँ से कहना - वह उसे मेरे पास भेजे।' और फरि वह आ जाती है, आश्चर्य से उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हो जाती हैं - मैं अपनी माँ के यहाँ चाय पी रहा हूँ। और वह मेरी माँ से कहती है कि मिहाशय मुझे बुला रहे हैं। "अच्छा, दैवीय व्यवस्था चीज़ें बदल रही है," मेरी माँ कहती है, "और तुम्हें अल्माटी जाना होगा।" मैंने जागोर्सक को अपना लक्ष्य बनाया था, और अब अल्मा-आता - एक चीज़, फरि दूसरी। मैंने कहा, "खैर, माँ, जैसा आप इसे आशीर्वाद दें, वैसा ही हो," और दो दिन बाद मैं पहले से ही अल्मा-आता में 'हसि ग्रेस' के साथ था।

उनकी कृपा बहुत परेशान थे; उनके सेल का परिचारक उन्हें छोड़ गया था। हम कुछ समय से एक-दूसरे से नहीं मिले थे, फरि भी वह पहले से ही एक कमजोर बूढ़े आदमी जैसे दिख रहे थे। वह स्पष्ट रूप से बहुत परेशान थे।

उनकी प्रसादी ने कहा, "आओ और मेरे साथ रहो।" और मैं उनके साथ आठ महीने तक उनके नदिन के दिन तक रही।

इन लोगों—बशिप जोसेफ और मदर अग्निया—में यह गुण है: वे बस किसी व्यक्तिकी आत्मा को अपने हाथों में ले लेते हैं, और बस; वह व्यक्ति, चाहे जानबूझकर हो या अनजाने में, बदल जाता है और रूपांतरित हो जाता है। उनमें किसी दूसरे व्यक्तिकी आत्मा पर अनुग्रह-भरा प्रभाव डालने की क्षमता है। जब कोई व्यक्ति भावनात्मक कष्ट से बोझिल होता है, जब वह बेचैन होता है, जीवन में कुछ खोज रहा होता है, और फरि वह इन लोगों के संपर्क में आता है, तो वह तुरंत शांत हो जाता है; उसे तुरंत महसूस होता है कि उसे वही मिल गया है जिसकी वह तलाश कर रहा था। मदर अग्निया और बशिप जोसेफ दोनों में यह गुण था, और यह बहुत स्पष्ट रूप से झलकता था। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मुझे नहीं पता था कि कैसे जिएँ या किस ओर मुड़ें, और फरि मैंने मदर अग्निया को देखा; मैंने उनके अच्छे काम देखे और उनके उदाहरण का पालन करना चाहा, किसी तरह उनका अनुकरण करना चाहा, भले ही उस समय मैं चर्च से बहुत दूर था। और बशिप जोसेफ - उनके साथ भी ऐसा ही था; उन्होंने मुझे अपनी छत्रछाया में ले लिया।

वह वास्तव में एक असाधारण व्यक्ति थे। उन्होंने कई लोगों पर एक स्थायी छाप छोड़ी, और सरिफ मुझ पर ही नहीं। जब उनकी मृत्यु हुई, तो किसी ने फोन करके पूछा: 'तो क्या यह सच है कि इवान मखाइल की मृत्यु हो गई है?' (उनका धर्मनिरपेक्ष नाम इवान मखाइलोवचि था)। 'यह सच है,' मैंने कहा। - "ओहहह," फोन पर जवाब आया, जिसमें गहरा अफ़सोस था, "वह एक सभ्य इंसान थे!" उन्होंने यह नहीं कहा कि वह बहुत संस्कारी या कुछ ऐसा थे, और यह वाक्यांश मुझे कोई खास साहचर्य नहीं लगा; फोन करने वाला, ऐसा लगता है, चर्च से जुड़ा हुआ नहीं था—शायद जीवन में कभी उनका रास्ता बस मिल गया था—लेकिन इतने अफ़सोस के साथ: "वह एक सभ्य इंसान थे।"

बशिप जोसेफ और मदर अग्निया दो ऐसे लोग थे जो एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते थे। मैं यह भी नहीं कह सकता कि किसने किसका अधिक सम्मान किया - क्या बशिप जोसेफ ने मदर अग्निया का सम्मान किया, या मदर अग्निया ने बशिप जोसेफ का। एक बार, मैं कुछ दिनों के लिए बशिप के आवास से मदर अग्निया से मिलने कारागंडा जाने की योजना बना रहा था। उस समय, वह मुझसे मठवासी जीवन के बारे में बात कर रहे थे: "मैं," उन्होंने कहा, "तुम्हारा मुंडन करूँगा और तुम्हें एक प्रमाण पत्र दूँगा, लेकिन यह मेरी मृत्यु के बाद ही सार्वजनिक किया जाएगा।" मैंने मना कर दिया, यह मानते हुए कि मठवासी जीवन मेरे लिए नहीं था, कि यह मेरी क्षमताओं से परे था। लेकिन शायद उन्होंने सोचा कि मैं बस उनसे मुंडन नहीं करवाना चाहता, और कहा: 'ठीक है, अगर तुम यह मुझसे नहीं चाहते, तो मदर अग्निया से तुम्हारा मुंडन करवा दो। जाओ, वह कर देंगी, और मैं अपने हाथ से इसकी पुष्टि करूँगा।' मैंने वह भी मना कर दिया। हालाँकि मुझे आज भी नहीं पता कि ननियों को भिक्षुओं के रूप में पुरुषों का मुंडन करने का अधिकार है या नहीं, पर मुझे वही आशीर्वाद मिला।

मदर अग्निया ने महाधर्माध्यक्ष को पूर्वानुमान सुनाया कि उन्हें पैट्रिआर्केट (पात्रकीय पद) की पेशकश की जाएगी। उन्होंने इस बारे में रूपक रूप में बात की, लेकिन महाधर्माध्यक्ष ने तुरंत उनसे कहा: "मदर, चुप हो जाइए, नहीं तो मैं आपको चर्च से बहिष्कृत कर दूँगा।" और वास्तव में बाद में महाधर्माध्यक्ष को पैट्रिआर्कल सहिसन के लिए एक उम्मीदवार के रूप में आगे रखा गया, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया।

माँ अग्नयि ने मेरे और अपने जीवन दोनों के बारे में बहुत कुछ पूर्वानुमान लगाया था। मेरी माँ मुझसे मलिन से पहले भी माँ अग्नयि से मलिन जाया करती थी, और माँ अग्नयि ने मुझे उद्धारकर्ता का एक आइकन दिया, यह पूर्वानुमान लगाते हुए कि मेरा अवशिष्ट दूर हो जाएगा और मैं पुरोहिता के पद पर भी नयिकृत होऊँगा।

माँ की सूझ-बूझ कभी-कभी संयोग से प्रकट हो जाती थी। मुझे याद है, एक बार एक बहुत ही गरीब, बहुत बीमार महिला हमसे मलिन आई थी। माँ ने कहा: "निकोले मखिाइच (मैं तब भी जवान था, 22 साल का, लेकिन वह मुझे मेरे पहले नाम और पति के नाम से बुलाती थी), निकोले मखिाइच, वहाँ कुछ अंडे हैं; उन्हें दे दो।" 'कितने हुए, माँ?' 'अच्छा, गनो कि कितने हैं—गनो।' मैंने गनी—पंद्रह। 'लो, इन्हें उसे दे दो।' 'लेकिन हमारे लिए क्या?' मैंने पूछा। 'वे हमारे लिए भी कुछ लाएँगे—चिता मत करो।' लगभग दो घंटे बाद, एक और महिला आई और अंडे ले आई: "माँ, अंडे ये हैं।" "निकोलई मखिाइलयच," मेरी माँ ने कहा, "इन्हें ले लो, गनो कि कितने हैं, गनो।" मैंने उन्हें गनी – पंद्रह। बस ऐसे ही होता था। यह एक मामूली घटना लग सकती है, लेकिन जब आपको एहसास होने लगता है... या एक और बार: मैं चलेबांस्क घर जाने ही वाला था और मैंने कहा, 'माँ, मुझे अपने परिवार को बताने के लिए फोन करना है।' 'ठीक है,' उन्होंने कहा, 'तुम स्टेशन से फोन कर लेना।' 'सेवा में जाओ, चिता मत करो, तुम स्टेशन से फोन कर सकते हो।' मैंने एक प्रार्थना की, सेवा से बाहर आ गया, सोचते हुए: "अच्छा, मैं स्टेशन से फोन कब करूँगा? मेरे पास अभी तक टिकट भी नहीं है। मैं अभी जाकर फोन करता हूँ।" मैं पब्लिक फोन पर गया – वह बंद था। मैं बस में चढ़ गया, दूसरे पब्लिक फोन पर गया, बार-बार फोन किया – कोई सगिनल नहीं था। मुझे अपनी माँ की बातें याद आईं; खैर, मैंने सोचा, इससे कोई फायदा नहीं होगा, मैं अपनी माँ से मलिन जाऊँगा। मैं पहुँचा, मैं इतना सुन्न हो गया था कि मैंने उससे एक शब्द भी नहीं कहा; मैंने एक कप चाय पी और जाने की तैयारी करने लगा। मैं स्टेशन देर से पहुँचा, ट्रेन के रवाना होने से ठीक पंद्रह मिनट पहले। मैं स्टेशन में चल ही रही थी कि मुझे टेलीफोन बूथ दिखाई दिया: दरवाजा खुला था, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। मैं दौड़कर अंदर गई, नंबर घुमाया, दो-तीन शब्द बोले, ट्रेन में चढ़ गई और घर की ओर चल दी। मुझे कॉल करने में सचमुच दो-तीन मिनट ही लगे।

मदर अग्नयि और व्लादकि जोसेफ दो ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने मेरे जीवन को बदल दिया। केवल मेरा ही नहीं; उन्होंने अपनी कृपा, वनिमरता, धैर्य और प्रार्थनाओं के माध्यम से बहुत से लोगों के जीवन बदल दिए। जैसा कि पूजनीय सेराफिमि ने कहा था: 'एक शांतपूरण आत्मा प्राप्त करो, और तुम्हारे चारों ओर हजारों लोग बच जाएँगे।' और ये वही लोग हैं जिनके चारों ओर, वास्तव में, हजारों लोग बच गए थे।

मदर अग्नयि का 17 मार्च 1976 को नधिन हो गया, जब उन्हें एक स्कीमा-नुन के रूप में दीक्षित किया गया था। जब वह एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित हुई, तो उन्होंने चालीस दिनों तक कुछ नहीं खाया और अपनी नकिट मृत्यु का पूर्वाभास होते हुए, उन्होंने भवषियवाणी की कि दो ताबूत होंगे।

17 मार्च को, पवित्र रहस्यों को प्राप्त करने के बाद, माता अग्नयि ने शांतपूरक अपनी आत्मा को प्रभु के हवाले कर दिया। बहनें उन्हें धोने और कपड़े पहनाने आईं। उनके साथ उन चार ननों में से आखिरी भी आई जो फादर सेवासियन के कारागंदा में कैद के वर्षों के दौरान उनसे मलिन गई थी: माता फेवरोनया (जो मठवासी जीवन में थेकला के नाम से जानी जाती थी)। जब मदर अग्नयि को दफनाने के लिए तैयार किया जा रहा था, तब मदर फेवरोनया भी अचानक चल बसीं। मदर अग्नयि उन्हें इस दुखों के भँवर से अपने साथ शाश्वत आनंद के स्वरगीय महल में ले गईं - बहनों ने इसे इसी तरह समझा। उन्हें मखिाइलोव्सकोये कब्रस्तान में बगल-बगल दफनाया गया।

स्कीमानुहा अनास्तासिया

(ससिटर जूलिया द्वारा ससिटर अनास्तासिया के शब्दों से रिकॉर्ड किया गया।)

अनास्तासिया इवानोव्ना शेवलेन्को का जन्म 1888 में वटिब्सक क्षेत्र में एक जूता बनाने वाले के परिवार में हुआ था। उनका बचपन बहुत कठिन था। उनके पति शराब पीते थे, गाली-गलौज करते थे और एक मुठभेड़ में मारे जाने पर उनकी मृत्यु हो गई। अनास्तासिया ने खुद याद किया कि वह न केवल अपने पति के लिए रोई नहीं, बल्कि उसने अपनी माँ को भी न रोने के लिए मनाने की कोशिश की: 'अब पापा अब कभी गाली नहीं देंगे।' उसकी माँ के पास आठ बच्चे रह गए थे, जो सभी बहुत छोटे थे। उसे अपनी माँ की बहुत प्यारी यादें थीं। उसकी माँ हमेशा शांत और बहुत धार्मिक रहती थीं। उनकी माँ ने अनास्तासिया को स्कूल भेजा, लेकिन वह पढ़ाई नहीं करना चाहती थी। उनकी माँ ने याद किया, 'पहली बार मुझे पढ़ने के लिए बुलाया गया, और मुझे एक कविता दी गई जो मुझे रटकर पता थी: "आँगन में ओस चर-चर कर रही थी..." मैंने इसे कतिब से बहुत अच्छी तरह से पढ़ा, और मुझे तुरंत दूसरे साल में भेज दिया गया। लेकिन जब अगली बार मुझे बुलाया गया, तो मुझे एक अपरचित कविता दी गई। मैं उसे पढ़ नहीं पाई, और मुझे फिर से पहली कक्षा में भेज दिया गया। लेकिन मैं पढ़ाई नहीं करना चाहती थी और मैंने पढ़ाई छोड़ दी।"

मेरी माँ ने अपने बचपन को याद किया: "पहले के दिनों में, हर परिवार का अपना एक मुखिया होता था: माँ जो कुछ भी कहती, वह कानून होता था। - मम्मी, वहाँ वह रोशनी क्या है? - खास लोग प्रार्थना कर रहे हैं। - क्या मैं उन्हें देख सकती हूँ? - नहीं, वे ईश्वर के चुने हुए लोग हैं। अचानक, पेट्या दौड़ता हुआ आया। 'मम्मी, बेवकूफ़ छोटा पेट्या दौड़ रहा है।' वह बेवकूफ़ नहीं है।' लेकिन " " — लड़के उसे ऐसा ही कहते हैं, और उस पर पत्थर फेंकते हैं।' 'वे बेवकूफ़ हैं,' मेरी माँ ने कहा, 'लेकिन छोटा पेट्या तो मसीह के लिए एक पवित्र मूर्ख है।' और मैंने अपने मन में सोचा: 'शायद मैं भी मसीह के लिए एक मूर्ख बन सकती हूँ?' और, ईश्वर का धन्यवाद, मैंने अपना जीवन एक मूर्ख की तरह जिया। (ऐसे समय में, प्रभु किसी की समझ का एक हसिंसा छीन लेते हैं।)"

जब अनास्तासिया दस साल की हुई, तो उसकी चाची—उसके पति की बहन—ने उसे पारिवारिक व्यवसाय में मदद करने के लिए अपने पास रख लिया, और चौदह साल की उम्र में उसके भाई ने उसे एक वाइनरी में बर्तन धोने की नौकरी पर लगा दिया। उसने वहाँ तीन साल तक काम किया। फिर अनास्तासिया घर से भाग गई, लेकिन उन्हें वह मलि गई और वे उसे वापस ले आए। उस समय से, लोग सोचने लगे कविह पागल है। जल्द ही वह फिर से पानी लेने गई, कुओं के पास बाल्टियाँ छोड़ दीं, और हमेशा के लिए भटकने निकल पड़ी। अठारह साल की उस युवती ने भटकना शुरू कर दिया, उसके पास सरि रखने के लिए कोई ठिकाना नहीं था।

उनकी माँ ने याद किया, "हर रात, उसे सोने के लिए कहीं जगह ढूँढ़नी पड़ती थी, और सुबह फिर निकल पड़ती थी। यह बहुत मुश्किल था, खासकर एक बार—मुझे याद है कठिंड थी, गंदगी थी, और मूसलाधार बारिश हो रही थी, और मैं हड्डी तक जम गई थी। मैं जहाँ भी गई, मुझे भगा दिया गया। मेरे दिल पर बोझ असहनीय था। मुझे खेत में एक छोटा सा झोपड़ी मलि; मैंने अपना सरि अंदर कर लिया, जबकि मेरा बाकी शरीर खुले में ही रहा। मैंने रात इसी तरह बिताई। अगले सुबह मैं चर्च गई। जैसे ही मैंने चर्च के बरामदे में कदम रखा, मैंने पादरी को पढ़ते सुना: 'हे अतिमिधुर और सर्व-उदार यीशु...' मैं ज़मीन पर गरि पड़ी, और मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। 'हे प्रभु, मैं आपको बिल्कुल भूल गई थी।' तुरंत, एक डकिन आया और मुझे अपने घर पर आमंत्रित किया। और फिर सभी लोग मुझे पुकारने लगे। इस तरह प्रभु हमारी परीक्षा लेते हैं और, हमारे दुखों के माध्यम से, हमें सखाते हैं कि अपनी आशा 'राजकुमारों या मनुष्यों के बेटों में' न रखें, बल्कि केवल उसी में आशा रखें।

फिर मैं अपनी चाची के पास रहने के लिए इवानोवो क्षेत्र के शूया शहर गई। उन्होंने मेरे लिए एक कारखाने के मालिक के यहाँ नौकरानी के रूप में काम का प्रबंध किया। काम आसान था, लेकिन अपने नयिकता के उत्पीड़न के कारण मैं वहाँ केवल दो सप्ताह ही रुकी और फिर चली गई। इसके बाद, मेरी चाची ने मुझे एल्डर एम्ब्रोज़ के आध्यात्मिक पुत्र एक सज्जन के यहाँ नौकरी दलाई।

मैंने वहाँ छह साल तक हाउसकीपर के रूप में काम किया। काम बहुत था, लेकिन मैंने संभाल लिया। मैं सच में प्रार्थना करना चाहती थी, लेकिन मेरे पास कभी समय नहीं था। और घर की मालिकनी दोपहर तक सोती रहती थी। "ऐसा कैसे हो सकता है," मैंने सोचा, "क्या उसे अपने समय की परवाह नहीं है?" लेकिन मैं रोती और चर्च भाग जाती, चर्च की सीढ़ियों पर बैठे भखारियों को थोड़ी-थोड़ी रकम देती, ताकि सभी के लिए पर्याप्त हो। इस तरह मैंने इसकी भरपाई की — मैंने अपनी ओर से प्रार्थना करने के लिए लोगों को काम पर रखा। और फिर मुझ पर इतनी गहरी उदासी छा गई, इतनी नरिशा हावी हो गई कि जीवन ही असंभव सा लगने लगा। 'निश्चित रूप से,' मैंने सोचा, 'क्या मुझे अपनी पूरी ज़िंदगी इस तरह नहीं बितानी पड़ेगी?' लेकिन दयालु प्रभु दुखी लोगों के बहुत करीब हैं। रूफ़िना नाम की एक नन ने मुझे बुजुर्गों से मलिन के लिए ओप्टिनि पुस्तनि जाने की सलाह दी। तो मैं चली गई। दुश्मन ने मुझे वापस मुड़ने के वचारों से लुभाया, और मैं बड़ी मुश्किल से वहाँ पहुँच पाई। और जैसे ही मैं झजिदरा नदी पर पहुँची और नाव पर एक पैर रखा, मुझे तुरंत हल्कापन महसूस हुआ। फादर अनातोली ने मुझे अपनी पुरानी जगह पर रहने का आशीर्वाद दिया और मकान मालिक को पत्र लिखकर उनसे मुझे प्यार से रखने का अनुरोध किया। मकान मालिक ने मुझे स्वीकार कर लिया, और मैं उनके साथ और दो साल रही। फिर मैं पोलोत्स्क कॉन्वेंट गई, जहाँ मैंने अपना मठवासी संकल्प लिया। एक दिन वहाँ मेरी एक नन से अनबन हो गई। और वह नन उबलते पानी से भरा एक केतली ले जा रही थी। मैं झपटकर उठा, उससे केतली छीन ली और उसे एक तरफ फेंक दिया। इस हरकत से सभी हैरान रह गए। लेकिन कुछ ही देर बाद, वह नन मेरे पैरों पर गरि पड़ी और उसने कबूल किया कि वह मुझे जलने के लिए जलाना चाहती थी।

मैं दो साल तक कॉन्वेंट में रही और फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़ी। ओप्टिनि पुस्तनि में, एल्डर अनातोली ने मुझे एक पवित्र मूर्ख के रूप में रहने का आशीर्वाद दिया। उन्होंने मुझे दो यात्रा साथी दिए और मुझे टकिनोवा पुस्तनि जाने के लिए कहा। हम बहुत दूर नहीं गए थे कि मुझे हैजा हो गया। मैं चल नहीं पा रहा था, इसलिए मैं जंगल में लेट गया, और वहाँ मैंने अपने पति को बना टोपी के आते देखा, और उन्होंने कहा: 'यहाँ मत रुको, बल्कि सबसे नज़दीकी गाँव जाओ।' और इस तरह हम चल पड़े। जैसे ही हम पहले झोपड़ी तक पहुँचे, मैं दहलीज पर बैठ गया; मेरी आँखें बंद हो

गई, और मैं बेहोश हो गया। और अचानक किसी अदृश्य शक्ति ने मुझे छुआ; हाथों के बजाय, मजबूत पंख नकिले और दोनों ओर फैल गए। मेरी आध्यात्मिक आँखें खुल गईं, और मैंने देखा कशिक्षसों की भीड़ मेरे पास से गुजर रही थी, जो मुझे चीर-फाड़ करने के लिए तैयार थी। लेकिन मैंने पवतिर परमप्रसाद ग्रहण किया था और अपने शरीर से क्रॉस का चहिन बना रही थी और मेरे पंख मुड़े हुए थे, इसलिए राक्षस मुझे छू नहीं सकते थे। आखिरी वाला, जो उन सबका मुखिया था, उसने ताश का एक पैकेट नकिला और उससे मेरे चेहरे पर मारने की कोशिश की, लेकिन वह बस छू गया। और मुझे याद आया कि मैंने ताश खेला था और उसके लिए पश्चाताप नहीं किया था।

हमने वहाँ रात बिताई। सुबह, मेरे साथी टकिनोव हरमटिज के लिए नकिल पड़े, लेकिन मैं उठ नहीं सका। कुछ देर बाद मैं उठने में कामयाब हुआ और जाना चाहता था, लेकिन खलहान में फरि से गरि पड़ा, और गाय के गोबर में मुँह के बल लोट गया। और, जाहरि तौर पर, मैं वहाँ इतनी देर तक पड़ा रहा कि मुझ पर लगा सब कुछ सूख गया था। उसी कषण मुझे एक दर्शन हुआ: काले परधान में एक महिला – ईश्वर की माता – और खलहान के नीचे एक भकिषु, हऐरोडीकन पॉल (और वहाँ मैंने उन्हें फरि से देखा, भले ही वे अब इस दुनिया में नहीं थे)। फरि उन्होंने मुझे धोया, मुझे खाना खिलाया, और मैं उस गाँव के लिए नकिल पड़ा जहाँ भाई जॉर्ज चेकस्याकोव्सकी रहते थे। अँधेरा हो गया था। मैंने सोचा, 'मैं रात कहाँ बताऊँगा?' मैं चर्च गया, दरवाजा धकेला - वह खुला हुआ था। मैं बहुत खुश हुआ, अंदर गया और रात के लिए आराम करने लगा। मैंने अपने ऊपर के कपड़े उतार दिए और एक सफेद, लंबी आस्तीन वाली बनियान में रह गया। मुझे यह भी पता नहीं चला कि रात कैसे बीती। सुबह, देखभाल करने वाला आया, मुझे पूरा सफेद पहने देखा और डर गया – उसे लगा कि मैं कोई भूत हो सकता हूँ। वह भाग गया और फादर जॉर्जी चेक्रीकोव्सकी के भाई और उनकी जवान पत्नी के साथ वापस आया। उन्होंने मुझे पकड़ लिया और मुझे पुलिसि स्टेशन ले गए। रास्ते में उन्होंने मेरा पासपोर्ट माँगा। और मैंने उनसे कहा कि मेरे पास पासपोर्ट नहीं है, लेकिन मेरे पास एक कागज का टुकड़ा था। (जब मैं पोलोत्स्क कॉन्वेंट से जा रही थी, तो धन्य बहनों में से एक ने मुझसे कॉन्वेंट से एक कागज का टुकड़ा लेने के लिए कहा।) और जब उन्होंने वह कागज पढ़ा, तो उस जवान पत्नी ने कहा: "ओह, तुम बेचारी!" (मेरी माँ उन शब्दों पर हमेशा रोती थीं।) वे मुझे अपने घर ले गए और मुझे मांस के साथ बोरस्ट परोसा। उनकी दयालुता देखकर, मैंने सारा बोरस्ट खा लिया। फरि वे मुझे फादर जॉर्जी चेकस्याकोव्सकी के पास ले गए, जनिहें मैंने बताया कि मेरे लिए भटकना कतिना मुश्किल था। उन्होंने कहा: 'ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम्हारे सरि पर कोई छत नहीं है। अगर तुम चाहो, तो हमारे यहाँ रह जाओ।' लेकिन सवाल ही नहीं उठता! मुझे तुरंत बेहतर महसूस हुआ, मैं कूद पड़ी और फरि से भटकने नकिल पड़ी। मैं चलती ही रही, और जंगल में खो गई। ठंड थी; जमीन पर पहले से ही बर्फ पड़ी थी, और चूँकि मैंने हल्के कपड़े पहने हुए थे, मैं ठंड से जमने लगी। मैं लेटना चाहती थी, और लगभग लेट ही जाती। मैंने दो आदमियों को देखा, उनसे भाग गई, और सड़क पर आ गई। मैं पहली छोटी झोपड़ी में घुस गई जो मुझे मली, जहाँ एक मोची ने मुझे गर्म किया और खाना खिलाया।"

जब फादर सेबेस्टियन, एल्डर नेक्टारियोस के अधीन एक नवसखिआ थे, तब वह ऑप्टिना में रहती थीं। वहाँ वह एक फटी हुई लाल स्कर्ट पहनकर घूमती थीं। ऐसा होता था कि प्रभु किसी में कोई न कोई बुराई प्रकट करते थे, और फरि वह उन्हें सभी के सामने नदिा करती थीं, जिसके लिए उन्हें कभी-कभी पीटा जाता था। [विशेष रूप से, करगंडा के लोगों के बयानों से मदर के बारे में नमिनलखिति तथ्य ज्ञात हैं: एक बार, सर्व-रात्रि जागरण के दौरान, वह परमिया पढ़ रहे एक भकिषु की ओर उछलीं, अपना स्तन उजागर किया, उसे बांह से पकड़ लिया और उसी तरह उसे अंबो तक ले गईं। इसके अलावा, रूपांतरण के परव पर जुलूस के दौरान, वह एक पेड़ पर चढ़ गईं और पादरियों पर सेब फेंकने लगीं, जिससे मठ के नकिट भवषिय में बंद होने का संकेत मिला।]। लेकिन फादर सेबेस्टियन ने मदर सुपीरियर को कभी नहीं मारा; जब वह एल्डर के सेल में चढ़ती थीं तो वह बस उनके पैरों पर पैर रख देते थे।

"क्या तुम्हें याद है, नास्त्या," फादर ने एक दिन याद किया, "कि कैसे मैंने एक बार ऑप्टिना में तुम्हें धक्का दिया था, जब तुम एल्डर के बसितर के नीचे छपि गई थीं? तुम सीढ़ियों से लुढ़ककर नीचे गरि गई थीं। और फादर नेक्टारियोस ने मुझसे कहा: 'अरे, स्टीफन, उसे धक्का दे—वह बहुत अवज्ञाकारी है। देखो,' उन्होंने कहा, 'वह छपि गई है! इससे नपिट लो! तुम्हें तो मूर्ख ही बनना है; तुम्हारे लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं है।' यह सुनकर, फादर चुप हो गए, फरि बोले: 'उस समय मुझे तुम्हारे लिए कतिनी सहानुभूति हुई थी! लेकिन—आज्ञाकारति।' और माँ मूर्ख बनना नहीं चाहती थीं; वह रो पड़ीं। (वह खूबसूरत थीं: गुलाबी गाल, लंबी चोटीयाँ।) और फादर नेक्टारियोस ने कहा: 'अगर तुम ईश्वर की आज्ञा नहीं मानोगी, तो क्या तुम्हें लगता है कि नरक में यह आसान होगा?'

एक दिन वह जंगल में गई, कुछ बेर तोड़कर खा लीं और उन्हें बहुत प्यास लगी। अचानक मैंने जमीन से फूटते हुए एक झरने को देखा; पानी स्वादष्टि और बलिकुल साफ था। मैंने अपनी मटका इस पानी से भर लिया और मन भरकर

पयि। फरि मैं जंगल में ज़ोर-ज़ोर से गाते हुए चलने लगी। तभी मैंने गाना गाना शुरू किया। मुझे फरि से प्यास लगी, मैं उस जगह वापस गया, लेकिन वह झरना गायब हो गया था।

एक बार, ऑप्टिनि में, मैं बर्फ पर नंगे पैर दौड़ रहा था। एक दोस्त मेरे पास आया और मुझे जूते पहनने के लिए कहा, लेकिन मैं दौड़ता रहा। फरि मैं चर्च गया और हर आइकन के सामने तीन बार झुका। और मेरे पैर लकड़ी की तरह अकड़ गए और अब मुड़ते ही नहीं थे। एक बुजुर्ग ने यह देखा। वह मेरे पास आए और पूछा: 'तुम्हारी टाँगें क्यों नहीं मुड़ रही हैं?' मैंने कहा कि यह झुकने की वजह से है, लेकिन उन्होंने जवाब दिया: 'नहीं, तुम्हें उनमें ठंड लग गई है, और वे दर्द करेंगी।' मैं दुख से भर गया, इस डर से कि मैं अपनी टाँगें खो दूँगा, और एक पल में मैं एक सुंदर व्यक्ति से एक भयानक रूप में बदल गया - दुख एक व्यक्ति को इस तरह प्रभावित करता है।

मैं छब्बीस साल की थी। एक पतझड़ में, मैं ऑप्टिनि के पास जंगल में खो गई। बर्फ पड़ने लगी, और मेरे पैर नंगे थे। मैंने बहुत देर तक बाहर निकलने का रास्ता खोजा और रात में, एक संन्यास-आश्रम पर पहुँचकर लोहे के चूल्हे पर बैठ गई। संन्यासियों ने मुझे देखा और मुझे झोपड़ी में आमंत्रित किया। मैं भिक्षुओं के पास नहीं गई, बल्कि मठ चली गई। मैंने दरवाज़ा खटखटाया, तो उन्होंने पूछा, 'कौन है?' मैंने यह नहीं बताया कि मैं कौन हूँ, बल्कि लकड़ी काटने की मलि पर चली गई। वहाँ, देखभाल करने वाले का कुटिया खाली निकला, लेकिन उसमें आग नहीं जली थी। मैं चूल्हे पर चढ़ गई, लेकिन मुझे ढकने के लिए कुछ भी नहीं था। मैं सुबह तक वहीं रही, जब कुछ परचिति मुझे ढूँढ़कर ले आए और मुझे अपने घर ले गए। वहाँ उन्होंने मेरे पैरों को गर्म किया, जो लकड़ी जैसे लग रहे थे, खासकर मेरे पड़िली। लेकिन यह ठीक था; वे दर्द नहीं करते थे। वे केवल 1964 में करागंडा में दर्द करते थे।

ईसाइयों के गंभीर उत्पीड़न के दौरान, मैं कलुगा में एक नन के साथ रहती थी। मैं बहुत बीमार थी; उन्हें लगा कि मैं बच नहीं पाऊँगी। एक सुबह, मेरी मेज़बान चर्च गई, और मैंने खुद को माँ ईश्वर की एक प्रतिमा के सामने नयिम का पाठ करते हुए पाया, और मठ में रखी माँ ईश्वर की प्रतिमा हलि गई। फरि मैंने देखा, और वह सफेद प्रेरितिकि चोगा पहनकर मेज के पास खड़ी थी, मेरी ओर देख रही थी, जबकि आइकन केस खाली था। मैंने उनसे कहा: 'हे परमेश्वर की माता, आखिर हो क्या रहा है?' (मैं ईसाइयों पर हो रहे अत्याचारों का जिक्र कर रही थी।) और उन्होंने कहा: 'प्रोस्फोरा के साथ एपफिनी का पानी पियो।' और वह वापस आइकन केस में चली गई।"

तब से, माँ अनास्तासिया हमेशा एपफिनी के लिए भरपूर पानी का भंडारण करती थी। करागंडा में, वह पानी को छल्लों में जमा देती थी और पूरे साल पीने के लिए सभी को प्रोस्फोरा के साथ एपफिनी का पानी देती थी।

उत्पीड़न के वर्षों के दौरान, माता अनास्तासिया शविरि में थी।

रहिई के बाद, मुझे वहाँ बसाने के लिए कोचेताव ले जाया गया। "मैं घर-घर गई। मैं एक घर पर पहुँची, और उन्होंने कहा, 'हमारे पास रोटी नहीं है।' लेकिन उन्होंने मुझे आलू और क्वास खिलाया। मैं दूसरे घर गई, जहाँ उन्होंने, मुझे तुरंत पकड़ लिया और मुझे पुलसि के पास ले जाना चाहते थे - उनके कुछ लनिन गायब हो गए थे। लेकिन पड़ोसियों ने मेरा पक्ष लिया और उन्होंने मुझे जाने दिया। मैं आगे बढ़ी। तीसरे घर पर, उन्होंने मुझे फरि से पकड़ लिया - गेहूँ का एक बोरा गायब हो गया था, और उन्होंने मुझ पर फरि से आरोप लगाया। मेरे लिए बुरा होता, लेकिन एक बूढ़े आदमी ने मेरा पक्ष लिया, इसलिए उन्होंने मुझे जाने दिया। आखिरकार, जेल में बतिए समय के बाद, मैं सचमुच एक गुंडे जैसा दखिता था। तो, रात हो गई थी और मैं सड़क पर था - मैं सोने के लिए कहाँ जा सकता था? मैं कुछ ननों के यहाँ गया, लेकिन दस्तक देने की हिम्मत नहीं हुई, इसलिए मैं उनके आँगन में लेट गया। बर्फ गरिने लगी और मुझे एक मोटी परत में ढक दिया, लेकिन मुझे गर्मी मलि रही थी।"

कारागंडा में, वह एक गेटहाउस में रहती थी; उसे सभी को खाना खिलाना पसंद था, लेकिन वह खुद बहुत कम खाती थी। जो भी कोई उसे देता, वह उसे खुशी से स्वीकार कर लेती, मानो उसे वास्तव में उसकी जरूरत हो। लेकिन वह सब कुछ तुरंत ही दूसरों को दे देती। पहले वह बाथरूम में सोती थी, जहाँ उसका सामान रखा होता था। बाद में, एक ठंडे कोने में, उसने तरह-तरह के ढेर लगा दिए ताकि कोई उन पर ज्यादा देर तक लेट न सके। वह शाम को सोती थी लेकिन रात भर काम करती रहती थी - बंकों के नीचे सफाई करना और क्वास बनाना। वह बहुत अच्छा क्वास बनाती थी और सबको पीने के लिए देती थी। कभी-कभी वह गुस्से में आ जाती थी और, किसी कारणवश, कुछ बहनों को रो देती थी। जहाँ तक उसके कपड़ों की बात है - वह एक पैर में गेलोश और दूसरे में वेलनोक पहनती थी। अक्सर ऐसा होता था कि सर्दियों में वह गेलोश और बूट्स में, और गर्मियों में वेलनोक में घूमती थी। उसका कपड़ा हमेशा गंदा रहता था; अगर वह साफ कपड़े पहनती भी, तो वे ज्यादा देर तक साफ नहीं रहते थे। उसके सरि पर एक रूमाल या कोई फटी-पुरानी चादर रहती थी, जो लगभग हमेशा बखिरी रहती थी। अगर आप उसे ठीक-ठाक करने की कोशिश करते, तो वह आपको भगा देती, चिल्लाते हुए, 'यहाँ से चले जाओ!' केवल संस्कार से पहले ही वह साफ कपड़े पहनती और थोड़ा साफ-सुथरा व्यवहार करती थी।

मेरी माँ के पास दूरदर्शिता का वरदान था। एक बार, मुझ पर एक बहुत भारी बोझ आ गया, और मेरे वचारों ने मेरे मन में इतनी भीड़ कर दी कि मैं प्रार्थना नहीं कर सकी। अचानक, पीछे से किसी ने मेरे कंधे पर जोर से थपथपाया: 'क्या तू आ गई? मैं तुझे सारी रात ढूँढ़ रही थी।' माँ अनास्तासिया ने जोर से कहा। और तुरंत ही मुझे सुकून महसूस हुआ। अपने हाथ के प्रार्थनापूर्ण स्पर्श से, उन्होंने उस दुष्ट आत्मा को भगा दिया। उन्होंने एक से अधिक मौकों पर मेरे वचारों का जवाब दिया। मेरे लिए यह मुश्किल था। मैंने सोचा, 'और माँ तो देख भी नहीं रही हैं।' उसी क्षण, वह आई और बनिा कुछ कहे सीधे मेरी आँखों में देखने लगीं। मैंने कहा, 'कृपया मेरे लिए प्रार्थना करें; मेरा दिल भारी है।' – 'फादर अपने कमरे में अकेले हैं; जल्दी से उनके पास जाओ।' जब मैं पहुँची, तो फादर मुस्कुराते हुए पूछा, 'क्या बात है?' – 'मेरा दिल भारी है,' मैंने जवाब दिया। उन्होंने मेरे सीने पर अपना हाथ फेरा और कहा, "दुष्ट, मेरे बच्चे, तुम्हें चैन नहीं लेने दे रहा है। यह बीत जाएगा।" और, सचमुच, यह सब बीत गया।

1970. पाम संडे

प्रार्थना सभा के दौरान, एक वृद्ध महिला को अस्वस्थ महसूस होने लगा, लेकिन भीड़ के कारण वह सड़क पर नहीं जा सकी। मदर बाई ओर के कोरस लॉफ्ट पर बैठी थीं और उन्होंने हमसे उस वृद्ध महिला को कोरस लॉफ्ट तक आने में मदद करने के लिए कहा। फिर उन्होंने उन्हें अपने बगल में बठाया और उस वृद्ध महिला का सरि अपने कंधे पर टिका दिया। लगभग दस मिनट ही बीते थे कि वह बुजुर्ग महिला खड़ी हो गई और मदर का धन्यवाद करने लगी – वह फिर से पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी। लेकिन मदर बीमार पड़ गईं। वह अक्सर दूसरों की बीमारियों को अपने ऊपर ले लेती थीं। यह उनके लिए मुश्किल था, और उन्होंने एक बार यह भी स्वीकार किया था: "मैंने किसी बहुत बीमार व्यक्ति पर तरस खाया था, इसलिए अब मुझे यह भुगतना पड़ रहा है।"

अगस्त 1970 में, चर्च के गेटहाउस को गरिने की योजना बनाई गई, जसिं फादर अपने जीवति रहते हुए गरिने के लिए आशीर्वाद देने से इनकार कर गए थे। मजदूर अगले दिन आने वाले थे और ध्वस्त करने का काम शुरू करने वाले थे। हम सभी इस बात से दुखी थे कि फादर की आज्ञा का उल्लंघन किया जा रहा था। मदर अनास्तासिया एक दिन पहले ही गंभीर रूप से बीमार पड़ गई थीं और उन्होंने खुद को अकेला छोड़ देने को कहा, जसिमें किसी को भी अंदर आने की अनुमति नहीं थी। और इस प्रकार वह दोपहर के तीन बजे तक पूरी रात वहीं लेटी रहीं। तीन बजे वह उठी, कमरे से बाहर भागी और कहा: "खैर, अब सब ठीक है; मुझे बेहतर महसूस हो रहा है।" ठीक इसके बाद, गाँव का मुखिया एक अधिकारी के साथ अंदर आया, और अधिकारी ने गेटहाउस को गरिने और किसी भी निर्माण कार्य को शुरू करने पर रोक लगा दी। बेशक, यह माँ अनास्तासिया की प्रार्थनाओं का ही चमत्कार था।

संयोग या चमत्कार

जुलाई में, राडोनेज़ के संत सेरगियस की अवशेषों के स्थानांतरण के पर्व के आसपास, माँ ने हमसे कहा: 'कल, डोलकि गाँव में संत के आश्रम का रास्ता देखना, जहाँ पादरी ने अपनी सजा काटी थी।' हमने इस आशीर्वाद को बहुत खुशी से नहीं लिया, क्योंकि हम कड़ी मेहनत कर रहे थे – चर्च को रंग रहे थे – और बहुत थके हुए थे। हम बहाने बनाने लगे: "हम थके हुए हैं; हम आराम करना चाहते हैं।" लेकिन माँ ने कहा: "वहीं जाकर तुम आराम करोगे। और घर पर की तुलना में वहाँ जाकर तुम्हारा दमिाग ज्यादा शांत होगा।"

संत सेरजियस के पर्व के दिन सुबह आसमान में बादल छाए हुए थे और बूदाबांदी हो रही थी। लेकिन जब प्रार्थना सभा शुरू हुई, तो मूसलाधार बारिश होने लगी। हम सब बहुत खुश हुए: 'अब हमें जाना नहीं पड़ेगा; हम थोड़ा आराम कर लेंगे।' प्रार्थना सभा के बाद, हम माँ के पास गए, इस उम्मीद में कि अब वह हमें यात्रा पर जाने का आशीर्वाद नहीं देंगी। लेकिन जैसे ही हमने दरवाज़ा खोला, उन्होंने तुरंत कहा: "तो फिर, क्या तुम जा रहे हो?" हम हचिकचाए, एक-दूसरे की ओर देखा और कहा: "आपकी आज्ञा है।" – "अभी नकिल जाओ, बनिा एक पल की देरी के। ईश्वर आपके साथ हो!" अनच्छा से, हम तैयार हुए और चल पड़े। लेकिन पहले हम फादर सेबेस्टियन की कब्र पर आशीर्वाद लेने के लिए रुके।

डोलकि पहुँचने पर, हम अपनी मंजलि, जेल के उस हसिसे की ओर बढ़े जहाँ फादर ने अपने कारावास के अंतमि वर्ष बतिए थे। हम जंगल तक लंबा रास्ता तय करके, फिर जंगल के बीच से चले, और बारिश बस होती ही रही। हम चलते रहे, प्रकृति की सुंदरता से चकति होते हुए, इस बात की प्रशंसा करते हुए कि कैदियों, जनिमें हमारे फादर भी शामिल थे, ने कतिनी कुशलता और समानता से पेड़ों की कतारें लगाई थीं – । फिर हम एक पेड़ के नीचे बैठ गए, भरपेट भोजन का आनंद लिया, आराम किया, और फिर आगे बढ़े। हम उस बारिश को पूरी तरह भूल गए, जो बनिा रुके पड़ रही थी। हम अद्भुत महसूस कर रहे थे; हमारे दिलों में गर्माहट और खुशी भर गई थी। हम चल रहे थे और पतिाजी की यादें

ताजा कर रहे थे। पैरों के नीचे गड्ढे और कीचड़ थे, फरि भी चलना आसान था; ऐसा लग रहा था मानो हम चल भी नहीं रहे हैं, बल्क उड़ रहे हैं। शाम के पाँच बजे तक, हम उस वार्ड में पहुँच गए जहाँ पतिजी थे। बारिश तुरंत रुक गई, सूरज नकिल आया, और कैदियों द्वारा लगाए गए जंगल से घरि वह स्थान अद्भुत लग रहा था। लेकिन जब हम वापस चलने लगे, तो फरि से जोर की बारिश होने लगी। और फरि भी, पूरे दनि बारिश में बताने के बाद भी, हम पूरी तरह से सूखे थे। हम बहुत संतुष्ट और प्रसन्न थे, हमारे दिलों में एक हल्कापन और दमिग साफ था। देर शाम हम घर पहुँचे, माँ को सब कुछ बताया, और उन्होंने कहा: 'तुम्हारे साथ खुद पतिजी चले थे और उन्होंने तुम्हें बारिश से बचाया।' हम सभी ने इतने आरामदायक दनि के लिए माँ का बहुत-बहुत धन्यवाद किया।

एक गर्मियों के दनि, नजिन्याया स्ट्रीट पर पादरी के साथ रहने वाली बहनें आलू खोदने के लिए खेत में जाने की तैयारी कर रही थीं। माँ अनास्तासिया ने पूछा कि क्या वह भी उनके साथ जा सकती हैं। उन्होंने एक बड़ा बोरा लिया और उसमें गैलोश, स्कार्फ, जम्पर, मोजे और अन्य चीजें रख दीं। उन्होंने बोरा भर दिया। बहनें हँस पड़ीं: "माँ, आप क्या कर रही हैं? यह बोरा उठाने में भारी होगा।" – "मैं संभाल लूँगी, चलो!" वे खेत में पहुँचे और काम में जुट गए। अचानक एक बादल छा गया, हवा तेज हो गई, मूसलाधार बारिश होने लगी, और एक ही पल में ठंड बढ़ गई। माँ ने हमें कपड़े पहनाने और ढकने के लिए जो कुछ भी मिला, उसका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, बोरे की सारी चीजें हमें दे दीं। हम सभी ने उनका धन्यवाद किया।

ताइशिया ग्रिगोर्येवना फोमिना

मैं मदर अनास्तासिया के बहुत करीब थी; वह मुझसे और भी ज्यादा करीब और मेरे लिए पति से भी ज्यादा प्रिय थी। मदर अनास्तासिया सच्चा प्यार थीं। वह कुछ लोगों से गुस्सा हो जाती थीं, लेकिन उन्होंने जीवन भर मुझ पर दया की। वह पवित्र पागलपन के मार्ग पर चलती थीं; उन्हें समझना मुश्किल था। उदाहरण के लिए, उनके अपने भाई को ही लें (जो सेंट पीटर्सबर्ग में रहते थे); वह सोचते थे कि वह पागल हैं। उनका परिवार उनसे बहुत प्यार करता था, लेकिन जब उन्होंने अजीब व्यवहार करना शुरू कर दिया, तो सभी उनकी खातिर रो पड़े। मदर को अपने रक्षितदारों का दुख था; उनकी बहन मरीना तीन बार यहाँ आई, जब तक कि पिता हमारे साथ थे। और हमारा परिवार सेंट पीटर्सबर्ग में उनके भाई से मिलने गया और उनसे मिला (वह बिल्कुल अपनी माँ जैसे थे; वह अपनी जवानी में बहुत खूबसूरत थीं), और उन्हें पवित्र कम्युनियन दी गई। लेकिन वे यह नहीं समझ सके कि वह पूरी तरह से होश में थीं।

वह अपनी बुद्धिमानी को खुलेआम प्रदर्शित किए बिना, चुपचाप अपने काम करती थीं, और कभी-कभी इस तरह से कि उन्हें पीटा जाता था, डाँटा जाता था या कठोर समझा जाता था। मुझे याद है कि मैंने बिना पूछे कुछ लेने के लिए हमारी एक बहन को डाँटा था: 'तू यह है और वह है, और तेरे हाथ सूख जाएँ।' लेकिन मैं उसके पास गई और कहा, 'माँ, मैंने भी एक बार बिना इजाजत आपके पास से कुछ ले लिया था।' वह मुड़ी और बोली, 'यह मेरा कोना है, यह मेरा सामान है; जो चाहो ले लो, और मुझे मत बताना।' माँ को उस बहन को किसी तरह से नम्र करने की जरूरत थी। और उसके पास अपना कुछ भी नहीं था। जो कुछ भी उसके पास लाया जाता - उसे उसकी हर चीज़ की जरूरत थी, वह सब ले लेती, और पाँच मिनट बाद उसके पास कुछ भी नहीं बचता; वह सब बाँट देती। और जनि लोगों में वह बहुत जरूरत या दुख देखती थी, उन्हें वह बाकियों से ज्यादा तरजीह देती थी। कोई यह शकियत कर सकता था कि वह एक व्यक्तिको इतना तरजीह देती है, जबकि कोई दूसरा इतना दुख झेल रहा है कि उसे कोई चीज़ खुश नहीं कर सकती।

या - उदाहरण के लिए यह लीजिए: वे मेज पर बैठ जाते। माँ एक को देतीं, दूसरे की ओर थाली धकेलतीं, फरि तीसरे की, जबकि वे खुद इस तरह बैठी रहतीं मानो खा रही हों। फरि भी वे भूखी ही रहतीं। और उन्होंने मुझसे एक बार यह भी कहा: 'तस्या, मैंने कभी एक बार भी पेट भर रोटी नहीं खाई।'

छोटी उम्र से ही माँ एक गंभीर स्त्री रोग से पीड़ित थीं; उन्हें ऑपरेशन की पेशकश की गई, लेकिन उन्होंने मना कर दिया, भले ही इस बीमारी ने उन्हें गंभीर शारीरिक पीड़ा दी। जब, अपनी युवावस्था में, उन्होंने इस मामले पर ऑप्टिनि पुस्तानि के एक वरिष्ठ से सलाह ली, तो उन्होंने कहा: 'ये तुम्हारी बेड़ियाँ हैं।' और माँ ने अंत तक इन 'बेड़ियों' को सहा। इसके अलावा, उसकी टाँगें बीमार थीं, जो बहुत सूजी हुई और उभरी हुई नसों वाली थीं, और उसे भयानक ऐंठन होती थी। उसने यह सब सहन किया और कभी कोई दवा नहीं ली। यही उसका श्रम, उसके पूरे जीवन भर का भर्त्ता का पराक्रम था। शायद वह फेल्ट के जूते और गैलोश इसलिए पहनती थी क्योंकि उसे कोई और जूता सूट नहीं करता था।

माँ गायन मंडली में गाती थीं; उनकी आवाज़ बहुत सुरीली थी। और हालाँकि किसी ने नहीं देखा कि वह कैसे प्रार्थना करती थीं, लेकिन हर कोई जानता था कि वह सभी के लिए प्रार्थना करती थीं।

चर्च में, माँ अथक परशिरम करती थीं, सब कुछ धोती और साफ-सफाई करती थीं। वह स्वादष्टि क्वास और ओट की जेली बनाती थीं। वह पतिजाजी के साथ जहाँ भी जाती थीं, जेली अपने साथ ले जाती थीं। अगर पतिजाजी मेलकोम्बानात जाते, तो वह उनके पीछे-पीछे चली जाती थीं। वह वहाँ पैदल भी जा सकती थीं, और वह पतिजाजी द्वारा देखे जाने वाले हर घर को जानती थीं। एक बार वह अलेक्जेंड्रा सोफ्रोनोवा से मिलने मेलकोम्बाट गए थे – उनके पति को अन्ननली का कैंसर था, और पतिजाजी उन्हें पवित्र Communion देने और एक प्रार्थना सभा आयोजित करने गए थे। और जब वे घर में प्रार्थना कर रहे थे, तो माँ सब्जियों के खेत की देखभाल करने बाहर चली गईं। और जब सोफ्रोनोवा बाहर आई और सब्जियों के खेत को देखा, तो उन्हें चक्कर आ गया। पादरी की पत्नी ने फूल आने वाले सभी खीरे के पौधों को उखाड़ दिया था, उन्हें उल्टा करके, यानी ऊपर की ओर मुड़ी हुई टहनियों को जमीन में गाड़ दिया था। "माँ! आपने यह क्या कर डाला! मैं एक लाठी उठाकर तुम्हें अच्छी-खासी पटिाई कर सकती हूँ!" और ठीक अगले ही दिन, इतनी कड़ाके की ठंड पड़ गई — कसबजियों के खेत में सब कुछ जमकर मर गया। माँ ने पहले ही सोफ्रोनोवा के सब्जियों के खेत की सफाई कर दी थी, लेकिन उसे कोई नुकसान नहीं हुआ।

पहले ऐसा होता था कि वह आती, किसी के लिए काम करती, अपनी पूरी ताकत लगा देती, और फिर, तारीफ से बचने के लिए, किसी और के फेल्ट के जूते पहनकर चली जाती। "माँ, आपने किसी और के फर वाले जूते क्यों पहन लिए?" – "ओह, तुम्हें जूतों की चिंता है?" धम्म! वह एक जूता एक तरफ फेंक देती, दूसरा दूसरी तरफ, और नंगे पैर चल देती। क्या कोई उसे धन्यवाद दे या डांटे? सभी हैरान थे – यह एक बहुत ही पेचीदा मामला था।

आपके लिए एक और कहानी है। माँ चर्च में सबको धकेलते हुए चल रही थीं। वह मदर तामरा के पास आई और उन्हें कूरसी से गिरा दिया: 'चलो, उठो, मैं एक बीमार व्यक्ति को बठाने जा रही हूँ।' उन्होंने बुजुर्ग मदर तामरा को भगा दिया और अपनी चाची लीसा को बठिा दिया, जो उनसे बहुत छोटी थीं। बहनें बड़बड़ाई: "अरे माँ, क्या आप मजाक कर रही हैं?" और आपको क्या लगता है क्या हुआ? आंटी लीजा जल्द ही बीमार पड़ गईं। उनकी हालत बहुत खराब थी; उन्होंने उन्हें अस्पताल में भरती कराया, और वहाँ भी उनकी हालत बहुत खराब थी। फिर उन्हें पता चला कि उन्हें कैंसर है। माँ ने ऑपरेशन के लिए अपनी सहमत नहीं दी; उन्होंने पहले से ही भाँप लिया था कि वह महिला मर जाएगी। और इस तरह आंटी लीसा, जो जवान और स्वस्थ थी, छह महीने बाद चल बसीं। लेकिन मदर तामारा पंद्रह साल और रहीं। बस इतना ही है। हमें यह अजीबोगरीब लगता है, लेकिन उनका काम करने का अपना तरीका था। लेकिन मदर – वह कतिनी प्यार करने वाली इंसान थीं; वह ऐसी इंसान थीं जैसी आजकल नहीं मिलतीं।

एंटोनिया इवानोवा

मास्को से कुछ मेहमान पतिजाजी से मिलने आए। वे स्टेशन से टैक्सी लेकर आए और मखाइलोवका पहुँचने से पहले, गाड़ी एक गड्ढे में फँस गई। (उस समय सड़कें बहुत खराब थीं - गड्ढों से भरी हुई, और घुटनों तक कीचड़ था।) गाड़ी के पहिये घूम रहे थे और वह बाहर नहीं निकल पा रही थी।

तो वे माँ के पास गए और कहा, "माँ, मेहमान आ रहे हैं; वे एक गड्ढे में फँस गए हैं और बाहर नहीं निकल पा रहे हैं।" – "ठीक है, चलो उन्हें बाहर खींचते हैं," माँ ने कहा। उन्होंने कपड़े पहने और अपने कंधे पर एक फावड़ा लटका लिया। वह कार के पास गई, एक नज़र देखी, अपनी फावड़े से कार के पछिवाड़े पर थपथपाया और ड्राइवर से कहा: 'अरे, दोस्त, अंदर बैठो और गाड़ी चलाओ - तुम यहाँ क्यों समय बर्बाद कर रहे हो?' उसने उन्हें बहुत अजीब नज़रों से देखा, लेकिन कार स्टार्ट करने की कोई जल्दी में नहीं था। उन्होंने फिर से कहा: 'कार स्टार्ट करो!' - इस बार एक आज्ञाकारी लहजे में। और जब मदर आज्ञाकारी लहजे में बोलती हैं, तो कोई भी उनका वरिध नहीं कर सकता। ड्राइवर की रीढ़ की हड्डी में सहिरन दौड़ गई। वह कार में बैठ गया, उसे स्टार्ट किया, और कार खाई से बाहर निकल गई। ड्राइवर दंग रह गया। उसने मेहमानों को चर्च तक छोड़ा और फिर निकल गया।

अगले दिन वह पुजारी की पत्नी का धन्यवाद करने आया; उसने कुछ उपहार लाए थे और पूछा, "आपने आखिरकार गाड़ी बाहर कैसे निकाली? यहाँ तो आपको बुलडोजर की जरूरत पड़ती।" उसने जवाब दिया, "खैर, प्रभु ने मदद की!"

अन्ना शेवचुक

मैं करागांडा तब पहुँची जब फादर सेवेस्टियन का नधिन हो चुका था, और मदरस अनास्तासिया और अग्नया का भी नधिन हो चुका था। मैं यूक्रेन से संस्थान में अंशकालिक कार्यक्रम में दाखिला लेने आई थी और अपनी परीक्षाओं के दौरान फादर के आध्यात्मिक बच्चों के साथ मखाइलोवका में रुकी थी। मैं समय-समय पर सेंट माइकल चर्च जाने लगी, हालांकि उस समय मैं धर्मपरायण से कोसों दूर थी।

करागanda की अपनी पहली यात्रा पर (जो दसिंबर में थी), मैंने चर्च में एक बातचीत सुनी जिसमें कहा जा रहा था कि अगले दिन फादर का नाम दविस था, और उस शाम एक 'परास्तस' आयोजित किया जाएगा। उस समय मैं चर्च के नियमों को नहीं जानती थी, और मैं यह नहीं समझती थी कि 'परास्तस' क्या होता है। और उस रात, मैंने एक सपना देखा। एक पादरी मुझे चर्च के आंगन से पार हाथ पकड़कर ले जा रहा था; हमारे चारों ओर लोगों की भीड़ जमा थी, लेकिन मैं उसे केवल धुंधलके में ही देख पा रहा था; मैं बस लोगों को यह पुकारते हुए सुन सकता था: 'फादर सेबेस्टियन, फादर सेबेस्टियन!' और फादर ने अपना हाथ हिलाया – जैसे कह रहे हों, 'रुको, मैं अभी व्यस्त हूँ' – और मुझे आंगन के पार ले गए, सब कुछ दिखाते हुए: 'यह हमारा प्रोस्फोरा कमरा है, यह भोजन कक्ष है।' और जहाँ हमारी सड़क की ओर जाने वाले द्वार हैं, वहाँ एक लॉन जैसा लग रहा था, जिसमें एक छोटी सी धारा बह रही थी, और दो मटुशका वहाँ बैठी थी, कुछ पेय परोस रही थी। और लोग उन्हें नाम से बुलाते हैं: मदर अग्निया और मदर अनास्तासिया। फादर रुकते हैं, नन मुझे धारा का पानी पीने के लिए देती हैं, और मैं खुद को चर्च में पाता हूँ। चर्च के बीच में हमारे पादरी खड़े हैं: फादर पीटर, फादर अलेक्जेंडर, फादर पॉल और फादर व्लादमिर, प्रार्थनाएं पढ़ रहे हैं और फादर सेबास्टियन को याद कर रहे हैं। और फरि मैं जाग गया।

जिस घर में मैं रहता था, वहाँ दीवार पर एक पादरी का चित्र टंगा हुआ था। मैं जागा और मैंने पूछा, 'यह कसिका चित्र है?' मेरे मेज़बानों ने जवाब दिया, 'फादर सेबेस्टियन का।' 'लेकिन मैंने अभी-अभी उन्हें सपने में देखा है।' उन्होंने कहा, 'खैर, इसका मतलब है कि आप "हम में से एक" हैं।'

और कुछ साल बाद, विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद, मैं करांडागा में रहने लगी, जहाँ आज भी मैं सेंट माइकल चर्च में एक लेखाकार के रूप में काम करती हूँ।

चर्च में काम करने के अपने पहले साल के दौरान, आदत से मैं अभी भी मेक-अप करती थी। फरि, होली वीक के दौरान, मैं एक दुकान में गई जहाँ वे फ्रेंच मखमली मस्कारा बेच रहे थे। मैं उसे खरीदना चाहती थी, लेकिन मेरे पास पैसे नहीं थे। "खैर," मैंने सोचा, "मैं किसी और समय आकर इसे खरीद लूँगी।" और फरि मैंने इसे फरि से एक सपने में देखा: चर्च, हर कोई क्रॉस का चहिन दे रहा था और कह रहा था, "मदर अनास्तासिया, मदर अनास्तासिया!" और मटुशका (पत्नी) हर किसी के साथ क्रॉस का चहिन दे रही थी। "लेकिन वह मुझे नहीं जानती," मैंने सोचा। और अचानक वह मेरे पास आती हैं: "मसीह जी उठे हैं!" – और अपने अंडे से मेरे ईस्टर अंडे को टकराकर उसे तोड़ देती हैं। और वह इतनी प्रसन्न हैं, कि मुझे गले लगा लेती हैं। तभी, फादर अलेक्जेंडर कसिलेव हमारे पास आते हैं; वे मेरा मेकअप बैग पकड़े हुए हैं और कहते हैं: "माँ, आप इन सबके साथ आखिर करेंगी कैसे? मैं देखती हूँ, और वहाँ वह टेरी-क्लॉथ मस्कारा पड़ा हुआ है। मुझे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। मैं कहती हूँ, 'मदर, लेकिन मैंने इसे खरीदा नहीं है, मैं तो बस इसके बारे में सोच ही रही थी!' और वह मुझे गले लगा लेती हैं: 'ओह, चिंता मत करो, चिंता मत करो,' – मानो यह कहना चाहती हों कि मुझे मेकअप नहीं करना चाहिए। और वह मुझे तरह-तरह की चीजें खिलाती रहती हैं।

यह सब मुझे बहुत गहराई से छू गया – आखिर मैं तो बस यूँ ही दुकान पर आकर नकिल गई थी, फरि भी वह सब कुछ जानती थी और चिंता थी।

और मदर अनास्तासिया ने मुझे चर्च के गायन मंडप में बठा दिया। जब मैं प्रार्थना करने आती, तो मैं वहाँ खड़ी हो जाती और धीरे-धीरे गाती। लेकिन यहाँ मैंने सपना देखा कि चर्च लोगों से भरा हुआ था, पादरी चर्च के बीच में खड़े थे जैसे वे किसी गंभीर जुलूस के लिए बाहर आए हों, और मदर अनास्तासिया साधारण, रोजमर्रा के कपड़ों में (जैसे वह आमतौर पर पहनती थी) कोरस लॉफ्ट पर खड़ी होकर मुझे बुला रही थी। लेकिन मैं बहुत डरी हुई थी – जब पुजारी वहाँ खड़े थे तो मैं वहाँ ऊपर कैसे जा सकती थी! फरि माँ अनास्तासिया ने मेरा हाथ पकड़ा, मुझे गायन मंडप तक ले गई, मुझे उद्धारकर्ता के प्रतिमा के सामने बठाया और कहा: "पति हमारा का पाठ करो।" और वह वहाँ खड़ी रहीं, मेरे शुरू करने का इंतजार करती हुई। और मैंने उसे जोर से पढ़ना शुरू कर दिया। उस सपने के बाद, गायक मंडली के सदस्यों ने मुझे गायक मंडली के मंच पर खींचना शुरू कर दिया: 'गाओ, बस इतना ही।' और उन्होंने फादर अलेक्जेंडर से कहा, 'यह लड़की यूँ ही क्यों खड़ी है?' उन्होंने मुझे गायक मंडली के मंच पर बठा दिया, और इस तरह मैं वहीं रहने लगी।

मारिया फ्योदोरोवना ऑरलोवा

मैं गंभीर रूप से बीमार थी – मुझे त्वचा का एक रोग था। व्याख्याताओं और प्रोफेसर्स दोनों ने मेरा इलाज किया; थोड़ी-बहुत सुधार होती थी, लेकिन फरि मेरी बाहों पर बड़े-बड़े छाले फरि से उभर आते थे। मैं लंबे समय से चर्च नहीं गई थी, और जब मैं गई, तो मदर अनास्तासिया ने पूछा: 'तुम इतने लंबे समय से क्यों नहीं आई?' 'मदर,' मैंने कहा, 'मैं तो परेशान हो गई हूँ – मेरे हाथ देखिए! मैं काम पर भी नहीं जा सकती; हर कोई मुझसे दूर भाग रहा है।' उन्होंने कहा: 'धत्! इसमें क्या बड़ी बात है! यह कुछ भी नहीं है! अपनी उंगली पर थूक लगाओ और उसे अपने छालों पर क्रॉस के आकार

में मल दो।" और वहीं मदर अनास्तासिया के सामने, मैंने ठीक वैसा ही करना शुरू कर दिया। मैं घर चली गई और बनिा रुके उन्हें थूक लगाती और मलती रही। और मेरे छाले तुरंत ही ठीक हो गए। यह बहुत जल्दी हो गया! वे लाल और सूजे हुए थे; पहले वे काले पड़ गए, फिर नीले हो गए, छाले सकिड़ने लगे और, भगवान का शुक्र है, सब कुछ ठीक हो गया। तो यह है कहानी। फिर भी जब मैं अस्पताल गई, तो उन्होंने मुझे एक कुर्सी पर ऐसे बठा दिया मानो मैं कोई दुर्लभ नमूना हूँ, ताकसिभी छात्र यह देख सकें कि मैं एक्स्यूडेटिवि एरथिमा का कतिना दुर्लभ और भयंकर मामला थी।

ओल्गा सरगेव्ना मार्टिनीवा

मेरी भतीजी इरीना पहले एक गोदाम प्रबंधक के रूप में काम करती थी। एक दिन, उनके गोदाम में तीस आयातति बेडस्प्रेड्स आ गए। इरीना और उसके कर्मचारी कोई चालबाजी कर रहे थे या पता नहीं क्या – ईश्वर ही जाने – लेकिन जब दुकान के कर्मचारी बेडस्प्रेड्स लेने गोदाम आए, तो उन्होंने बस उनका बलि साइन कर दिया। कागजी कार्रवाई दुकान में ले जाई गई, लेकिन चादरें गोदाम में ही रह गईं। डिलीवरी नोट तो है, लेकिन चादरें नहीं हैं। लेकिन किसी ने भनक लगा दी, दुकान तुरंत बंद करके सील कर दी गई, और एक ऑडिट कमेटी आ गई। मेरी भतीजी रात भर सो नहीं पाई; सुबह-सुबह दौड़ती हुई मेरे पास आई: 'यह और वह,' उसने कहा, 'मुझे क्या करना चाहिए?' मैं उसे यह सलाह नहीं दे सकी कि क्या करना है: मैंने कहा, 'चलो माँ अनास्तासिया के पास चलते हैं और देखते हैं कि विह क्या कहती हैं।' हम गए। माँ अनास्तासिया गायन मंडली में थीं; हम उनके पास गए और समझाया कि दस्तावेज़ दुकान में थे, चादरें गोदाम में थीं, और अगर यह मामला सामने आया तो हमें जेल हो सकती है। हम क्या करें? "कुछ नहीं!" मदर अनास्तासिया ने इरिना की ओर मुड़कर कहा: "अब जाओ, वह वैन ढूँढो जिसका इस्तेमाल वे शौचालय खाली करने के लिए करते हैं, बसितर के कवर ले लो, उस दुकान तक गाड़ी चलाओ, आंगन में आकर रुक जाओ और वहीं इंतजार करो। एक सफ़ाईकर्मी दुकान से दो बाल्टियों के साथ बाहर आएगी – उसके पास मत जाना। कुछ देर बाद, एक और सफ़ाईकर्मी बाहर आएगी, उसके पास भी दो बाल्टियाँ होंगी। उसके पास जल्दी से जाओ, उसे चादरें दे दो और कहना: 'इन्हें कहीं भी फेंक दो, बस ये इमारत के अंदर ही रहें।'

इरिना ने ठीक वैसा ही किया। उसे सही कार मलि गई, वह दुकान तक ड्राइव करके गई, और उन्हें आंगन में जाने दिया गया – ऐसी कार से किसी को कोई शक नहीं होता; आखरिकार, वे तो शौचालय साफ करने आए थे। इरिना ने पहली सफ़ाईकर्मी को जाने दिया, दूसरी के पास दौड़ी, उसने चादरें ले लीं, उन्हें दुकान के अंदर फेंक दिया – और बस, यहीं पर मुसीबत खत्म हो गई। रकिर्डिंग भी थी, और चादरें भी थीं।

यहाँ एक और कहानी है। मेरे बेटे, स्टेपान स्टेपानोवचि, के लिए विश्वविद्यालय में आवेदन करने का समय आ गया। मैं अपनी माँ से मलिने गई: 'माँ,' मैंने कहा, 'स्टेपान विश्वविद्यालय में आवेदन कर रहा है; हमें उसकी मदद करनी होगी।' उन्होंने कहा: 'ओह! यह बहुत सरल है। पता लगाओ कि विह अपनी परीक्षा कब देगा; उन दिनों, चर्च आना और यहाँ चालीस दस-कोपेक वाले रोल लाना। हम यहाँ प्रार्थना करेंगे, और उसे बी ग्रेड मलिेंगे।' तो मैंने ठीक वैसा ही किया जैसा उन्होंने कहा था। उसने अपनी पहली परीक्षा दी – मैंने चालीस रोल लाए। वे तुरंत ही खत्म हो गए, तुरंत ही बाँट दिए गए। मेरा बेटा परीक्षा से 'चार' लेकर आया। अगली परीक्षा में भी यही हुआ। कुल मलिाकर चार परीक्षाएँ थीं; मैं हर एक में चालीस रोट्टी ले गई, और मेरे बेटे को उन सभी में 'चार' मलि। और इस तरह, अपनी माँ की प्रार्थनाओं की बदौलत, स्टेपान स्टेपानोवचि को विश्वविद्यालय में दाखलि मलि गया।

ननिया कसिान लड़की

एक शुक्रवार, जसि अस्पताल में मैं काम करती थी, वहाँ के कर्मचारियों ने मुझे कुछ सॉसेज खाने के लिए मना लिया। अगले दिन मैं चर्च गई और धर्मोपदेश में शामिल हुई। धर्मोपदेश के बाद, मदर अनास्तासिया ने सभी को पवतिर जल देना शुरू कर दिया और मुझसे कहा: "यहाँ आओ।" मैं वहाँ गई, और उसने मुझे मारना शुरू कर दिया और पूरी चर्च में चलि्लाने लगी: 'ओह, तू सूअर है! ओह, तू सूअर है!' मैं डर गई थी – 'सूअर' कहकर उसका क्या मतलब था? 'माँ,' मैं चलि्लार्ई, 'मुझे कुछ पवतिर जल दो!' लेकिन उसने मुझे वह नहीं दिया और मुझे मारती रही। लोग इकट्ठा हो गए: 'वे छोटी यूक्रेनी लड़की को पीट रहे हैं!' और मदर चलि्लार्ई: 'वह एक सूअर है!' ऐसा लगता है कि सॉसेज सूअर का मांस का था।

तो उसने मुझे कोड़ा मारा, मैं शांत हो गया और आशीर्वाद के लिए फादर सेबास्टियन के पास गया। मैं उनके पास गया, और उन्होंने कहा: 'नीना! आज तुम्हारा नाम दविस है! – तो उन्होंने तुम्हें कोड़ा मारा है – खैर, यह लो तुम्हारे लिए कुछ प्रोस्फोरा!' इस तरह वे आत्मा द्वारा संवाद करते थे।

भक्तिषु सेबासटयिन (खमयरिवि)

एक दिन, मदर अनास्तासिया दाहनी ओर के कोरस के बरामदे से नीचे आई, चर्च से होकर गुजरी और आवाज़ लगाई: "कौन हेडस्कार्फ चाहता है? काला स्कार्फ कौन चाहता है?" वह दूसरी बरामदे की ओर गई, और वहाँ मोत्या मनियावा ने कहा: "माँ, मुझे एक काला स्कार्फ दीजिए; मेरे पास नहीं है।" लेकिन उन्होंने जवाब दिया: "नहीं, तुम्हारे पास नहीं है, और तुम्हें इसकी जरूरत नहीं है।" और वह आगे बढ़ गई। और दरवाजे पर, नक़ास के पास, हमारी दाई खड़ी थी, काँप रही थी: 'ओह, वह शायद मुझे एक काला स्कार्फ देगी; यह नश्चिती रूप से किसी भयानक घटना का संकेत है।' माँ अनास्तासिया उसके पास आती हैं और पूछती हैं: 'क्या तुम्हें स्कार्फ चाहिए?' 'नहीं,' हमारी आया कहती है, 'मेरे पास तीन काले स्कार्फ हैं; मुझे एक की जरूरत नहीं है।'

"खैर, चूँकि आपके पास तीन हैं, यह भी ले लीजिए।" और उन्होंने उसे काला दुपट्टा दे दिया। उन्होंने पहले से ही भाँप लिया था कि हमारी आया परदा ले लेगी।

ससिटर एवनकिया (खमयरवि)

माँ अनास्तासिया ने सुनाया: "जब मुझे पवित्र मूर्ख बनने का आशीर्वाद मिला, तो मेरा पहला काम था एक थैला लेकर भीख माँगने जाना। लेकिन मैं नहीं चाहती थी। 'मुझे भेज दो,' मैंने कहा, 'कोई भी काम करने के लिए, बस भीख माँगने के लिए नहीं।' 'नहीं, नहीं, काम करने के लिए नहीं – जाओ और भीख माँगो।'" मैंने अपना छोटा सा झोला उठाया और चल दी। संयोग से कोई त्योहार जैसा था; लड़कों की भीड़ जमा हो गई थी, और मैं वहाँ अपने झोले के साथ, फटे-पुराने कपड़े पहने, चल रही थी। मुझे लड़के कहते सुनाई दे रहे थे, 'क्या खूबसूरत लड़की है!' मैंने मन ही मन सोचा, 'मैं क्या करूँ? आखिर वे मुझसे ही तो बात कर रहे हैं।' और उन्होंने कहा: "काश वह ठीक से कपड़े पहनती - बस उसे देखो!" तो मैं किसी तरह के गोदाम पर चढ़ गई, अपनी नाक साफ की, और उसे अपने कपड़ों पर पोछ लिया। और उन्होंने कहा: "ओह," उन्होंने कहा, "वह एक मूर्ख है! वह एक मूर्ख है!" और फिर मुझे बेहतर महसूस हुआ, और मैं अपने रास्ते चली गई। "आह!" मैंने सोचा, "मैं तो पहले से ही एक मूर्ख हूँ! तो अब मुझे लगता है कि मुझे एक नादान लड़की बनना ही होगा।" और इसी तरह मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी जिएँ।"

ऑप्टिना पुस्तानि में, फादर सेबेस्टियन ने एल्डर का सेल गर्म किया और चर्च में उनके पास गए। लेकिन एल्डर ने पहले ही भाँप लिया था कि नास्त्या सेल में क्या करने वाली है, और वे चर्च नहीं छोड़ रहे थे। उसने दरवाज़ा खोला, दहलीज़ पर बैठ गई, दरवाज़ा खुला छोड़ दिया, और वहीं बैठ गई। और क्या मौसम था! और बर्फ अंदर आ रही थी! फादर सेबासटयिन और लकड़ी डालने आए, लेकिन कोठरी बर्फ से भरी थी, और नास्त्या दरवाज़े के पास, सरिफ एक ड्रेस और एक शॉल पहने, आधी नंगी बैठी थी। वह दरवाज़ा खुला रखे हुए वहाँ बैठी रही, और उन्हें दरवाज़ा बंद करने नहीं दे रही थी। और फादर सेबासटयिन ने उसे मनाना चाहा: "अरे, नास्त्या, मुझे दरवाज़ा बंद करने दे!" लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। तो फादर सेबेस्टियन ने उसे धीरे से उठाया, उसे एक दूसरे स्थान पर ले गए, दरवाज़ा बंद किया और चूल्हा जलाने लगे। आखिरकार, उसे वहाँ से भगाया और पीटा गया था, लेकिन फादर सेबेस्टियन ने उसे कभी नहीं मारा। तब भी, वह उसका भविष्य देख सकते थे। और जब उन्होंने कोठरी गर्म कर दी, तो चर्च का बुजुर्ग व्यक्ति आ गया।

और बाद में, करागंदा में, माँ कभी-कभी उसे डाँटती थीं। मेलकोम्बानात में एक परिवार रहता था; उनके पास एक गाय थी, और वे उस गाय से सब कुछ बाज़ार में बेचते थे – खट्टी क्रीम और दूध दोनों। वे थोड़े लालची थे। एक बार उन्होंने बेचने के लिए कुछ खट्टी क्रीम तैयार की, लेकिन फिर खुद कहीं चले गए। मदर अनास्तासिया आई, उन्होंने उस खट्टी क्रीम का आटा गूँथने के लिए इस्तेमाल किया, और डोनट्स का एक पहाड़ बना दिया – 'खुद ले लीजिए!' उसने सारी खट्टी क्रीम इस्तेमाल कर डाली। स्वाभाविक रूप से, मालिकों ने उस पर बड़बड़ाया। और एक बार जब वे बाज़ार में थे, तब वह आई, उनके सब्जी के खेत से कुछ खीरा तोड़कर एक ढेर लगा दिया। जब वे वापस आए, तो वे बहुत नाराज़ थे (असंतुष्ट। – संपादक): "यह क्या हो रहा है! हम कतिनी देर से इनकी देखभाल कर रहे हैं, हमने इन पर कतिनी मेहनत की है!" यह शाम की बात थी। और रात में, अचानक – पाला पड़ गया, जिसने सब्जी के बागों में सब कुछ बर्बाद कर दिया। वे बड़बड़ाए, लेकिन माँ ने स्पष्ट कर दिया कि मुझे पता है कि प्रभु क्या देंगे, और कल और परसों क्या होगा।"

और कभी-कभी पादरी स्वयं उसके माध्यम से लोगों के पापों पर फटकार लगाते थे। एक बार, जब अभी चर्च नहीं था और पादरी मेलकोम्बात में प्रार्थना कर रहे थे, तो रात के खाने के बाद उन्होंने सभी को रात के लिए उनके-उनके स्थान बताना शुरू कर दिया। उन्होंने माता अनास्तासिया से कहा: "और तुम, जाओ और स्टेपानदि के यहाँ रात बताओ।" वह स्टेपानदि के यहाँ चली गई। उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया: "मुझे रात बताने के लिए अंदर आने दो!"

उन्होंने जवाब दिया, "हमारे पास जगह नहीं है," और उन्हें अंदर नहीं आने दिया। यह सर्दी का मौसम था। लेकिन चूँकि उसे स्टेपानडि के यहाँ रात बताने का आशीर्वाद मिला था, वह ठंड से जमकर भी नहीं जाने वाली थी। इसलिए वह दहलीज पर लेट गई। लेकिन, बेशक, पादरी की प्रार्थनाओं की बदौलत वह ठंड से मर नहीं सकती थी। सुबह, मालकि उठे, दरवाज़ा खोला, लेकिन वह नहीं खुला – माता अनास्तासिया दहलीज पर लेटी हुई थी। रात में बर्फ़ बारी हुई थी; वह बर्फ़ में दब गई थी। वह झाड़-पोंछ कर उठी: "ओह, माफ़ कीजिए, मैंने आपको परेशान कर दिया।" लेकिन पादरी ने उसे जानबूझकर वहाँ भेजा था, ताकि इन लोगों के कठोर दिलों को भेद सके। तब वे मदर अनास्तासिया की ओर दौड़े: "मदर अनास्तासिया! आपने ऐसा कैसे कर सकती थीं! ऐसा कैसे हो सकता है!" आखिरकार, वह बीमार थी और लगभग नग्न थी, और यह सर्दियों की एक ठंडी रात थी। उनका दिल, बेशक, पछतावे से भर गया: "हमने उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया, जबकि हमारे पास रात बताने के लिए जगह थी।" और बाद में वे पादरी के पास पाप कबूल करने गए; आखिरकार, उन्हें समझ आ गया था कि भामला क्या था।

एक अन्य अवसर पर, जब पादरी ने चर्च में एक स्मृतिसिंहासना संपन्न की, तो मदर अनास्तासिया कूद पड़ी और स्मृतिकी मेज से कुछ छीन लिया। और पादरी ने अपनी लाठी से उस पर मारना शुरू कर दिया: "तुमने," उसने कहा, "जो लिया था वह वापस रखा क्या?" – "नहीं, पादर, मैंने नहीं रखा।" "तो फिर तुमने इसे क्यों लिया? स्मृतिसिंहासना एक पवित्र कार्य है। स्मृतिसिंहासना से कुछ लेने के लिए, तुम्हें प्रार्थना करनी होगी। क्या तुम प्रार्थना कर सकती हो?" बेशक, मदर अनास्तासिया कर सकती थीं। और वैसे भी उसे उस पेस्ट्री की जरूरत नहीं थी। यह पादरी और मदर अनास्तासिया ही थे जिन्होंने स्मृतिसिंहासना से चीज़ें उठाकर भागने वालों का भंडाफोड़ किया। उनके लिए यह एक सबक था – उन्होंने सीखा कि स्मृतिसिंहासना पवित्र होती है, और उन्होंने लंबे समय तक याद रखा कि कैसे पादरी ने मदर अनास्तासिया को अपनी लाठी से मारा था।

जब हमने अपनी माँ को दफनाया, अंतमि संस्कार के बाद, मेरी और नादेज़्दा नाम की एक ईश्वर की सेविका, जिसने अंतमि संस्कार में मदद की थी, दोनों की दाहनी टाँगों पर साइबेरियाई घावों जैसे नीले धब्बे हो गए – उनमें असहनीय खुजली होती थी, हमें बुखार सा लगता था, और हमारे सरि दर्द करते थे। हम नौवें दिन तक कष्ट सहते रहे; हमारी टाँगें सूजी हुई थीं, और वह और मैं दोनों ही बहुत बुरी हालत में थे। नवें दिन, मातृ अनुस्तासिया स्मरणोत्सव के लिए आई। मैंने कहा, "माँ, अंतमि संस्कार के बाद से हमारी टाँगों पर यह अजीब सी चीज़ हो गई है।" उन्होंने कहा: "ये कुछ जूते हैं। लो, मेरे जूते पहन लो।" उनमें से एक बहुत बड़ा, गद्देदार अस्तर वाला जूता था, और दूसरा उनके बाएँ पैर का चमड़े का जूता था, जो थोड़ा छोटा था। उसने मुझे कपड़े वाला बूट दिया: "लो, इनमें पहन लो और अब हम संध्या की प्रार्थना के लिए चलेंगे।" लेकिन मैं उनमें कैसे चल सकती थी? उनमें तीन या चार पैर समा सकते थे – वे इतने बड़े थे। नादिया का बूट छोटा था, जो बाएँ पैर वाला था। हमने माँ को मेरे पतिजी के बकल वाले जूते पहनाए, और उन्होंने माँ इरिना से कहा [स्कीमा-नुन इरिना (कोरोलेवा), 1916 – † 17 अक्टूबर 1993। मखिइलोव्सकोये कबरस्तान में दफन]: "उन्हें पकड़ने के लिए कुछ लाठी दे दो।" तो वह आँगन से कुछ मोटे-मोटे डंडे ले आई। वैसे, मेरा डंडा थोड़ा बेहतर था, जबकि नादिया का तो सचमुच गांठों से भरा हुआ था। और फिर हम उन जूतों को पहनकर अपने-अपने डंडों के सहारे चर्च गए। मैंने एक काली मखमली ड्रेस और एक नया सफेद बैटसिटे का दुपट्टा पहना हुआ था। और मदर इरिना ने खुद को इस गंदे, फटे-पुराने आधे शॉल में लपेट रखा था। मैंने कहा: 'आपने खुद को इस तरह की फटी-पुरानी चीज़ में क्यों लपेटा है? मैंने इसे उसके पैर के चारों ओर बांध दिया था। क्या आपके पास खुद को ढकने के लिए और कुछ नहीं है?' 'न-नहीं,' मदर ने कहा, 'यह ठीक है, यह ठीक है।' खैर, अगर वह इससे ठीक थी, तो मुझे क्या? हम चर्च पहुँचे। नर्स मोत्या ने हमें देखा: 'अरे बाप रे!' - वह चलिलाई - 'ये लोग मजाक कर रहे हैं! ये लोग मजाक कर रहे हैं!' उसे नहीं पता था कि मदर अनास्तासिया हमें ठीक कर रही थीं, कि हमारे पैरों में बहुत ज्यादा दर्द हो रहा था। फिर मैंने मोमबत्तियाँ जलाना शुरू किया, और मैंने अपनी बैस्ते की दुपट्टा में आग लगा दी। मदर इरिना दौड़ती हुई आई: "ओह, ओह, ओह!" उन्होंने मेरी पट्टाई उतारते हुए कहा। "लो, मेरी ले लो," उन्होंने कहा, और मुझे अपनी फटी-पुरानी आधी शॉल से ढक दिया। और मुझे अभिषेक के लिए जाना था, लेकिन चर्च लोगों से खचाखच भरा था। बेशक, मुझे थोड़ी शर्मदिगी हुई; हर कोई कह रहा था, 'तुमने ठीक से कपड़े क्यों नहीं पहने हैं?' लेकिन मैं क्या कर सकती थी? मेरे पैर में दर्द हो रहा था। खैर। हम घर चले गए, और मदर अनास्तासिया ने कहा, 'कल बाहर मत जाना; बसितर पर ही रहना और दिन भर कुछ भी नहीं खाना (यह जॉन द बैपटसिट के सरि कलम किए जाने का पर्व था)।' और जहाँ तक तुम्हारी टाँगों की बात है – वे बिल्कुल ठीक हो जाएँगी! और तुम्हारा सरि भी नहीं दुखेगा।' नादिया और मैं चर्च से वापस आए, अपनी टाँगों को देखा – और कुछ नहीं! सब कुछ भर गया था, और दर्द गायब हो गया था।

मारिया नकितिचिना ओबराजत्सोवा

मदर अनास्तासिया एक सच्ची शरारती थीं। तो फादर कहीं जाने के लिए तैयार होते, कार में युवतियों से भर देते, डकिनेस (deaconesses) को बठा लेते, लेकिन मदर अनास्तासिया को पीछे छोड़ देते। वह चिल्लाती: "ओह!" – कार पर ठोकर मारती और चिल्लाती: "मुझे पहनने के लिए कुछ दो!" यानी, कुछ पहनने के लिए। और उसे इस बात से कोई फरक नहीं पड़ता था कि सिस्टर है या गर्मी – वह पतिजी से आगे दौड़ जाती, लगभग अध-नंगी। पतिजी पहुँचते, और वह पहले से ही वहाँ होती। वह एक बार भी पीछे नहीं रहती थी। लेकिन वह उनकी वफादार नौकरानी थी। और पतिजी उसे प्यार करते थे।

लडिया व्लादमिरोवना झुकोवा

जब मदर इउलिया मरणासन्न थीं, तो उन्होंने मुझे कहा: 'लडिया, मदर अनास्तासिया, जब उनकी भी तबीयत ठीक नहीं थी, तो वह कहा करती थी: "जब वे फादर को ऑप्टिनि पुस्तनि ले जाएँ, तो मुझे भूलना मत।" इसी तरह मदर अनास्तासिया इउलिया को डाँटती थीं, और इउलिया ने भी बदले में मुझे डाँटा।'

1975 में, मेट्रोपॉलिटन जोसेफ (चेर्नोव) एक बार फरि मखिइलोवस्काया चर्च आए। उनकी उत्कृष्टता अक्सर माता अनास्तासिया के बारे में कहा करते थे: 'माता अनास्तासिया भवषियवाणी कर रही हैं, वह भवषियवाणी कर रही हैं।' और उनके साथ इस बैठक के दौरान, मदर अनास्तासिया ने उन्हें वदिा कहना शुरू कर दिया: "मुझे आशीर्वाद दीजिए, योर एमर्निस, मुझे कषमा कीजिए, हम एक-दूसरे को फरि कभी नहीं देख पाएंगे।" लेकिन योर एमर्निस इस भवषियवाणी को स्वीकार नहीं करना चाहते थे। अल्माटी में उस गर्मी में, जब माँस्को थियोलॉजिकल सेमिनरी के छात्र उनसे मिलने आए, तो उनकी उत्कृष्टता, मेज पर बैठे हुए, उनमें से एक - प्योटर वेरेतेनकोव - की ओर मुड़े और कहा: "देखो, पेट्या, हम त्सेलनिग्राद जाएंगे, और त्सेलनिग्राद से हम करaganda जाएंगे और मदर अनास्तासिया को बेनकाब करेंगे।" लेकिन ऐसा नहीं हुआ। परस्थितियों के कारण, सेलनिग्राद से उनकी उत्कृष्टता सीधे अल्माटी उड़ गए, और 4 सितंबर 1975 को, मेट्रोपॉलिटन जोसेफ का ऑपरेशन के दौरान अस्पताल में नधिन हो गया।

मदर अनास्तासिया का 13 अप्रैल 1977 को नधिन हो गया। अपनी मृत्यु से पहले, उन्हें स्कीमा-नुन की उपाधि दी गई थी। उन्हें मखिइलोवस्कोये कब्रस्तान में दफनाया गया था।

आर्चप्रीस्ट मखिइल नेइगूम

मुझे यकीन है कि मदर अनास्तासिया एक पवतिर व्यक्ति थीं। इस तरह से पवतिर कि जो तुरंत नज़र न आए। महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने हमेशा अपनी आध्यात्मिकता को छुपाए रखा। उनकी आध्यात्मिकता स्पष्ट रूप से तब ही दिखाई दी, उदाहरण के लिए, जब कुछ भवषियवाणियाँ सच हुईं। हालाँकि, सामान्य तौर पर, मुझे लगता है कि वह जानबूझकर भी थोड़ी असभ्य थीं; वह हमेशा पैर घसीटते हुए चलती थीं, और सभी से तरह-तरह की छोटी-छोटी बातें कहती थीं। और अगर किसी ने उनके बाहरी रूप-रंग या उनके व्यवहार से उनका आकलन किया होता, तो उन्हें एक आध्यात्मिक रूप से ऊँचे जीवन का कोई भी संकेत नहीं मिलता। फादर सेबेस्टियन की मृत्यु के बाद ही वे 'अधिक सामान्य' व्यवहार करने लगीं; उससे पहले, वे बलिकुल भी सहने योग्य नहीं थीं, और जो लोग उन्हें थोड़ा-बहुत जानते थे, वे उन्हें बस एक पागल औरत समझते थे। लेकिन जब फादर सेबेस्टियन की मृत्यु हो गई, और इस संत व्यक्ति के साथ रहने वाले लोग अचानक आपस में झगड़ने लगे, तो मदर अनास्तासिया ने यह सुनिश्चित किया कि यह सब इतना स्पष्ट न हो। उन्होंने सभी को शांत किया और सभी के लिए शांत लाई। और उनके आसपास के अधिकांश लोगों ने बस उनके प्रेम और दया को स्वयं अनुभव किया।

मैं एक लूथरन परिवार में पैदा हुआ था। पति सेवासियन की मृत्यु के कुछ साल बाद मैं चर्च में शामिल हो गया। फरि मैं सेना में सेवा करने चला गया, और जब मैं लौटा, तो मैं एक 'उथल-पुथल भरे दौर' से गुज़रा – मैं किसी की नहीं सुनता था और कुछ समय के लिए, पूरी तरह से काबू से बाहर था। मेरे कई करीबी दोस्त और परिवार वाले मुझसे दूरी बनाने लगे। लेकिन मेरी माँ मुझे इंजन ऑयल के साथ आलू खिलाती थीं, कच्चे अंडे पलाती थीं – जो मुझे बलिकुल पसंद नहीं थे – या महिला की शॉल ओढ़कर बस में बठा देती थीं, जैसे मैं कोई पागल आदमी हूँ। और मैं करता भी था; भले ही तब तक मैं एक वयस्क आदमी बन चुका था, मैं औरत की शॉल ओढ़कर पूरे शहर में घूमता था। वह कहती, 'जाकर रास्ते पर एक पैर से दौड़', और मैं चर्च के रास्ते पर एक पैर से दौड़ने चला जाता। और मैं भागा क्यों? क्योंकि मुझे मदर अनास्तासिया के लिए वैसा आंतरिक स्नेह था जैसा इस धरती पर किसी और के लिए नहीं था—यह बात पक्की है। यह इसलिए भी था क्योंकि अपनी सारी सादगी और खुरदरेपन के बावजूद, मदर अनास्तासिया एक बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति थीं; ऐसी बात की कल्पना करना भी मुश्किल है।

मैं माँ से बहुत प्यार करती थी। हालाँकि, शायद मैं माँ अनास्तासिया से खुद प्यार नहीं करती थी, बल्कि मैं उनके मेरे प्रतियोगिता रवैये की कदर करती थी। मैं उन्हें सचमुच देख भी नहीं पाती थी, यूँ कहें। मैं केवल उनके बड़े फेल्ट के जूते ही देख पाता था, जो गेलोश (रबर के जूते) में होते थे; मैंने देखा कि हिर कोई उन्हें बहुत मान-सम्मान देता था, कि उन्होंने मुझे अपने करीब खींच लिया था, और मुझे इस बात पर गर्व था कि वह मेरे साथ इतनी अच्छा व्यवहार करती थीं। मैंने उनके साथ बहुत समय बिताया। वे जहाँ भी जातीं, मैं उनका पीछा करता। वे मदर एवदोकीया के यहाँ जातीं, जहाँ वे खाना खातीं, संतों के जीवन की कहानियाँ पढ़तीं, और मैं पूरा समय उनके साथ वहाँ रहता था। मैं बस, बिना यह महसूस किए, पवित्र लोगों के पास रहने की कोशिश करता था। माँ ज्यादा कुछ नहीं बोलती थीं; उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया। और उनके घर में सब कुछ बहुत शांत और शांतपूरण था। मैं कहीं नहीं जाना चाहता था; मैं घर भी नहीं जाना चाहता था। मैं बस उनके पास रहना चाहता था - बस इतना ही; मुझे और कुछ नहीं चाहिए था।

फिर मैंने थियोलॉजिकल सेमिनरी में दाखिला ले लिया। एक दिन मुझे छुट्टियों से सरगेव पसाद लौटना था, और मैंने माँस्को के लिए एक उड़ान बुक की। लेकिन माँ मुझे जाने नहीं दे रही थीं। वह मुझे जबरदस्ती जाने नहीं दे रही थीं, जैसे कि वह मेरा मजाक उड़ा रही हों। वह मुझे अपनी कोठरी में ले गईं और मुझसे बात करने लगीं। और मैं, बेशक, एक आदर्श छात्र होने का नाटक कर रहा था - एक पैर पर कूदते हुए, कच्चे अंडे पी रहा था। मैंने बहुत आज्ञाकारी होने का दिखावा किया। तो, जब माँ मुझसे बात कर रही थीं, तो मैंने एक बार जिक्र किया कि मेरे पास हवाई जहाज का टिकट है और मुझे जल्दी निकलना है। लेकिन उन्होंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। लेकिन मैं सच में उस समय माँस्को जाना चाहता था; मैं वहाँ पहुँचने के लिए बेचैन था। और इसलिए, जब उसने मुझे रोक लिया और मैं देर से पहुँच रहा था, तो स्वाभाविक रूप से मुझे काफी गुस्सा आया। मैं आग-बबूला था; मैं दांत पीस रहा था। उसी पल, मुझे उनकी ' ' पवित्रता, उनकी सूझ-बूझ पर भी शक होने लगा। मैंने मन ही मन उनका अपमान भी किया। लेकिन उन्होंने बस मेरा टिकट छीन लिया और मुझे जाने नहीं दिया।

और जब यह पता चला कि विमान टेक-ऑफ के समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया था और सभी की मौत हो गई थी... खैर... वह तो एक बिल्कुल अलग मामला था... मैंने उसे यह भी नहीं बताया कि क्या हुआ था। और उसने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा... मैं अगले दिन उसी उड़ान से उड़ गया।

मैं समय-समय पर मदर अग्निया से मिलने जाता था। मेरे मन में उनके प्रति थोड़ी अलग भावना थी; मैं देख सकता था कि वह एक बहुत बीमार महिला थीं। उनकी सभी उंगलियाँ मुड़ी हुई थीं - उन्हें पॉलीआर्थराइटिस, ड्रापसी और कुछ अन्य बीमारियाँ थीं, और वह मुश्किल से एक छोटी ऊँची मेज की मदद से चल-फिर पाती थीं, फिर भी वह कभी यह नहीं दिखाती थीं कि उन्हें दर्द हो रहा है। और यह महिला (जैसा कि मुझे बाद में याद आया) ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। आमतौर पर, जब मदर अग्निया और मदर अनास्तासिया की बात आती थी, तो महिलाएं फुसफुसाती थीं कि ये मदरस थीं - वाह! वाह! मैंने उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन फिर भी, मदर अग्निया ने मेरी आत्मा को छू लिया। मदर अग्निया एक छोटे बच्चे की तरह थीं, एक नाजूक, बहुत ही छोटे बच्चे की तरह, जो बहुत, बहुत बूढ़ी थीं। उनकी आवाज़ एक छोटे बच्चे की तरह पतली थी, और वह मुझसे बिल्कुल एक छोटे बच्चे की तरह ही बात करती थीं।

मैं ननियों के बारे में कुछ खास खास नहीं कह सकती। एकमात्र बात जो उन्हें अलग करती थी वह यह थी कि वे वास्तव में दूरदर्शी और सच्ची ईश्वर-भयभीत प्राणी थीं। दिखावे में, वे वनिमर, शांत दादियों की तरह व्यवहार करती थीं। सच है, मदर अनास्तासिया कभी-कभी गुस्सा हो जाती थीं; यानी, वे बहुत कठोरता से बोल सकती थीं। लेकिन उसका मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता था। मेरे साथ वह हमेशा एक प्यार करने वाली दादी की तरह थीं। और एक बार मैंने महसूस किया कि मदर अग्निया भी किसी से काफी सख्त लहजे में बात कर रही थीं। लेकिन मुझे उससे भी कोई फर्क नहीं पड़ा। उन्होंने मेरे साथ प्यार से पेश आकर मुझे डराया नहीं... एक अलग धर्म का एक छोटा लड़का आया था, इसलिए उसे भी डराया नहीं गया।

अब, जब मैं अपने पूरे जीवन को पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मेरे जीवन में पाप के सवि और कुछ नहीं था, और मैं ननों का बहुत बड़ा ऋणी हूँ। और मुझे यकीन है कि उनकी प्रार्थनाओं की बदौलत ही मैं इस दुनिया में अभी भी जीवित हूँ। ईश्वर का धन्यवाद हो कि मेरे जीवन में एक समय ऐसा था जब मैं ऐसे लोगों के करीब था। मुझे विश्वास है कि मैं अब और हमेशा उनके साथ हूँ। एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब मैंने उनसे संपर्क न किया हो, और हर दिन मैं उनसे मदद मांगती हूँ।